



भारत का राजपत्र

The Gazette of India

साप्ताहिक/WEEKLY

प्राधिकार से प्रकाशित
PUBLISHED BY AUTHORITY

सं० 49] नई दिल्ली, शनिवार, दिसम्बर 6—दिसम्बर 12, 2003 (अग्रहायण 15, 1925)
No. 49] NEW DELHI, SATURDAY, DECEMBER 6—DECEMBER 12, 2003 (AGRAHAYANA 15, 1925)

इस भाग में भिन्न पृष्ठ संख्या दी जाती है जिससे कि यह अलग संकलन के रूप में रखा जा सके।
(Separate paging is given to this Part in order that it may be filed as a separate compilation)

विषय-सूची

भाग I--खण्ड-1--(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और उच्चतम न्यायालय द्वारा जारी की गई विधितर नियमों, विनियमों, आदेशों तथा संकल्पों से सम्बन्धित अधिसूचनाएं	1117	प्रशासनों को छोड़कर) द्वारा जारी किए गए सांविधिक आदेश और अधिसूचनाएं	*
भाग I--खण्ड-2--(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और उच्चतम न्यायालय द्वारा जारी की गई सरकारी अधिकारियों की नियुक्तियों, पदोन्नतियों, छुट्टियों आदि के सम्बन्ध में अधिसूचनाएं	985	भाग II--खण्ड-3--उप खण्ड (iii)--भारत सरकार के मंत्रालयों (जिसमें रक्षा मंत्रालय भी शामिल है) और केन्द्रीय प्राधिकरणों (संघ शासित क्षेत्रों के प्रशासनों को छोड़कर) द्वारा जारी किए गए सामान्य सांविधिक नियमों और सांविधिक आदेशों (जिनमें सामान्य स्वरूप की उपविधियां भी शामिल हैं) के हिन्दी प्राधिकृत पाठ (ऐसे पाठों को छोड़कर जो भारत के राजपत्र के खण्ड 3 या खण्ड 4 में प्रकाशित होते हैं)	*
भाग I--खण्ड-3--रक्षा मंत्रालय द्वारा जारी किए गए संकल्पों और असांविधिक आदेशों के सम्बन्ध में अधिसूचनाएं	5	भाग II--खण्ड-4--रक्षा मंत्रालय द्वारा जारी किए गए सांविधिक नियम और आदेश	*
भाग I--खण्ड-4--रक्षा मंत्रालय द्वारा जारी की गई सरकारी अधिकारियों की नियुक्तियों, पदोन्नतियों, छुट्टियों आदि के सम्बन्ध में अधिसूचनाएं	1617	भाग III--खण्ड-1--उच्च न्यायालयों, नियंत्रक और महालेखापरीक्षक, संघ लोक सेवा आयोग, रेल विभाग और भारत सरकार से सम्बद्ध और अधीनस्थ कार्यालयों द्वारा जारी की गई अधिसूचनाएं	1599
भाग II--खण्ड-1--अधिनियम, अध्यादेश और विनियम	*	भाग III--खण्ड-2--पेटेंट कार्यालय द्वारा जारी की गई पेटेंटों और डिजाइनों से सम्बन्धित अधिसूचनाएं और नोटिस	4891
भाग II--खण्ड-1क--अधिनियमों, अध्यादेशों और विनियमों का हिन्दी भाषा में प्राधिकृत पाठ	*	भाग III--खण्ड-3--मुख्य आयुक्तों के प्राधिकार के अधीन अथवा द्वारा जारी की गई अधिसूचनाएं	*
भाग II--खण्ड-2--विधेयक तथा विधेयकों पर प्रवर समितियों के बिल तथा रिपोर्ट	*	भाग III--खण्ड-4--विधिक अधिसूचनाएं जिनमें सांविधिक निकायों द्वारा जारी की गई अधिसूचनाएं, आदेश, विज्ञापन और नोटिस शामिल हैं	9747
भाग II--खण्ड-3--उप खण्ड (i)--भारत सरकार के मंत्रालयों (रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) और केन्द्रीय प्राधिकरणों (संघ शासित क्षेत्रों के प्रशासनों को छोड़कर) द्वारा जारी किए गए सामान्य सांविधिक नियम (जिनमें सामान्य स्वरूप के आदेश और उपविधियां आदि भी शामिल हैं)	*	भाग IV--गैर-सरकारी व्यक्तियों और गैर-सरकारी निकायों द्वारा जारी किए गए विज्ञापन और नोटिस	429
भाग II--खण्ड-3--उप खण्ड (ii)--भारत सरकार के मंत्रालयों (रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) और केन्द्रीय प्राधिकरणों (संघ शासित क्षेत्रों के		भाग V--अंग्रेजी और हिन्दी दोनों में जन्म और मृत्यु के आंकड़ों को दर्शाने वाला सम्पूर्णक	*

CONTENTS

PART I—SECTION 1—Notifications relating to Non-Statutory Rules, Regulations, Orders and Resolutions issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Supreme Court	1117	PART II—SECTION 3—SUB-SECTION (iii)—Authoritative texts in Hindi (other than such texts, published in Section 3 or Section 4 of the Gazette of India) of General Statutory Rules & Statutory Orders (including Bye-laws of a general character) issued by the Ministries of the Government of India (including the Ministry of Defence) and by Central Authorities (other than Administration of Union Territories)	*
PART I—SECTION 2—Notifications regarding Appointments, Promotions, Leave etc. of Government Officers issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Supreme Court	985	PART II—SECTION 4—Statutory Rules and Orders issued by the Ministry of Defence	*
PART I—SECTION 3—Notifications relating to Resolutions and Non-Statutory Orders issued by the Ministry of Defence	5	PART III—SECTION 1—Notifications issued by the High Courts, the Comptroller and Auditor General, Union Public Service Commission, the Indian Government Railways and by Attached and Subordinate Offices of the Government of India	1599
PART I—SECTION 4—Notifications regarding Appointments, Promotions, Leave etc. of Government Officers issued by the Ministry of Defence	1617	PART III—SECTION 2—Notifications and Notices issued by the Patent Office, relating to Patents and Designs	4891
PART II—SECTION 1—Acts, Ordinances and Regulations	*	PART III—SECTION 3—Notifications issued by or under the authority of Chief Commissioners	—
PART II—SECTION 1A—Authoritative texts in Hindi languages of Acts, Ordinances and Regulations	*	PART III—SECTION 4—Miscellaneous Notifications including Notifications, Orders, Advertisements and Notices issued by Statutory Bodies	9747
PART II—SECTION 2—Bills and Reports of the Select Committee on Bills	*	PART IV—Advertisements and Notices issued by Private Individuals and Private Bodies	429
PART II—SECTION 3—SUB-SECTION (i)—General Statutory Rules including Orders, Bye-laws, etc. of general character issued by the Ministry of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Central Authorities (other than the Administration of Union Territories)	*	PART V—Supplement showing Statistics of Births and Deaths etc. both in English and Hindi	*
PART II—SECTION 3—SUB-SECTION (ii)—Statutory Orders and Notifications issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Central Authorities (other than the Administration of Union Territories)	*		

भाग I—खण्ड 1

[PART I—SECTION 1]

[(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और उच्चतम न्यायालय द्वारा जारी की गई विधितर नियमों, विनियमों तथा आदेशों और संकल्पों से संबंधित अधिसूचनाएं]

[Notifications relating to Non-Statutory Rules, Regulations, Orders and Resolutions issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Supreme Court]

राष्ट्रपति सचिवालय

नई दिल्ली, दिनांक 12 नवम्बर 2003

शुद्धिपत्र

सं. 250-प्रेज/2003--शनिवार, दिनांक 7 सितम्बर, 2002 के भारत के राजपत्र के भाग I खण्ड I में प्रकाशित दिनांक 15 अगस्त, 2002 की इस सचिवालय की अधिसूचना सं. 138-प्रेज/2002 में निम्नलिखित संशोधन किया जाता है :--

पैराग्राफ एक में :

11.6.2002 के स्थान पर

11.6.2001 पढ़ा जाए।

पैराग्राफ तीन में :

11.6.2002 के स्थान पर

11.6.2001 पढ़ा जाए।

बरुण मित्रा
निदेशक

दिनांक 17 नवम्बर 2003

सं. 110-प्रेज/2003--राष्ट्रपति, आन्ध्र प्रदेश पुलिस के निम्नलिखित अधिकारी को उनकी वीरता के लिए राष्ट्रपति का पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं :--

अधिकारी का नाम और रैंक :

डॉ. ए. रविशंकर, भा.पु.से.

पुलिस अधीक्षक

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए पदक प्रदान किया गया :

17 मार्च, 2001 की शाम को डॉ. ए. रविशंकर को सूचना प्राप्त हुई कि निजामाबार जिले की प्लाटून, नव गठित गुरिल्ला आर्मी (पीजीए), प्रशिक्षण शिविर की समाप्ति पर राहतनगर आरक्षित जंगल में पिपरी गुट्टा (586 फुट) चोटी से तितर-बितर होने वाली है। सायं 1700 बजे डॉ. ए. रविशंकर ने पुलिस पार्टी का नेतृत्व किया तथा राहतनगर आरक्षित वन की ओर प्रस्थान किया तथा पिपरी गुट्टा (586 फुट) पहाड़ी की तलहटी में छोटे से नाले के साथ-साथ उनके वापसी के संभावित मार्गों पर रात्रि को घात लगाई। 18 मार्च, 2001 की प्रातः 5 बजे पुलिस पार्टी ने पहाड़ी की तलाशी लेना प्रारंभ कर दिया तथा लगभग 8.30 बजे पहाड़ी की चोटी की ओर आगे बढ़ना प्रारंभ कर दिया तभी उन पर भारी गोलीबारी की गई। डॉ. ए. रविशंकर ने पुलिस पार्टी को घात-रोधी उपाय करने का निर्देश दिया तथा उग्रवादियों को अपनी पहचान बता कर उनसे आत्मसमर्पण करने को कहा। उग्रवादियों ने पुलिस पार्टी पर हमला जारी रखा तथा उसे कार्रवाई करने से रोक दिया क्योंकि नक्सली ऊंचाई पर होने के कारण लाभ की

स्थिति में थे। डॉ. ए. रविशंकर ने स्थिति का आकलन किया तथा उग्रवादियों के शिविर पर हमले के लिए धावा दल का नेतृत्व करने का निर्णय लिया। इन्होंने अपने 5 कर्मियों के साथ मिलकर, अपने प्राणों की परवाह न करते हुए पुलिस पार्टी पर मंडराते खतरे को समाप्त करने की दृष्टि से उग्रवादियों के शिविर पर धावा बोल दिया। ज्योंही उन्होंने धावा बोला, उन पर और उनके धावा दल पर स्वचलित हथियारों की गोलीबारी की गई। डॉ. ए. रविशंकर ने गोली चलाना प्रारंभ किया तथा पहले ही हमले में नाले के साथ-साथ भागने वाले अन्य उग्रवादियों का कवर प्रदान कर रहे दो उग्रवादियों को मार गिराया। डॉ. ए. रविशंकर तथा उनकी टीम पर हथगोलों से हमला किया गया परन्तु वे हथगोले घने जंगल की तनी हुई झाड़ियों से बच गई कैनोपी के कारण पुलिस टीम के समीप गिर पड़े। वे रेंगकर पहाड़ी पर चढ़े तथा दुश्मन की सन्तरी चौकी पर पहुंच गए तथा भागते हुए उग्रवादियों पर हथगोले फेंके। डॉ. ए. रविशंकर तथा उनकी टीम के वीरतापूर्ण हमले के कारण आधे घंटे की गोलीबारी के बाद उग्रवादी भागने लगे। डॉ. ए. रविशंकर के नेतृत्व में पुलिस पार्टी ने नाले के साथ-साथ उग्रवादियों का पीछा किया तथा द्रोक्किलोमीटर तक पीछा करने के बाद एक अन्य उग्रवादी मार गिराया। मारे गए उग्रवादियों की पहचान (1) निर्मलक्का उर्फ वसन्तमक्का, सैक्शन कमांडर, (2) कोम्मु बबई उर्फ सरिथक्का, प्लाटून सदस्य तथा (3) कोठापल्ली भारती उर्फ वन्जा, प्लाटून कमांडर, जिनके प्रत्येक के सिर पर एक लाख रुपये का पुरस्कार था, के रूप में की गई। घटनास्थल से निम्नलिखित बरामदगियां भी की गई :--

1. दो .303 राइफलें तथा जिन्दा कारतूसों सहित दो मैगजीनें।
2. जिन्दा कारतूसों सहित दो एस बी बी एल गन
3. जिन्दा कारतूसों सहित एक 12 बोर तमन्चा
4. एक बेतार मोटोरोला हैंड सेट
5. एक एक्पलोडर रिमोट तथा डेटोनेटर्स
6. ग्यारह किट बैग्स
7. पी डब्ल्यू जी साहित्य
8. वाटर कैन्स तथा बर्तन

इस मुठभेड़ में, डॉ. ए. रविशंकर, भा.पु.से., पुलिस अधीक्षक ने अदम्य वीरता, साहस एवं उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

यह पदक, राष्ट्रपति का पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिया जा रहा है तथा फलस्वरूप नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार विशेष भत्ता भी दिनांक 18.3.2001 से दिया जाएगा।

बरुण मित्रा
निदेशक

सं० 111 - प्रेज/2003-राष्ट्रपति, आन्ध्र प्रदेश पुलिस के निम्नलिखित अधिकारी को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:-

अधिकारी का नाम और रैंक

श्री पी. थिरुमलेश

उप निरीक्षक

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए पदक प्रदान किया गया:

5.8.2001 को 1030 बजे, श्री पी. थिरुमलेश, रिजर्व उप निरीक्षक, पुलिस, डिस्ट्रिक्ट गार्ड और तीन अन्य को हेलीकाप्टर द्वारा हवाई सर्वेक्षण करने के लिए तैनात किया गया। जब वे लगभग 1315 बजे चंदुरथी पहाड़ियों के ऊपर उड़ान भर रहे थे, श्री पी. थिरुमलेश ने हेलीकोप्टर की खिड़की से रुद्रणी गांव के नजदीक पहाड़ियों पर कुछ व्यक्तियों की गतिविधियां देखी। उन्होंने, भारतीय सर्वेक्षण के नक्शे पर उस जगह को तत्काल चिह्नित कर दिया और जी.पी.एस. में जमीनी स्थिति को रिकार्ड किया तथा पुलिस अधीक्षक/अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक (आपरेशन्स), करीमनगर को सूचना भेजी और उसी हेलीकोप्टर में जिला मुख्यालय की ओर तेजी से बढ़े। श्री पी. थिरुमलेश ने केवल एक पार्टी के साथ अभियान की योजना बनाई और पुलिस अधीक्षक की आज्ञा लेने के पश्चात, उस क्षेत्र की ओर कूच किया जहाँ पर उग्रवादियों की गतिविधियां देखी गई थीं। पुलिस पार्टी ने कोचागुट्टा (जहां पर आतंकवादी देखे गए थे) जाने से पहले तीन पहाड़ियों की जांच की। पुलिस पार्टी कोचागुट्टा पर चढ़े और पहाड़ियों पर एक टेंट और कुछ काइरों को देखा। पुलिस पार्टी को देखने पर, उग्रवादियों ने जिनकी संख्या लगभग आठ थी, पुलिस पार्टी पर अंधाधुंध गोलीबारी शुरू कर दी। श्री पी. थिरुमलेश, उप निरीक्षक के नेतृत्व में पुलिस पार्टी ने जवाबी गोलीबारी की और उग्रवादियों को भारी नुकसान पहुंचाया। 20 मिनट तक चली इस भीषण लड़ाई के परिणामस्वरूप पांच उग्रवादी (1) थारे श्रीनु उर्फ कारे श्रीनि, 24 वर्ष पुत्र नरसेहा निवासी लिंगमपेट, डिप्टी कमांडर (2) कदासु रमेश उर्फ मधु, 18 वर्ष निवासी लिंगमपेट, दलाम सदस्य (3) थारे संजीव उर्फ पुली राजू-पुत्र गंगाराम, 18 वर्ष निवासी लिंगमपेट, दलाम सदस्य (4) राजेश्वरी उर्फ चेतन्या पत्नी बीरेड, 20 वर्ष, कुर्मा निवासी मारीमाडला, दलाम सदस्य (5) सेल्ला कोमुरेड पुत्र लिंगेड, 19 वर्ष, कुर्मा निवासी-रुद्रंगी, सभी सी.पी.आई.एम.एल. जनशक्ति ग्रुप के रंगारावपेट गुरिल्ला दस्ते से संबंधित, मारे गए। मुठभेड़ स्थल से एक 30 कारबाइन असाल्ट राइफल, एक 8 एम.एम. राइफल, एक .45 रिवाल्वर, एक डी.बी.बी.एल. गन, एक देशी इथियार, कुछ सक्रिय कारतूस, किट बैग इत्यादि बरामद हुए।

इस मुठभेड़ में, श्री पी. थिरुमलेश, उप निरीक्षक ने अदम्य वीरता, साहस एवं उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

यह पदक, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4(i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिया जा रहा है तथा फलस्वरूप नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 5 अगस्त, 2001 से दिया जाएगा।

22.12.03 दिनांक
(बरुण मित्रा)
निदेशक

सं० 112 - प्रेज/2003-राष्ट्रपति, आन्ध्र प्रदेश पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:-

अधिकारियों के नाम और रैंक

- सर्व/श्री
1. डी० गौतम स्वांग, भा०पु०से०
पुलिस उप महानिरीक्षक वारंगल रेंज, वारंगल
 2. आर. वेकटैया
डिप्टी असॉल्ट कमांडर, ग्रे हाउन्ड्स, हैदराबाद

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए पदक प्रदान किया गया:

10.3.2002 को श्री डी गौतम स्वांग को अपने स्रोत से जानकारी मिली कि अपनी सैन्य विरचना, अर्थात् पीपुल्स गुरिल्ला आर्मी की प्लाटूने, जिनकी संख्या सौ से डेढ़ सौ तक थी सहित पीपुल्स वार ग्रुप (पी डब्ल्यू जी) नक्सलियों के चोटी के कार्यकर्ता आन्ध्र प्रदेश छत्तीसगढ़ तथा महाराष्ट्र राज्यों के ट्राई जंक्शन पर गोदावरी नदी पार करके वारंगल जिले के एतुरनगरम पुलिस थाने के नगरम वन क्षेत्र के घने जंगलों में "हुब्बाथोगु-चाटलाथोगु" में शिविर आयोजित कर रहे हैं तथा एक बड़ी कार्रवाई, अर्थात् एतसनगरम तथा थाडवाई पुलिस थानों पर हमले की योजना बना रहे तथा उसका पूर्वाभ्यास कर रहे हैं। वारंगल के पुलिस अधीक्षक की अनुपस्थिति में पुलिस उप महानिरीक्षक श्री स्वांग ने तुरंत कार्रवाई करते हुए अपनी रेंज के पास के करीमनगर और खम्माम जिलों की ग्रे हाउन्ड यूनिटों को शामिल करके विशेष टीमें गठित की तथा त्वरित योजना बनाई जिनमें 6 पुलिस टीमें शामिल थी। अपने स्रोत की विश्वसनीयता तथा सूचना के स्वरूप को ध्यान में रखते हुए इन्होंने मुख्यतः ग्रे हाउन्ड्स की दो यूनिटों को लेकर गठित घावा दल का नेतृत्व करने का निर्णय लिया। 11.3.2002 को प्रातः काल तक, भोर की प्रथम किरण से पूर्व सभी छः टीमों को योजनानुसार क्षेत्र में उतार दिया गया। श्री स्वांग के नेतृत्व में दो घावा दल दोपहर तक लक्षित क्षेत्र में पहुंच गए। तलाशी के दौरान ही पी डब्ल्यू जी कैम्प की निगरानी/सन्तरी चौकी से इन पर गोली चलाई गई। पुलिस पार्टियों ने तत्काल मोर्चा संभाला और प्रत्युत्तर में गोलीबारी की। श्री स्वांग कुहिनियों के बल रोककर ऊंचे स्थान पर लाभकारी अवस्थिति पर पहुंचे। वहां उन्होंने विभिन्न स्थानों तथा दिशाओं से उग्रवादियों की ओर से हो रही गोलीबारी का तुरन्त आकलन किया और सन्तरी चौकी को नष्ट करने तथा मुख्य शिविर स्थल पर घावा बोलने की योजना बनाई। इन्होंने दोनों टीमों को आगे और उप विभाजित किया तथा उन्हें समझाया कि किस प्रकार उन्हें विभिन्न दिशाओं से घाटी में उग्रवादी शिविर के समीप पहुंचना है। वरिष्ठ कमांडो, श्री के श्रीनिवास उग्रवादियों की सन्तरी चौकी की ओर भागे तथा वहां एक हथगोला फेंका। हथगोले के विस्फोट से उग्रवादी घबरा गया जिससे पुलिस पार्टी आगे बढ़ पाई। पुलिस पार्टी पर एल एम जी से भारी गोली बारी की गई। श्री श्रीनिवास आगे बढ़े तथा उग्रवादी को मार गिराया। श्री स्वांग ने भारी वैयक्तिक जोखिम उठा कर टीम का नेतृत्व किया तथा उग्रवादियों द्वारा सुरक्षित आड से स्वचालित हथियारों से की जा रही लगातार गोलीबारी का बहादुरी से सामना करते हुए शिविर के मध्य तक आगे बढ़ गए। तीव्र गोली बारी तथा उग्रवादियों द्वारा रक्षा उपायों के रूप में बिछाई क्लेमोर माइनों के विस्फोटों, जिनसे पुलिस बल अक्सर घबरा जाते थे, के कारण थोड़ी-थोड़ी देर बाद प्रगति में बाधा आती रही। श्री स्वांग द्वारा प्रदर्शित साहस को देख कर उनकी टीम ने उनका अनुसरण किया तथा उस दिशा में आगे बढ़ी जिधर से ज्यादातर, गोलीबारी की जा रही थी। पुलिस टीम पर बहुत से हथगोले

फेंके गए जिनमें से कुछ फट गए तथा कुछ नहीं फटे। पुलिस पार्टी रेंगकर शिविर के केन्द्र की ओर बढ़ती रही तथा लक्ष्य पर निरन्तर गोलियों से निरन्तर गोली बारी करती रही। जब उग्रवादियों के मुख्य ग्रुप की ओर से गोली बारी रुक गई तो शिविर स्थल के केन्द्रीय भाग से चार आतंकवादियों के शव बरामद हुए जिनमें घडेबोईना जवाहर उर्फ प्रभाकर, कमांडर, मिलिट्री प्लाटून तथा बंगारी भास्कर, पीपुल्स गुरिल्ला आर्मी का सैक्शन कमांडर शामिल थे। श्री आर वेंकटैया, डिप्टी असॉल्ट कमांडर ने पुलिस पार्टी को तुरंत दो दलों में बांटा। अभी तक सुरक्षित आड से अनेक उग्रवादियों की निरन्तर गोलीबारी के बीच, भारी वैयक्तिक जोखिम के बावजूद इन्होंने उग्रवादी शिविर को दो तरफ से घेर लिया। श्री वेंकटैया, अभूतपूर्व बहादुरी का उदाहरण प्रस्तुत करते हुए 5 पुलिस कार्मिकों के साथ उग्रवादी शिविर में घुस गए तथा उन पर बड़े साइस के साथ हमला बोल दिया। उग्रवादियों और श्री वेंकटैया के नेतृत्व में पुलिस पार्टी के बीच 45 मिनट तक गोलीबारी हुई। पुलिस पार्टी तथा उग्रवादियों के बीच लगभग एक घंटे तक हुई इस मुठभेड़ तथा बाद में, भागते हुए उग्रवादियों की तलाश में जंगल में उनका पीछा करते हुए 8 उग्रवादी मारे गए तथा पुलिस का एक उप निरीक्षक शहीद हो गया। मृतकों में घडेबोईना जवाहरलाल उर्फ प्रभाकर मिलिट्री प्लाटून का कमांडर तथा सब जोनल मिलिट्री कमांड का सदस्य, मिलिट्री प्लाटून के दो सैक्शन कमांडर बंगारी भास्कर उर्फ देवेन्द्र तथा पाल्लेबोईना चिनक्का उर्फ पदमक्का उर्फ स्वरनक्का तथा पी डब्ल्यू जी मिलिट्री प्लाटून के 5 अन्य सदस्य शामिल थे। बाद में यह भी बताया गया कि अनेक उग्रवादी गोलियों से गंभीर रूप से घायल हो गए। जिनमें से दो सुरक्षा के लिए छत्तीसगढ़ के वन क्षेत्र में जाते हुए गंभीर चोटों के कारण मारे गए। शस्त्रों का बड़ा जखीरा बरामद हुआ जिसमें एक एल एम जी, तीन एस एल आर, दो .303 राइफलें, एक 9 एम एम एस ए एफ कार्बाइन, तीन डी बी बी एल गन, एल एम जी तथा एस एल आर की चार मैगजीनें, तीन क्लेमोर माइन, चार ग्रेनेड, चार आईकॉम बी एच एफ स्कैनर सेट, गोला बारूद (ट्रेसर सहित), बहुत सारा महत्वपूर्ण साहित्य, दस्तावेज तथा अन्य सामग्री शामिल थी।

इस मुठभेड़ में, सर्व/श्री डी गौतम स्वांग, भा0पु0से0, पुलिस उप महानिरीक्षक तथा आर.वेंकटैया डिप्टी असॉल्ट कमांडर ने अदम्य वीरता, साइस एवं उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पदक, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4(i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 11.3.2002 से दिया जाएगा।

ब.रू. मित्रा

(बख्श मित्रा)

निदेशक

सं0 113 - प्रेज/2003-राष्ट्रपति, आन्ध्र प्रदेश पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:-

अधिकारियों के नाम और रैंक

- सर्वश्री
1. वाई. नागी रेड्डी, भा0पु0से0
अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक
2. आर. नरेन्द्र
आर.एस.आई., वारंगल जिला
3. के. निरीक्षण राव
पी.सी. वारंगल जिला

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए पदक प्रदान किया गया:

25 जुलाई, 2002 को यह विश्वसनीय जानकारी प्राप्त हुई कि पी डब्ल्यू जी की जनगांव क्षेत्र समिति, वेल्लेर तथा सोमदेवरापल्ली ग्रामों के बीच गडीडा गुट्टालु तथा एनुपराइला गुट्टालु के समीप कैम्प डाले हुए हैं। यह क्षेत्र वारंगल और करीमनगर जिलों की सीमा पर 20 वर्ग किलोमीटर में फैला हुआ, अधिकांशतः पहाड़ियों वाला क्षेत्र है। उग्रवादियों को निष्क्रिय करने के लिए "स्टोन पार्क" कूट नाम से एक अभियान चलाया गया तथा जिला गाड़ों की तीन यूनिटों तथा ग्रेहाउन्ड्स की एक यूनिट को 26 जुलाई 2002 के सुबह तड़के तलाशी अभियान चलाने के लिए रात में ही भेज दिया गया। श्री वाई नागी रेड्डी, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक (आपरेशन) ने धावा पार्टी के रूप में डिस्ट्रिक्ट गाड़ों की यूनिट II का नेतृत्व किया जिसकी उग्रवादियों से मुठभेड़ हुई। 26.7.2002 की प्रातः श्री रेड्डी तथा श्री आर नरेन्द्र ने पुलिस पार्टी के साथ इस क्षेत्र को छान मारा। परन्तु उन्हें वहां शिविर खाली मिला। दिन के लगभग 1415 बजे खोदी हुई मिट्टी के दो ढेरों के पीछे मकई के खेत के पास सशस्त्र उग्रवादियों की आवाजाही देखी गई। समीप आती पुलिस पार्टी पर उग्रवादियों ने अन्धाधुन्ध गोलियां चलाना प्रारंभ कर दिया। श्री रेड्डी अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक ने यूनिट को दो कट ऑफ पार्टियों में उपविभाजित कर दिया ताकि दोनों दिशाओं को कवर किया जा सके तथा उन्होंने श्री आर नरेन्द्र तथा श्री के निरीक्षण राव के साथ एक छोटे से धावा ग्रुप का नेतृत्व किया। उन्होंने रेंगकर क्लेमोर माइन्स तेजी से पार की तथा उग्रवादियों की ओर बढ़े। कैम्प के निकट धावा ग्रुप के दो सदस्यों द्वारा दो स्कवैड सदस्य मार गिराए गए। तथापि सभी वरिष्ठ कांडर गोलियां चलाते हुए पीछे हटने लगे। श्री रेड्डी, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक ने कट ऑफ पार्टियों को सचेत किया। जबकि दायीं ओर बायीं कट ऑफ पार्टियां कवर्गिंग गोलीबारी करती रहीं, धावा पार्टी ने तीन उग्रवादियों, जो एस एल आर 7.62 एम.एम. राइफल तथा स्टेन कारबाइन से गोलियां चल रहे थे, का पीछा किया। अपनी जान की परवाह न करते हुए धावा ग्रुप ने उग्रवादियों पर गोलियां चलाना जारी रखा तथा उन्हें एक के बाद एक करके निष्क्रिय कर दिया। श्री रेड्डी, श्री आर नरेन्द्र तथा श्री निरीक्षण राव की वीरतापूर्ण कार्रवाई से (1) थंगलापल्ली सुरेश उर्फ श्रीनू, जिला समिति सदस्य (2) गजरेला रमेश उर्फ नवीरन, जनगांव क्षेत्र समिति सचिव (3) मो0 अंकुस बी उर्फ ज्योथक्का उर्फ अरूनक्का, कमांडर धर्म सागर स्थानीय गुरिल्ला स्कवैड (एल जी एस) (4) दान्डे कल्याण उर्फ माधवी, सदस्य धर्म सागर (एल जी एस) (5) गान्धी पोचम्मा उर्फ पदमक्का, सदस्य धर्म सागर (एल जी एस) मारे गए। इस मुठभेड़ में मारे गए उग्रवादियों से एक एस एल आर, एक 7.62 एम एम राइफल, एक 9 एम एम स्टेन कारबाइन, एक एस बी बी एल, एक .38 रिबोल्वर, पांच ग्रनेड, दो क्लेमोर माइन्स बरामद हुई।

इस मुठभेड़ में, सर्वश्री वाई नागी रेड्डी, भा0पु0से0, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक, आर नरेन्द्र, आर एस आई तथा के निरीक्षण राव, पी.सी. ने अदम्य वीरता, साहस एवं उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पदक, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4(i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 26.7.2002 से दिया जाएगा।

०२७/७/०३
(बरुण मिश्रा)
निदेशक

सं० 114 - प्रेज/2003-राष्ट्रपति, आन्ध्र प्रदेश पुलिस के निम्नलिखित अधिकारी को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:-

अधिकारी का नाम और रैंक

श्री पी० सीताराम

डिप्टी असॉल्ट कमांडर

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए पदक प्रदान किया गया:

27.4.2000 को वामपंथी पीपुल्स वार ग्रुप दलाम की वारंगल जिले की चन्द्रगिरि पहाड़ियों में उपस्थिति की सूचना पाकर श्री पी सीताराम, पुलिस पार्टी के साथ तुरंत उन्हें पकड़ने के लिए गए क्योंकि पी.डब्ल्यू.जी., पुलिस पार्टियों से बचने के लिए स्थान बदलने के लिए जानी जाती हैं। पहाड़ियों की तलाशी लेते समय पुलिस पार्टी के ध्यान में 15 सशस्त्र पी.डब्ल्यू. ग्रुप की आवा जाही देखी गई। अपनी मौजूदगी का आभास न देते हुए पुलिस पार्टी तीन अलग-अलग दिशाओं से उनके समीप जा पहुंची। पहाड़ी की तलहटी में श्री राम ने पी डब्ल्यू.जी. काडरो को आत्मसमर्पण करने के लिए कहा। इसके उत्तर में पहाड़ियों के शिलाखण्डों के पीछे से गोलियों की बौछार हुई। पी.डब्ल्यू.जी. काडरो ने पहाड़ी में शिलाखंडों के पीछे ऊंचे स्थानों पर मोर्चे संभाल लिए थे। उन्हें पकड़ने के लिए एक पुलिस पार्टी पीछे की ओर से पहाड़ी पर चढ़ी तथा उन्होंने एक ऊंचे स्थान पर मोर्चा जमा लिया जिससे सशस्त्र काडरो को खुले में आना पड़ा तथा उन्होंने नजदीकी लड़ाई में पुलिस पार्टी पर गोली चलाना जारी रखा। श्री पी० सीताराम, अपनी जान की परवाह न करते हुए गोलीबारी, कांटेदार झाड़ियों तथा ऊबड़ खाबड़ पहाड़ी भूभाग के बीच पुलिस का नेतृत्व करते रहे। छः घंटे तक जारी गोलीबारी में पीपुल्स वार ग्रुप के 12 महत्वपूर्ण भूमिगत सशस्त्र काडर मारे गए। कार्रवाई के बाद निम्नलिखित वरामदगियां हुई :-

1.	एस एल आर	-	एक (एक अतिरिक्त मैगजीन सहित)
2.	9 एम एम कारबाइन	-	एक (एक अतिरिक्त मैगजीन सहित)
3.	.303 राइफल	-	दो
4.	डी वी वी एल/एस बी बी एल गन	-	सात
5.	8 एम एम राइफल	-	एक
6.	.410 मस्कैट	-	एक
7.	ए के 47 मैगजीन (अतिरिक्त)	-	एक
8.	भारी मात्रा में गोला बारूद उन्नत विस्फोटक उपकरण	-	
9.	किट बैग	-	आठ

इस मुठभेड़ में, श्री पी. सीताराम, डिप्टी असॉल्ट कमांडर ने अदम्य वीरता, साहस एवं उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

यह पदक, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4(i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिया जा रहा है तथा फलस्वरूप नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 27.4.2000 से दिया जाएगा।

वरुण मित्रा
(वरुण मित्रा)
निदेशक

स0 115 - प्रेज/2003-राष्ट्रपति, आन्ध्र प्रदेश पुलिस के निम्नलिखित अधिकारी को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:-

अधिकारी का नाम और रैंक

श्री आर. ईश्वर रेड्डी

पुलिस अधीक्षक

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए पदक प्रदान किया गया:

श्री आर. ईश्वर रेड्डी, भा.पु.से., पुलिस अधीक्षक, आन्ध्र प्रदेश जुलाई, 1998 से जुलाई, 1999 तक बोसनिया तथा हर्जगोविना में संयुक्त राष्ट्र शान्ति सेना में तैनात थे। 9 जनवरी, 1999 को जब श्री आर.ईश्वर रेड्डी शाम चार बजे से फोका टाउन यू.एन.आई. पी.टी.आई स्टेशन पर ड्यूटी पर थे तो सर्बियन ईसाईयों की अनियंत्रित भीड़ एकत्र हो गई तथा उन्होंने स्टेशन को घेर लिया। वे लोग ड्रेगन गैजोकी, जिसका स्थानीय सर्बियन हीरो के रूप में सम्मान होता था, की वहा से कुछ दूर उसट्रिप्राका कक्षान पर दिन के 12.00 बजे नाटों के नेतृत्व में स्टेबिलाइजेशन बल से मुठभेड़ में मृत्यु हो गई थी, के विरोध में प्रदर्शन कर रहे थे। मृतक को संयुक्त राष्ट्र युद्ध अपराध न्यायधिकरण हेग द्वारा 1992-95 के बोसनिया युद्ध का युद्ध अपराधी विनिर्दिष्ट किया गया था तथा उस पर मुस्लिम महिलाओं तथा लड़कियों के साथ बलात्कार करने के आरोप थे। अतः उस पर न्यायधिकरण के समक्ष मुकदमा चलाने के लिए एस.एफ.ओ.आर. टुकड़ियों द्वारा गिरफ्तार करने का प्रयास किया तो उस समय वह एक कार में यात्रा कर रहा था। उसने गिरफ्तारी से बचने के लिए उन्हें अपनी कार से रौंदना चाहा। तब एस.एफ.ओ.आर. के फ्रांसीसी सिपाहियों द्वारा उसे गोली मार दी गई। वे जिन पांच बच्चों को कराटे सिखाया करता था वे भी उसके साथ कार में सवार थे परन्तु वे घायल नहीं हुए तथा उन्हें फ्रांसीसी सिपाहियों ने फोका टाउन से दस किलोमीटर दूर उनके सुरक्षित स्थान पर पहुंचा दिया गया। उसी दिन शाम को सर्ब जो अपने स्थानीय हीरो की मृत्यु पर उत्तेजित थे, फोका यू.एन.आई.पी.टी.एफ. स्टेशन पर एकत्र हो गए। उस समय श्री रेड्डी, फोका यू.एन.आई.पी.टी.एफ. स्टेशन पर ड्यूटी अधिकारी थे। स्टेशन पर श्री रेड्डी तथा उनके अन्य साथियों, (संख्या में चार) जिनमें डिप्टी स्टेशन कमांडर भी शामिल थे, ने बच्चों के अभिभावकों, जो भीड़ में एकत्र सर्बों में थे, से सरकारी दुर्भाषण के माध्यम से संपर्क साधकर यह समझाने का प्रयास किया कि बच्चे सुरक्षित हैं और मुठभेड़ में घायल नहीं हुए हैं तथा उन्हें फोका यू.एन.आई.पी.टी.एफ. स्टेशन कमांडर द्वारा फोका लाया जा रहा है तथा शीघ्र ही उन्हें सौंप दिया जाएगा। परन्तु कट्टर राष्ट्रवादी सर्बों, जिनमें से एक का पहचान युद्ध अपराधी जानजिक जाका के रूप में हुई, ने सर्बों की भीड़ को भड़काया तथा उन्हें हिंसा की कार्रवाइयां करने के लिए उकसाया। अनियंत्रित उग्र भीड़ ने सांकेतिक भाषा में श्री आर. ईश्वर रेड्डी सहित यू.एन.आई.पी.टी.एफ. स्टेशन के कार्मिकों को मारने की धमकियां दी। यह कार्रवाई उन्होंने विशेष रूप से ड्रेगन गागोविक की हत्या के विरुद्ध जवाबी कार्रवाई और प्रतिशोध और आम तौर पर नाटों टुकड़ियों और यू.एन. मिशन एजेंसियों की शान्ति बनाए रखने की गतिविधियों पर अपने बढ़ते हुए आक्रोश को प्रकट करने के लिए की। सुस्पष्ट और बढ़ते तनाव तथा भीड़ के कुछ सदस्यों द्वारा स्टेशन की शीशों की दीवारों को तोड़कर स्टेशन में बलपूर्वक घुसने के प्रयासों के बावजूद श्री रेड्डी अविचलित रहे, अपना संयम बनाए रखा तथा क्षेत्रीय कमांडर तथा यू.एन.आई.पी.टी.एफ. गेटायले स्टेशन तथा एस.एफ.ओ.आर. पोर्ट, फुली पोवियर को सूचना दी। कुछ समय के पश्चात, उपद्रवी भीड़ ने कुछ गोलियां चलाई, हथगोले फेंके और शीशों की दीवारों और दरवाजे तोड़ दिए और फोका यू.एन.आई.पी.टी.एफ. स्टेशन में आपराधिक रूप से जबरदस्ती प्रवेश किया, उसे तहस-नहस किया तथा सारे सामान के साथ तोड़-फोड़ की, तब भी निहत्थे श्री रेड्डी ने सामान को बचाने के लिए कड़ा प्रतिरोध किया। जानजिक जाको, युद्ध अपराधी ने उन्हें अपनी हैंड गन से गोली मारने की धमकी

दी। सर्वस की उग्र भीड़ को एक छोटा सा ग्रुप श्री रेड्डी सहित फोका यू.एन.आई.पी.टी.एफ. स्टेशन के प्रत्येक सदस्य पर झपट पड़ा और उन्हें बुरी तरह से मारा-पीटा। स्वयं को हमलावरों से मुक्त करने के पश्चात श्री रेड्डी और इनके साथी स्टेशन की खुली छत पर कूद गए लेकिन पुनः उनका पीछा किया तथा उन्हें बुरी तरह से पीटा। उन्हें उठाकर छत पर से लगभग 12 फुट नीचे जमीन पर फेंकने का प्रयास किया। श्री रेड्डी ने जबरदस्त प्रतिरोध किया और स्वयं को उनके चंगुल से मुक्त कर लिया और इस प्रकार उन्मत्त सर्बियन हमलावरों के प्रयास को विफल कर दिया। श्री रेड्डी को गंभीर चोटें आईं उनका एक दांत टूट गया, दूसरा दांत हिल गया और स्थायी रूप से खराब हो गया। मुख्य चिकित्सक समन्वयक (चीफ मेडिकल कोर्डिनेटर), यू.एन.एम.आई.बी.एच., मुख्यालय सराजीवो द्वारा दिए गए प्रमाणपत्र के अनुसार श्री रेड्डी को गंभीर चोटें आईं और उनके सारे शरीर पर, विशेष रूप से चेहरे पर चोट के नील निशान थे और सूजन आई हुई थी।

इस मुठभेड़ में, श्री आर. ईश्वर रेड्डी, पुलिस अधीक्षक ने अदम्य वीरता, साहस एवं उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

यह पदक, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4(i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिया जा रहा है तथा फलस्वरूप नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 9 जनवरी, 1999 से दिया जाएगा।

(बसु मित्रा)
निदेशक

सं० 116 - प्रेज/2003-राष्ट्रपति, आन्ध्र प्रदेश पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:-

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

1. बी. श्रीनिवासुलु, भा.पु.से.,
पुलिस अधीक्षक, हैदराबाद
2. टी. राघवेश मुरली
निरीक्षक, हैदराबाद

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए पदक प्रदान किया गया:

21.11.2002 को साई बाबार मंदिर, दिलसुखनगर, हैदराबाद में पाकिस्तानी आई.एस.आई. एजेंटों द्वारा प्रायोजित उग्रवादियों द्वारा स्कूटर की डिक्की में रखे एक बम (आई.ई.डी.) का विस्फोट हुआ। उग्रवादियों ने यह जानते हुए कि उस दिन बृहस्पतिवार होने के कारण मंदिर में कार्यक्रमों की वजह से भक्तों की भारी भीड़ जमा होगी, बम को विशेष रूप से उसी दिन रखा। विस्फोट में एक महिला भक्त मारी गई तथा 25 व्यक्ति घायल हो गए जिनमें एक एक छोटे बच्चे, जो गंभीर

रूप से घायल हो गया था, की कुछ दिन बाद घावों के कारण मृत्यु हो गई। पुलिस ने स्थल से ढेर सारी जिन्दा विस्फोटक सामग्री बरामद की। इस सनसनी खेज विस्फोट, जो हैदराबाद के इतिहास में उपासना स्थल में विस्फोट की पहली घटना था, के कारण साईबाबा के भक्तों तथा आमतौर पर जनता में दहशत फैल गई। विस्फोट के कारण समस्त पुलिस विभाग साम्प्रदायिक उपद्रवों का अनुमान लगाते हुए हरकत में आ गया। ऐसी स्थिति में आसूचना विभाग के काउन्टर इंटेलीजेंस सेल, श्री बी. श्रीनिवासुलु, पुलिस अधीक्षक, के पर्यवेक्षण में आतंकवादियों को पकड़ने के लिए हरकत में आ गया। श्री बी. श्रीनिवासुलु तथा श्री राधेश मुरली, निरीक्षक ने व्यक्तिगत रूप से स्वोत ढूँढे और विकसित किए तथा इस मामले में सबूत जुटाए। घटना की विस्तृत जांच से यह पता चला कि अभियुक्त व्यक्ति नामतः मो. आजम पुत्र युसुफ तथा सईद अजीज उर्फ हमरान उर्फ खालेद पुत्र रशीद, दोनों ही हैदराबाद के निवासी हैं, सऊदी अरेबिया में रहने वाला किसी अबू हमजा (जम्मू और कश्मीर को छोड़कर भारत में लश्करे तैय्यबा के आपरेशनों का इन्चार्ज) के पर्यवेक्षण में लश्करे तैय्यबा कार्यकर्ता है, इस विस्फोट के लिए उत्तरदायी हैं। श्री बी. श्रीनिवासुलु तथा राधेश मुरली द्वारा की गई आगे जांच से पता चला कि अजीज उर्फ हमरान उर्फ खालेद पाकिस्तान गया था और उसे लश्करे तैय्यबा ने विभिन्न अधुनातन इथियार चलाने, विस्फोटकों का प्रयोग करने, महत्वपूर्ण सूचना एकत्र करने आदि का प्रशिक्षण दिया तथा उसे पाक अधिकृत कश्मीर की मार्फत भारत भेजा गया। वह दक्षिण भारत में लश्करे तैय्यबा के आपरेशन का इन्चार्ज था। अजीज तथा उसके सहयोगी आजम ने धार्मिक स्थलों पर विस्फोट करके साम्प्रदायिक उपद्रव कराने की योजना बनाई। उन्हें विश्व हिन्दू परिषद की आन्ध्र प्रदेश यूनिट के अध्यक्ष तथा अन्य चोटी के वी.एच.पी./आर.एस.एस. नेताओं की हत्या करने का कार्य भी सौंपा गया था। श्री बी. श्रीनिवासुलु तथा राधेश मुरली ने अभियुक्तों की पहचान करने तथा उन्हें ढूँढने के कार्य का व्यक्तिगत रूप से पर्यवेक्षण किया। उन्होंने उनकी आवाजाही के बारे में अग्रिम सूचना भी दी। अभियुक्तों की निगरानी में अनेक बाधाओं तथा जान के खतरे के बावजूद इन अधिकारियों ने इन अभियुक्तों पर दिन-रात प्रभावशाली रूप से निगरानी रखी परिणामतः 23.11.02 को सूचना मिली कि अजीज का सहयोगी आजम उफल क्षेत्र में घूम रहा है। सूचना तत्काल स्थानीय पुलिस को भेजी गई जिसने तुरंत कार्रवाई की तथा मुठभेड़ में उग्रवादी को मार गिराया तथा बड़ी मात्रा में विस्फोटक सामग्री बरामद की। पुनः 24.11.02 को श्री बी. श्रीनिवासुलु तथा श्री राधेश मुरली ने करीम नगर जिले में अजीज की आवाजाही के बारे में सूचना एकत्र की। दोनों अधिकारी जिला पुलिस बल के साथ घटना स्थल की ओर रवाना हुए। पुलिस पार्टी को देखकर उग्रवादी ने गोलियां चलाते हुए खिसकने का प्रयास किया। श्री बी. श्रीनिवासुलु तथा श्री राधेश मुरली ने अवसर के अनुरूप तुरन्त कार्रवाई की तथा पुलिस पार्टी को निदेश दिया कि वे मोर्चा संचाले तथा आत्मरक्षा तथा अन्य पुलिस कार्मिकों की रक्षा के लिए गोली चलाएं। परिणामतः इस गोलीबारी में उग्रवादी मारा गया। मारे गए आतंकवादियों के पास से थाइलैंड की बनी 9 एम.एम. पिस्तौलें और साथ ही मंदिर का नक्शा तथा अभिशंसी दस्तावेज बरामद हुए।

इस मुठभेड़ में, सर्व/श्री बी. श्रीनिवासुलु, पुलिस अधीक्षक तथा टी. राधेश मुरली, निरीक्षक ने अदम्य वीरता, साहस एवं उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पदक, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4(i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 24.11.2002 से दिया जाएगा।

ज. 2. 03 2003

(बरूण मित्रा)

निदेशक

स0 117 - प्रेज/2003-राष्ट्रपति, आन्ध्र प्रदेश पुलिस के निम्नलिखित अधिकारी को उनकी वीरता के लिए राष्ट्रपति का पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:-

अधिकारी का नाम और रैंक

श्री बी. तिरुपति

सर्किल इंस्पेक्टर

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए पदक प्रदान किया गया:

29.7.2001 को सी.पी.आई.एम.एल.पी.डब्ल्यू. के उग्रवादी ग्रुप के 200 सदस्यों ने गणेश डी.सी.एस. खम्माम के नेतृत्व में पुलिस थाना एटुसनगरम पर हमला करने, पुलिस कर्मियों की हत्या करने तथा हथियार व गोला बारूद लूटने के इरादे से जोडीवागू, चिन्ताबोइनापल्ली और थुपाकुलागुडम रोडे पर घात लगाई। उन्होंने पेड़ काटे तथा यातायात रोकने के लिए उन्हें सड़क पर रख दिया ताकि यदि पुलिस बल उन्हें मारने के लिए आए तो वे पुलिस कर्मियों को मार सके। कुछ उग्रवादियों ने एटुसनगरम पुलिस थाने को घेर लिया। उग्रवादी दो ट्रैक्टरों में आए थे जिनमें उन्होंने विस्फोटक, आयरन बॉल तथा आयरन प्लेट भर रखी थी। उन्होंने एक ट्रैक्टर थाने के आगे तथा एक ट्रैक्टर थाने के पीछे खड़ा कर दिया। उग्रवादियों ने पुलिस थाने के समक्ष खड़े किए गए ट्रैक्टर में रिमोट कंट्रोल से विस्फोट कर दिया जिसके कारण भारी धमाका हुआ जिससे आयरन बॉल तथा आयरन प्लेटें पुलिस थाने के भवन से जा टकराईं। तत्पश्चात उग्रवादियों ने पुलिस थाना भवन के पीछे खड़े ट्रैक्टर में विस्फोट किया जिसके कारण आयरन बॉल और लोहे की प्लेटों से पुलिस थाना भवन के पीछे वाले हिस्से को क्षति पहुंची। पुलिस जीप, वायरलेस सैट तथा आस-पास की रिहाइशी इमारतों को भी नुकसान पहुंचा। धमाके के तत्काल बाद पुलिस स्टेशन एटुसनगरम पुलिस थाने के सर्किल इंस्पेक्टर श्री बी. तिरुपति तथा स्टाफ ने उग्रवादियों पर गोलबारी प्रारंभ कर दी और उन्होंने भी गोलीबारी का जवाब देना प्रारंभ कर दिया तथा दोनों के बीच गोलीबारी होने लगी। श्री बी. तिरुपति के अनुकरणीय साहस के साथ उग्रवादियों के साथ संघर्ष जारी रखा तथा अन्य पुलिस कर्मियों को भी उनका मुकाबला करने के लिए प्रेरित करते रहे। गोलीबारी के कारण उग्रवादी घटनास्थल से भाग खड़े गए। श्री बी. तिरुपति की कार्रवाई उच्चतम कोटि की अनुकरणीय थी क्योंकि उन्होंने उग्रवादियों को थाने की ओर एक इंच भी आगे नहीं बढ़ने दिया। इस प्रकार इन्होंने अपने स्टाफ की प्राण रक्षा की तथा उग्रवादियों द्वारा गोलाबारूद ले जाने के प्रयास को विफल कर दिया। घटना के बाद श्री बी. तिरुपति ने मलबे के ढेर से दो आयरन कंटेनर बरामद किए तथा उक्त घटना के लिए उत्तरदायी पांच उग्रवादियों को गिरफ्तार किया।

इस मुठभेड़ में, श्री बी. तिरुपति, सर्किल इंस्पेक्टर ने अदम्य वीरता, साहस एवं उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

यह पदक, राष्ट्रपति का पुलिस पदक नियमावली के नियम 4(i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिया जा रहा है तथा फलस्वरूप नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 29.7.2001 से दिया जाएगा।

ब. रू. मिश्रा,

(बरूण मिश्रा)

निदेशक

सं० 118 - प्रेज/2003-राष्ट्रपति, आन्ध्र प्रदेश पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:-

अधिकारियों के नाम और रैंक

- सर्व/श्री
1. ए. शिवरामकृष्ण
निरीक्षक
 2. जी. तिरुपति
हैड कांस्टेबल
 3. एन. नरसिंहराव, हैड कांस्टेबल

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए पदक प्रदान किया गया:

21.11.02 को दिलसुखनगर, हैदराबाद में साई बाबा मंदिर में एक स्कूटर को डिक्की में रखा बम फट गया। इसमें एक श्रद्धालु महिला की मृत्यु के साथ-साथ मंदिर में एकत्र 25 श्रद्धालु जखमी हो गए। एक अल्पवयस्क बच्चा, जो गंभीर रूप से घायल हो गया था, की कुछ दिन बाद घावों के कारण मृत्यु हो गयी। इस सनसनीखेज बम विस्फोट, जो हैदराबाद में किसी धार्मिक स्थल में पहली बार हुआ था, में साईबाबा के अनुयायियों में तथा आमतौर पर जनता में दशहत् फैल गई। घटनास्थल से पुलिस ने भारी मात्रा में जिन्दा विस्फोटक सामग्री बूढ़ निकाली। साम्प्रदायिक दंगों का अनुमान लगाकर पूरा पुलिस विभाग इरकत में आ गया। हैड कांस्टेबल ए. शिवरामकृष्ण, जी. तिरुपति तथा एन. नरसिंह राव ने आतंकवादियों को व्यक्तिगत रूप से पकड़ने के लिए, इस कृत्य के लिए उत्तरदायी शैतानों की कार्यशैली का ब्यौरेवार अध्ययन करके इस मामले में सबूत तैयार किए तथा वे इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि कोई मुस्लिम संगठन साम्प्रदायिक वैमनस्य फैलाने तथा साम्प्रदायिक वातावरण प्रदूषित करने के उद्देश्य से इस घटना के लिए उत्तरदायी है। इस घटना की ब्यौरेवार जांच करने के बाद यह सिद्ध हुआ कि मौहम्मद आजम पुत्र युसुफ निवासी याकूतपुरा, हैदराबाद तथा सैयद अजीज उर्फ अजीस उर्फ इमरान उर्फ खालेद पु. रशीद निवासी मल्कापेट, हैदराबाद, सऊदी अरेबिया में रहने वाले किसी अबू हमजा (भारत में जम्मू कश्मीर को छोड़कर लश्करे तैय्यबा का आपरेशन इन्चार्ज) के पर्यवेक्षण में लश्करे तैय्यबा के कार्यकर्ता हैं, इस घृणित अपराध के लिए उत्तरदायी हैं। जांच के दौरान यह भी पता चला कि अजीस उर्फ इमरान उर्फ खालेद को विभिन्न प्रकार के हथियार चलाने, विस्फोटकों का प्रयोग करने तथा महत्वपूर्ण जानकारी एकत्र करने के संबंध में पाक अधिकृत कश्मीर में लश्करे तैय्यबा द्वारा 9 माह का प्रशिक्षण दिया गया था। उसे दक्षिण भारत में विध्वंसक कार्रवाई चलाने, अति महत्वपूर्ण तथा प्रभावशाली व्यक्तियों की हत्या करने के लिए आपरेशन का इन्चार्ज नियुक्त किया गया था। निरीक्षक ए. शिवरामकृष्ण, हैड कांस्टेबल जी. तिरुपति तथा एन. नरसिंह राव ने अभियुक्तों का पता लगाने तथा उन्हें पहचानने तथा उनकी आवाजाही के बारे में अग्रिम सूचना पहुंचाने के कार्य का व्यक्तिगत रूप से पर्यवेक्षण किया। वास्तविक निगरानी में अनेक बाधाएं तथा जान का खतरा होने पर भी इन्होंने इन अभियुक्त व्यक्तियों पर प्रभावी रूप से निगरानी रखी। 23.11.2002 को निरीक्षक रामकृष्ण, हैड कांस्टेबल जी. तिरुपति तथा हैड कांस्टेबल एन. नरसिंह राव को सूचना मिली कि अजीज का सहयोगी आजम उपलब्ध क्षेत्र में घूम रहा है। वे तत्काल पुलिस बल के साथ उक्त क्षेत्र की

ओर गए। पुलिस पार्टी को देखकर उग्रवादी ने गोली चलाकर भागने या यत्न किया जिनका पुलिस पार्टी ने कारगरता से उत्तर दिया। निरीक्षक ए. शिवरामकृष्ण, हैड कांस्टेबल जी. तिरुपति तथा हैड कांस्टेबल एन. नरसिंह राव ने उग्रवादी द्वारा की जा रही गोलीबारी कर परवाह न करते हुए अपनी जान इथेली पर रखते हुए दृढ़ता और साहस के साथ असाधारण नेतृत्व तथा बहादुरी का परिचय दिया। मृत उग्रवादी के कब्जे से एक 9 एम.एम. पिस्तौल तथा बड़ी मात्रा में गोला बारूद बरामद किया।

इस मुठभेड़ में, सर्व/श्री ए. शिवरामकृष्ण, निरीक्षक, जी. तिरुपति, हैड कांस्टेबल, एन. नरसिंह राव, हैड कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस एवं उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पदक, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4(i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 23.11.2002 से दिया जाएगा।

बसु मित्रा
(बसु मित्रा)
निदेशक

स0 119 - प्रेज/2003-राष्ट्रपति, आन्ध्र प्रदेश पुलिस के निम्नलिखित अधिकारी को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:-

अधिकारी का नाम और रैंक

श्री जे. पूर्णचंद्र राव, भा.पु.से.

पुलिस अधीक्षक गुन्दूर (वर्तमान में उप महानिरीक्षक पुलिस हैदराबाद)

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए पदक प्रदान किया गया:

5.5.2001 की रात को 11.00 बजे श्री जे. पूर्ण चन्द्र राव, भा.पु.से. को एक स्रोत से जानकारी मिली कि अपने जिला समिति के सदस्य सहित पीपुल्स वार नक्सलियों के 25 व्यक्ति गुन्दूर जिले के पेरिकापडु ग्राम के समीप अड्डाकोन्डा पहाड़ियों में, बेल्लमकोन्डा पुलिस थाने पर आक्रमण करके पुलिस कार्मिकों की हत्या करने के साथ-साथ हथियार लूटने की तैयारी के इरादे से एक बैठक कर रहे हैं। समय बर्बाद किए बिना, श्री राव ने जिला मुख्यालय में ठहरे

हुए विशेष रूप से प्रशिक्षित नक्सल विरोधी दस्तों को बुलाया। उन्होंने आधे घंटे में अभियान की तैयारी की तथा पार्टियों को लौरियों में इस प्रकार भेजा कि पहाड़ियों में स्थित नक्सलियों के छिपने के अड्डों को पुलिस कार्मिकों द्वारा कवर किया जा सके। दस्तों को खाना करने के बाद श्री राव ने सभी दस्तों का प्रबोधन करना प्रारंभ कर दिया। 6.5.2001 को प्रातः ठीक 6.30 बजे श्री राव को संदेश प्राप्त हुआ कि पीपुल्स वार नक्सलियों और नक्सली विरोधी दस्तों के बीच गोलीबारी चल रही है। श्री राव समय गंवाए बिना उस घटनास्थल पर जा पहुंचे जहां गोलीबारी चल रही थी। ज्यों ही वे गुन्दुर कस्बे से 55 कि.मी. दूर घटना स्थल पर पहुंचे उन पर पहाड़ियों से स्वचालित हथियारों से भारी गोलीबारी की गई। श्री राव सभी कार्मिकों को सुरक्षित स्थान पर ले आए, उन्हें विभिन्न पार्टियों में विभाजित किया तथा पहाड़ियों को पुनः घेर लिया। जब बलों ने श्री राव के नेतृत्व में पहाड़ियों की ओर बढ़ना प्रारंभ किया तो शिलाखंडों और झाड़ियों के पीछे छिपे नक्सलियों ने पुलिस पर अन्धाधुन्ध गोलीबारी प्रारंभ कर दी। पुलिस ने उपलब्ध स्थानों पर आड़ लेकर गोलीबारी का जवाब देना प्रारंभ किया। इस दौरान चार पुलिस कार्मिक घायल हो गए। गोलीबारी के पहले दौर में एक नक्सली मारा गया। गोलीबारी के दूसरे दौर में, सीधे श्री राव के नेतृत्व में 4 आर.आई./एस.आई./आर.एस.आई. के एक ग्रुप ने बगैर बुलेट प्रूफ जैकटों के पहाड़ी पर चढ़ना प्रारंभ किया। झाड़ियों में छिपे कुछ उग्रवादियों द्वारा पुलिस पर गोली चलाने, हथगोले तथा विस्फोटक फेंकने की पूरी-पूरी संभावना थी। नक्सलियों को छिपने के स्थान से बाहर निकालने के लिए उन झाड़ियों की दिशा में निरन्तर गोलीबारी की जा रही थी जहां से नक्सली गोलियां चला रहे थे। समस्त पहाड़ी क्षेत्र कांटेदार झाड़ियों से पटा पड़ा था जिससे पुलिस पार्टी को आगे बढ़ने में कठिनाई हो रही थी। मई माह का गर्मी का दिन होने के कारण लू चलने और भयानक गर्मी के कारण पुलिस कार्मिकों का कार्य कठिन हो गया था। इसके अलावा, पुलिस कार्मिकों को प्यास भी लगी थी। इसके अतिरिक्त वे फटते हुए हथगोलों, क्लेमोर सुरंगों तथा बारूदी सुरंगों की मार में भी थे। परिणामस्वरूप पुलिस कार्मिकों के कार्य में बाधा आई। चूंकि गर्मी बहुत ज्यादा और मार्ग दुष्कर था अतः ये तथा इनकी समर्पित अधिकारियों की टीम ने भारी जोखिम उठाया तथा उस क्षेत्र में प्रवेश कर गए जहां उनकी पीपुल्स वार के दुर्दान्त व खतरनाक नक्सलियों से आमने-सामने मुठभेड़ होनी थी। इस दौर में, तीन नक्सलवादी मारे गए। चूंकि जंगल बहुत घना था तथा मुठभेड़ का क्षेत्र बड़े इलाके में फैला था अतः तलाथोटी नागराजू उर्फ महेश एल.जी.एस. सदस्य का शव बरामद नहीं किया जा सका। श्री राव के प्रत्यक्ष नेतृत्व में पांच घंटे चली इस सशस्त्र मुठभेड़ में चार कुख्यात नक्सली मारे गए। इनमें से एक गुरवैया उर्फ भास्कर, डिटी कमांडर था जिसके सिर पर नकद पुरस्कार घोषित किया हुआ था, दूसरा मन्डा दावीडू उर्फ श्रीधर, एक एल.जी.एस. सदस्य, मेदी दावीडू उर्फ यदुन्ना, एक एल.जी. सदस्य तथा चौथा तलाथोटी नागराजू उर्फ महेश, एक एल.जी.एस. सदस्य था। ये नक्सली गुन्दुर जिले के आस-पास पुलिस कार्मिकों तथा नागरिकों की हत्या करने के साथ-साथ सरकारी सम्पत्ति को क्षति पहुंचाने के लिए कुख्यात थे। इस मुठभेड़ में नक्सलियों के कब्जे से एक एस.बी.बी.एल. गन, ग्रेनेड किट बैग्स, बारूद सुरंग, कैमरा फ्लैश, इलेक्ट्रिक डेटोनेटर्स, कारट्रिज, बैटरियां तथा पार्टी साहित्य बरामद हुआ।

इस मुठभेड़ में, श्री जे. पूर्णचंद्र राव, भा.पु.से., पुलिस उप महानिरीक्षक ने अदम्य वीरता, साहस एवं उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

यह पदक, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4(i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिया जा रहा है तथा फलस्वरूप नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 6 मई, 2001 से दिया जाएगा।

४८७१ १५/५

(बरूण मित्रा)

निदेशक

सं0 120 - प्रेज/2003-राष्ट्रपति, आन्ध्र प्रदेश पुलिस के निम्नलिखित अधिकारी को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:-

अधिकारी का नाम और रैंक

श्री जितेन्द्र, भा.पु.से.

पुलिस अधीक्षक

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए पदक प्रदान किया गया:

महबूबनगर जिले के पुलिस अधीक्षक श्री जितेन्द्र को 15.3.99 को सूचना प्राप्त हुई कि ऊपरी पठार दलाम के पी.डब्ल्यू.जी. उग्रवादी कुछ हथियारों सहित महबूबनगर जिले के अमराबाद मंडल के टाटीगुन्डाला तथा थिम्मारेडु ग्रामों के बीच ठहरे हुए हैं। श्री जितेन्द्र ने प्रशिक्षु आर.एस.आई., जो वहां जंगल एक्सरसाइज के लिए आए हुए थे, को लेकर एक पार्टी बनाई। उन्हें ब्रीफ किया तथा घने जंगल में छिपने के संदेहास्पद स्थानों की ओर रवाना हुए। रास्ते में पुलिस पार्टी को एक किट बैग मिला। तत्पश्चात वे पांवों के निशानों का पीछा करते हुए तथा बगैर किसी के ध्यान में आए दलाम के बहुत नजदीक पहुंच गए। दलाम के निकट पहुंचने के बाद श्री जितेन्द्र ने उग्रवादियों को आत्मसमर्पण के लिए कहा। तथापि पी.डब्ल्यू.जी. के उग्रवादियों ने मोर्चे संभाल लिए तथा बहुत नजदीक से पुलिस पार्टी पर गोलीबारी प्रारंभ कर दी। श्री जितेन्द्र ने पुलिस पार्टी को तत्काल मोर्चा संभालने और रेंगकर आगे बढ़ने को कहा। तथापि, उग्रवादियों ने पुलिस पार्टी पर गोलीबारी करना जारी रखा तथा इस प्रकार उन्होंने आत्मसमर्पण नहीं करने की अपनी मंशा जाहिर कर दी। तत्पश्चात, श्री जितेन्द्र ने पुलिस कार्मिकों के छोटे ग्रुप को एकत्र किया तथा गोलीबारी की परवाह न करते हुए उग्रवादियों पर घावा बोल दिया। नजदीकी लड़ाई में, जो लगभग 15 मिनट तक चली दो दलाम सदस्य मारे गए तथा शेष पहाड़ी घाटियों में गहरे जंगल में भागने में सफल हो गए। मारे गए दलामों की पहचान चेन्नु लक्ष्मी उर्फ लक्ष्मक्का, डिप्टी कमांडर, कालावाकुरुथी दलाम पत्नी डी.सी.एस. तथा लचन्ना के रूप में हुई। उग्रवादियों से एक .313 राइफल एक 12 बोर की बंदूक बरामद की गई।

इस मुठभेड़ में, श्री जितेन्द्र, भा.पु.से., पुलिस अधीक्षक ने अदम्य वीरता, साहस एवं उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

यह पदक, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4(i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिया जा रहा है तथा फलस्वरूप नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 15 मार्च, 1999 से दिया जाएगा।

(ब.रुण मित्रा)

(बरूण मित्रा)

निदेशक

सं० 121 - प्रेज/2003-राष्ट्रपति, आन्ध्र प्रदेश पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:-

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

1. ए. शिवशंकर, भा.पु.से., पुलिस महानिरीक्षक
2. एस.आर.तिवारी, भा.पु.से., पुलिस उप महानिरीक्षक तथा अब पु.स. निरीक्षक
3. आर. जगदीश, पु. अधीक्षक (सेवा निवृत्त) अब विशेष कार्य अधिकारी
4. एम. वेकट रेड्डी, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक
5. एन. डेनियल, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए पदक प्रदान किया गया:

पी.डब्ल्यू.जी. के चोटी के नेताओं को गिरफ्तार करके, उन्हें भारी क्षति पहुंचाने की दृष्टि से सर्वश्री तिवारी, ए. शिवशंकर, आर. जगदीश, एन. डेनियल तथा एम. वेकटरेड्डी ने आन्ध्र प्रदेश, मध्य प्रदेश तथा महाराष्ट्र की सीमा के समीप घने जंगल में नेटवर्क स्थापित किया। यह नेटवर्क उच्च श्रेणी की यह आसूचना देने में सफल रहा कि चांटा के पी.डब्ल्यू.जी. कांडर, एन.टी.एस.जैडसी. के मिलिट्री दलाम के साथ पूर्व से गोदावरी पार करने के बाद करीम नगर में कोयूर वन की ओर जाते देखे गए हैं। उपर्युक्त अधिकारियों ने श्री नलिन प्रभात, पुलिस अधीक्षक को चौकन्ना कर दिया तथा बड़ी भारी जोखिम उठा कर चोटी के पी.डब्ल्यू.जी. कांडरों की आवाजाही का प्रबोधन करते रहे। श्री नलिन प्रभात ने कोयूर क्षेत्र के घने जंगल की छानबीन करने के लिए एक पुलिस पार्टी का गठन किया तथा इसका पश्चिम की ओर से नेतृत्व किया। 2.12.99 को प्रातः 6:30 बजे, जब श्री नलिन प्रभात के नेतृत्व वाली पुलिस पार्टी पर भारी गोलीबारी की गई तो सर्व श्री तिवारी, ए. शिवशंकर, आर. जगदीश, एन. डेनियल तथा रेड्डी ने श्री नलिन प्रभात को आक्रमणकारी उपाय करने को कहा तथा उन्हें उग्रवादियों को पार्टी की पहचान बताते हुए उन्हें आत्मसमर्पण करने के लिए कहने को कहा। उग्रवादियों ने तंग घाटियों और झाड़-झंखाड़ का लाभ उठाते हुए पुलिस पर गोलीबारी जारी रखी। अतः श्री नलिन प्रभात ने चार पुलिस कार्मियों को चुना, उन्हें ब्रीफ किया तथा खतरे की परवाह न करते हुए मुख्य फायरिंग पोजीशन की ओर बढ़े। साथ ही साथ सर्व श्री तिवारी, ए. शिवशंकर, आर. जगदीश, एन. डेनियल तथा एम. वेकटरेड्डी भारी जोखिम उठा कर कंट-ऑफ की ओर बढ़े। शीघ्र ही, उपर्युक्त सारे अधिकारी भारी स्वचालित गोलीबारी की जद में आ गए। सर्व श्री तिवारी, शिवशंकर, आर. जगदीश, एन. डेनियल तथा रेड्डी ने नजदीक से पी.डब्ल्यू.जी. की गोलीबारी का जवाब दिया। नजदीकी लड़ाई में चार उग्रवादी मारे गए तथा इन अधिकारियों के शौर्य तथा बहादुरी से शेष दलाम सन्तप्त भाग गए। बाद में घटकों की पहचान, नल्ला आडी रेड्डी, सेन्ट्रल कमिटी सदस्य (सी.सी.एम.), ब्रह्मरेड्डी संतोष रेड्डी, सेन्ट्रल कमिटी सदस्य, राजेश सी.सी.एम. एवं सिंगम लाची राजम, एक यू.जी. सदस्य के रूप में की गई। इन पुलिस अधिकारियों और अन्य पुलिस कार्मिकों के साहसपूर्ण हमले के कारण शेष उग्रवादी 35 मिनट की गोलीबारी के बाद भाग गए। इन अधिकारियों ने श्री नलिन प्रभात तथा उनकी पुलिस पार्टी के साथ निरन्तर संपर्क में रहे, भारी वैयक्तिक जोखिम पर जंगल का वनाशोली, 2 मैगजीनों सहित एक ए.के. 47 राइफल, एक .45 कोल्ट पिस्तौल दो .45 रिवॉल्वर, एक 12 बोर डी.बी.एल. बंदूक, दो देसी रिवॉल्वर, पांच क्लेमोर माइन/बम, दो हाथ में पकड़ने वाले सेट (केनवुड मंक) तथा विभिन्न अन्य मदें बरामद की गई।

इस मुठभेड़ में, सर्व/श्री ए. शिवशंकर, पुलिस महानिरीक्षक, एस.आर. तिवारी, पुलिस उप महानिरीक्षक, आर. जगदीश, पुलिस अधीक्षक, एम. वेकट रेड्डी, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक तथा एन. डेनियल अति. पुलिस अधीक्षक ने अदम्य वीरता, साहस एवं, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पदक, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4(i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 2.12.1999 से दिया जाएगा।

(दस्तखत)

परमेश्वर

सं० 122 - प्रेज/2003-राष्ट्रपति, आन्ध्र प्रदेश पुलिस के निम्नलिखित अधिकारी को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक का प्रथम बार सहर्ष प्रदान करते हैं:-

अधिकारी का नाम और रैंक

श्री सी. रत्ना रेड्डी

पुलिस उप महानिरीक्षक

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए पदक प्रदान किया गया:

7.3.2000 को पंचायत राज मंत्री श्री माधव रेड्डी तथा भूतपूर्व गृह मंत्री, हैदराबाद नगर के बाहरी क्षेत्र परघाटकेसर में पोपुल्स वार ग्रुप (पी.डब्ल्यू.जी.) नक्सलियों द्वारा मारे गए। महानिदेशक पुलिस ने इस मामले की जांच के लिए डी.आई.जी. श्री सी. रत्नारेड्डी के अधीन एक विशेष जांच दल का गठन किया। पता चला कि पी.डब्ल्यू.जी. उग्रवादी एक भूतपूर्व नक्सली कटुल्ला समैय्या की कुकटपल्ली, हैदराबाद में विवेकानंद कालोनी में उनके घर पर ही हत्या करने की योजना बना रहे थे। 14.4.2000 को अन्य एस.आई.टी. सदस्यों की सहायता से श्री रेड्डी तथा विशेष टीम ने हैदराबाद सिटी में एक ऑटो को रोकने का यत्न किया जिसमें पी.डब्ल्यू. के दुर्दान्त विशेष टीम सदस्य सवार थे, उन्हें पीछे उतरने को कहा लेकिन उग्रवादियों ने गोलियां चलाना प्रारंभ दिया। गोलीबारी से विचलित हुए बिना श्री सी. रत्ना रेड्डी की देख-रेख में पुलिस पार्टी ने गोलियां चलाना प्रारंभ कर दिया। परस्पर गोलीबारी में तीन उग्रवादी मारे गए तथा उग्रवादियों से दो पिस्तौलें बरामद की गईं। श्री रेड्डी द्वारा दी गई सूचना और योजना के अनुसार उसी रात को पहले स्थान से कुछ ही दूरी पर एक अन्य गोलीबारी में पी.डब्ल्यू. की विशेष कार्रवाई टीम का चौथा सदस्य भी मारा गया। मुठभेड़ स्थल से एक ऑटो रिक्शा, 9 एम.एम. हथियार, गोला बारूद, विस्फोटक, दस्तावेज, तथा अन्य अभिशसी सामग्री बरामद हुई। पी.डब्ल्यू. की विशेष कार्रवाई टीम के मारे गए सदस्यों की पहचान पी. लचालु उर्फ भास्कर, एम. सुरेश उर्फ भीमा, मधु तथा आर. सत्वा चारी उर्फ शंकर के रूप में की गई।

इस मुठभेड़ में, श्री सी. रत्ना रेड्डी, पु.उप महानिरीक्षक ने अदम्य वीरता, साहस एवं उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

यह पदक, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4(i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिया जा रहा है तथा फलस्वरूप नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 14.4.2000 से दिया जाएगा।

(वरूणा मित्रा)

निदेशक

सं० 123 - प्रेज/2003-राष्ट्रपति, असम पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:-

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

1. नागेन देउरी, ए.बी.एस.आई.
2. श्री बिरेन्द्र कुमार डेका, लांस नायक, तृतीय बटालियन, ए.पी.टी.एफ. (मरणोपरांत)
3. रमानी गोगोई, ए.बी. कांस्टेबल, तृतीय बटालियन, ए.पी.टी.एफ.

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए पदक प्रदान किया गया:

19.10.2001 प्रातः लगभग 4.45 बजे ग्रेनेड लांचर, रॉकेट लांचर, ग्रेनेड और अधुनातन हथियारों से लैस संदेहास्पद एन.डी.एफ.डी. उग्रवादियों (लगभग 125/130), जो वर्दी के छात्रावरण में थे, लबडगूरी पुलिस चौकी पर हमला कर दिया। हमले के दौरान उन्होंने ट्रेसर गोलियों का प्रयोग भी किया। ट्रेसर गोला-बारूद के कारण चौकी की बैरक में आग लग गई तथा वह पूरी तरह नष्ट हो गई। सर्व/श्री नागेन देउरी, ए.बी.एस.आई. लांस नायक श्री बिरेन्द्र कुमार तथा श्री रमानी गोगोई, कांस्टेबल तथा अन्य संवासियों ने एल.एम.जी./एस.एल.आर./कार्बाइन/303 तथा 2 इंच मोर्टार के साथ गोलीबारी का जवाब दिया। गोलीबारी डेढ़ घंटे तक चलती रही। हमले के कारण एक एस.आई.(यू.बी.) नामतः रेबा कान्त दास, प्रभारी लबडगूरी, पुलिस चौकी, लांस नायक बिरेन्द्र कुमार तथा कांस्टेबल मुनीन्द्र कालिता मारे गए तथा बारपेटा डी.ई.एफ. के चार पुलिस कार्मिक, तृतीय ए.पी.टी.एफ. के 2 पुलिस कार्मिक तथा एक सिविलियन गोलियों/छरों से घायल हो गए। जांच के दौरान पता चला कि जवाबी गोलीबारी के कारण 7 उग्रवादी मारे गए जिन्हें उनके साथी घसीटकर जंगल में ले गए और बाद में उन्हें ठेलों में भूटान पहाड़ियों में ले जाया गया। बाद में दो उग्रवादियों के शत विश्वत शव बरामद किए गए। उग्रवादियों का मुख्य उद्देश्य चौकी के पुलिस कार्मिकों को मार कर उनके सभी हथियार, गोलीबारूद तथा वो.एच.एफ. सेट्स छीनना था ताकि क्षेत्र में पुलिस की समन्वित कार्रवाई का बदला लिया जा सके। एन.डी.एफ.बी. काडर, पुलिस चौकी पर फहराने के उद्देश्य से झंडा भी लाए ताकि वे क्षेत्र में अपनी प्रभुत्व घोषित कर सकें।

इस मुठभेड़ में, सर्व/श्री नागेन देउरी, ए.बी.एस.आई., दिवंगत श्री बिरेन्द्र कुमार डेका, तृतीय ए.पी.टी.एफ. बटालियन तथा रमानी गोगोई, ए.बी. कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस एवं उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पदक, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4(i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 19.10.2001 से दिया जाएगा।

(बरूण मित्रा)

निदेशक

सं० 124 - प्रेज/2003-राष्ट्रपति, असम पुलिस के निम्नलिखित अधिकारी को उनकी वीरता के लिए राष्ट्रपति का पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:-

अधिकारी का नाम और रैंक

श्री जीतमल डोले

अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए पदक प्रदान किया गया:

17.3.2002 को सायं 17.45 बजे जब श्री जीतमल डोले, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक के नेतृत्व में खाटा गुवाकुची में तलाशी ले रही थी तो एक तालाब के निकट बैठे 4/5 उल्फा उग्रवादियों ने उन (श्री डोले) पर उस समय अंधाधुन्ध गोलियां चलाई जब वे एक मकान पिछवाड़े खड़े थे। दो पुलिसजन जो मकान की तलाशी ले रहे थे, मकान से बाहर आए परन्तु लगातार गोलीबारी के कारण वे मकान की दीवार के पीछे छिप गए। क्योंकि श्री डोले एकदम खुले में थे इसलिए उन पर भारी गोलीबारी की गई लेकिन वे चमत्कारिक रूप से बच गए। वे तालाब के पश्चिमी किनारे में पानी में कूद पड़े तथा रेंगकर उत्तरी किनारे पर आ गए और जवाबी गोलीबारी की जिसमें दो उग्रवादी मारे गए। एक चीनी कारबाइन, एक ए.के. 56 मैगजीन, 7.62 गोला बारूद (ए.के.) के 9 रौद, 9 एम.एम. गोला बारूद के 11 रौद, एक दस बैंड वर्ल्ड रिसीवर ट्रांजिस्टर, एक वाल्कमैन टेप रिकार्डर, लूट खसोट संबंधी चार पत्र उल्फा से संबंधित अभिशप्ती दस्तावेज बरामद हुए। मारे गए उग्रवादियों की पहचान द्विपेन बर्मन, उर्फ अजान बरुआ तथा चिलाराई कोच उर्फ आदित्य भारानी (दोनों कट्टर उल्फा) के रूप में हुई।

इस मुठभेड़ में, श्री जीतमल डोले, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक ने अदम्य वीरता, साहस एवं उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

यह पदक, राष्ट्रपति पुलिस पदक नियमावली के नियम 4(i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिया जा रहा है तथा फलस्वरूप नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 17.3.2002 से दिया जाएगा।

(बसु मित्रा)

(बसु मित्रा)

निदेशक

सं० 125 - प्रेज/2003-राष्ट्रपति, असम पुलिस के निम्नलिखित अधिकारी को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:-

अधिकारी का नाम और रैंक

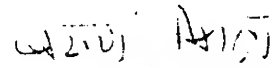
श्री अभिराम दास
कांस्टेबल

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए पदक प्रदान किया गया:

17.3.2002 को 17.45 बजे जब श्री जीतमल डोले, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक के नेतृत्व में एक पुलिस पार्टी ग्राम काटा गुवाहाटी में तलाशी अभियान चला रही थी तो चार-पांच उल्फा उग्रवादियों ने एक मकान के पीछे से अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक जीतमल डोले पर अन्धाधुंध गोलियां चलाना प्रारंभ कर दिया। गोलियों की आवाज सुनकर ए.बी.एस.आई. भूपिन्दर सिंह और कांस्टेबल अभिराम दास, जो मकान के भीतर थे श्री डोले की सहायता के लिए बाहर आए परन्तु निरन्तर गोलीबारी के कारण उन्हें दीवार के पीछे छिपना पड़ा। कुछ समय बाद और कोई विकल्प न देख कर श्री अभिराम दास अपनी जान की परवाह न करते हुए बगल के मकान की दीवार के पीछे से बाहर आ गए और जवाबी गोलीबारी करके दो उग्रवादियों को तत्काल मार गिराया और इस प्रकार इन्होंने अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक की जान बचाई। घटना स्थल से दस चीनी कार्बाइन, 9 एम.एम. गोलाबारूद के 11 रौंद, 1 ए.के. मैगजीन बरामद की गई।

इस मुठभेड़ में, श्री अभिराम दास, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस एवं उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

यह पदक, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4(i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिया जा रहा है तथा फलस्वरूप नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 17.3.2002 से दिया जाएगा।


(बरूण मिश्रा)
निदेशक

स0 126 - प्रेज/2003-राष्ट्रपति, बिहार पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए राष्ट्रपति का पुलिस पदक/वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:-

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

1. राजकुमार करण, निरीक्षक - वीरता के लिए पुलिस पदक
2. एस.एम. अलाउद्दीन, उप निरीक्षक - वीरता के लिए राष्ट्रपति का पुलिस पदक
3. विजय कुमार, उप निरीक्षक - वीरता के लिए राष्ट्रपति का पुलिस पदक
4. अमरेश कुमार सिंह, कांस्टेबल - वीरता के लिए राष्ट्रपति का पुलिस पदक
5. सत्यदेव ठाकुर, कांस्टेबल (ड्राईवर) - वीरता के लिए पुलिस पदक

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए पदक प्रदान किया गया:

28.6.2001 को कुख्यात अपराधी राजू मियां और उसके सहयोगी, बोरिंग रोड पटना में ओएसिस रेस्ट्रॉ के समीप बेतिया के व्यापारी से फिरौती के रूप में 8 लाख रु0 वसूल करने वाले थे। बेतिया पुलिस को इसकी खबर मिल गई तथा तदनुसार बेतिया के पुलिस अधीक्षक ने उप निरीक्षक संजय कुमार मालवीय के नेतृत्व में एक कार्य बल टीम का गठन किया। यह टीम पटना पहुंची तथा इसने एस.एस.पी. से मुलाकात की तथा इन्होंने निरीक्षक-सह-प्रभारी गांधी मैदान पुलिस स्टेशन, राजकुमार करण के नेतृत्व में एक विशेष टीम का गठन किया। यह टीम राजकुमार करण के नेतृत्व में ओएसिस रेस्ट्रॉ बोरिंग रोड पहुंची। तथापि, टीम को पता चला कि राजूमियां ने स्थान बदल लिया है तथा अब वह घनराशि पाटलिपुत्र सहकारी गोलाम्बर से पोलीटेक्नीक मोरे के बीच सड़क पर वसूल करेगा। इन्होंने उन्हें पकड़ने के लिए कड़ी निगरानी प्रारंभ कर दी। केवल उप निरीक्षक अलाउद्दीन और निरीक्षक राजकुमार करण ही राजू मियां को पहचानते थे। सहयोग हाँसपीटल के समीप, पाटलीपुत्र गोलाम्बर से कुछ गज पश्चिम की ओर लगभग 13.30 बजे एक लाल डीरो होन्डा मोटर साइकिल सहयोग हाँसपीटल मोरे से गुजरी और उप निरीक्षक अलाउद्दीन ने पीछे बैठे व्यक्ति को राजू मियां के रूप में पहचान लिया। उप निरीक्षक अलाउद्दीन तथा उप निरीक्षक विजय कुमार ने उनको आत्मसमर्पण करने के लिए कहा क्योंकि उन्हें पुलिस पार्टी द्वारा घेर लिया गया था। अपराधी राजू मियां चलती मोटरसाइकिल से पीछे कूद गया तथा अपनी जेब से दो पिस्तौलें निकाल कर पुलिस पार्टी पर गोलियां चलाने लगा। आत्मरक्षा में उप निरीक्षक अलाउद्दीन, उप निरीक्षक विजय कुमार तथा अन्य पुलिस कार्मिकों ने उन्हें निरुत्साहित और आत्मसमर्पण करने हेतु विवश करने के लिए गोलियां चलाई। परन्तु राजूमियां गोलियां चलाता रहा। उप निरीक्षक अलाउद्दीन तथा सी/316 अमरेश कुमार सिंह गोली से घायल हो गए तथा गिर पड़े जबकि ड्राइवर सत्यदेव ठाकुर ने मोटर साइकिल चलाने वाले के मुंह पर तौलिया डाल दिया जिससे वह विपरीत दिशा में आने वाली एक अन्य मीटर साइकिल से भिड़ गई। राजू मियां और उसका सहयोगी दोनों ही गिर पड़े तथा उन्होंने सड़क के किनारे एक गड्ढे में मोर्चा सम्भाल लिया। राजू मियां ने अपनी एक पिस्तौल अपने साथी को दे दी तथा दोनों ने ही पुलिस पार्टी पर गोलियां चलाना प्रारंभ कर दिया। घायल होने के बावजूद उप निरीक्षक एस.एम. अलाउद्दीन ने गोलीबारी जारी रखी तथा तभी अचानक राजू मियां उठा तथा पुलिस पार्टी पर गोलियां चलाता हुआ उत्तर की ओर भागा। चूंकि अलाउद्दीन तथा अमरेश कुमार सिंह गंभीर रूप से घायल हो गए थे इसलिए कुछ पुलिस कार्मिक तथा अधिकारी इन्हें समीप के सहयोग अस्पताल ले आए। श्री विजय कुमार तथा दो अन्य कांस्टेबलों ने राजू मियां का पीछा करना जारी रखा जो बार-बार गोलियां चला रहा था। राजू मियां एक सड़क से दूसरी सड़क पर भाग रहा था तथा वह एक मकान की छत पर चढ़

गया तथा मकान के पिछवाड़े कूद कर मोर्चा संभाल लिया तथा गोलियां चलाना प्रारम्भ कर दिया। उप निरीक्षक विजय कुमार के बाएं पांव में कूदते और भागते हुए एक गोली लगी परन्तु इन्होंने पीछा करना जारी रखा तथा दो कांस्टेबलों के साथ गोलियां चलाते रहे। गोलीबारी के दौरान राजू मियां कूड़े के एक गड़े में गिर पड़ा और मर गया। उसके शव के समीप एक 9 एम.एम. रेगुलेटर पिस्तौल, एक मोबाइल फोन तथा 9 एम.एम. के 6 कारतूस खोल बरामद हुए। श्री विजय कुमार ने असाधारण साहस का प्रदर्शन किया। एक और अज्ञात अपराधी सड़क के किनारे मरा पड़ा पाया गया। बाद में उसकी पहचान मो. अरमान-उर्फ वसीम पुत्र मो. नसीम, निवासी ग्राम कटिहारी हिल पुलिस स्टेशनल चंडौत, जिला गया के रूप में हुई। एक रेगुलर 7.62 एम.एम. पिस्तौल, 7.62 पिस्तौल के 9 जिन्दा कारतूस तथा 7.62 एम.एम. के कारतूसों के खोल, एक लाल हीरो होन्डा मोटर साइकिल से बी.आर-2बी 4295 बरामद हुई। राजू मियां तथा अरमान हत्या, अपहरण, डकैती तथा फिरौती के अनेक मामलों में संलिप्त वांछित अपराधी थे।

इस मुठभेड़ में, सर्व/श्री राजकुमार करण, निरीक्षक, एस.एम. अलाउद्दीन उप निरीक्षक, विजय कुमार उप निरीक्षक, अमरेश कुमार सिंह कांस्टेबल तथा सत्यदेव ठाकुर, ड्राइवर ने अदम्य वीरता, साहस एवं उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पदक, राष्ट्रपति का पुलिस पदक/पुलिस पदक नियमावली के नियम 4(i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 28.6.2001 से दिया जाएगा।

4295 15/11
(बरूण मित्रा)
निदेशक

सं. 127 - प्रेज/2003-राष्ट्रपति, बिहार पुलिस के निम्नलिखित अधिकारी को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:-

अधिकारी का नाम और रैंक

श्री जनार्दन सिंह (मरणोपरांत)

इवलदार

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए पदक प्रदान किया गया:

17/18 मई, 1997 को मध्यरात्रि को लगभग 2 बजे पूर्वाह्न 19 कर्मियों की एक पुलिस पार्टी हुलासगंज पुलिस स्टेशन के अंतर्गत गांव गिदरपुर में छापा मारने के लिए हुलासगंज पुलिस स्टेशन से रवाना हुई। भगाड़े जदू ठाकुर पुत्र बाली ठाकुर के घर पर छापे के दौरान उप निरीक्षक सरोज कुमार श्रीवास्तव, जो पार्टी का नेतृत्व कर रहे थे को मालूम हुआ कि कुछ उग्रवादों गांव दादपुर के भूईटोली में इकट्ठा हुए हैं। वे और पुलिस पार्टी ने उक्त गांव की ओर कूच किया। जब पुलिस पार्टी दादपुर गांव के भूईटोली के उत्तर में लगभग 50 बज की दूरी पर थी, तो उप निरीक्षक सरोज कुमार श्रीवास्तव ने 30 से 35 अतिवादियों को भोड़ को, भूईटोली से बाहर अपने हाथों में आधुनिक शस्त्र, राइफलें और गने और अपनी पीठ पर थैलो में कारतूस लिए जाते हुए देखा। पुलिस पार्टी को देखकर उन्होंने अंधाधुंध गोलीबारी शुरू कर दी और पूर्वी तथा दक्षिण दिशा की ओर मुड़ गए। उनमें से कुछ ब्राकोवर्दी पहने हुए थे। पुलिस द्वारा दी गई चेतावनी को उग्रवादियों ने अनसुना कर दिया। बेहतर रणनीति हेतु, पुलिस पार्टी को दो भागों में बाँटा गया। श्री श्रीवास्तव कुछ पुलिस कर्मियों के साथ पूर्वोत्तर दिशा की ओर बढ़े और वहाँ से उग्रवादियों को घेर लिया। श्री श्रीवास्तव ने शेष पुलिस कर्मियों को भूईटोली के दक्षिणी तरफ बढ़ने और वहाँ से उग्रवादियों को घेरने के निदेश दिए। दोनों पार्टियों ने उपर्युक्त तरीके से पोजीशन लेने के पश्चात, आत्मरक्षा में गोलीबारी शुरू कर दी। उग्रवादी विभिन्न जगहों पर फैल गए। कुछ ने भूईटोली के पूर्व में, कुछ ने फालगू नदी के बांध की पश्चिमी दिशा में और कुछ ने भूईटोली में पोजीशन ले ली। इवलदार जनार्दन सिंह अपने पार्टी लीडर श्री श्रीवास्तव के बगल में पुलिस कार्रवाई के आगे खड़े थे। गोलीबारी के दौरान, श्री जनार्दन सिंह को उग्रवादियों की एक गोली लगी और वे गिर पड़े। उसी समय, पुलिस की गोलीबारी के कारण दो अतिवादी भी गंभीर रूप से जख्मी हो गए। दोनों घायलों को उनके साथियों द्वारा ले जाते हुए देखा गया। श्री श्रीवास्तव ने उग्रवादियों को ललकारा जो छिप कर गोलीबारी कर रहे थे। वे अपनी पार्टी को बेहतर नेतृत्व प्रदान करने के लिए आगे बढ़े। दूसरी पार्टी के आने के पश्चात, उन्होंने अपने सदस्यों को बहादुरी से अपनी जगह पर डटे रहने और कट्टर अतिवादियों के साथ मुठभेड़ के दौरान अपने दिमाग का संतुलन बनाए रखने का आदेश दिया। उन्होंने पार्टियों को उस तरफ गोलीबारी करने के लिए कहा जहाँ से उग्रवादी गोलीबारी कर रहे थे। दोनों तरफ से गोलीबारी जारी रही। श्री जनार्दन सिंह ने दम तोड़ दिया। मरने से पहले, उन्होंने 15 राउन्ड गोलीयाँ चलाई। अभियान के पश्चात, एक जख्मी व्यक्ति का बहुत तेजी से रक्त बहने लगा, जिससे बाद में अपने जख्मों के कारण दम तोड़ दिया। उसकी शिनाख्त यदू मांझी, मजदूर किसान मध्यम परिवार से संबंधित उग्रवादी के रूप में हुई।

इस मुठभेड़ में, (दिवंगत) श्री जनार्दन सिंह, इवलदार ने अदम्य वीरता, साहस एवं उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

यह पदक, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4(i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिया जा रहा है तथा फलस्वरूप नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 18 मई, 1997 से दिया जाएगा।

(वरूण मित्रा)

निदेशक

सं० 128 - प्रेज/2003-राष्ट्रपति, बिहार पुलिस के निरीक्षक अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:-

अधिकारियों के नाम और रैंक

1. श्री धरनीधर पांडे (मरणोपरांत)
उप निरीक्षक
2. श्री राम कृष्ण गुप्ता
उप निरीक्षक

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए पदक प्रदान किया गया:

22.6.1996 को श्री धरनीधर पांडे, उप निरीक्षक गांव शाहपुर के मार्ग में मुफ्फासिल क्षेत्र में सरकारी ड्यूटी पर थे। उनके साथ एक अन्य पुलिस अधिकारी श्री राम कृष्ण गुप्ता थे। मारुति वैन में सवार अपराधियों के साथ इनकी मुठभेड़ हुई। दोनों अधिकारियों ने अपराधियों से अपने वाहन की तलाशी देने के लिए कहा। पुलिस अधिकारियों की इस बात का जवाब अपराधियों ने गोलीबारी से दिया। दोनों पुलिस अधिकारी अपनी मोटर साइकिल से कूद पड़े और जवाबी गोलीबारी की। इन्होंने पोजीशन ली और अपराधियों से समर्पण करने को कहा। अपराधियों ने अत्याधुनिक आग्नेयास्त्रों से गोलीबारी प्रारम्भ कर दी। दोनों पुलिस अधिकारियों ने भी अपनी सर्विस रिवाल्वर से गोलीबारी की। श्री धरनीधर पांडे ने इस ड्यूटी का निर्वाह करते हुए दुर्दान्त अपराधियों के हाथों अपने प्राणों का बलिदान दिया। परन्तु प्राण त्यागने से पूर्व इन्होंने अपने सर्विस रिवाल्वर से अपराधियों पर गोलीबां चलाई। श्री राम कृष्ण गुप्ता ने गम्भीर रूप से घायल होने के बावजूद अपराधियों को चुनौती दी और अपनी सर्विस रिवाल्वर से उन पर गोली चलाई। तथापि, श्री गुप्ता को बचा लिया गया। इस मुठभेड़ में दो अपराधी जख्मी हो गए जिनकी बाद में अस्पताल में मृत्यु हो गई। अन्य घायल अपराधी, जो घटना स्थल से भागने में सफल हो गया था, को बाद में खगड़िया में गिरफ्तार कर लिया गया और उनसे अत्याधुनिक हथियार, गोलाबारूद और मारुति वैन सहित बड़ी मात्रा में हथियार बरामद किए गए। ये अपराधी हत्यारों और हथियारों के तस्करों के गिरोह के सदस्य थे। मारे गए अपराधियों की पहचान पटना के अमरेश सिंह और खगड़िया के गोपाल मिश्रा के रूप में हुई, जो पटना में दिन दहाड़े एक पुलिस अधिकारी राम वृक्ष रजक के परिवार के चार सदस्यों के नृशंस सामूहिक नरसंहार सहित बहुत से जघन्य और सनसनीखेज अपराधों में सम्मिलित थे।

इस मुठभेड़ में, (दिवंगत) श्री धरनीधर पांडे, उप निरीक्षक और श्री राम कृष्ण गुप्ता, उप निरीक्षक ने अदम्य वीरता, साहस एवं उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

यह पदक, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4(i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिया जा रहा है तथा फलस्वरूप नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 22.6.1996 से दिया जाएगा।

(बरूण मित्रा)

निदेशक

स0 129 - प्रेज/2003-राष्ट्रपति, छत्तीसगढ़ पुलिस के निम्नलिखित अधिकारी को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:-

अधिकारी का नाम और रैंक

श्री भगवत प्रसाद राजभानु,

एस.डी.ओ. पुलिस

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए पदक प्रदान किया गया:

नक्सलवादियों की गुप्त रूप से आयोजित गतिविधियों के बारे में सूचना प्राप्त होने पर 16.3.2002 को पुलिस अधीक्षक बलरामपुर द्वारा एक अभियान की तैयारी की गई। इस अभियान की पूरी जिम्मेवारी श्री बी.पी. राजभानु, एस.डी.ओ.पी. रामानुजगंज को सौंपी गई। सूचना के अनुसार पुलिस टीम ने नक्सलवादियों की तलाश की और पुलिस स्टेशन चांदू के गांव जलबोधा में उग्रवादी ग्रुप की हलचल का पता लगाने में कामयाब रहे। श्री राजभानु के नेतृत्व में पुलिस दल युक्तिपूर्ण तरीके से गांव के आबादी कठिन क्षेत्र को घेरने में सफल रहे और उग्रवादियों के ध्यान में आए बगैर अगम्य एवं ऊबड़-खाबड़ क्षेत्र को पार कर गए। अचानक पुलिस दल को नक्सलवादियों द्वारा तैनात दो चौकीदारों ने देख लिया। उन्होंने पुलिस दल पर भारी गोलीबारी कर दी। श्री राजभानु ने उग्रवादियों को आत्मसमर्पण करने को कहा। इसके बावजूद वे निरन्तर गोलीबारी करते रहे। इस पर एस.डी.ओ.पी. रामानुजगंज ने अपने दल को आत्मरक्षा में गोलीबारी करने का आदेश दिया। लगभग 30 मिनट तक भारी गोलीबारी हुई। अत्यधिक सूझबूझ के साथ उन्होंने न केवल अपने कर्मियों की अपितु स्वयं का भारी गोलीबारी के बीच जोखिम में डालते हुए गांव वालों के जान और माल की भी सुरक्षा सुनिश्चित की। उन्होंने स्वयं नक्सलवादियों की गोलीबारी का सामना करने का जोखिम उठाया। नाजुक स्थिति और बड़ी संख्या में उग्रवादियों से अविचलित श्री राजभानु ने विरोधियों की पोजीशन को अस्थिर करने के लिए एक अभियान चलाने का निर्णय लिया। वे अपनी पोजीशन से उठे और अपनी सुरक्षा की परवाह किए बिना मुठभेड़ के लिए आगे बढ़े। श्री राजभानु ने अपनी एक 47 राइफल से नक्सलवादियों पर गोली चलाकर एक नक्सली को मार गिराया। इससे अन्य उग्रवादी घटना स्थल से भागने पर मजबूर हो गए। श्री राजभानु ने उनका पीछा किया। मारे गए उग्रवादी की पहचान रंजीत उर्फ सुरेश उर्फ राजेश के रूप में हुई। एक .315 बोर राइफल 13 कारतूसों के साथ, दो 12 बोर डबल बैरल गन (विदेशी निर्मित), दो 12 बोर सिंगल बैरल गन, एक .315 बोर राइफल और कुछ बम, मैगजीन, कपड़े बरामद किए गए। इस दल की गतिविधियों में 10 अन्य अपराध जैसे हत्या, डकैती, आगजनी और पुलिस पर प्राणघातक हमला शामिल है।

मुठभेड़ में श्री भगवत प्रसाद राजभानु, एस.डी.ओ.पी. ने अदम्य वीरता, साहस एवं उच्चकोटि की निष्ठा का परिचय दिया।

पुलिस पदक नियमावली के नियम 4(i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिया जा रहा है तथा फलस्वरूप उग्रवादों के विरोध में विशेष भूमिका भी दिनांक 16 मार्च, 2002 से दिया जाएगा।

(वरुणा मित्रा)

निदेशक

सं० 130 - प्रेज/2003-राष्ट्रपति, छत्तीसगढ़ पुलिस के निम्नलिखित अधिकारी को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:-

अधिकारी का नाम और रैंक

श्री सन्त कुमार पासवान, भा.पु.से.

पुलिस महानिरीक्षक

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए पदक प्रदान किया गया:

यह सूचना प्राप्त होने पर कि कुल्हाड़ियों, धनुष और बाणों, लाठियों और भालों से लैस 500 उपद्रवियों की उन्मत्त भीड़ द्वारा पुलिस पार्टी और सब डिवीजनल मजिस्ट्रेट को घेर लिया है और उन पर हमला किया जा रहा है और उनकी जान को अत्यधिक खतरा है, श्री एस.के. पासवान, पुलिस महानिरीक्षक बस्तर रैंज एक निरीक्षक और 20 कांस्टेबलों के साथ घटना स्थल को रवाना हुए। उपद्रवियों ने श्री पासवान पर हमला कर दिया और उनकी कार को क्षति पहुंचाई। श्री पासवान की पीठ पर लाठियों के कई प्रहार हुए, दांयी कनपटी पर पत्थर लगा और एक तीर से गहरी चोट पहुंची लेकिन इनकी दांयी आंख बाल-बाल बच गई। निर्भीक होकर और भीड़ के हिंसक हमले की परवाह न करते हुए, श्री पासवान ने मात्र 5 कांस्टेबलों के साथ भीड़ पर हमला बोल दिया और घिरे हुए घायल अपर पुलिस अधीक्षक, सब डिवीजनल मजिस्ट्रेट और चार कांस्टेबलों को उनके शिकंजे से छुड़ा लिया। इस प्रकार श्री पासवान ने अपना जीवन जोखिम में डालकर और असाधारण तथा अनुकरणीय पराक्रम, अदम्य साहस और कर्तव्यपरायणता का परिचय देते हुए छह बहुमूल्य प्राणों की रक्षा की। कार्रवाई के पश्चात घटना स्थल से 52 लाठियां, 4 कुल्हाड़ियां, 2 धनुष, 4 तीर, 450 पत्थर के टुकड़े, 63 साइकिलें, टेलीफोन का एक खम्भा और चावल के एक थैले में कांच के टुकड़े बरामद किए गए।

इस मुठभेड़ में, श्री सन्त कुमार पासवान, भा.पु.से., पुलिस महानिरीक्षक ने अदम्य वीरता, साहस एवं उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

यह पदक, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4(i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिया जा रहा है तथा फलस्वरूप नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 10 मार्च, 2002 से दिया जाएगा।

(बरूण मित्रा)

निदेशक

सं0 131 - प्रेज/2003-राष्ट्रपति, दिल्ली पुलिस के निम्नलिखित अधिकारी को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:-

अधिकारी का नाम और रैंक

श्री एच.पी.एस. चीमा
सहायक पुलिस आयुक्त

उन सेवाओं का विवरण जिन्हें के लिए पदक प्रदान किया गया:

17.6.2001 को अमित गोगिया पुत्र सुनील गोगिया, दरियागंज, दिल्ली को विकास पुरी क्षेत्र से उस समय अगुवा कर लिया गया जब वे एक समारोह में भाग लेने जा रहे थे और उन्हें अपहरणकर्त्ताओं द्वारा एक अज्ञात स्थान पर ले जाया गया। अपहरणकर्त्ताओं ने 5 करोड़ रुपये की फिरोती की मांग की। श्री एम.एस. उपाध्याय, पुलिस उपायुक्त/अपराध शाखा को इस अपहरण की सूचना मिली यद्यपि पीड़ित व्यक्ति के परिवार वाले मामले की सूचना पुलिस को नहीं देना चाहते थे। पुलिस उपायुक्त/अपराध शाखा ने अपने पर्यवेक्षण में एक विशेष टीम का गठन किया और इस अपहरण के संबंध में सूचना एकत्रित करना प्रारम्भ किया। 22.6.2001 को, गुप्त सूचना प्राप्त हुई कि एक कुख्यात अपराधी, ब्रह्म प्रकाश और उसके सहायगी नौएडा में पीड़ित के रिश्तेदारों से फिरोती की रकम वसूलने के लिए इकट्ठे होंगे। पुलिस उपायुक्त/अपराध के नेतृत्व में लूट खसोट-रोधी और लूटपाट-रोधी कक्ष की एक संयुक्त टीम को बायरलेस सेट के साथ पूर्ण रूप से सज्जित छह उप-यूनिटों में विभाजित किया गया तथा नौएडा और पूर्वी दिल्ली क्षेत्र के सामरिक स्थानों पर लगाया गया। लगभग 3.45 बजे अपराह्न में एक वाहन सदेहास्यद परिस्थितियों में पीड़ित व्यक्ति के पिता श्री सुनील गोगिया की फैक्टरी नं. बी-135, सैक्टर-IV, नौएडा, के आसपास चलते देखा गया। इस वाहन को रोका गया। अचानक दो आततायी कार से बाहर आए और बचकर भागने का प्रयास करने लगे। अपराध शाखा के अधिकारियों ने साहसपूर्वक अपराधियों का सामना किया और इससे पूर्व की वह अपने हथियार निकालते तुरंत कार्रवाई करके उन्हें दबोच लिया। इन व्यक्तियों की पहचान जितेन्द्र उर्फ जीतू, निवासी कृष्णा पार्क, पश्चिम दिल्ली और अजित सिंह, निवासी दादरी (उत्तर प्रदेश) दोनों ब्रह्म प्रकाश के सहायियों के रूप में की गई। दोनों से पूछताछ करने पर पता चला कि अपहरण पीड़ित, अमित गोगिया को प्रथम तल बी-49, घरोली डेयरी, जो एक स्लम क्षेत्र है, में बंधक बना कर रखा गया है। तत्काल उस मकान की पहचान कर ली गई। पुलिस उपायुक्त/अपराध ने सभी स्टाफ को ब्रीफ किया और श्री ईश्वर सिंह, सहायक पुलिस आयुक्त और श्री एच.पी.एस. चीमा, सहायक पुलिस आयुक्त के नेतृत्व में एक धावा दल बनाया गया जिन्हें पीड़ित व्यक्ति श्री अमित गोगिया को बचाने के लिए उपयुक्त मकान के प्रथम तल पर हमला करने के निदेश दिए गए और शेष स्टाफ को मकान की घेराबंदी करने के निदेश दिए गए। यह एक कठिन अभियान था क्योंकि प्रथम तल पर संकरी सीढ़ियों से होकर ही पहुंचा जा सकता था और प्रकट हो जाने का खतरा अधिक था। जैसे ही कुछ पुलिस कर्मी दरवाजे पर पहुंचे, तो दरवाजा अंदर से बंद पाया। पुलिस दल ने पहले तो दरवाजे खुलवाने का प्रयास किया परन्तु मकान के अंदर से कोई जवाब न मिलने पर अन्दर से गोलियों को बौछार की उम्मीद करते हुए दरवाजे को धकेलते और तोड़ते हुए बलपूर्वक अन्दर प्रवेश किया। निरीक्षक ईश्वर सिंह और निरीक्षक राजेन्द्र बक्शी सहित दल के सदस्य अपनी जान की परवाह न करते हुए अन्दर घुस गए। अपराधियों द्वारा उन पर अचानक हमला किया गया और गोलियों की बौछार की गई। गोलियों की बौछार होने पर वे झुक गए और आत्मरक्षा में गोलियां चलाई। अपराधी दो कमरों से पुलिस दल पर गोलियां चला रहे थे। धावा बोलने वाले दल के

सदस्यों ने प्रथम और द्वितीय कमरे में प्रवेश किया। अपराधियों और पुलिस के बीच लयभंग पांच मिनट तक गोलियाँ चलती रही। इस गोलीबारी में ब्रह्म प्रकाश मारा गया और उसके तीन साथी घायल हो गए। पीड़ित व्यक्ति अभित गोंगिया, जिन्हें अपराधियों ने एक छोटे से कमरे में बंधक बनाकर रखा था, को पुलिस दल द्वारा साहसपूर्ण कार्रवाई करके बिना किसी चोट के बचा लिया गया। श्री एम.एस. उपाध्याय, पुलिस उपायुक्त पूरी कार्रवाई के दौरान घटना स्थल पर ही मौजूद थे और इन्होंने पूरे अभियान का व्यक्तिगत रूप से पर्यवेक्षण किया। सहायक पुलिस आयुक्त ईश्वर सिंह ने अपनी पिस्तौल से एक गोली चलाई और सहायक पुलिस आयुक्त एच.पी.एस. चोपड़ा ने भी एक गोली दुर्दान्त अपराधियों को निष्क्रिय बनाने के लिए चलाई। दोनों सहायक पुलिस आयुक्तों ने पूरे अभियान में मुख्य भूमिका निभाई। जिन्दा और खाली कारतूस के साथ .30 बोर की तीन चीनी माउजर और एक .9 एम.एम. बरेटा पिस्तौल अभियुक्त व्यक्तियों, जो अपहरण और लूट खसोट सहित 14 घृणित अपराधों में सलिप्त थे, से बरामद किए गए।

इस मुठभेड़ में, श्री एच.पी.एस. चोपड़ा, सहायक पुलिस आयुक्त, ने अदम्य वीरता, साहस एवं उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

यह पदक, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4(i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिया जा रहा है तथा फलस्वरूप नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 22 जून, 2001 से दिया जाएगा।

अ. 2. व. 1. 12/11/03
(बरूण मित्रा)
निदेशक

सं० 132 - प्रेज/2003-राष्ट्रपति, दिल्ली पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए राष्ट्रपति का पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:-

अधिकारियों के नाम और रैंक

- सर्व/श्री
1. राजबीर सिंह
सहायक पुलिस आयुक्त, विशेष प्रकोष्ठ
 2. मोहन चन्द शर्मा
निरीक्षक (सं. डी-1/842)
 3. बद्रीश दत्त
उप निरीक्षक, विशेष प्रकोष्ठ (सं.डी-3148)
 4. शरत कोहली
उप निरीक्षक, विशेष प्रकोष्ठ (सं.डी-1101)

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए पदक प्रदान किया गया:

14.3.2001 को संयुक्त अरब अमीरात में भारतीय दूतावास के माध्यम से केन्द्रीय जांच ब्यूरो मुख्यालय, नई दिल्ली को अबूधाबी, संयुक्त अरब अमीरात में रहने वाले एक अनिवासी भारतीय श्री शेक्कत सिद्दीकी के अपहरण के बारे में एक फैक्स संदेश प्राप्त हुआ। श्री सिद्दीकी कारोबार के सिलसिले में भारत आए थे और अपहरणकर्ताओं ने उनकी मुक्ति के लिए दस लाख यू.एस. डॉलर फिरौती के रूप में मांगे थे। केन्द्रीय जांच ब्यूरो द्वारा मामला दर्ज किया गया। केन्द्रीय जांच ब्यूरो और दिल्ली पुलिस के विशेष प्रकोष्ठ की एक संयुक्त टीम गठित की गई। 18.3.2001 को इस टीम को पता चला कि श्री शेक्कत सिद्दीकी को सर्वप्रिया विहार, दिल्ली में बंधक बना कर रखा गया है। सहायक पुलिस आयुक्त राजबीर सिंह के नेतृत्व में पुलिस टीम को छह पार्टियों में विभाजित किया गया। प्रत्येक पार्टी चौकसी के लिए मकान के सामने ओर पीछे सड़क पर, भू-तल और छत पर तैनात की गई जबकि एक पार्टी को द्वितीय तल पर फ्लैट पर छापा मारना था। लगभग 4.30 बजे अपराह्न केन्द्रीय जांच ब्यूरो और दिल्ली पुलिस के विशेष प्रकोष्ठ की एक संयुक्त टीम मकान सं. 12/22, सर्वप्रिया विहार पहुंची और चारों तरफ से मकान को घेर लिया। लगभग 5 बजे अपराह्न केन्द्रीय जांच ब्यूरो के अधिकारियों ने मकान के द्वितीय तल पर सामने के दरवाजे पर दस्तक दी, परन्तु केन्द्रीय जांच ब्यूरो के अधिकारियों द्वारा अपनी पहचान बताने के बावजूद भी दरवाजा नहीं खुला। केन्द्रीय जांच ब्यूरो के अधिकारी स्थल से चले गए और उनकी जगह निरीक्षक मोहन चंद शर्मा और उप निरीक्षक बद्रीश दत्त सहित सहायक पुलिस आयुक्त राजबीर सिंह के नेतृत्व में धावा दल ने ले ली। जैसे ही निरीक्षक मोहन चंद शर्मा और उप निरीक्षक बद्रीश दत्त ने धक्का दे कर दरवाजा तोड़ा, तो अंदर से उन पर गोलियों को बौछार हुई। वह दोनों बाल-बाल बचे। सहायक पुलिस आयुक्त राजबीर सिंह, निरीक्षक मोहन चंद शर्मा और उप निरीक्षक बद्रीश दत्त ने तुरंत गोलियों का जवाब दिया और अपनी जान की परवाह न करते हुए श्री शेक्कत सिद्दीकी की सुरक्षित रिहाई के उद्देश्य से मकान में घुस गए। उन्होंने उस स्थान को पहुंचने वाले गलियारे को पार किया जहां से अभियुक्त व्यक्ति गोलियां चला रहे थे और उनका सामना किया। गिराह में से एक बदमाश, जो पुलिस पार्टी पर अधाधुध गोलीबारी कर रहा था, एक कमरे के अंदर भागा, जबकि उनमें से दो, जिनमें से एक लगातार गोलीबारी

करता रहा शॉफ्ट के अंदर कूद गए। तत्काल, सहायक पुलिस आयुक्त राजबीर सिंह ने उप निरीक्षक शरत कोहली के नेतृत्व में भूतल में तैनात दूसरी पार्टी को सतर्क कर दिया। दूसरे तल पर, भारी मात्रा में हथियारों से लैस अन्डरवर्ल्ड गैंगस्टर, बाद में जिसकी पहचान वीरेन्द्र पंत उर्फ छोटू के रूप में हुई, ने एक कमरे के स्नानगृह में मोर्चा संभाल लिया और पुलिस पर गोलीबारी जारी रखी। वीरेन्द्र पंत द्वारा की जा रही भारी गोलीबारी के बावजूद, सहायक पुलिस आयुक्त राजबीर सिंह, निरीक्षक मोहन चन्द शर्मा और उप निरीक्षक बद्रोश दत्त, विचलित हुए बिना गोलीबारी का जवाब देते रहे। साहस और बहादुरी का उदाहरण पेश करते हुए, वह वीरेन्द्र पंत को निष्क्रिय करने में सफल हुए और श्री थेक्कत सिद्दीकी को अपहरणकर्ताओं के चुंगल से बचा लिया। साथ ही साथ गिरोह के बदमाशों में से एक, जो भूतल पर कूद गया था, ने बचकर भाग निकलने का रास्ता बनाने हेतु उप निरीक्षक शरत कोहली के नेतृत्व वाली पुलिस टीम पर गोलीबारी प्रारम्भ कर दी। अपने प्राणों को जोखिम में डालते हुए उप निरीक्षक शरत कोहली ने गोलीबारी का जवाब दिया और उनका रास्ता रोक लिया तथा संजय खन्ना उर्फ चंकी, अपराध जगत के दुर्दान्त गैंगस्टर और उसके सहयोगी सुनील नाथनी को मार गिराया। वीरता की कार्यवाही स्थल से निम्नलिखित चीजें बरामद की गई :-

- (क) 5 खाली कारतूस और 1 जिन्दा कारतूस के साथ एक .38 रिवाल्वर
- (ख) एक मैगजीन में दो जिन्दा कारतूस और एक खाली मैगजीन के साथ एक 9 एम.एम. पिस्तौल
- (ग) ए.के.-47 के 14 प्रयोग किए गए कारतूस
- (घ) 9 एम.एम. के 43 प्रयोग किए गए कारतूस
- (ङ) 4 प्रयोग किए गए .38 के विशेष कारतूस
- (च) एक सैटेलाइट फोन
- (छ) मोबाइल फोन
- (ज) अपहरण में प्रयोग की गई एक मारुति एस्टीम

इस मुठभेड़ में, सर्व/श्री राजबीर सिंह, सहायक पुलिस आयुक्त, मोहन चन्द शर्मा, निरीक्षक, बद्रोश दत्त, उप निरीक्षक और शरत कोहली, उप निरीक्षक ने अदम्य वीरता, साहस एवं उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पदक, राष्ट्रपति का पुलिस पदक नियमावली के नियम 4(i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 18 मार्च, 2001 से दिया जाएगा।

(बरूण मित्रा)

निदेशक

सं० 133 - प्रेज/2003-राष्ट्रपति, गुजरात पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए राष्ट्रपति का पुलिस पदक/पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:-

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

- | | |
|--|--|
| 1. आर.बी. ब्रह्मभट्ट, भा.पु.से. पुलिस अधीक्षक, सी.आई.डी.(क्राइम) | (वीरता के लिए राष्ट्रपति का पुलिस पदक) |
| 2. एस.आर. यादव, ए.पी.आई. | (वीरता के लिए पुलिस पदक) |
| 3. जयन्तीभाई के. जादव, सशस्त्र सहायक उप निरीक्षक | (वीरता के लिए पुलिस पदक) |
| 4. एस.एम. यादव, ए.एच.सी. | (वीरता के लिए पुलिस पदक) |
| 5. हरीराम छोटूराम अहीर, ए.एच.सी. | (वीरता के लिए पुलिस पदक) |
| 6. आर.बी. पटेल, ए.पी.सी. | (वीरता के लिए पुलिस पदक) |
| 7. जी.बी. रायवा, ए.पी.सी. | (वीरता के लिए पुलिस पदक) |
| 8. डी.डी. बालत, ए.पी.सी. | (वीरता के लिए पुलिस पदक) |
| 9. श्री ए.एल. गमेटी, ए.पी.सी. (मरणोपरांत) | (वीरता के लिए राष्ट्रपति का पुलिस पदक) |
| 10. श्री ए.एच. उनादजम, ए.पी.सी. (मरणोपरांत) | (वीरता के लिए राष्ट्रपति का पुलिस पदक) |

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए पदक प्रदान किया गया:

24 सितम्बर, 2002 को उग्रवादियों ने गांधी नगर में अक्षरधाम स्वामिनारायण मंदिर पर हमला किया। पुलिस महानिदेशक, श्री मणिराम, अपर पुलिस महानिदेशक, श्री वी.वी. राबरी, विशेष पुलिस महानिरीक्षक के साथ घटना स्थल पर गए। पुलिस महानिदेशक ने वहां पर उपस्थित अधिकारियों से घटना की जानकारी लेने के पश्चात तत्काल स्थिति का चार्ज लिया। मंदिर परिसर के अन्दर 400 से अधिक भक्त/दर्शनार्थी फंसे पड़े थे और उग्रवादी अंधाधुंध गोलीबारी तथा ग्रेनेड से हमला कर रहे थे जिससे बड़ी संख्या में लोग मारे गए और घायल हो गए थे। श्री वी.वी. राबरी, विशेष पुलिस महानिरीक्षक और श्री आर.बी. ब्रह्मभट्ट, पुलिस अधीक्षक, सी.आई.डी.(अपराध) ने चुनिन्दा अधिकारियों और कर्मचारियों की सहायता से बचाव कार्य प्रारम्भ कर दिया तथा लगभग 400 बहुमूल्य प्राणों को बचा लिया। श्री ब्रह्मभट्ट ने परिसर के भीतर फंसे दर्शनार्थियों को सुरक्षा कवर उपलब्ध कराया और बिना कोई जान गंवाए अथवा क्षति पहुंचे उनका स्वयं नेतृत्व करते हुए उन्हें सुरक्षित बाहर निकाल लिया। इससे उग्रवादी उग्र हो गए और उन्होंने उन लोगों पर, मंदिर परिसर में सचिवालय हाल को छत के ऊपर गुम्बद के पीछे आड़ लेकर अंधाधुंध गोलीबारी प्रारम्भ कर दी, जिन्हें बचाया जा रहा था। इससे उग्रवादियों के छिपने के स्थान को तलाशने में मदद मिली। पुलिस महानिदेशक ने तब आतंकवादियों पर प्रति आक्रमण करने के लिए भेजे जाने वाले राज्य पुलिस के 7 कमाण्डो को लेकर एक धावा दल का गठन किया। श्री वी.वी. राबरी फिर से श्री ब्रह्मभट्ट के साथ धावा पार्टी का नेतृत्व करने के लिए स्वेच्छा से आगे आए। वे धावा दल को उस स्थान की ओर ले गए जहां से उग्रवादियों द्वारा गोलीबारी की जा रही थी। ये पुलिस कार्मिक सीढ़ियों के जरिए खुली छत पर चढ़ गए और इस प्रक्रिया के दौरान उन्होंने भारी जोखिम उठाया। एक उग्रवादी बाहर आया और अपनी ए.के.-56 से धावा पार्टी पर गोलीबारी प्रारम्भ कर दी परन्तु श्री राबरी और उनकी पार्टी की उग्रवादियों के साथ भीषण मुठभेड़ हुई। कुछ मिनटों के पश्चात दोनों उग्रवादी बाहर आए और धावा पार्टी पर गोलीबारी की, जिसका जवाब धावा पार्टी ने दिया। इसके पश्चात, एक उग्रवादी बाहर

निकल और श्री राबरी को निशाना बनाते हुए 2 गोलीयां चलाई। तथापि, राबरी और उनके दल ने काफी समय तक हमला जारी रखा, जिससे उग्रवादियों को अपने आश्रय के स्थान पर छुपे रहने के लिए मजबूर होना पड़ा और उन्हें बचकर निकल भागने से भी रोके रखा। सर्व/श्री एस.आर. यादव, सशस्त्र पुलिस निरीक्षक, जयन्ती भाई के. जादव, सशस्त्र सहायक उप निरीक्षक, एस.एम. यादव सशस्त्र डैड कांस्टेबल, एच.सी. अहीर, सशस्त्र डैड कांस्टेबल, आर.बी. पटेल, सशस्त्र कांस्टेबल, जी.बी. रायवा, कांस्टेबल और डी.डी. बलात् सशस्त्र कांस्टेबल भी सर्व/श्री राबरी और ब्रह्मभट्ट के नेतृत्व वाले धावा दल के सदस्य थे। सभी धावा टीम सदस्य मंदिर परिसर की छत पर चढ़ गए और उग्रवादियों को उलझाए रखा जो उस समय छत पर थे। थोड़ी देर हुई गोलीबारी के पश्चात दो उग्रवादी नीचे उतर गए और सच्चिदानंद हाल के क्षेत्र में छिप गए। उग्रवादी जब नीचे उतरे तो उन्होंने कमाण्डो टीम, जो सच्चिदानंद हाल के बिल्कुल नजदीक आइ लिए हुए थी, पर गोलीबारी प्रारम्भ कर दी। यह आशंका थी कि उग्रवादी मंदिर के पिछवाड़े से बचकर भाग सकते हैं। श्री प्रमोद कुमार, विशेष पुलिस महानिरीक्षक, गांधी नगर रेंज ने पुलिस निरीक्षक एल.वी. तोलिया, गांधीनगर के नेतृत्व में एस.आर.पी.एफ. के जवानों की एक टीम मंदिर परिसर के पिछले भाग, जहां गुप अंधेरा था, को कवर करने के लिए भेजी। जब यह टीम पिछले हिस्से की तरफ जा रही थी तो उग्रवादियों, जो इमारत के एक कोने में शौचघर में छुपे हुए थे, ने पुलिस पार्टी पर ग्रेनेड फेंका। श्री अल्लारखा एच उनादजम ने असाधारण साहस का परिचय देते हुए और अपनी जान को जोखिम में डाल कर उनकी तरफ आगे बढ़ने का प्रयास किया। उग्रवादियों द्वारा की गई गोलीयों की बौछार उन्हें लगी और इसके परिणामस्वरूप जख्मों के कारण उनके प्राण चले गए। जबकि एक टीम छत के ऊपर चली गई, श्री ए.एल. गमेटी सहित कमाण्डो की दूसरी टीम सच्चिदानंद हाल से लम्बे खुले पार्क में झाड़ियों के पीछे रेंगते हुए गए। उग्रवादियों, जिन्हें नीचे उतरने के लिए मजबूर किया गया था, ने कमाण्डो टीम को अपने बिल्कुल करीब देखा। उग्रवादियों ने तत्काल कमाण्डो टीम पर गोलीबारी प्रारम्भ कर दी। श्री गमेटी ने गोलीबारी का जवाब दिया परन्तु उग्रवादियों द्वारा चलाई गई गोली आकर उन्हें लगी। श्री गमेटी घटनास्थल पर ही मारे गए। सर्व/श्री डी.डी. बलात्, एस.आर. यादव, जे.के. जादव, एस.एम. यादव और एच.सी. यादव और श्री आर.बी. पटेल भी टीम के सदस्यों के साथ खुली छत पर चढ़ गए और साइड की दीवार, जिसके पीछे उग्रवादी छुपे हुए थे, के साथ आड़ ले ली। हालांकि, जोखिम के बारे में जानते हुए भी वे उग्रवादियों की तरफ बढ़ते रहे। उग्रवादियों ने गोलीबारी प्रारम्भ कर दी परन्तु टीम ने साहस नहीं खोया और निडरता से उग्रवादियों की तरफ गोलीबारी जारी रखी जिसके परिणामस्वरूप उग्रवादियों को पीछे हटने पर मजबूर होना पड़ा। गोलीबारी के दौरान श्री आर.बी. पटेल की बायां जांघ गोली लगने से जख्मी हो गई। गम्भीर रूप से घायल होने के बावजूद, वह साहसपूर्वक उग्रवादियों की तरफ गोली चलाते रहे। उग्रवादियों और पुलिस के बीच गोलीबारी/हमला जारी रहा और लगभग 22.30 बजे श्री मणिराम, अतिरिक्त पुलिस महानिदेशक और श्री आर.बी. ब्रह्मभट्ट और डी.पी. चुडासमा, पी.एस.आई. तथा पुलिस और एस.आर.पी. स्टाफ मंदिर के गेट सं. 2 के पश्चिम की तरफ घायल पुलिस कार्मिकों को बचाने के लिए गए। उग्रवादियों ने पुलिस पार्टी की तरफ गोलीबारी प्रारम्भ कर दी, जिससे श्री ब्रह्मभट्ट के बाएं हाथ पर गोली से चोट लगी तथा उनके साथ पुलिस स्टाफ और पी.एस.आई. को भी चोटें आईं। घायलों को इलाज के लिए अस्पताल ले जाया गया और कुमक की सहायता से मंदिर का सभी तरफ से घेरा और मजबूत किया गया। उग्रवादियों को बार-बार समर्पण करने के लिए कहा गया परन्तु वे पुलिस पर लगातार गोलीबारी करते रहे। गुजरात पुलिस कार्मिकों ने उग्रवादियों की तरफ लगातार गोलीबारी जारी रखी जिसके परिणामस्वरूप वे परिसर से बचकर नहीं भाग सके। लगभग 23.15 बजे, एन.एस.जी. टीम गुजरात पुलिस की सहायता के लिए पहुंची। पुलिस महानिदेशक और अन्य वरिष्ठ अधिकारियों ने एन.एस.जी. टीम को ब्रीफ किया, जिन्होंने कमान सम्भाल ली और आपरेशन चलाया।

इस मुठभेड़ में, सर्व/श्री आर.बी. ब्रह्मभट्ट, भा.पु.से., पुलिस अधीक्षक, एस.आर. यादव, ए.पी.आई., जयन्ती भाई के. जादव, सशस्त्र सहायक उप निरीक्षक, एस.एम. यादव, ए.एच.सी., हरिराम छोटाराम अहीर, ए.एच.सी., आर.बी. पटेल, ए.पी.सी. जी.बी. रायवा, ए.पी.सी., डी.डी. बलात्, ए.पी.सी., (दिवंगत) श्री ए.एल. गमेटी, ए.पी.सी. और (दिवंगत) श्री ए.एच. उनादजम, ए.पी.सी. ने अदम्य वीरता, साहस एवं उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

वे पदक, राष्ट्रपति के पुलिस पदक/पुलिस पदक नियमावली के नियम 4(i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 24 सितम्बर, 2002 से दिया जाएगा।

(ब.रूण मित्रा)
(ब.रूण मित्रा)
निदेशक

सं० 134 - प्रेज/2003-राष्ट्रपति, हरियाणा पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:-

अधिकारियों के नाम और रैंक

- सर्व/श्री
1. बदन सिंह, निरीक्षक
 2. अशोक कुमार, कांस्टेबल

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए पदक प्रदान किया गया:

8.8.2002 को निरीक्षक बदन सिंह को एक सूचना प्राप्त हुई कि एक दुर्दान्त अपराधी राजेश, जिसकी पुलिस स्टेशन सदर पानीपत में भा.द.सं. क्री. धारा 364/302/201/120-बी, के अंतर्गत दर्ज प्रथम सूचना रिपोर्ट सं. 38/02 के मामले में और विभिन्न जिलों में दर्ज अन्य 23 से ज्यादा मामलों में भी तलाश है, को अपने साथियों के साथ पेहोवा, कुरुक्षेत्र और धड (जिला कैथल) के क्षेत्रों में देखा गया है। सूचना प्राप्त होने पर, निरीक्षक बदन सिंह अपने साथी पुलिस अधिकारियों के साथ कुरुक्षेत्र, धड और पेहोवा के क्षेत्रों में कुख्यात अपराधियों की तलाश में गए। लगभग सायं 3.30 बजे, निरीक्षक बदन सिंह के नेतृत्व वाली पुलिस पार्टी पेहोवा चौक, पेहोवा पहुँची और उन्होंने स्वयं चौक पर पोजीशन ले ली। कुछ समय पश्चात, अंबाला की तरफ से आ रही एक मारुती जेन पेहोवा चौक, पेहोवा पहुँची। निरीक्षक बदन सिंह ने राजेश निवासी बाबेल, जिला पानीपत, एक कुख्यात अपराधी की मारुती जेन के चालक के रूप में पहचान कर ली, जिसके साथ उसके दो साथी भी थे। निरीक्षक बदन सिंह ने राजेश को वाहन रोकने का इशारा किया, लेकिन उसने वाहन नहीं रोका और अपने वाहन को भगा ले गया। निरीक्षक बदन सिंह ने पुलिस जप्सी में अपराधियों का पीछा किया। जब सरकारी जप्सी के चालक ने अभियुक्त के वाहन की बगल में अपना वाहन चलाकर अभियुक्त के वाहन को रोकने का प्रयास किया तो राजेश ने अपने इथियार से निरीक्षक बदन सिंह पर गोली चलाई जो उनकी बायीं बाजू में लगी और तेजी से खून बहने लगा, लेकिन निरीक्षक बदन सिंह अदम्य साहस के साथ अपनी पार्टी का नेतृत्व करते रहे। कांस्टेबल अशोक कुमार ने अपने सर्विस रिवाल्वर से गोली चलाई जो अपराधी राजेश कुमार के सिर में लगी। नजदीकी मुठभेड़ में, निरीक्षक बदन सिंह और कांस्टेबल अशोक कुमार द्वारा की गई गोलीबारी में एक और अपराधी लखविन्दर भी जख्मी हो गया। बदन सिंह ने आग्नेयास्त्रों के साथ निम्नलिखित व्यक्तियों को गिरफ्तार किया और उन्हें चिकित्सीय उपचार हेतु सरकारी अस्पताल, पेहोवा ले गए :-

1. लखविन्दर, पुत्र जोगी राम, निवासी भागल
2. विवेक, पुत्र रणबीर, निवासी कौल

निरीक्षक बदन सिंह को भी गोली से जख्मी होने के कारण अस्पताल में दाखिल किया गया। उनसे 4 जिंदा कारतूसों सहित तीन देशी पिस्तौलें बरामद की गईं।

इस मुठभेड़ में, सर्व/श्री बदन सिंह, निरीक्षक और अशोक कुमार, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस एवं उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पदक, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4(i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 8 अगस्त, 2002 से दिया जाएगा।

(बलरूप मित्रा)
निदेशक

सं० 135 - प्रेज/2003-राष्ट्रपति, जम्मू और कश्मीर पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक/वीरता के लिए पुलिस पदक का बार सहर्ष प्रदान करते हैं:-

अधिकारियों के नाम और रैंक

- (1) श्री एम ए शाह, भा०पु०से०, उप महानिरीक्षक, बारामुल्ला, जम्मू और कश्मीर (वीरता के लिए पुलिस पदक का प्रथम बार)
- (2) श्री शौकत अहमद मलिक, वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक, बारामुल्ला
- (3) श्री जंगबहादुर, एस जी कांस्टेबल (370/आई आर पी द्वितीय बटालियन)
- (4) श्री राजन कुमार रैना, कांस्टेबल (2082)/बी

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए पदक प्रदान किया गया:

2.5.2002 को एक सूचना मिली कि कुछ आतंकवादी सशस्त्र सिविलियनों और उनकी संपत्ति को लक्ष्य बनाकर बारामुल्ला शहर के सैयद करीम साहिब मोहल्ला और जलाल साहिब मोहल्ला में घूम रहे हैं। सेना और एस ओ जी/बारामुल्ला पुलिस ने तलाशी अभियान चलाने के लिए उस क्षेत्र को घेराबंदी कर ली। यह क्षेत्र भीड़-भाड़ वाला होने के कारण आतंकवादियों की गोलीबारी से जान और माल को भारी नुकसान होने की आशंका थी, श्री एम ए शाह, उप महानिरीक्षक नार्थ कश्मीर रेंज, बारामुल्ला ने श्री शौकत अहमद मलिक वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक, बारामुल्ला को साथ लिया और कांस्टेबल राजन कुमार रैना तथा एस जी कांस्टेबल जंगबहादुर के साथ तेजी से घटनास्थल की ओर रवाना हुए तथा तलाशी अभियान में शामिल हो गए। तलाशी अभियान के दौरान, एक अब्दुल वहाब गोजरी, निवासी सैयद करीम साहिब बारामुल्ला के घर में छिपे आतंकवादियों ने तलाशी दल पर भारी गोलीबारी शुरू कर दी। सिविलियनों की जान और माल की सुरक्षा सुनिश्चित करने के उद्देश्य से, आतंकवादियों को बार-बार समर्पण करने के लिए कहा गया। लेकिन आतंकवादी उस घर में छिपे रहे और तलाशी दल पर निरंतर गोलीबारी करते रहे। तथापि, सिविलियनों की मूल्यवान जान और माल की सुरक्षा के उद्देश्य से, अभियान एक योजनाबद्ध रणनीति के तहत लगभग 30 घंटे तक जारी रखा गया। आतंकवादियों द्वारा की जा रही भारी गोलीबारी के बावजूद, बलों ने उन्हें घटनास्थल से बच कर जाने नहीं दिया।

3.5.2002 को लक्षित घर की तरफ बढ़ने के दौरान, पुलिस पार्टी जिसका नेतृत्व श्री शाह, उप महानिरीक्षक बारामुल्ला कर रहे थे, और जिनकी सहायता श्री शौकत अहमद मलिक, वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक बारामुल्ला, कांस्टेबल राजन कुमार रैना और एस जी कांस्टेबल जंगबहादुर कर रहे थे, आतंकवादियों द्वारा की जा रही भारी गोलीबारी के दायरे में आ गए। आतंकवादियों ने बच कर भागकर निकलने का प्रयास भी किया और कुछ ग्रेनेड भी फेंके। श्री शाह, उप महानिरीक्षक के नेतृत्व वाली पुलिस पार्टी ने दृढ़ता से जवाबी गोलीबारी की और लक्षित घर की ओर बढ़े। यह टोम रेंगती हुई लक्षित घर की ओर बढ़ी तथा आतंकवादियों पर भारी गोलीबारी की जिसके परिणामस्वरूप वे मारे गए। तलाशी के दौरान लक्षित घर के मलबे से आतंकवादियों के पास जो हथियार थे उनके अलावा आतंकवादियों के झुलसे हुए छः शव बरामद किए गए।

मुठभेड़ स्थल से ए के राइफल (6 पूरी तरह से जली हुई), ए के मैगजीन (15 जली हुई हालत में), जली हुई यू बी जी एल (02), यू बी जी एल ग्रेनेड (2), फायर्ड केस यू बी जी एल (01), फायर्ड केस ए के 47 (41), जली हुई आर एस (2) और पॉकेट डायरी (01) बरामद की गई।

इस मुठभेड़ में, सर्वश्री एम ए शाह, भा०पु०से०, उप महानिरीक्षक, श्री शौकत अहमद मलिक, वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक, श्री जंग बहादुर, एस जी कांस्टेबल और श्री राजन कुमार रैना, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस एवं उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पदक, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4(i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 3 मई, 2002 से दिया जाएगा।

4201 मित्रा

(बरुण मित्रा)

निदेशक

सं० 136 - प्रेज/2003-राष्ट्रपति, जम्मू और कश्मीर पुलिस के निम्नलिखित अधिकारी को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:-

अधिकारी का नाम और रैंक

श्री मोहम्मद रफीक
कांस्टेबल (एस जी)

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए पदक प्रदान किया गया:

जिला रजौरी के कोटली कालाबन क्षेत्र में उग्रवादियों की उपस्थिति के बारे में रजौरी पुलिस को सूचना प्राप्त हुई । 3.2.2002 को सुरक्षा बलों के साथ एक संयुक्त तलाशी अभियान चलाया गया । एस.जी. कांस्टेबल मोहम्मद रफीक ने पुलिसकर्मियों की पार्टी के साथ अभियान में भाग लिया । स्थल पर पहुंचने पर तलाशी दल के ऊपर उग्रवादियों द्वारा गोलीबारी की गई, जिसका जवाब दिया गया । उग्रवादियों ने गोलीबारी की आड़ में स्थल से बचकर भाग निकलने का प्रयास किया । तथापि, क्षेत्र की स्थलाकृति से अवगत होने के कारण, एस.जी. कांस्टेबल और इनके कर्मियों ने बचकर भाग निकलने के रास्तों पर आड़ ले ली । एस जी कांस्टेबल श्री मोहम्मद रफीक दो में से एक उग्रवादी के साथ गुप्तगुप्त्या हो गए और उसे समाप्त कर दिया । इस मुठभेड़ में, दो विदेशी उग्रवादी मारे गए और निम्नलिखित हथियार/गोलाबारुद बरामद किया गया:

1.	ए.के.-47 राइफल	-	2 नग
2.	ए.के. मेगजीन	-	6 नग
3.	ए.के. गोला बारुद	-	180 नग
4.	चीनी ग्रेनेड	-	2 नग
5.	वायरलेस सेट (क्षतिग्रस्त दशा में)	-	1 नग

इस मुठभेड़ में, श्री मोहम्मद रफीक, एस.जी. कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस एवं उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया ।

यह पदक, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4(i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिया जा रहा है तथा फलस्वरूप नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 3 फरवरी, 2002 से दिया जाएगा ।

42/01 14/1/03
(बरूण मित्रा)
निदेशक

सं0 137 - प्रेज/2003-राष्ट्रपति, जम्मू और कश्मीर पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:-

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

- (1) दीपक कुमार, वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक, उधमपुर
- (2) बेनाम तोश, पुलिस उपाधीक्षक, उधमपुर

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए पदक प्रदान किया गया:

7 मार्च, 2002 की सायं, श्री दीपक कुमार, वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक उधमपुर ने पुलिस स्टेशन, कटरा के क्षेत्राधिकार में गांव गोबिआन के पूर्वोत्तर में त्रिकुटा पहाड़ियों की चोटी पर एक प्राकृतिक गुफा में एल ई टी गुट के पाँच कट्टर आतंकवादियों की उपस्थिति के संबंध में एक विश्वसनीय सूचना प्राप्त की। ये उग्रवादी भारी मात्रा में अधुनातन हथियारों, ग्रेनेड और गोला बारूद से लैस थे। वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक उधमपुर ने स्थानीय सी आर पी एफ यूनिट और सेना प्राधिकारियों की सहायता से इन उग्रवादियों के विरुद्ध अतिसावधानीपूर्वक एक अभियान की योजना बनाई। घोर अंधेरे में दुर्गम क्षेत्र में चलने के पश्चात, वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक, उधमपुर के नेतृत्व वाली पार्टियों ने क्षेत्र की घेराबंदी कर ली और विभिन्न संभावित दिशाओं से आतंकवादियों के बच कर निकलने को रोकने के लिए अवरोधक लगा दिए। पार्टियाँ अगले दिन के भोर की पहली किरण निकलने से पहले ही तैयार थीं। इस क्षेत्र में गुफा में जाने का केवल एक रास्ता था अर्थात् गुफा के मुहाने पर पहुँचना और आतंकवादियों के विरुद्ध आक्रमक आपरेशन चलाना। यह रास्ता पूर्णतया दुश्मन के प्रभाव क्षेत्र में था और इसलिए यह एक आत्मघाती मिशन था। अधिकारी और कर्मी, जो आतंकवादियों के विरुद्ध कार्रवाई करने के लिए स्वेच्छा से आगे आए थे, गुफा के मुहाने पर पहुँचे। अंदर छिपे हुए आतंकवादियों ने पुलिसकर्मियों पर गोलियों की बौछार कर दी और ग्रेनेड फेंके। ये लोग जमीन पर कूद गए और ढलान की तरफ पोजीशन ले ली। पुलिसकर्मियों के पास इन परिस्थितियों में कार्रवाई करने की बहुत कम गुंजाइश थी। लेकिन श्री दीपक कुमार, वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक, उधमपुर, जिन्होंने गुफा के बाईं तरफ पोजीशन ले रखी थी, भारी गोलीबारी का बहादुरी के साथ सामना करते हुए धीरे-धीरे रेंगते हुए गुफा के मुहाने की ओर आगे बढ़े। इन्होंने गुफा के मुहाने पर एक ग्रेनेड फेंका, जहाँ दो आतंकवादियों ने पोजीशन ले रखी थी और पुलिसकर्मियों पर गोलीबारी कर रहे थे, जिसके परिणामस्वरूप दो आतंकवादियों का घटनास्थल पर ही सफाया हो गया। संकट को भांपकर अन्य तीन आतंकवादी पुलिस कर्मियों पर अंधाधुंध गोलीबारी करते हुए डर कर गुफा के बाहर भागे। जब वे भाग कर गुफा के बाहर आ रहे थे और गुफा के मुहाने से लगभग 15 गज की दूरी पर थे, तभी श्री बेनाम तोश, पुलिस उपाधीक्षक ने उनमें से एक सशस्त्र आतंकवादी को पकड़ लिया तथा उससे भिड़ गए और उसे मार गिराया। शेष दो आतंकवादियों ने दो अलग-अलग शिलाखण्डों के पीछे पोजीशन ले ली और वे पुलिस कर्मियों पर गोलियाँ चला रहे थे/ग्रेनेड फेंक रहे थे। वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक ने अपनी पार्टियों को सुव्यवस्थित किया और इन दो आतंकवादियों को बच कर भागने से रोका। मुठभेड़ हुई, जो बीस मिनट तक चली जिसके परिणामस्वरूप ये दोनों उग्रवादी मारे गए। मारे गए उग्रवादियों की पहचान अबू जेल, अल्लाह रक्खा, मोहम्मद शाहिद, गुलजहर अहमद और अबू इमरान के रूप में की गई। कार्रवाई स्थल से निम्नलिखित बरामद किया गया:-

ए के श्रेणी की राइफलें (4), ए के श्रेणी की राइफल (मैगजीन) (15), ए के श्रेणी (जिंदा कारतूस) (295), पिस्तौल (1), पिस्तौल मैगजीन (2), ड्रम मैगजीन (1), वायरलेस सेट (2), राइफल ग्रेनेड्स (6), ग्रेनेड्स (9), ग्रेनेड लीवर (1), सेल चार्जर (1), पाउच (3) और खाकी वर्दी और जूते इत्यादि ।

इस मुठभेड़ में, सर्वश्री दीपक कुमार, वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक और बेनम तोश, पुलिस उपाधीक्षक ने अदम्य वीरता, साहस एवं उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया ।

ये पदक, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4(i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 8 मार्च, 2002 से दिया जाएगा ।

ब.रूप मिश्रा
(बरूप मिश्रा)
निदेशक

सं0 138 - प्रेज/2003-राष्ट्रपति, जम्मू और कश्मीर पुलिस के निम्नलिखित अधिकारी को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:-

अधिकारी का नाम और रैंक

श्री त्रिलोचन सिंह (मरणोपरांत)

एस.जी. कांस्टेबल

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए पदक प्रदान किया गया:

2.03.2001 को गम्भीर मुगलोन, पुंछ में आई आर V बटालियन/जिला पुलिस की एक पुलिस पार्टी पर उग्रवादियों द्वारा हमला किया गया और घात लगाकर किए गए हमले के प्रथम प्रयास में 14 पुलिस कार्मिक मारे गए । एस जी कांस्टेबल त्रिलोचन सिंह, V बटालियन, जो कि पुलिस पार्टी का अंग थे, अपना गोला बारूद खत्म होने तक बड़ी बहादुरी के साथ उग्रवादियों के साथ लड़ते रहे और उन्होंने अत्यधिक साहस, बहादुरी और साहसिक मुकाबले का परिचय देते हुए उग्रवादियों के साथ दो घंटे की लम्बी लड़ाई के पश्चात् अपने प्राणों का बलिदान दिया ।

इस मुठभेड़ में, (दिवंगत) श्री त्रिलोचन सिंह, एस.जी. कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस एवं उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया ।

यह पदक, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4(i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिया जा रहा है तथा फलस्वरूप नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 2 मार्च, 2001 से दिया जाएगा ।

ब.रूप मिश्रा
(बरूप मिश्रा)
निदेशक

सं० 139 - प्रेज/2003-राष्ट्रपति, जम्मू और कश्मीर पुलिस के निम्नलिखित अधिकारी को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:-

अधिकारी का नाम और रैंक

श्री वजीर मोहम्मद
कांस्टेबल

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए पदक प्रदान किया गया:

नीओसी और हस्सोते गांव में उग्रवादियों की मौजूदगी के संबंध में विशिष्ट सूचना मिलने पर, 26.12.2001 को गांव नीओसी में घेराबंदी और तलाशी अभियान चलाया गया। स्थानीय खूंखार उग्रवादी जोहन मोहम्मद के नेतृत्व में एच.एम. गुट के उग्रवादियों के एक ग्रुप ने पुलिस पार्टी पर भारी गोलीबारी शुरू कर दी। पुलिस पार्टी ने भी बहादुरी से जवाबी गोलीबारी की और गोलीबारी के दौरान कांस्टेबल वजीर मोहम्मद उच्च कोटि की प्रतिबद्धता और समर्पण भावना का प्रदर्शन करते हुए बहादुरी से लड़े और 2 उग्रवादियों का सफाया करने में कामयाब हो गए। एक एस.पी.ओ. नामतः अब्दुल रशीद सुपुत्र श्री अब्दुल रहमान, निवासी बालमाटकोट (चस्साना) ने भी उग्रवादियों के इस ग्रुप के साथ लड़ते हुए अपने जीवन का बलिदान दिया। मारे गए उग्रवादियों की पहचान रफीक सयाल, निवासी दुरु, जिला अनंतनाग और मोहम्मद शफी, निवासी कंसोली, तहसील माहौर, दोनों एच.एम. गुट के, के रूप में की गई। कार्रवाई के पश्चात एक हैंड ग्रेनेड, ए.के. श्रेणी की 4 मैगजीन, ए.के. श्रेणी के 108 राउंड, पिस्तौल के 20 राउंड, 4 राइफल ग्रेनेड बरामद किए गए।

इस मुठभेड़ में, श्री वजीर मोहम्मद, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस एवं उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

यह पदक, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4(i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिया जा रहा है तथा फलस्वरूप नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 26 दिसम्बर, 2001 से दिया जाएगा।

बलरूप मिश्रा
(बलरूप मिश्रा)
निदेशक

सं० 140 - प्रेज/2003-राष्ट्रपति, जम्मू और कश्मीर पुलिस के निम्नलिखित अधिकारी को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:-

अधिकारी का नाम और रैंक

श्री जोगिन्दर सिंह
कांस्टेबल

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए पदक प्रदान किया गया:

7/8 जून, 2002 के बीच की रात के दौरान जिला पुंछ, पुलिस स्टेशन लोरन में दोरिआन और अन्दरोई डोक में उग्रवादियों की उपस्थिति के बारे में एक विशिष्ट सूचना के आधार पर, थाना प्रभारी, पुलिस/सेना की टुकड़ी के साथ तेजी से घटनास्थल की ओर रवाना हुए। इन दोनों स्थानों के चारों तरफ एक घना जंगल है और इसके अलावा यह क्षेत्र पूर्ण रूप से झाड़ियों और जंगली घास से आच्छादित है जिससे न केवल उन्मुक्त आवाजाही में बाधा पड़ती है बल्कि आपरेशन टीम को भी अत्यधिक जोखिम उत्पन्न होता है। इस आपरेशन में इन बाधाओं और जोखिम के बावजूद, पुलिस पार्टी आगे बढ़ी और उन पर उग्रवादियों ने अचानक भारी गोलीबारी शुरू कर दी। पुलिस पार्टी ने तत्काल फोजीशन लेकर जवाबी गोलीबारी शुरू कर दी और कांस्टेबल जोगिन्दर सिंह ने न केवल उग्रवादियों की ओर बढ़ना जारी रखा बल्कि स्वयं को उग्रवादियों द्वारा फेंके जा रहे ग्रेनेडों से भी बचाया। उन्होंने साहस और अदम्य दृढ़निश्चय का परिचय दिया तथा पुलिस ने एक उग्रवादी को मारने में सफलता पाई। जिसकी पहचान बाद में पाक अधिकृत कश्मीर के अब मूस्सा, जो अलबुर्क गुट से संबंधित था, के रूप में की गई।

इस मुठभेड़ में, श्री जोगिन्दर सिंह, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस एवं उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

यह पदक, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4(i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिया जा रहा है तथा फलस्वरूप नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 7 जून, 2002 से दिया जाएगा।

बसुण मित्रा
(बसुण मित्रा)
निदेशक

सं० 141 - प्रेज/2003-राष्ट्रपति, जम्मू और कश्मीर के निम्नलिखित अधिकारी को उनकी वीरता के लिए राष्ट्रपति का पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:-

अधिकारी का नाम और रैंक

श्री मंगल सिंह,
एस जी कांस्टेबल

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए पदक प्रदान किया गया:

गांव थुब, तहसील रिआसी, उधमपुर में उग्रवादियों की मौजूदगी के संबंध में एक विशिष्ट सूचना प्राप्त होने पर, 15.5.2002 को घेराबंदी और तलाशी अभियान शुरू किया गया। पुलिस पार्टी ने उग्रवादियों की गतिविधियां देखने पर उन्हें ललकारा लेकिन उग्रवादियों ने पुलिस पार्टी पर अंधाधुंध गोलीबारी शुरू कर दी, जिस पर पुलिस कर्मियों द्वारा जवाबी गोलीबारी की गई। जब गोलीबारी चल रही थी, तब कांस्टेबल मंगल सिंह उच्च कोटि की प्रतिबद्धता और दृढ़निश्चय का परिचय देते हुए विपरीत दिशा से उग्रवादियों के छिपने के ठिकाने की तरफ आगे बढ़े और एल ई टी गुट के दो विदेशी उग्रवादियों को मारने में सफल हो गए। मारे गए उग्रवादियों की पहचान अबु गोरी और अबु हबीब उर्फ मक़बूल अहमद; दोनों एल ई टी गुट के (पाक राष्ट्रक) के रूप में की गई। घटनास्थल से 2 ए के -47 राइफल, 2 हैंड ग्रेनेड, 1 वायरलैस सेट और काफी गोला बारूद बरामद किया गया।

इस मुठभेड़ में, श्री मंगल सिंह, एस जी, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस एवं उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

यह पदक, राष्ट्रपति का पुलिस पदक नियमावली के नियम 4(i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिया जा रहा है तथा फलस्वरूप नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 15 मई, 2002 से दिया जाएगा।

ब.रू. मित्रा
(बरूण मित्रा)
निदेशक

स० 142 - प्रेज/2003-राष्ट्रपति, जम्मू और कश्मीर पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:-

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्वश्री

जसवंतसिंह कटोच, पुलिस उप अधीक्षक

गुरनंदनसिंह, कांस्टेबल

रोमेश गिरि, कांस्टेबल

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए पदक प्रदान किया गया:

12 और 13 दिसंबर, 2001 के बीच की रात को चकरस माहोर में आतंकवादियों द्वारा बहुमत समुदाय के एक उ परिवार के चार सदस्यों की हत्या कर दी गई । स्थानीय पुलिस ने आतंकवादियों को खोजने की कार्रवाई प्रारंभ कर दी । एक विशिष्ट सूचना प्राप्त होने पर श्री जसवन्तसिंह कटोच, पुलिस उपाधीक्षक ने 18.12.2001 को चरकस के सामान्य क्षेत्र में एक खोज अभियान की योजना बनाई । क्षेत्र की घेराबंदी करने के बाद पुलिस पार्टी ने छुपे हुए आतंकियों को ढूंढने के लिए अनेक दिशाओं से मलसाल वनों में खोज प्रारंभ कर दी । वहां छिपे आतंकवादियों ने पुलिस पार्टी को देखकर भारी गोलीबारी प्रारंभ कर दी । पुलिस उपाधीक्षक जसवन्तसिंह कटोच ने साजेंट कांस्टेबल रोमेश गिरि और कांस्टेबल गुरनंदन सिंह के सहयोग से गोलीबारी का जवाब दिया तथा तब तक आतंकवादियों का मुकाबला करते रहे जब तक कि जे.ई.एम. का भाड़े का एक आतंकवादी मारा नहीं गया और दूसरा आतंकवादी घायल अवस्था में गहरे जंगल में भाग नहीं गया ।

इस मुठभेड़ में, सर्वश्री जसवन्त सिंह कटोच, पुलिस उपाधीक्षक, गुरनंदनसिंह कांस्टेबल तथा रोमेश गिरि कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस एवं उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया ।

ये पदक, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4(i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 18 दिसंबर, 2001 से दिया जाएगा ।

(बलरूप मित्रा)

(बलरूप मित्रा)

निदेशक

सं० 143 - प्रेज/2003-राष्ट्रपति, जम्मू और कश्मीर पुलिस के निम्नलिखित अधिकारी को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:-

अधिकारी के नाम और रैंक

श्री नजीर अहमद
हैड कांस्टेबल

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए पदक प्रदान किया गया:

उग्रवादियों की उपस्थिति के बारे में सूचना प्राप्त होने पर 16.10.2002 को पुलिस चौकी सौजियान के कार्मिकों ने सेना के सहयोग से अंगनपथरी क्षेत्र में एक अभियान आयोजित किया। अभियान 16.10.2002 को प्रारंभ होकर 20.10.2002 को समाप्त हुआ। बलों को ऊंचे स्थान से अपनी ओर आते देखकर उग्रवादी विभिन्न दिशाओं में भागने के लिए विभिन्न दिशाओं से गोलियां चलाने लगे। हैड कांस्टेबल नजीर अहमद, जो इस क्षेत्र की स्थलाकृति से वाकिफ थे, अपना व्यावसायिक कौशल दिखाते हुए छोटे से दस्ते के साथ उग्रवादियों के छिपने के ठिकाने के पास पहुंचने में सफल हो गए। इसके बाद हुई मुठभेड़ में दो उग्रवादी मारे गए। क्षेत्र का ज्ञान होने के कारण श्री अहमद अंधेरे का लाभ उठाने में सफल रहे। कई घंटे तक चली इस मुठभेड़ में चार और उग्रवादी मारे गए। स्थल से 6 ए.के. सीरिज राइफलें, 4 पिस्तौलें, 4 यू बी जी एल, 26 ए.के. मैगजीनें, 4 पिस्तौल मैगजीनें, 37 यू.बी.जी.एल. ग्रेनेड, 12 हथगोले, 4 रेडियो सेट, 412 ह.के. गोला बारूद, 30 पिस्तौल गोला बारूद, 8000/- रु० नकद, 1000/- रु० (जाली मुद्रा नोट), 48/- रु० पाकिस्तानी मुद्रा के साथ-साथ एक सोलर उपकरण, 4 लंबे एनटेना आदि बरामद हुए।

इस मुठभेड़ में, श्री नजीर अहमद, हैड कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस एवं उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

यह पदक, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4(i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिया जा रहा है तथा फलस्वरूप नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 16 अक्टूबर, 2002 से दिया जाएगा।

०२/०१/०३
(बरूण मित्रा)
निदेशक

स0 144 - प्रेज/2003-राष्ट्रपति, जम्मू और कश्मीर पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:-

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

मोहम्मद युसुफ, एस.जी. कांस्टेबल (मरणोपरांत)

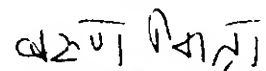
यशपाल, कांस्टेबल (मरणोपरांत)

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए पदक प्रदान किया गया:

23.3.02 को यह विशिष्ट सूचना प्राप्त होने पर कि कुछ राष्ट्र विरोधी तत्व नम्बल वन क्षेत्र में मौजूद हैं, पुलिस/एस ओ जी नफरी ने इस क्षेत्र में एक तलाशी अभियान चलाया। तलाशी अभियान के दौरान राष्ट्र विरोधी तत्वों ने सीधियों पर गोलियां चलाई जिसका पुलिस ने जवाब दिया। अपने प्राणों की परवाह किए बिना तथा अत्यधिक साहस तथा बहादुरी का परिचय देते हुए एस जी कांस्टेबल मोहम्मद युसुफ तथा कांस्टेबल यशपाल वन क्षेत्र की ओर आगे बढ़े जहां से उग्रवादी पुलिस/एस.ओ.जी. पार्टी पर निरंतर गोलीबारी कर रहे थे। वे एक उग्रवादी को मारने में सफल रहे। तथापि, झाड़ियों में छिपे अन्य उग्रवादी अंधाधुंध गोलियां चलाते रहे जिसके परिणामस्वरूप दोनों पुलिस कार्मिकों की घटनास्थल पर ही मृत्यु हो गई। बाद में एक और उग्रवादी पुलिस/एस.ओ.जी. द्वारा मार गिराया गया। मारे गए एक उग्रवादी की पहचान अबू सत्तार उर्फ अबु इमदाद पुत्र मियां अब्दुल गफूर, निवासी शेखूपुरा पाकिस्तान के रूप में हुई तथा दूसरे उग्रवादी की पहचान नहीं की जा सकी। मारे गए उग्रवादियों से दो ए.के. राइफलें, 6 ए.के. मैगजीनें, गोलाबारूद के 66 रौंद बरामद हुए।

इस मुठभेड़ में, (दिवंगत) सर्व/श्री मोहम्मद युसुफ कांस्टेबल तथा यशपाल कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस एवं उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

यह पदक, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4(i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिया जा रहा है तथा फलस्वरूप नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 23 मार्च, 2002 से दिया जाएगा।



(बरूण मिश्रा)

निदेशक

सं0 145 - प्रेज/2003-राष्ट्रपति, जम्मू और कश्मीर पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक का बार/पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:-

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

1. सईद आशिक हुसैन बुखारी, पुलिस अधीक्षक, बडगाम (वीरता के लिए पुलिस पदक का बार)
2. काका जी कौल, उप निरीक्षक, बडगाम
3. इचपाल सिंह, हैड कांस्टेबल, बडगाम

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए पदक प्रदान किया गया:

28.3.2002 को, जिला बडगाम के ग्राम रुदबग, मगम में उग्रवादियों की मौजूदगी के बारे में सूचना प्राप्त होने पर बडगाम के पुलिस अधीक्षक, सईद आशिक हुसैन बुखारी ने इस क्षेत्र में एक अभियान चलाने की योजना बनाई। जब श्री आशिक हुसैन के नेतृत्व में तलाशी पार्टी घटनास्थल पर पहुंचने को थी तो एक उग्रवादी स्थानीय मस्जिद में प्रवेश करने में सफल हो गया तथा उसने सैनिकों पर अंधाधुंध गोलीबारी करना तथा हथगोले फेंकना शुरू कर दिया। जबकि सैनिकों को उग्रवादियों को निष्क्रिय करना ही था तथा साथ ही साथ यह भी ध्यान रखना था कि मस्जिद की पवित्रता बनी रहे। अतः एक सुनियोजित अभियान चलाया जाना था। पुलिस अधीक्षक, आशिक हुसैन, उप निरीक्षक काका जी कौल तथा हैड कांस्टेबल इचपाल सिंह के साथ, घिरे हुए उग्रवादियों द्वारा की जा रही भयंकर गोलीबारी के बीच मस्जिद के गुसलखाने में प्रवेश कर गए। आमने-सामने की मुठभेड़ में अधिकारी उग्रवादियों का खात्मा करने में सफल हुए। इस अवधि के दौरान काका जी कौल ने अधिकारियों को कवरिंग फायर प्रदान की जिसमें उग्रवादियों का ध्यान बटाने में सहायता मिली। मारे गए उग्रवादी की पहचान, जे.ई.एम./एच.यू.ए. के मुदस्सर अहमद उर्फ मदना के रूप में हुई। मारे गए उग्रवादी के पास से एक ए.के. 47 राइफल, तीन ए.के. मैगजीन 41 ए.के. 47 रौंद तथा 3 यू.बी.जी.एल. हथगोले बरामद हुए।

इस मुठभेड़ में, सर्व/श्री सईद आशिक हुसैन बुखारी, पुलिस अधीक्षक, काका जी कौल, उप निरीक्षक तथा इचपाल सिंह, हैड कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस एवं उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पदक, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4(i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 28 मार्च, 2002 से दिया जाएगा।

बलरूप मित्रा

(बलरूप मित्रा)

निदेशक

सं0 146 - प्रेज/2003-राष्ट्रपति, जम्मू और कश्मीर पुलिस के निम्नलिखित अधिकारी को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:-

अधिकारी का नाम और रैंक

श्री राजेश बाली
पुलिस उप अधीक्षक

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए पदक प्रदान किया गया:

जिला बारामूला के एस.ओ.जी. द्वारा दांगी वाचा, बारामूला में हुनराह वनों में भाड़े के विदेशी सैनिकों की उपस्थिति के बारे में सूचना प्राप्त होने पर पुलिस उपाधीक्षक राजेश बाली के नेतृत्व में तथा 22 आर.आर. के सैनिकों को साथ लेकर पुलिस अधीक्षक आपरेशन बारामूला के समग्र पर्यवेक्षण में एक अभियान की योजना बनाई गई। क्षेत्र की घेराबंदी की गई तथा निर्दिष्ट क्षेत्र को लक्ष्य बनाकर पुलिस उप अधीक्षक बाली के नेतृत्व में एस.ओ.जी. पार्टी ने समीप के जंगल में झुरमुटों में तीन आतंकवादियों को देखा। उन्हें आत्मसमर्पण करने को कहा गया, परन्तु आतंकवादियों ने अंधाधुंध गोलीबारी करना तथा हथगोले फेंकना शुरू कर दिया। श्री बाली ने पुलिस पार्टी को गोलीबारी तथा अपनी आवाजाही रणनीतियों से उग्रवादियों को उलझाए रखने को कहा। श्री बाली ने अपनी जान की परवाह किए बिना तथा गोलियों की बौछार और हथगोले के धमाकों को अपने आस-पास झेलते हुए चार सौ मीटर तक आतंकवादियों का पीछा किया। इन्होंने अपनी पार्टी की कवर तथा फायर सपोर्ट का प्रयोग करते हुए एक आतंकवादी को घेर लिया तथा उसे मार डाला। भयानक मुठभेड़ के दौरान श्री बाली ने गजब का साहस दिखाते हुए एक मोर्चे से व्यापक कवर्गिंग गोलीबारी जारी रखी जिसमें इनकी पार्टी ने आतंकवादियों को घेर लिया तथा उनमें से दो आतंकवादियों को मार गिराया उनमें से एक आतंकवादी की पहचान बशीर अहमद खान पुत्र फजल अली खान, निवासी नारीबल के रूप में की गई जबकि भाड़े के अन्य विदेशी सैनिकों की पहचान नहीं की जा सकी। मुठभेड़ स्थल से 3 ए.के. राइफलें, 8 ए.के. मैगजीनें, 200 ए.के. रौद, 1 यू.बी.जी.एल. तथा 8 यू.बी.जी.एल. रौद (जिन्हें मौके पर नष्ट कर दिया गया) बरामद हुए।

इस मुठभेड़ में, श्री राजेश बाली, पुलिस उप अधीक्षक ने अदम्य वीरता, साहस एवं उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

यह पदक, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4(i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिया जा रहा है तथा फलस्वरूप नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 4.10.2002 से दिया जाएगा।

(बसुण मित्रा)
निदेशक

सं० 147 - प्रेज/2003-राष्ट्रपति, जम्मू और कश्मीर के निम्नलिखित अधिकारी को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:-

अधिकारी का नाम और रैंक

श्री अवतार सिंह,
एस जी कांस्टेबल

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए पदक प्रदान किया गया:

23 जनवरी, 2002 को जिला पुंछ के सलिआन क्षेत्र में उग्रवादियों की उपस्थिति के संबंध में सूचना मिलने पर, उग्रवादियों को पकड़ने के लिए एक संयुक्त अभियान शुरू किया गया। टुकड़ियों की गतिविधि को देखकर उग्रवादियों ने उन पर भारी गोलीबारी कर दी, जिस पर जवाबी गोलीबारी की गई। लगभग तीन घंटे तक चली इस मुठभेड़ में एक उप निरीक्षक गोलीबारी के बीच फंस गए। एस जी कांस्टेबल अवतार सिंह, जो गोलीबारी में फंसे उप निरीक्षक के काफी निकट लड़ रहे थे, अधिकारी की जान को खतरे में देख कर, उन्हें बचाने हेतु स्वेच्छा से आगे आए। श्री अवतार सिंह, कांटेदार घनी झाड़ियों में से रेंगते हुए आगे बढ़े और उग्रवादी के निकट पहुँच गए और उस पर गोलीबारी कर दी। फुर्ती से की गई इस कार्रवाई के फलस्वरूप उग्रवादी घटनास्थल पर ही मारा गया। श्री सिंह बीच में फंसे उप निरीक्षक हेतु सुरक्षित रास्ता बनाने में कामयाब हो गए और उन्हें सुरक्षित स्थान पर ले आए। श्री अवतार सिंह, ने इस मुठभेड़ में असाधारण साहस दिखाया जिसकी वजह से न केवल उप निरीक्षक की जान बची बल्कि तीन उग्रवादी भी मार गिराए गए। मुठभेड़ स्थल से 3 ए.के.-47 राइफलें, 13 ए.के. मैगजीनें और 6 हैंड ग्रेनेड (नष्ट कर दिए गए) बरामद किए गए।

इस मुठभेड़ में, श्री अवतार सिंह, एस.जी. कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस एवं उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

यह पदक, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4(i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिया जा रहा है तथा फलस्वरूप नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 23 जनवरी, 2002 से दिया जाएगा।

(बलरूप मित्रा)
निदेशक

सं० 148 - प्रेज/2003-राष्ट्रपति, जम्मू और कश्मीर पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:-

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

- (1) विजय कुमार, भा०पु०से०, पुलिस अधीक्षक, अवतिपोरा,
- (2) भूपेन्द्र सिंह, एस जी कांस्टेबल,

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए पदक प्रदान किया गया:

10 अप्रैल, 2002 को, प्रताबपोरा गांव, तहसील शोपिआन, जिला पुलवामा में एक घर में एक कट्टर उग्रवादी की उपस्थिति के संबंध में सूचना मिलने पर, श्री विजय कुमार, भा०पु०से०, पुलिस अधीक्षक अवतिपोरा, एस.ओ.जी. कर्मियों के एक छोटे से दल के साथ अवतिपोरा से घटनास्थल की ओर तेजी से बढ़े और सेना की एक प्लाटून की मदद से उस मोहल्ले की घेराबंदी कर दी जहाँ वह घर स्थित था। यह सुनिश्चित करने के पश्चात कि घेराबंदी पूरी तरह से कर दी गई है, इन्होंने अपने कर्मियों के साथ घर-घर की तलाशी लेना शुरू कर दिया। तीन घरों की तलाशी करने के पश्चात दल ने चौथे घर की ओर बढ़ना शुरू किया, जिसके दौरान घर के अंदर छिपे हुए एक अकेले उग्रवादी ने पुलिस अधीक्षक और उनके साथ के पुलिस कर्मियों को मारने के इरादे से तलाशी पार्टी पर अंधाधुंध गोलीबारी शुरू कर दी। श्री विजय कुमार, पुलिस अधीक्षक और एस जी कांस्टेबल भूपेन्द्र सिंह ने जमीन पर तत्काल पोजीशन ले ली और घर की तरफ रेंगते हुए बढ़ना शुरू किया जबकि तलाशी पार्टी के अन्य पाँच कर्मियों ने आतंकवादियों के बच कर निकल भागने से रोकने हेतु विभिन्न महत्वपूर्ण जगहों पर पोजीशन ले लीं। श्री विजय कुमार, पुलिस अधीक्षक और एस जी कांस्टेबल भूपेन्द्र सिंह, अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की परवाह किए बगैर घर के नजदीक पहुँचने में सफल हो गए और खिड़की से घर के अंदर 2 ग्रेनेड फेंके और तत्पश्चात गोलीबारी शुरू कर दी जिसके परिणामस्वरूप एक कट्टर विदेशी आतंकवादी मारा गया। मारे गए आतंकवादी की पहचान बाद में अबु हुजेफा उर्फ फरकान उर्फ सैफुल्लाह, दक्षिण कश्मीर और डोडा के डिविजनल कमांडर के रूप में की गई। वीरतापूर्ण कार्रवाई स्थल से ए.के. 47(1); ए.के. 47 मैगजीन (3), गोलाबारूद (42 राउंड), रेडियो सेट (1 क्षतिग्रस्त) बरामद किया गया।

इस मुठभेड़ में, सर्वश्री विजय कुमार, भा०पु०से०, पुलिस अधीक्षक और भूपेन्द्र सिंह, एस जी कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस एवं उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पदक, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4(i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 10 अप्रैल, 2002 से दिया जाएगा।

(बसुण मित्रा)
निदेशक

सं० 149 - प्रेज/2003-राष्ट्रपति, जम्मू और कश्मीर पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:-

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

- (1) मुकेश सिंह, भा०पु०से०, पुलिस अधीक्षक, दक्षिणी श्रीनगर
- (2) दिनेश गुप्ता, निरीक्षक
- (3) जगदेव सिंह, एस जी कांस्टेबल (मरणोपरांत)
- (4) बशीर अहमद, कांस्टेबल

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए पदक प्रदान किया गया:

23.9.2002 को इस संबंध में एक सूचना प्राप्त हुई कि एल.ई.टी. (लश्कर-ए-नैयबा) से संबंधित कुछ आतंकवादी, सरकारी पोलिटेक्निक राजबाग में स्थित अमीराकादल एसम्बली सेगमेंट, जहाँ सिविल चुनाव अधिकारियों के लगभग 400 सदस्य, अन्य 800 सुरक्षा/पुलिस अधिकारियों के साथ 24.9.2002 को अगले दिन चुनाव कराने के लिए बैलेट सामग्री प्राप्त कर रहे थे, रिटर्निंग आफिसर के शिविर मुख्यालय पर आत्मघाती हमला करने की मंशा से गोगजोबाग क्षेत्र में किसी घर में छिपे हुए हैं। के०रि०पु० बल और सीमा सुरक्षा बल से संपर्क किया गया और उस सामान्य क्षेत्र की घेराबंदी कर दी गई। घर-घर की तलाशी अभियान के पश्चात यह नोटिस किया गया कि उग्रवादी हजारी बाग में सजाद मेडिकेट्स के नाम से दवाईयों की एक दुकान के मालिक एक सजाद मलिक सुपुत्र जी.एच. रसूल के घर में छिपे हुए हैं। घर के सभी संवासियों ने घर खाली कर दिया था और वहाँ कोई भी नहीं था। घर के मालिक ने पुलिस बल को यह कहते हुए चाबी नहीं सौंपी कि पुलिस बल घर तोड़ने के लिए स्वतंत्र है। श्री मुकेश सिंह, भा०पु०से०, पुलिस अधीक्षक सिटी साऊथ, श्रीनगर के नेतृत्व वाली तलाशी पार्टी के साथ श्री मोहम्मद युसुफ पुलिस उपाधीक्षक एस.डी.पी.ओ. सदर भी थे। श्री भगवन्त सिंह, थाना प्रभारी पुलिस स्टेशन राजबाग और पुलिस कर्मियों ने मुख्य प्रवेश द्वार तोड़कर घर खोला और तलाशी ली। तीन मंजिला घर की तलाशी के दौरान, ताला लगे कमरे के भीतर से, छिपे हुए आतंकवादियों ने तलाशी पार्टी पर गोलीबारी शुरू कर दी जिसमें कांस्टेबल जगदेव सिंह गंभीर रूप से जख्मी हो गए। तथापि, उन्होंने अन्य पार्टी सदस्यों को कवरिंग फायर देते हुए जबाबी गोलीबारी को लेकिन ऐसा करते हुए वे नीचे गिर गए। श्री मुकेश सिंह, भा०पु०से०, पुलिस अधीक्षक, दक्षिणी श्रीनगर, जो इस अभियान का नेतृत्व कर रहे थे, भारी गोलीबारी की परवाह न करते हुए तब उस जगह की ओर रेंगकर बढ़े जहाँ उनका पी एस ओ जमीन पर गिरा पड़ा था। भारी गोलीबारी के बीच, मुकेश सिंह, ने अपने पी एस ओ जगदेव सिंह को उठाया और सीढ़ियों से नीचे उतर आए। इस दौरान उग्रवादी, पी एस ओ को बचाते हुए देख, बरामदे में आ गए और उनको जख्मी करने के उद्देश्य से सीढ़ियों से नीचे ग्रेनेड फेंके लेकिन श्री मुकेश सिंह, पुलिस अधीक्षक, श्री जगदेव सिंह को उठाकर घर के बाहर एक सुरक्षित जगह पर लाने में कामयाब हो गए हालांकि एस.जी. कांस्टेबल जगदेव सिंह ने घावों के कारण दम तोड़ दिया। मुठभेड़ पूरी रात जारी रही। इसी बीच, पुलिस अधीक्षक, साऊथ ने अपने कर्मियों की गिनती शुरू की और तीन पुलिस कर्मियों नामतः श्री मोहम्मद युसुफ बंध, एस डी पी ओ सदर, श्री भगवन्त सिंह, थाना प्रभारी पुलिस स्टेशन राजबाग और वायरलैस ऑपरेंटर मोहम्मद अशरफ को लापता पाया। अंदर फस गए इन पुलिस कर्मियों को बचाने हेतु पुलिस अधीक्षक साऊथ ने एक दूसरे अभियान की योजना बनायी। एक उग्रवादी को झूठी बातचीत में उलझाए रखने की दृष्टि से सिविलियन के भेष में सादे कपड़ों में एक पुलिस पार्टी को उग्रवादी के पास भेजा गया। जब वह उग्रवादी बातचीत में व्यस्त था, तभी पुलिस अधीक्षक साऊथ, के नेतृत्व वाली पुलिस पार्टी ने साथ

वाले घर की पहली मंजिल से भारी गोलीबारी करके अन्य उग्रवादी को उलझा दिया। इसी बीच, अंदर फंसे पुलिस कर्मियों को यह देख कर कि उग्रवादियों को उलझा लिया गया है, कमरे से बाहर छज्जे पर आने का मौका मिल गया जहां से वे चुपचाप बाहर निकल आने में कामयाब हो गए। बचाव अभियान के पश्चात, निरीक्षक दिनेश गुप्ता और कांस्टेबल बशीर अहमद के साथ पुलिस अधीक्षक साऊथ, जिनकी सहायता के.रि.पु. बल कर रहे थे, फिर उस घर के निकट पहुंच गए जहाँ उग्रवादी छिपे हुए थे और खिड़की से हथगोले फेंके। ग्रेनेड लगने से बचने के उद्देश्य से उग्रवादियों में से एक छत पर आ गया और फिर उसने पुलिस पार्टी पर गोलीबारी शुरू कर दी। पुलिस अधीक्षक साऊथ के नेतृत्व वाली पुलिस पार्टी ने तत्काल जवाबी कार्रवाई की और उसे घटनास्थल पर ही मार गिराया। एक अन्य उग्रवादी जो ग्रेनेड फटने से घायल हो गया था, अंत में आग लगने के कारण मारा गया और तत्पश्चात आई ई डी विस्फोट से उसके चीथड़े उड़ गए जिसे उग्रवादियों ने ई वी एम (इलेक्ट्रॉनिक वोटिंग मशीन) वितरण केन्द्र को उड़ाने के लिए रखा हुआ था। कार्रवाई के पश्चात घटनास्थल से एक ए.के. 47, तीन ए.के. मैगजीन और नष्ट किए गए 2 ग्रेनेड बरामद किए गए।

इस मुठभेड़ में, सर्व/श्री मुकेश सिंह, भा0पु0से0, पुलिस अधीक्षक, दिनेश गुप्ता, निरीक्षक, (दिवंगत) जगदेव सिंह, एस जी कांस्टेबल और बशीर अहमद, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस एवं उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पदक, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4(i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 23 सितंबर, 2002 से दिया जाएगा।

4253 11451
(बरूण मित्रा)
निदेशक

सं० 150 - प्रेज/2003-राष्ट्रपति, जम्मू और कश्मीर पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए राष्ट्रपति का पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:-

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्वश्री

- (1) तसादुक हुसैन, हैड कांस्टेबल
- (2) मोहम्मद अशरफ, हैड कांस्टेबल
- (3) गोपाल दास, कांस्टेबल

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए पदक प्रदान किया गया:

2.01.2002 को पुलिस कर्मियों/एस ओ जी कुपवाड़ा और 18 आर आर की टुकड़ियों द्वारा जेब खुरहामा के जंगलों में संयुक्त रूप से एक तलाशी अभियान चलाया गया। क्षेत्र की तलाशी के दौरान, जंगल में छिपे हुए उग्रवादियों ने तलाशी दल पर अंधाधुंध गोलीबारी शुरू कर दी। गोलीबारी का प्रभावी रूप से जवाब दिया गया जिसके परिणामस्वरूप एक मुठभेड़ शुरू हो गई। मुठभेड़ के दौरान, आतंकवादियों, जिनकी संख्या 12 थी, ने जंगल की रिज से टुकड़ियों पर भारी गोलीबारी शुरू कर दी। यह देखकर कि वहाँ जवानों की जान बचाने का कोई अवसर नहीं है, तीनों पुलिस कर्मियों नामतः हैड कांस्टेबल, तसादुक हुसैन, हैड कांस्टेबल मोहम्मद अशरफ और कांस्टेबल गोपाल दास ने स्वेच्छा से उग्रवादियों की जगह पर घावा बोलने का निर्णय लिया। अपनी जान की परवाह न करते हुए, सूझ-बूझ और बड़ी चतुराई के साथ वे रेंगकर आतंकवादियों की जगह पर पहुँचे और उनमें से पांच को घटनास्थल पर ही मार गिराया, जबकि अन्य गहरे नाले में गिर गए, जहाँ से उनका कोई पता नहीं चला। जे यू एम गुट से संबंधित मारे गए पांच खूंखार आतंकवादियों की पहचान बाद में रफीक मुगल उर्फ जहाँगीर पुत्र बेदुल्लाह मुगत, निवासी कवारी जिला कमांडर; मास्टर गुलाम हसन उर्फ हाजी जुनैद निवासी लालपोर डिवीजन कमांडर; अब्दुल रशीद मलिक उर्फ बिलाल पुत्र बेदुल्लाह मलिक निवासी कवारी लालपोर; बशीर अहमद खताना, पुत्र शराफुद्दीन खताना, निवासी धिरेन, लालपोर और पाकिस्तान निवासी एक अन्य आतंकवादी, जिसकी पहचान नहीं हो सकी, के रूप में की गई।

घटनास्थल से एके राइफल (5 नग); एके मैगजीन (तीन क्षतिग्रस्त सहित 15 नग); एके गोलाबारूद (200 राउंड्स); रेडियो सेट्स (3 क्षतिग्रस्त सहित 4 नग); यू बी जी एल ग्रेनेड्स - 14 नग (स्वस्थाने नष्ट कर दिए गए); हैड ग्रेनेड्स (4 नग-स्वस्थाने नष्ट कर दिए गए); स्टैम्प (1 नग); कैलकुलेटर (1 नग), डिटाफोन (1 नग), टार्च (2 नग), गैसेट्स (3 नग) और अभिशसी दस्तावेज बरामद किए गए।

इस मुठभेड़ में, सर्वश्री तसादुक हुसैन हैड कांस्टेबल, मोहम्मद अशरफ, हैड कांस्टेबल और गोपाल दास, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस एवं उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पदक, राष्ट्रपति का पुलिस पदक नियमावली के नियम 4(i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 2 जनवरी, 2002 से दिया जाएगा।

(बरूण मित्रा)
निदेशक

सं0 151 - प्रेज/2003-राष्ट्रपति, जम्मू और कश्मीर पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक/पुलिस पदक का बार सहर्ष प्रदान करते हैं:-

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

1. श्री दिलबाग सिंह, उप महानिरीक्षक, जम्मू
2. श्री अमजद परवेज मिर्जा, पुलिस अधीक्षक, कठुआ
3. श्री शिव कुमार सिंह, एस.डी.पी.ओ. सीमा, कठुआ
4. श्री एस. जगतार सिंह, (मरणोपरांत)
पुलिस उप अधीक्षक, कठुआ, (वीरता के लिए पुलिस पदक का द्वितीय बार)
5. श्री रविन्द्र सिंह, उप निरीक्षक
6. श्री हरदीप सिंह, एस.जी., कांस्टेबल
7. श्री रविन्द्र कुमार, कांस्टेबल, डी.टी. 760/के
8. श्री कादिर हुसैन, कांस्टेबल, सी.टी. 729/के

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए पदक प्रदान किया गया:

1.10.2002 को दुर्दान्त लश्कर-ए-तैयबा गुट के दो या तीन पाकिस्तानी उग्रवादी, गांव दुगना से हीरानगर एन.एच.डब्ल्यू चौराहे तक मेटाडोर (सं.जे.के. 02 एच/0065) में जबरदस्ती बैठ गए तथा यात्री बस और एक कार पर अंधाधुंध ग्रेनेड फेंकने और गोलीबारी करने लगे जिससे 6 व्यक्ति घटना स्थल पर ही मारे गए और बहुत से अन्य घायल हो गए जिसमें से 3 व्यक्तियों ने बाद में जख्मों के कारण दम तोड़ दिया। उस दिन मतदान दिवस होने के कारण, वरिष्ठ पुलिस अधिकारी जिला कठुआ के विभिन्न भागों का दौरा कर रहे थे। एस.डी.पी.ओ. सीमा श्री एस.के. सिंह और श्री अमजद परवेज मिर्जा, पुलिस अधीक्षक कठुआ घटनास्थल पर गए और इन्होंने घायल व्यक्तियों के लिए बचाव अभियान चलाने के अलावा इस क्षेत्र के आस-पास सुरक्षा रेनाती को भी सतर्क कर दिया। इसी बीच, जम्मू कठुआ रेंज के उप महानिरीक्षक श्री दिलबाग सिंह, भा.पु.से. भी घटना स्थल पर पहुंच गए। घटना स्थल का जायजा लिया और इस घटना में संलिप्त आतंकवादियों को रोकने और उनका भकाया करने के लिए एक अभियान चलाया। अभियान पूरे दिन और रात जारी रहा जिसके दौरान आतंकवादियों की गतिविधियों के बारे में कतिपय सुराग प्राप्त हुए। 2.10.2002 को सायंकाल में जमीनी जानकारी के द्वारा उनकी उपस्थिति की पुष्टि हो गई और अभियान को हीरानगर के अर्जन चाक क्षेत्र में केन्द्रित किया गया। इस बीच, एस.डी.पी.ओ. सीमा श्री जगतार सिंह, के नेतृत्व में पुलिस उप अधीक्षक डी.ए.आर.डी.पी.एल. कठुआ, निरीक्षक साजद अहमद खान, उप निरीक्षक सुखदेव सिंह, उप निरीक्षक रविन्द्र सिंह, अन्य पुलिसकर्मियों और कुमुक के साथ घटना स्थल पर पहुंचे। जिस क्षेत्र में उग्रवादी छुपे हुए थे उसे पुलिस अधिकारियों द्वारा सभी तरफ से मजबूत घेराबंदी करके सील कर दिया गया। जब शाम को घेराबंदी मजबूत की जा रही थी तो उग्रवादियों को बचकर निकल भागना मुश्किल लगा और उन्होंने पुलिस पार्टी पर गोलीबारी प्रारम्भ कर दी जिसका प्रभावी रूप से जवाब दिया गया। उग्रवादियों को स्वयं को घनी झाड़ियों और झाड़-झुंखाड़ में छिपने के लिए मजबूर होना पड़ा। उग्रवादियों ने रात के समय ग्रेनेड फेंक कर और अंधाधुंध गोलीबारी करके बचकर भागने के कई प्रयास किए परन्तु घेराबंदी को तोड़ने में विफल रहे। प्रातः काल

उग्रवादियों ने हीरानगर कस्बे को जोड़ने वाले पुल के नीचे से बचकर भागने के लिए हताशा में पुनः प्रयास किया। इस क्षेत्र को श्री एस.के. सिंह, एस.डी.पी.ओ. सीमा और श्री जगतार सिंह पुलिस उप अधीक्षक डी.ए.आर.डी.पी.एल. कटुआ ने घेर रखा था। इन्होंने गोलीबारी का जवाब दिया और आतंकवादियों में से एक को घायल कर दिया। आतंकवादियों ने ग्रेनेड फेंके और 2 पुलिस कार्मिकों नामतः कांस्टेबल रविन्द्र कुमार और कांस्टेबल कादिर हुसैन को घायल कर दिया जो इस मोर्चे पर पुलिस पार्टी का एक भाग था। इन पुलिस कर्मियों को श्री एस.के. सिंह, एस.डी.पी.ओ. सीमा और श्री जगतार सिंह पुलिस उप अधीक्षक डी.ए.आर.डी.पी.एल. कटुआ ने अपनी जान को गम्भीर जोखिम में डालकर निकाल लिया। जब उन्हें पुल पर लाया जा रहा था, तो आतंकवादियों ने इस पार्टी पर पुनः गोलीबारी की जिससे श्री जगतार सिंह, पुलिस उप अधीक्षक डी.ए.आर.डी.पी.एल. कटुआ गोली लगने से घायल हो गए, जिसके परिणामस्वरूप उनकी मृत्यु हो गई। तथापि, पुलिस उप अधीक्षक एस.के. सिंह और उप निरीक्षक रविन्द्र सिंह और एस.जी. कांस्टेबल हरदीप सिंह ने प्रभावी रूप से गोलीबारी का जवाब दिया और उस उग्रवादी, जो घायल था और गोलीबारी कर रहा था, का सफाया कर दिया। इस बीच, श्री दिलबाग सिंह, भा.पु.से. पुलिस उप महानिरीक्षक और श्री अमजद परवेज मिर्जा, पुलिस अधीक्षक, जो एक अन्य मोर्चे को सम्भाले हुए थे, ने दूसरे उग्रवादी पर हमला किया और कुछ समय के लिए आतंकवादी के साथ भारी गोलीबारी हुई और अपने पक्ष को कोई हानि पहुँचे बगैर आतंकवादी को मार गिराया। अभियान स्थल से निम्नलिखित बरामद किया गया:-

ए.के.-47 राइफल (2), ए.के.-47 मैगजीन (10), ए.के. राउण्ड (150), वायरलेस सेट (2, एक क्षतिग्रस्त), ग्रेनेड (12), पिस्तौल (1) और कम्पास (1)

इस मुठभेड़ में, सर्व/श्री दिलबाग सिंह, उप महानिरीक्षक, अमजद परवेज मिर्जा, पुलिस अधीक्षक, शिव कुमार सिंह, एस.डी.पी.ओ., (दिवंगत) एस. जगतार सिंह, पुलिस उप अधीक्षक, रविन्द्र सिंह, उप निरीक्षक, 4413/एन.जी.ओ., हरदीप सिंह, एस.जी.सी.टी. रविन्द्र कुमार, कांस्टेबल और कादिर हुसैन, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस एवं उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पदक, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4(i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 3 अक्टूबर, 2002 से दिया जाएगा।

बलरूप मिश्रा
(बलरूप मिश्रा)
निदेशक

सं० 152 - प्रेज/2003-राष्ट्रपति, जम्मू और कश्मीर पुलिस के निम्नलिखित अधिकारी को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:-

अधिकारी का नाम और रैंक

श्री लक्ष्मी कान्त,

उपनिरीक्षक, आई.आर.पी. तृतीय

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए पदक प्रदान किया गया:

उग्रवादियों को उपस्थिति के बारे में एक सूचना के आधार पर, 22.01.2002 को 166 आर.आर. और एस.एच.ओ. पुलिस स्टेशन सुरनकोट के नेतृत्व में एक पुलिस पार्टी ने सोलियन (सुरनकोट) में एक संयुक्त अभियान चलाया। पुलिस पार्टी को दो टुकड़ियों में बांटा गया, जिसमें से एक का नेतृत्व एस.एच.ओ. और दूसरी का उप निरीक्षक लक्ष्मी कान्त द्वारा किया गया। उग्रवादियों के छिपने के ठिकानों की तरफ बढ़ रहे सुरक्षा बलों पर उग्रवादियों ने भारी गोलीबारी की, उप निरीक्षक लक्ष्मी कान्त स्वयं को गोलियों की प्रथम बौछार से बड़ी मुश्किल से बचा पाए। इन्होंने आड़ ली और कठिन ऊबड़-खाबड़ क्षेत्र में रेंग कर उस समय तक आगे बढ़ते रहे जब तक कि ये एक छाया के समीप नहीं पहुंच गए फिर इन्होंने गोलियों की एक बौछार की। अधिकारी द्वारा की गई सटीक गोलीबारी के कारण एक उग्रवादी, जिसकी पहचान बाद में बदर भट, एक जिला कमाण्डर के रूप में हुई, मारा गया। जवानों और उग्रवादियों के बीच लगभग 5 घंटे तक भारी गोलीबारी हुई। इस मुठभेड़ में कुल पांच उग्रवादी मारे गए। एक ए.के.-47 राइफल, एक ए.के.-56 राइफल, 5 ए.के. 47/56 मैगजीन, मैगजीन के साथ एक पिस्तौल, बेस प्लेट के साथ एक 60 एम.एम. मोर्टार ट्यूब, आठ 60 एम.एम. मोर्टार एच.ई.बम्ब, एक मैगजीन पिस्तौल, एक ग्लोबल पोजीशन सिस्टम और एक मोबाइल फोन मुठभेड़ स्थल से बरामद किए गए।

इस मुठभेड़ में, श्री लक्ष्मी कान्त, उप निरीक्षक ने अदम्य वीरता, साहस एवं उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

यह पदक, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4(i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिया जा रहा है तथा फलस्वरूप नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 22 जनवरी, 2002 से दिया जाएगा।

(बरूण मित्रा)

निदेशक

सं० 153 - प्रेज/2003-राष्ट्रपति, जम्मू और कश्मीर पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:-

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

1. फारुख अहमद, भा.पु.से., उप महानिरीक्षक
2. आर.आर. स्वेन, भा.पु.से. वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए पदक प्रदान किया गया:

21.09.2002 को लगभग 1845 बजे बड़ी मात्रा में शस्त्रों से लैस कुछ आतंकवादी पुलिस कर्मियों के भेष (पुलिस वर्दी पहने) में, तलाशी और पहचान करने वाले पुलिस कर्मी नामतः गुलाम मोहम्मद, 13वीं बटालियन, जे.के.ए.पी. को मार कर बेमीना हाउसिंग कलोनी में घुस गए। उनका इरादा पुलिस कर्मियों और उनके पारिवारिक सदस्यों को मारने और पुलिस कर्मियों को चुनाव संबंधी ड्यूटी करने से रोकने का था। आत्मघाती मिशन के उग्रवादी, पुलिस हाउसिंग कलोनी के परिसर में घनी बेल बूटी/वनस्पति में झुप गए। यह सूचना मिलते ही श्री आर.आर. स्वेन, भा.पु.से., वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक, ने पुलिस महानिरीक्षक कश्मीर द्वारा आयोजित बैठक को छोड़ कर पुलिस अधीक्षक, सिटी नार्थ और अपनी एस्कोर्ट पार्टियों के साथ तत्काल पुलिस हाउसिंग कलोनी की ओर रवाना हुए। इसी बीच, उप महानिरीक्षक सेंट्रल कश्मीर रेंज (सी.के.आर.) श्रीनगर, श्री फारुख अहमद भी पुलिस महानिरीक्षक, कश्मीर जोन के साथ घटना स्थल पर पहुंच गए। पहला काम जो वरिष्ठ अधिकारियों को सूझा, वह उस स्थान का पता लगाना था जहां उग्रवादी छुपा था ताकि ज्यादा से ज्यादा प्राण-हानि को रोका जा सके। श्री अहमद, उप महानिरीक्षक कश्मीर ने अपने एस्कोर्ट कर्मियों की सहायता से तत्काल जिम्मेवारी सम्भाली। तब तक, छुपा हुआ उग्रवादी पहले ही गोलीबारी प्रारम्भ कर चुका था और पुलिस अधीक्षक, उत्तर के दो पी.एस.ओज. को घायल कर अपने इरादे स्पष्ट कर चुका था। अपने प्राणों की परवाह किए बिना, श्री फारुख अहमद, उप महानिरीक्षक जनरल एरिया, जहां उग्रवादी छुपे हुए थे की ओर रवाना हो गए। उप महानिरीक्षक की देख और अपने को घिरा पाकर, उग्रवादी ने एक ग्रेनेड निकाला और इसे पुलिस पार्टी पर फेंक दिया और साथ ही भारी मात्रा में गोलीबारी शुरू कर दी। श्री फारुख अहमद, उप महानिरीक्षक शरीर पर किरचें लगने से घायल हो गए। घायल होने के बावजूद, ये गंभीर रूप से घायल पी.एस.ओज. की तरफ गए और अपने जख्मों की परवाह न करते हुए उन्हें बचाकर सुरक्षित स्थान पर ले आए। तब श्री अहमद उप महानिरीक्षक, देर रात तक आपरेशन का नेतृत्व करते रहे। इस बात का भी पता नहीं था कि क्या 200 से अधिक संख्या में पुलिस परिवार सुरक्षित हैं भी या नहीं। वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक, श्रीनगर, श्री आर.आर. स्वेन, भा.पु.से. ने तत्काल प्रत्येक हाउसिंग ब्लॉक की सुरक्षा का कार्य हाथ में लिया और अपने एस्कोर्ट कर्मियों के साथ सभी ब्लॉकों की व्यक्तिगत रूप से एक-एक करके तलाशी ली। डी.पी.एल. श्रीनगर से एक पुलिस टुकड़ी को बुलाया गया और वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक, श्रीनगर ने स्वयं यथोचित क्लीयरेंस के पश्चात प्रत्येक ब्लॉक में चार कर्मियों की एक गार्ड लगाई। एक-एक करके सभी हाउसिंग ब्लॉकों को क्लीयर और सुरक्षित कर महिलाओं और बच्चों सहित सभी पुलिस परिवारों की पूर्ण सुरक्षा सुनिश्चित कर दी गई। यह सब श्री स्वेन ने छिपे हुए उग्रवादियों में से एक द्वारा की जा रही गोलीबारी के बीच किया जिसमें उप महानिरीक्षक श्रीनगर रेंज सहित कुछ पुलिस कार्मिक घायल हुए। सभी पुलिस परिवारों की सुरक्षा सुनिश्चित करने के पश्चात वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक, श्रीनगर उस ओर गए जहां उग्रवादी छिपे हुए थे और अभियान की कमान सम्भाली। छिपे हुए उग्रवादी ने इस बीच गोलीबारी रोक दी और पुलिस हाउसिंग

कालोनी गारसर के भीतर घनी वनस्पति के पीछे छुप गया। हाउसिंग ब्लाकों के बीच सभी निकास मार्गों पर मोबाइल बंकरों और पुलिस कांस्टेबलों की सहायता से श्री स्वैन द्वारा रोक लगा दी गई। निकासी मार्गों को बंद कर देने के पश्चात ऐसे दो ब्लाकों की पहचान की गई जहां प्रथम तल से उग्रवादियों को देखा जा सकता था। वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक, श्रीनगर स्वयं इन ब्लाकों में से एक में एक अनुकूल जगह में रह कर निगरानी रखे रहे और पूरी रात उग्रवादी को उलझाए रखा। प्रातः काल वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक, श्रीनगर अपनी एस्कोर्ट पार्टी के साथ उग्रवादी के बचकर निकल भागने के मुख्य मार्ग पर डट गए। पुलिस पार्टी को (के) ब्लाक के प्रथम तल पर एक अनुकूल स्थान पर रखा गया और छिपे हुए उग्रवादी पर लगातार गोलीबारी जारी रखने को कहा। छिपा हुआ उग्रवादी झाड़ियों में से कूदकर बाहर आया और उस स्थान से बचकर भागने का प्रयास करने लगा जहां पर श्री स्वैन, वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक ने अपनी एस्कोर्ट पार्टी के साथ पोजीशन ली हुई थी। अपने प्राणों की परवाह किए बना, श्री स्वैन, वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक ने छिपे उग्रवादी पर गोलीबारी की और वहीं पर उसका सफाया कर दिया। एक ए.के.-56 राइफल, 3 मैगजीन, ए.के. 56 राइफल के 16 जिन्दा राउण्ड घटना स्थल से बरामद किए गए।

इस मुठभेड़ में, सर्व/श्री श्री फारुख अहमद, भा.पु.से., उप महानिरीक्षक और आर.आर. स्वैन, भा.पु.से. वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक ने अदम्य वीरता, साहस एवं उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पदक, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4(i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 22 सितम्बर, 2002 से दिया जाएगा।

ब.रु. मित्रा

(बरूण मित्रा)

निदेशक

सं0 154 - प्रेज/2003-राष्ट्रपति, जम्मू और कश्मीर पुलिस के निम्नलिखित अधिकारी को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:-

अधिकारी का नाम और रैंक

श्री मोहम्मद युसूफ, (मरणोपरांत)

उप निरीक्षक

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए पदक प्रदान किया गया:

10.8.2002 को एक विश्वसनीय सूत्र से पुलिस स्टेशन कालाकोट, रजौरी में एक सूचना प्राप्त हुई कि कुछ उग्रवादियों को तहसील कालाकोट के केरी चम्बर क्षेत्र में देखा गया है। इस सूचना पर, उप निरीक्षक मोहम्मद युसूफ, एस एच ओ पुलिस स्टेशन कालाकोट जिन्हें उग्रवाद विरोधी अभियानों में अच्छा अनुभव था, पुलिस स्टेशन की नफरी के साथ केरी चम्बर की ओर रवाना हुए और छान-बीन अभियान का नेतृत्व करने लगे। छान-बीन अभियान के दौरान, कुछ उग्रवादियों को महिलाओं सहित कुछ सिविलियनों के साथ मकई फसल के खेत में देखा गया। अधिकारी ने उग्रवादियों को ललकारा और उनका पीछा करने का प्रयास किया लेकिन गोली नहीं चलाई क्योंकि ऐसा करने से बड़ी संख्या में सिविलियन हताहत हो सकते थे। आतंकवादियों ने इस अधिकारी पर गोलीबारी की, उन्होंने भी उत्तर में गोली चलाई परन्तु प्रतिरोध नहीं कर सके क्योंकि पुलिसकर्मियों की संख्या बहुत सीमित थी। आतंकवादी घनी मक्के की फसल और घनी झाड़ियों की आड़ लेकर बच कर भागने में सफल हो गए। अभियान के दौरान, उप निरीक्षक मोहम्मद युसूफ एस.एच.ओ., पुलिस स्टेशन कालाकोट गोलियों से गम्भीर रूप से घायल हो गए और बाद में उन्होंने जख्मों के कारण घटना स्थल पर ही प्राण त्याग दिए।

इस मुठभेड़ में, (दिवंगत) श्री मोहम्मद युसूफ, उपनिरीक्षक ने अदम्य वीरता, साहस एवं उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

यह पदक, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4(1) के अंतर्गत वीरता के लिए दिया जा रहा है तथा फलस्वरूप नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 10 अगस्त, 2002 से दिया जाएगा।

(बलरूप मित्रा)

निदेशक

सं0 155 - प्रेज/2003-राष्ट्रपति, जम्मू और कश्मीर पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए राष्ट्रपति का पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:-

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

1. जसवन्त सिंह, कांस्टेबल (मरणोपरांत)
2. राजेन्द्र कुमार, कांस्टेबल (मरणोपरांत)

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए पदक प्रदान किया गया:

1 अगस्त, 2002 को इस बारे में एक विशिष्ट सूचना मिलने पर कि सशस्त्र आतंकवादी, जो 13 जुलाई, 2002 को जम्मू जिले की राजीव नगर कलोनी में 28 सिविलियनों की भीमत्स हत्या में संलिप्त थे, जम्मू शहर के पूर्वी क्षेत्र में राईका जंगलों में देखे गए हैं, एक घेराबन्दी और तलाशी अभियान तत्काल प्रारम्भ किया गया। पुलिस पार्टी में, दिवंगत कांस्टेबल जसवन्त सिंह और कांस्टेबल राजेन्द्र कुमार के अतिरिक्त एस.एच.ओ. पुलिस स्टेशन त्रिकुटा नगर, एस.एच.ओ. पुलिस स्टेशन बाग-ए-बाहू, आई/सी पुलिस स्टेशन नारवाल और भटिंडी के साथ केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल, आई आर पी और एस ओ जी नफरी सम्मिलित थी। जब, तलाशी अभियान चल रहा था तो झाड़ियों में झुपे आतंकवादियों ने पुलिस पार्टी पर अर्धधुंध गोलिबारी शुरू कर दी जिसका जवाब दिया गया। दूँधे और खतम करो अभियान एक आतंकवादी के सफाए और अन्य की गिरफ्तारी के साथ समाप्त हुआ। तथापि,

- i) श्री जसवन्त सिंह, कांस्टेबल
- ii) श्री राजेन्द्र कुमार, कांस्टेबल, और
- iii) श्री रघुबीर सिंह, उप निरीक्षक

ने आतंकवादियों के साथ लड़ते हुए अपने प्राणों की आहुति दे दी बाद में आतंकवादियों की पहचान पाकिस्तान के भाड़े के सैनिकों के रूप में हुई।

इस पृष्ठभूमि में, (दिवंगत) सर्व/श्री जसवन्त सिंह, कांस्टेबल और राजेन्द्र कुमार, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस एवं उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का प्रदर्शन दिया।

यह पदक, राष्ट्रपति का पुलिस पदक नियमावली के नियम 4(i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 1 अगस्त, 2002 से दिया जाएगा।

च2.ग) मित्रा

(बरूण मित्रा)

निदेशक

सं० 156 - प्रेज/2003-राष्ट्रपति, जम्मू और कश्मीर पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए राष्ट्रपति का पुलिस पदक/पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:-

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

1. पी.एल. गुप्ता, भा०पु०से०, पुलिस महानिरीक्षक, जम्मू
2. दिलबाग सिंह, भा०पु०से०, उपमहानिरीक्षक, जम्मू
3. फारूक खान, भा०पु०से०, वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक, जम्मू
4. प्रभात सिंह, पुलिस अधीक्षक, शहर, उत्तरी जम्मू
5. मुबास्सीर लतीफ, पुलिस उप अधीक्षक मुख्यालय, जम्मू
6. आर.के. चलोत्रा, एस.डी.पी.ओ., शहर जम्मू
7. सुल्तान मिर्जा, उप निरीक्षक
8. बलविन्द्र सिंह, सहायक उप निरीक्षक (मरणोपरांत) (वीरता के लिए राष्ट्रपति का पुलिस पदक)
9. बलवन्त सिंह, एस.जी., कांस्टेबल

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए पदक प्रदान किया गया:

24 नवम्बर, 2002 को 1850 बजे लश्कर-ए-तैयबा के आत्मघाती दस्ते के दो आतंकवादी अचानक रघुनाथ मन्दिर, जम्मू में प्रकट हुए। आतंकवादियों में से एक की जब तलाशी ड्यूटी पर तैनात सुरक्षा कर्मियों द्वारा तलाशी ली जा रही थी तो उसने एक ग्रेनेड फेंका और जबरदस्ती मन्दिर परिसर में घुस गया। दूसरे आतंकवादी ने अन्धाधुंध गोलीबारी शुरू कर दी और रेजीडेन्सी रोड की तरफ भागने लगा। दोनों आतंकवादियों को निष्क्रिय करने के लिए तत्काल एक अभियान चलाया गया और पुलिस महानिदेशक, महानिरीक्षक जम्मू, उपमहानिरीक्षक, जम्मू सहित वरिष्ठ अधिकारी बलों के साथ घटनास्थल पर पहुंचे। तैनात बलों के समय पर हस्तक्षेप और अभियान चलाने के साथ-साथ मन्दिर में उपस्थित पुजारियों की सूझ-बूझ के कारण, उस आतंकवादी, जो जबरदस्ती मन्दिर परिसर में घुस गया था, को परम्पावन मन्दिर-गर्भ में प्रवेश करने से रोक लिया गया और वह कोरिडोर में ही रुका रहा जहां से उसने पुलिसकर्मियों को तब तक नजदीक नहीं आने दिया जब तक कि श्री प्रभात सिंह, पुलिस अधीक्षक, पुलिस उप अधीक्षक मुबास्सीर लतीफ और सहायक उप निरीक्षक बलविन्द्र सिंह के मार्गदर्शन में चलाए गए अभियान में उसका सफाया नहीं कर दिया गया। सहायक उप निरीक्षक ने बाद में आतंकवादियों की गोली से घायल होने के कारण अपने प्राण त्याग दिए। पुलिस महानिरीक्षक, जम्मू/उपमहानिरीक्षक, जम्मू/वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक, जम्मू और अन्य वरिष्ठ अधिकारियों ने न केवल आगे रहकर अभियान का नेतृत्व किया बल्कि वे मन्दिर परिसर से बड़ी संख्या में भक्तों को सुरक्षित बाहर निकालने में भी सक्रिय रहे। दूसरा आतंकवादी रेजीडेन्सी रोड पर भागते हुए अंधाधुंध गोलियां चलाता रहा और ग्रेनेड फेंकता रहा। इस गोलीबारी में बड़ी संख्या में लोग मारे गए और इसी प्रकार बड़ी संख्या में लोग घायल हुए। घायल/मारे गए लोगों को निकालने के कार्य की देख-रेख पुलिस महानिदेशक द्वारा स्वयं की गई। यह आतंकवादी उस क्षेत्र में अंधेरे का लाभ उठाते हुए पंजीभक्तर में मन्दिर परिसर के नजदीक छिप गया जहां उसने पुलिस को नहीं आने दिया। तत्काल अतिरिक्त टुकड़ियां मंगाई गईं और यह सुनिश्चित करने के लिए प्रभावी घेराबन्दी की गई कि आतंकवादी बचकर भागने में सफल न हो। घेराबन्दी का नेतृत्व श्री आर.के. चलोत्रा, एस.डी.पी.ओ. शहर और बल की छोटी सी टुकड़ी ने किया। दूसरे आतंकवादी को अगले दिन

लगभग 1000 बजे, एक निजी आवास, जहां वह शरण लेने में सफल हो गया था, मार गिराया गया । मारे गए उग्रवादी से एक ए.के. राइफल और 4 ए.के. मैगजीन बरामद की गई ।

इस मुठभेड़ में, सर्व/श्री पी.एल. गुप्ता, भा0पु0से0, पुलिस महानिरीक्षक, दिलबाग सिंह, भा0पु0से0, उपमहानिरीक्षक, फारूक खान, भा0पु0से0, वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक, प्रभात सिंह, पुलिस अधीक्षक, मुबास्सीर लतीफ, पुलिस उपअधीक्षक, आर.के. चलोत्रा, एस.डी.पी.ओ., सुल्तान मिर्जा, उप निरीक्षक, (दिवंगत) बलविन्द्र सिंह, सहायक उप निरीक्षक, बलवन्त सिंह, एस.जी., कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस एवं उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया ।

यं पदक, राष्ट्रपति का पुलिस पदक/पुलिस पदक नियमावली के नियम 4(i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 24 नवम्बर, 2002 से दिया जाएगा ।

ॐ २०११ १५/११
(बसुण मित्रा)
निदेशक

सं० 157 - प्रेज/2003-राष्ट्रपति, जम्मू और कश्मीर पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए राष्ट्रपति का पुलिस पदक/पुलिस पदक सङ्घर्ष प्रदान करते हैं:-

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

1. एस.एस. बिजराल, उपमहानिरीक्षक (वीरता के लिए पुलिस पदक)
2. रशद अहमद मलिक, पी.एस.आई. (वीरता के लिए राष्ट्रपति का पुलिस पदक)

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए पदक प्रदान किया गया:

31 जुलाई, 2002 को पुलिस उपमहानिरीक्षक, रजौरी-पुंछ रैंज को सूचना मिली कि एक आत्मघाती (फिदाइन) दस्ता बेला, नजदीक डी.सी. कलोनी में झुपा हुआ है और उस क्षेत्र अर्थात् डिव हैडक्वार्टर/डी.सी. कलोनी में कुछ चमत्कारिक कार्रवाई करने की योजना बना रहा है। यह सूचना तत्काल एस.ओ.जी. रजौरी, पुलिस स्टेशन रजौरी और गैर-सिविलियन प्राधिकारियों को तत्काल घेराबन्दी और खोज अभियान शुरू करने के लिए भेज दी गई। पी एस आई रशद अहमद मलिक की सहायता से उप पुलिस अधीक्षक ओप्स ने 69 फील्ड रेजीमेंट के सैनिकों के साथ तुरंत संयुक्त रूप से एक अभियान चलाया। उप महानिरीक्षक रजौरी-पुंछ रैंज ने पूरे अभियान के दौरान पूरी तरह से कमान सम्भाले रखी। जब तलाशी अभियान चल रहा था, तो एक घर में छिपे उग्रवादियों ने अंधाधुंध गोलीबारी प्रारम्भ कर दी जिसके परिणामस्वरूप कैप्टन श्री आर.बी. राजा मारे गए। एस.ओ.जी. पार्टी ने उस घर के सामने से आतंकवादियों की तरफ गोलीबारी की। आतंकवादियों ने ग्रेनेड फेंके और एस.ओ.जी. की गोलीबारी के प्रत्युत्तर में अंधाधुंध गोलीबारी की। पी.एस.आई. रशद अहमद मलिक, अपनी जान की परवाह न करते हुए आतंकवादियों के छिपने के ठिकाने की ओर आगे बढ़े और दो आतंकवादियों को मारने में सफल हो गए। अभियान पूरी रात चला और दूसरे दिन प्रातः काल पुलिस/सेना प्राधिकारियों ने शेष बचे दो आतंकवादियों को मार गिराया। श्री एस.एस. बिजराल, उप महानिरीक्षक, रजौरी-पुंछ रैंज ने ऐसा नेतृत्व प्रदान किया जिसके कारण आतंकवादियों का सफाया हुआ और जानमाल को आगे और क्षति होने से बचा लिया गया। मारे गए आतंकवादियों से 3 ए.के.-56 और एक ए.के.-47 राइफल, 10 ए.के. मैगजीन, 6 ग्रेनेड और 444 ए.के. गोलाबारूद बरामद किया गया।

इस मुठभेड़ में, सर्व/श्री एस.एस. बिजराल, उपमहानिरीक्षक और रशद अहमद मलिक, पी.एस.आई. ने अदम्य वीरता, साहस एवं उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पदक, राष्ट्रपति का पुलिस पदक/पुलिस पदक नियमावली के नियम 4(i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 31 जुलाई, 2002 से दिया जाएगा।

(बसुण मित्रा)

(बसुण मित्रा)

निदेशक

सं0 158 - प्रेज/2003-राष्ट्रपति, जम्मू और कश्मीर पुलिस के निम्नलिखित अधिकारी को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:-

अधिकारी का नाम और रैंक

श्री सुरेन्द्र कुमार चौधरी,
निरीक्षक

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए पदक प्रदान किया गया:

04 मई, 2000 को निरीक्षक सुरेन्द्र कुमार चौधरी, एस.एच.ओ. पुलिस स्टेशन मजाल्टा ने गांव ताज्जूर, ढोक मनोह में एक गुज्जर के घर में उग्रवादियों की उपस्थिति के बारे में विशिष्ट सूचना एकत्र की। निरीक्षक ने तत्काल एक पुलिस दल बनाया और स्थल की ओर रवाना हुए हालांकि ये 20 दिन पूर्व ही एक अन्य मुठभेड़ में गोली लगने से जख्मी हो गए थे। लम्बी दूरी पैदल तय करने के पश्चात् निरीक्षक के नेतृत्व में पुलिस पार्टी स्थल पर पहुंची और उस घर को घेर लिया। जब आतंकवादियों को यह पता चला कि वह अन्दर घिर गए हैं तो उन्होंने घर के अन्दर से ग्रेनेड फेंकना और भारी गोलीबारी प्रारम्भ कर दी। जवाब में पुलिस पार्टी ने भी गोलीबारी की। निरीक्षक सुरेन्द्र कुमार चौधरी ने आगे रहकर घावा पार्टी का नेतृत्व किया और उस घर पर हमला बोल दिया। चल रही गोलीबारी के परिणामस्वरूप वे एक दुर्दान्त आतंकवादी नामतः रियाज अहमद, निवासी लोहंग, हिजबुल मुजाहिदीन का जिला कमाण्डर को मारने में सफल हुए। उक्त आतंकवादी पाक आई एस आई का मुख्य गाइड था और अनेक हत्याओं में भी संलिप्त था। निम्नलिखित बरामदगी की गई:-

एक ए.के.-56, ए.के.-56 की एक मैगजीन, टूटा हुआ एक कम्मास, 21 पेंसिल सैल, चीन निर्मित एक पाउच, ए.के.-56 के 15 कारतूस और 02 पॉकेट डायरी।

इस मुठभेड़ में, श्री सुरेन्द्र कुमार चौधरी, निरीक्षक ने अदम्य वीरता, साहस एवं उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

यह पदक, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4(i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिया जा रहा है तथा फलस्वरूप नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 4 मई, 2000 से दिया जाएगा।

बलरूप मित्रा
(बलरूप मित्रा)
निदेशक

सं० 159 - प्रेज/2003-राष्ट्रपति, जम्मू और कश्मीर पुलिस के निम्नलिखित अधिकारी को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:-

अधिकारी का नाम और रैंक

श्री जाविद अहमद वानी,
हैड कांस्टेबल

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए पदक प्रदान किया गया:

गांव हादीपोरा, सोपोर, जिला बारामूला में कुछ दुर्दान्त भाड़े के विदेशी सैनिकों की उपस्थिति के बारे में विशिष्ट सूचना मिलने पर, 9 अक्टूबर, 2002 को एस ओ जी, सोपोर और 28 आर आर द्वारा एक संयुक्त अभियान चलाया गया। सैनिकों की गतिविधियों को देखकर उग्रवादियों ने अंधाधुंध गोलीबारी शुरू कर दी और ग्रेनेड फेंके, जिसके कारण लोग आतंकित होकर अफरा-तफरी में इधर-उधर भागने लगे। तथापि, सैनिकों ने अनुकरणीय धैर्य का प्रदर्शन करते हुए सिविलियनों को सुरक्षित स्थानों पर पहुंचाया। यह नोटिस किया गया कि दो उग्रवादी एक घर में छिपे हुए हैं और पुलिस पार्टी उस मकान की तरफ आगे बढ़ी। हैड कांस्टेबल जाविद अहमद लक्षित मकान के बगल वाले घर में प्रवेश कर गए और पोजीशन ले ली। एक उग्रवादी खिड़की से बाहर कूदा और पुलिस पार्टी द्वारा तेजी से की जा रही गोलीबारी के दबाव के कारण भागने लगा। हैड कांस्टेबल जाविद अहमद ने उसे भागते हुए देख गोली चलाई और भाड़े के विदेशी सैनिक को घटना स्थल पर ही मार गिराया। दूसरा उग्रवादी एस ओ जी दल द्वारा मार गिराया गया। मारे गए आतंकवादियों की पहचान अबू अली अतिक, निवासी गुंजरावाला, पाकिस्तान और अबू शमील रशीद जमाल, निवासी साहीवाल, पाकिस्तान के रूप में की गई मारे गए आतंकवादियों से 2 ए.के.-47 राइफलें, ए.के.-47 की 6 मैगजीनें, ए.के.-47 के 24 राउण्ड, 6 इथगोले (घटना स्थल पर नष्ट कर दिए गए) और 2 क्षतिग्रस्त आर एस एन्टिना बरामद किया गया।

इस मुठभेड़ में, श्री जाविद अहमद वानी, हैडकांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस एवं उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

यह पदक, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4(i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिया जा रहा है तथा फलस्वरूप नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 9 अक्टूबर, 2002 से दिया जाएगा।

बसुण मित्रा
(बसुण मित्रा)
निदेशक

सं० 160 - प्रेज/2003-राष्ट्रपति, जम्मू और कश्मीर पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:-

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

1. मंजीत सिंह, पुलिस उप अधीक्षक
2. अनिल कुमार, एस.जी. कांस्टेबल

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए पदक प्रदान किया गया:

खानातेर, पुंछ में सेहवा जंगल में उग्रवादियों की उपस्थिति के बारे में एक सूचना प्राप्त होने पर, श्री मंजीत सिंह, पुलिस उप अधीक्षक मुख्यालय, पुंछ ने 11 जनवरी, 2003 को भोर की पहली किरण के साथ, समय गंवाए बगैर, अपने अधिकारियों और कर्मियों को एकत्र किया और एक संयुक्त अभियान चलाने के लिए पहचान किए गए स्थान की ओर रवाना हुए। श्री सिंह और पुलिस पार्टी खड़ी ढाल, पाले और ओस के कारण फिसलनभरी जमीन पर चलने के पश्चात उपर्युक्त स्थान पर पहुंच गई। जब बायीं तरफ की घेराबंदी की जा रही थी तो अचानक उस टुकड़ी पर उग्रवादियों ने भारी गोलीबारी प्रारम्भ कर दी, जिसके परिणामस्वरूप हवलदार मोहन लाल, 39 आर.आर. मारे गए और सिपाही राज सिंह गंभीर रूप से घायल हो गए। घायल जवान का कराहना सुनने पर, श्री मंजीत सिंह, पुलिस उप अधीक्षक ने अपनी निजी सुरक्षा की परवाह किए बिना उसकी तरफ रेंगना शुरू किया और उसे वहां से खींच कर थोड़े सुरक्षित स्थान पर ले आए। श्री मंजीत सिंह, पुलिस उप अधीक्षक जब सेना के एक जवान को घायल को पीछे हटाने के निदेश दे रहे थे तो इन्होंने अचानक नजदीकी झाड़ियों में कुछ हलचल देखी। श्री मंजीत सिंह पुलिस उप अधीक्षक ने तत्काल कार्रवाई की और झाड़ियों की तरफ गोलियों की एक बौछार करके भाग रहे एक उग्रवादी को मार गिराया। घेराबंदी से बचकर भागने का प्रयास करते हुए एक अन्य उग्रवादी को भी एस.जी. कांस्टेबल अनिल कुमार ने देख लिया और उसका पीछा किया यद्यपि उग्रवादी ने एस.जी. कांस्टेबल की तरफ अंधाधुंध गोलीबारी की। भागते हुए उग्रवादी को थोड़ी देर तक हुई परस्पर गोलीबारी के पश्चात एस.जी. कांस्टेबल अनिल कुमार ने अंततः उसे मार दिया। मारे गए एक उग्रवादी की पहचान जम्बार कोड बिलाल निवासी पाक अधिभूत कश्मीर के रूप में हुई। 2 ए.के. राइफल्स, 5 ए.के. मैगजीन, 300 ए.के. राउण्ड, 7 हथगोले, 2 वायरलेस सेट, 13 आई.ए.डी. और 5 आर.पी.जी. राउण्ड मुठभेड़ स्थल से बरामद किए गए।

इस मुठभेड़ में, सर्व/श्री मंजीत सिंह, पुलिस उप अधीक्षक और अनिल कुमार, एस.जी. कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस एवं उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पदक, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4(i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 11 जनवरी, 2003 से दिया जाएगा।

अ.ज. मित्रा
(बरूण मित्रा)
निदेशक

सं० 161 - प्रेज/2003-राष्ट्रपति, जम्मू और कश्मीर पुलिस के निम्नलिखित अधिकारी को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:-

अधिकारी का नाम और रैंक

श्री अलताफ हुसैन शाह
पुलिस उप अधीक्षक

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए पदक प्रदान किया गया:

29.01.2002 को श्री अलताफ हुसैन शाह, पुलिस उप अधीक्षक, डी.ए.आर, पुंछ ने पुंछ के डाची/सिन्दारा क्षेत्र में आतंकवादियों की गतिविधि के बारे में एक विशिष्ट सूचना पर तत्काल डी.पी.एल. पुंछ में अपने दल को एकत्र किया और स्थल की ओर रवाना हुए। छोटी झाड़ियों वाले उबड़-खाबड़ जमीनी क्षेत्र में घेराबंदी और तलाशी अभियान के बारे में अपने कर्मियों को ब्रीफ करने के पश्चात कार्रवाई प्रारम्भ कर दी। प्रातः काल लगभग 0700 बजे अचानक आतंकवादी एक छोटी चट्टान के पीछे दिखाई दिया और तलाशी दल पर अंधाधुंध गोलीबारी प्रारम्भ कर दी। श्री शाह जो आगे चल रही टुकड़ी का नेतृत्व कर रहे थे, ने पोजीशन ली और अपनी निजी सुरक्षा की परवाह किए बगैर जवाबी गोलीबारी की। यह गोलीबारी भाड़े के तीन विदेशी सैनिकों के मार गिराने के पश्चात समाप्त हुई। मुठभेड़ स्थल से निम्नलिखित हथियार/गोलाबारुद बरामद किया गया :-

2 ए.के. राइफल, 9 ए.के. मैगजीन, 314 ए.के. गोलाबारुद, एक (एक मैगजीन के साथ) पिस्तौल, 3 हथगोले, एक रेडियो सेट, 2 पाउच, 400/- रुपये की पाक मुद्रा और 1530/- भारतीय मुद्रा।

इस मुठभेड़ में, श्री अलताफ हुसैन शाह, पुलिस उप अधीक्षक ने अदम्य वीरता, साहस एवं उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

यह पदक, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4(1) के अन्तर्गत भारत में उत्तम सेवा के लिए प्रदान किया गया है। नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भूषण भी दिनांक 29 जनवरी, 2002 के दिनांक पर दिया गया।

(चक्रवर्ती)

निदेशक

सं० 162 - प्रेज/2003-राष्ट्रपति, जम्मू और कश्मीर पुलिस के निम्नलिखित अधिकारी को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:-

अधिकारी का नाम और रैंक

डा. कमल सैनी, भा.पु.से.
वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए पदक प्रदान किया गया:

26.04.2002 को डा. कमल सैनी, वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक, जिला पुंछ को उनके एक विश्वसनीय सूत्र ने पुंछ में गांव साथरा मण्डी में आतंकवादियों की उपस्थिति के बारे में सूचित किया। अधिकारी ने समय गंवाए बिना तत्काल अपने अधिकारियों और कर्मियों को एकत्र किया और स्थल की ओर रवाना हुए। आतंकवादी नाले के किनारे छुपे हुए थे। अधिकारी ने मजबूत घेराबंदी कर आतंकवादियों के बचकर भागने के सभी रास्ते बंद कर दिए। यह देखकर कि सुरक्षा बल उनकी ओर बढ़ रहे हैं, आतंकवादी, स्वचालित हथियारों से भारी गोलीबारी करने लगे जिसका जवाब दिया गया और मुठभेड़ बहुत लम्बे समय तक चली। श्री सैनी, अपनी निजी सुरक्षा की परवाह किए बिना, आतंकवादियों की भारी गोलीबारी के बावजूद अपने कर्मियों का मार्गदर्शन करते रहे जिसके परिणामस्वरूप भाड़े के छह विदेशी सैनिक मारे गए और हथियारों और गोलाबारूद का एक बड़ा जखीरा बरामद हुआ।

6 ए.के. राइफल्स, 20 ए.के. मैगजीनें, 2 मैगजीनों के साथ एक पिस्तौल, 2 वायरलेस सैट, 6 बैग, 3 बरसाती कोट मुठभेड़ स्थल से बरामद किए गए।

इस मुठभेड़ में, डा. कमल सैनी, भा.पु.से., वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक ने अदम्य वीरता, साहस एवं उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

यह पदक, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4(i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिया जा रहा है तथा फलस्वरूप नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 26 अप्रैल, 2002 से दिया जाएगा।

(बरूण मित्रा)

निदेशक

सं0 163 - प्रेज/2003-राष्ट्रपति, जम्मू और कश्मीर पुलिस के निम्नलिखित अधिकारी को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:-

अधिकारी का नाम और रैंक

श्री करनैल सिंह,
पुलिस अधीक्षक

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए पदक प्रदान किया गया:

23.9.2002 को तहसील बनीहाल के कासकोट क्षेत्र में उग्रवादियों की उपस्थिति के बारे में विशिष्ट सूचना प्राप्त होने पर सेना, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल और पुलिस को संगठित किया गया और इस क्षेत्र में शरण लिए हुए उग्रवादियों को बाहर निकालने/उनका सफाया करने के लिए एक संयुक्त अभियान चलाया गया। श्री करनैल सिंह, पुलिस अधीक्षक, रामबन ने पुलिस पार्टी का नेतृत्व किया और इस क्षेत्र में तलाशी अभियान प्रारम्भ किया। जब तलाशी अभियान चल रहा था तो बड़ी मात्रा में शस्त्रों से लैस उग्रवादियों ने अपने छिपने के ठिकाने से तलाशी दल को अत्यधिक जान-हानि पहुंचाने और बच कर भाग निकलने की दृष्टि से अंधाधुंध गोलीबारी प्रारम्भ कर दी। श्री करनैल सिंह, पुलिस अधीक्षक ने गोलीबारी का प्रभावी रूप से प्रत्युत्तर देते हुए उग्रवादियों को गोलीबारी में उलझाए रखा। गोलीबारी के दौरान अधिकारी ने उनके छिपने के ठिकाने को देख लिया जहां से उग्रवादियों की गोलियां आ रही थी। अधिकारी, भारी मात्रा में हो रही गोलीबारी के बीच रेंगते हुए साहस, बहादुरी और सूझ-बूझ का परिचय देते हुए अपनी पार्टी का नेतृत्व करते हुए लक्षित स्थान की ओर बढ़े। सामरिक दृष्टि से लाभ की स्थिति में बैठे उग्रवादी, सभी दिशाओं से सेना/के.रि.पु. बल और पुलिस की संयुक्त पार्टी पर गोलीबारी करते रहे क्योंकि वह काफी संख्या में भी थे। चल रही गोलीबारी के बीच सेना के दो जवान गोली लगने से घायल हो गए, जिसमें से एक ने जख्मों के कारण प्राण त्याग दिए। अधिकारी ने अपना धैर्य खोए बिना, लक्षित क्षेत्र की तरफ आगे बढ़ना जारी रखा और कारगरता के साथ गोलीबारी का जवाब दिया। घण्टों चली गोलीबारी में चार उग्रवादी मारे गए। मारे गए उग्रवादियों की पहचान (i) मोहम्मद शरीफ नायक कोड बरकत, निवासी छाचीहल जिला कमाण्डर (ii) अरफान (iii) वालिद अहमद, निवासी पाकिस्तान और (iv) अदिल मोह्नी-उद-दीन, निवासी कुलगाम, सभी हिजबुल इस्लामिया उग्रवादी संगठन से संबंधित, के रूप में हुई। मारे गए उग्रवादियों से 3 ए.के.-56 राइफलें, 07 ए.के. मैगजीन, 02 रेडियो सेट (जला हुआ) और गोलाबारूद ए.के. 90 नग बरामद किए गए।

इस मुठभेड़ में, श्री करनैल सिंह, पुलिस अधीक्षक ने अदम्य वीरता, साहस एवं उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

यह पदक, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4(i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिया जा रहा है तथा फलस्वरूप नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 23 सितम्बर, 2002 से दिया जाएगा।

(बरूण मित्रा)

निदेशक

सं० 164 - प्रेज/2003-राष्ट्रपति, जम्मू और कश्मीर पुलिस के निम्नलिखित अधिकारी को उनकी वीरता के लिए राष्ट्रपति का पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:-

अधिकारी का नाम और रैंक

श्री कुलदीप कुमार शर्मा, (मरणोपरांत)

पुलिस उप अधीक्षक

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए पदक प्रदान किया गया:

26.04.1999 को एक विशिष्ट सूचना पर, स्पेशल ऑपरेशन ग्रुप, कुपवाड़ा द्वारा श्री कुलदीप कुमार शर्मा, पुलिस उप अधीक्षक, कुपवाड़ा की देख-रेख में खुदी लोलब क्षेत्र में घेराबंदी और तलाशी अभियान चलाया गया। क्षेत्र की तलाशी के दौरान उग्रवादियों ने पुलिस पार्टी पर अंधाधुंध गोलीबारी प्रारम्भ कर दी। पुलिस पार्टी ने भी गोलीबारी का प्रत्युत्तर दिया और कुमक को बुलाया गया। जब घेराबंदी की जा रही थी, तो एक उग्रवादी अपने छिपने के ठिकाने से अचानक कूद कर आया और पुलिस पार्टी पर गोलीबारी करने लगा। श्री शर्मा, जिन्होंने पहले आड़ ले ली थी, ने जवानों के प्रति खतरे को भांप लिया। अपनी निजी सुरक्षा की परवाह किए बिना, वे तत्काल बाहर आए और उस उग्रवादी के साथ गुथमगुथा होकर उसे उलझाए रखा और अन्ततः उसे मार गिराया। इस प्रकार से उन्होंने अपने जवानों के प्राणों की रक्षा की। अन्य दो उग्रवादियों, जो छिपने के ठिकाने के अंदर थे, का भी इस मुठभेड़ में सफाया कर दिया गया। ये उग्रवादी पिछले दो-तीन वर्षों से इस क्षेत्र में सक्रिय थे और सुरक्षा बलों पर आई.ई.डी. हमलों के अतिरिक्त अनेक हत्याओं में शामिल थे। मारे गए 3 उग्रवादियों में से, दो की पहचान बशीर अहमद खटाना, एच.एम. गुट का बटालियन कमाण्डर और बशीर अहमद, निवासी गोगल, एच.एम. संगउन का प्लाटून कमाण्डर के रूप में की गई। इस ऑपरेशन के बाद 2 ए.के. राइफलें, एक पिस्तौल, एक वायरलेस सेट, 5 हथगोले, एक पिस्तौल मैगजीन, ए.के. राइफल के 72 राउण्ड और 4 पिस्तौल राउण्ड बरामद किए गए।

इस मुठभेड़ में, (दिवंगत) श्री कुलदीप कुमार शर्मा, पुलिस उप अधीक्षक ने अदम्य वीरता, साहस एवं उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

यह पदक, राष्ट्रपति का पुलिस पदक नियमावली के नियम 4(i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिया जा रहा है तथा फलस्वरूप नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 26 अप्रैल, 1999 से दिया जाएगा।

(बरूण मित्रा)

निदेशक

सं० 165 - प्रेज/2003-राष्ट्रपति, कर्नाटक पुलिस के निम्नलिखित अधिकारी को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:-

अधिकारी का नाम और रैंक

श्री जी.ए. बावा,

सहायक पुलिस आयुक्त

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए पदक प्रदान किया गया:

6.02.2000 को श्री जी.ए. बावा सहायक पुलिस आयुक्त, चिकपेट को सूचना मिली कि लूटपाट, डकैती तथा लड़कियों के अपहरण के 34 मामलों में संलिप्त एक कुख्यात गिरोह का नेता सैयद नसरु उर्फ नसरु, अपने सहयोगियों ईलियाज, मुस्थाफ उर्फ मुस्सथा जमील कोलार नगर में करंजीकटे में एक किराए के मकान में शरण लिए हुए है। 7.2.2000 को इन्होंने मकान का पता लगा लिया और तत्काल ही श्री बावा ने मकान को घेर लिया और उसमें प्रवेश किया तथा वहां एक महिला को पाया। पूछताछ करने पर महिला ने बताया कि ईलियाज घर पर नहीं है। उसके कथन पर विश्वास न करके श्री बावा मकान में अन्दर गये वहां सीढ़ी पर छिपे ईलियाज ने अचानक श्री बावा पर चाकू से हमला कर दिया तथापि, उसे काबू कर लिया गया और इस दौरान उसने श्री बावा के बाएं अंगूठे पर काट खाया जिससे श्री बावा के अंगूठे पर चोट आ गई। ईलियाज से पूछताछ के दौरान पता चला कि सायं 4 से 6 बजे के बीच उसी मकान में नसरु आया। इस तथ्य के बावजूद कि श्री बावा के बाएं अंगूठे में चोट लगी थी ये टीम का नेतृत्व करते रहे और नसरु के लिए उस मकान के समीप निरन्तर नजर रखते रहे। शाम को लगभग 5.15 बजे सैयद नसरु वहां आया और मकान में अन्दर चला गया। श्री बावा मैरीस्वामी, पी.आई. तथा वीरभद्रप्पा, पी.सी. के साथ उसे गिरफ्तार करने के लिए उस मकान में प्रवेश कर गए। सैयद नसरु ने अपने कमर के पीछे छिपाई लम्बी तलवार निकाल ली और वह श्री बावा तथा अन्य पुलिस पार्टी, जो उसे गिरफ्तार करने का प्रयत्न कर रही थी, पर तलवार चलाने लगा। गम्भीर स्थिति से विचलित हुए बिना श्री बावा ने उसे आत्मसमर्पण करने को कहा परन्तु सैयद नसरु ने इस पर कोई ध्यान नहीं दिया और पुनः उन पर तलवार चलाई तथा श्री बावा और इनके दो अधिकारियों को ललकारा और श्री बावा की ओर बढ़ा। श्री बावा के पास उसे गोली मारने के अलावा कोई विकल्प नहीं बचा। इसके परिणामस्वरूप, सैयद नसरु की बाईं टांग में गोली से घाव हो गया और वह गिर पड़ा। तत्काल उसे गिरफ्तार कर लिया गया तथा उसके हाथ से तलवार छीन ली गई।

इस मुठभेड़ में, श्री जी.ए. बावा, सहायक पुलिस आयुक्त ने अदम्य वीरता, साहस एवं उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

यह पदक, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4(i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिया जा रहा है तथा फलस्वरूप नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 7 फरवरी, 2000 से दिया जाएगा।

(बरूण मित्रा)

निदेशक

सं0 166 - प्रेज/2003-राष्ट्रपति, मध्य प्रदेश पुलिस के निम्नलिखित अधिकारी को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:-

अधिकारी का नाम और रैंक

डा. विजय कुमार, भा.पु.से.

पुलिस अधीक्षक

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए पदक प्रदान किया गया:

6 दिसम्बर, 2000 को लगभग 1530 बजे मुखबिर आया और डा. विजय कुमार, पुलिस अधीक्षक मुरैना को सूचित किया कि एक महिला सहित डकैतों के एक गिरोह को, सभी डकैत शस्त्रों से लैस, पुलिस स्टेशन माता बसाइया के गांव संगाली के क्षेत्र में आसन नदी के नजदीक देखा गया है। गिरोह के कब्जे में एक अपहृत व्यक्ति भी था। यह सूचना प्राप्त होने पर एक छोटी पुलिस पार्टी बनायी गई जिसमें श्री विजय कुमार पुलिस अधीक्षक श्री एस.के. पांडे, अपर पुलिस अधीक्षक मुरैना, श्री शिव मंगल सिंह कुशवाह एस.डी.ओ.पी. मुरैना, श्री संतोष सिंह भदोरिया टी.आई.जोरा और श्री सुरेश चन्द्र दोहारे टी.आई. अम्बाह और 2 हेड कांस्टेबल और 8 कांस्टेबल थे। लगभग 18.40 बजे पुलिस पार्टी एक पुलिस वाहन में पुलिस स्टेशन माता बसाइया की ओर चल पड़े जहां, एस.एच.ओ. माता बसाइया के उप निरीक्षक श्री के.सी. शर्मा को भी टीम में शामिल किया गया। लगभग 2015 बजे पुलिस पार्टी बमरोली पुलिस पर पहुंची जहां पर आगे सूचना मिली कि गिरोह ने आसन नदी के किनारे, वहां से लगभग 6 कि.मी. दूर बेंदी का खार (एक छोर से बंद और नदी में खुलता नाला) में शरण ले रखी है और एक अपहृत व्यक्ति भी उनके कब्जे में था। तंगघाटियों, कंटीली झाड़ियों, रास्ते में पानी से भरे गहरे नालों और अत्यधिक ठण्डे मौसम को ध्यान में रखते हुए पुलिस अधीक्षक ने पुलिस टीम को ब्रीफ किया और यह स्पष्ट किया कि अभियान का उद्देश्य गिरोह के कब्जे से अपहृत व्यक्ति को रिहा कराना है और गोलीबारी तभी की जाए जब गिरोह ऐसा करे। बल को तीन पार्टियों में बांटा गया। पार्टी सं0 1 को हमला करने का कार्य करना था जिसका नेतृत्व स्वयं पुलिस अधीक्षक कर रहे थे। पार्टी सं. 2 को कट ऑफ टीम का कार्य दिया गया जिसका नेतृत्व अपर पुलिस अधीक्षक कर रहे थे। पार्टी सं. 3 को कट आफ का कार्य दिया गया जिसका नेतृत्व एस.डी.ओ.पी. मुरैना ने किया। 2030 बजे पुलिस पार्टियां गंतव्य स्थान को चलीं। लगभग 2 घंटे पैदल चलने के बाद पुलिस पार्टियां लगभग 2230 बजे बेंदी कार खार से 200 मीटर पहले के स्थान पर पहुंची जहां पर मुखबिर ने गिरोह की सही स्थिति सूचित की। भू-भाग और खार की अवस्थिति को ध्यान में रखते हुए कट ऑफ टीम सं. 2 को नदी के नजदीक खार के मुहाने पर और कट ऑफ टीम सं. 1 को खार के भीतर और टीले पर लगाया गया पुलिस अधीक्षक और उसकी टीम मुखबिर के साथ सावधानीपूर्वक, धीरे-धीरे और चुपचाप आगे बढ़े और हमला टीम फैल गई। पुलिस अधीक्षक थोड़ा और आगे बढ़े और दो डकैतों को खार में आग के पास बैठा देखा। वे आपस में बात कर रहे थे और उनके हथियार उनके एक तरफ पड़े थे। पुलिस अधीक्षक ने उन्हें ललकारा और दोनों ने तुरंत अपने हथियार उठा लिए और पुलिस अधीक्षक तथा हमला टीम पर भीषण गोलीबारी की। पुलिस अधीक्षक ने पुलिस टीम को तत्काल जमीन पर लेट जाने और जवाबी गोलीबारी करने को कहा। किसी आड़ के अभाव में डकैतों की गोलियां किसी भी क्षण किसी को भी लग सकती थीं परन्तु अपने प्राणों को जोखिम में डालते हुए पुलिस अधीक्षक और उसकी टीम आगे बढ़ी और उनके द्वारा की गई प्रभावी गोलीबारी से दोनों डकैत खामोश हो गए। इसी बीच खार के बाईं तरफ और मध्य भाग से भी अन्य डकैतों ने गोलीबारी प्रारम्भ कर दी परन्तु प्रभावी गोलीबारी के कारण डकैतों को पीछे हटने पर मजबूर होना पड़ा। कट ऑफ टीम सं. 1 ने एक डकैत को मार गिराया जबकि दूसरा डकैत खार के मुहाने की तरफ भागा और टीले पर चढ़ना प्रारम्भ किया, जहां से वह कट ऑफ पार्टी सं. 2 की गोलीबारी

को चपेट में आ गया और मारा गया। मुठभेड़ लगभग 40 मिनट तक जारी रही और उसके बाद गहरी खामोशी छा गई। लगभग आधा घण्टे पश्चात पुलिस अधीक्षक ने वायरलेस पर दो कट ऑफ पार्टियों को सतर्क रहने के निर्देश दिए और उन्हें सूचित किया कि हमला पार्टी तलाशी लेने के लिए खार में प्रवेश कर रही है। जैसे ही टीम नीचे कूदी उन्होंने टीले की दीवार के नजदीक एक व्यक्ति को बुरी तरह से घबराए हुए बैठे देखा। उसने अपना नाम सन्त कुमार बघेल बताया और यह कि उसका अपहरण इस गिरोह द्वारा 10-12 दिन पूर्व जिला शियोपुर से उसके भाई के साथ जो कुछ दिन पूर्व बचकर भाग गया था, किया गया था। उसने डकैतों के नामों का खुलासा भी किया। मारे गए डकैतों की पहचान काला नाई जिस पर 7000/-रुपये का इनाम, सरोज जाटव जिस पर 2000/-रुपये का इनाम, रामबीर सिंह तोमर जिस पर 2000/-रुपये का इनाम और तेजपाल सिंह सिकारवार जिस पर 2000/-रुपये का इनाम, के रूप में हुई। एक 315 बोर देशी राइफल, तीन 12 बोर गन, बड़ी मात्रा में गोलाबारूद और खाली कारतूस और दैनिक प्रयोग की अन्य वस्तुएं भी बरामद की गईं।

इस मुठभेड़ में, डा. विजय कुमार, भा.पु.से., पुलिस अधीक्षक ने अदम्य वीरता, साहस एवं उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

यह पदक, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4(i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिया जा रहा है तथा फलस्वरूप नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 6 दिसम्बर, 2000 से दिया जाएगा।

(4250) (सह)

(बरूण मित्रा)

निदेशक

सं 167 - प्रेज/2003-राष्ट्रपति, मध्य प्रदेश पुलिस के निम्नलिखित अधिकारी को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक का प्रथम बार सङ्घर्ष प्रदान करते हैं:-

अधिकारी का नाम और रैंक

श्री तुषार कांत विद्यार्थी

एस.डी.ओ.पी.

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए पदक प्रदान किया गया:

12 मई, 2002 को श्री टी.के. विद्यार्थी, एस.डी.ओ.पी. भितारवार जिला ग्वालियर को एक दुर्दान्त डकैत कल्लू रावत उर्फ पिनपिना जिसके सिर पर 30,000/-रुपये का इनाम था, के अपने सहयोगियों के साथ गोलर घाटी पुलिस स्टेशन कारहंया, जिला ग्वालियर के घने जंगलों में ठहरे होने के बारे में एक सूचना प्राप्त हुई। श्री विद्यार्थी ने फोन से पुलिस स्टेशन कारहंया के स्टेशन अधिकारी को उपलब्ध बल के साथ तैयार रहने को कहा। पुलिस स्टेशन कारहंया पहुंचने पर, श्री विद्यार्थी ने पूरे बल का ब्रीफ किया कि गिरोह से किस प्रकार मुठभेड़ करनी है। जब श्री विद्यार्थी के नेतृत्व में पुलिस टीम ने 5 बजे पूर्वाह्न को तपकन खो पहाड़ी चढ़ी तो उन्होंने पांच सशस्त्र डकैतों को देखा और उन्हें आत्मसमर्पण करने के लिए ललकारा, परन्तु उनकी चेतावनी की अनदेखी करते हुए डकैतों ने अंधाधुंध गोलीबारी प्रारम्भ कर दी और एक गोली श्री विद्यार्थी के नजदीक से होकर गुजर गई परन्तु भाग्य से वे बाल-बाल बच गए। तथापि, अपने प्राण की परवाह किए बगैर श्री विद्यार्थी रेंगते हुए आगे बढ़े और डकैतों के बिल्कुल समीप पहुंच गए। जब श्री विद्यार्थी की सभी चेतावनियों को डकैतों ने अनसुनी कर दी तो उन्होंने आत्मरक्षा में गोलियां चलायीं। श्री विद्यार्थी ने डकैतों की चीख पुकार सुनी। गोलीबारी रुकने के 30 मिनट बाद क्षेत्र की व्यापक तलाशी ली गई जिसके परिणामस्वरूप गिरोह का सरगना कल्लू रावत उर्फ पिनपिना को मरा हुआ पाया गया। एक अन्य डकैत नामतः सुधर सिंह जाटव (1000/-रुपये का इनाम) गांव लमकाना पुलिस स्टेशन जिंगना का कुछ दूरी पर मरा हुआ पाया गया। कल्लू रावत उर्फ पिनपिना, डकैत 5 हत्याओं, 16 अपहरण, 10 हत्या के प्रयासों और डकैती और लूट के 47 जघन्य अपराधों का अभियुक्त था। तथापि, एक व्यक्ति नामतः शाहजद खान जिसका अपहरण इस गैंग द्वारा एक दिन पूर्व किया गया था को जिन्दा बचा लिया गया। इन दो डकैतों के शवों के नजदीक से एक .315 बोर सिंगल शॉट राइफल और एक .12 बोर (सिंगल बैरल) सक्रिय और खाली कारतूसों के साथ बरामद किए गए।

इस मुठभेड़ में, श्री तुषार कांत विद्यार्थी, एस.डी.ओ.पी. ने अदम्य वीरता, साहस एवं उच्चक्रांति की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

यह पदक, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4(i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिया जा रहा है तथा फलस्वरूप नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 13 मई, 2002 से दिया जाएगा।

(बरूण मित्रा)

निदेशक

सं० 168 - प्रेज/2003-राष्ट्रपति, मध्य प्रदेश पुलिस के निम्नलिखित अधिकारी को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:-

अधिकारी का नाम और रैंक

श्री गोपाल पटेल (मरणोपरांत)

उप निरीक्षक

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए पदक प्रदान किया गया:

2.1.2001 को भरकुआ के घने और अत्यन्त दुर्गम जंगल में तलाशी अभियान के दौरान उप निरीक्षक श्री गोपाल पटेल, पुलिस स्टेशन दिरोलीपार तथा एटरेटा की पुलिस टीम के साथ एक कठिन और ऊबड़-खाबड़ पहाड़ी को चढ़ाई इसके ऊपरी हिस्से में, डकैतों के छिपने के स्थान की तलाशी के लिए की। पहाड़ी के शिखर पर जाने का रास्ता घनी कंटीली झाड़ियों, तीखी चढ़ाई, घुमावदार था और रास्ते में छिपने के अन्य स्थान से होकर गुजरता था। श्री गोपाल पटेल पहाड़ी पर चढ़े और 5 अन्य पार्टी कार्मिकों के साथ शिखर पर पहुंचे। पार्टी जब एक्सटेन्डेड लाइन फोरमेशन पर आगे बढ़ी तो श्री गोपाल पटेल ने डकैत गैंग के संतरी को देखा। बंदूकधारी एक व्यक्ति को देखने पर, उन्होंने उसे आत्मसमर्पण करने के लिए ललकारा और संतरी को दबोचने के लिए उसकी तरफ बढ़े परन्तु इसी के साथ स्वयं तब तक गोलीबारी नही की जब तक उसकी पहचान न हो जाय। श्री गोपाल पटेल को अपनी ओर आता देख डकैत ने दो गोली दागी जो श्री पटेल के सिर, पेट और पांव पर लगी। गंभीर रूप से जखमी हो जाने के बावजूद, उन्होंने अन्य पुलिस कर्मिकों को गोलीबारी करने के लिए कहा और वे जमीन पर गिर गए परन्तु अपने दल कर्मिकों को हमला करने और आगे बढ़ने के लिए उत्साहित करते रहे क्योंकि डकैतों ने अंधाधुंध गोलीबारी प्रारम्भ कर दी थी। उन्होंने कांस्टेबल शिवे बालक को अपने सिर पर जहां से खून बह रहा था लुंगी बांधने को कहा और उत्कृष्ट बहादुरी और अनुकरणीय नेतृत्व के गुणों का प्रदर्शन करते हुए, वे अंतिम सांस तक कर्मिकों को जवाबी गोलीबारी करने और आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करते रहे।

इस मुठभेड़ में, (दिवंगत) श्री गोपाल पटेल, उप निरीक्षक ने अदम्य वीरता, साहस एवं उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

यह पदक, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4(i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिया जा रहा है तथा फलस्वरूप नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 2 जनवरी, 2001 से दिया जाएगा।

(बरूण मित्रा)

निदेशक

क्र. 169 - प्रेज/2003-राष्ट्रपति, मध्य प्रदेश पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक का नगर/पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:-

अधिकारियों का नाम और रैंक

सर्वश्री

1. गाजीराम मीणा, भा0पु0से0, पुलिस अधीक्षक (वीरता के लिए पुलिस पदक का प्रथम बार)
2. मनोज कुमार सिंह, पुलिस उपाधीक्षक (वीरता के लिए पुलिस पदक)

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए पदक प्रदान किया गया:

17.11.2001 को श्री जी आर मीणा को सूचना प्राप्त हुई कि रज्जन गुर्जर का गिरोह नजदीक के क्षेत्र में अपहरण का अपराध करने की मंशा से चंबल नदी के घने जंगल/दर्रे में छुपा हुआ है। श्री मीणा ने तत्काल विभिन्न पुलिस स्टेशनों से बल इकट्ठा किया और लगभग सायं 7 बजे पुलिस स्टेशन सुरपड़ा पहुँचे। श्री मीणा के नेतृत्व में उपलब्ध बल को तीन पार्टियों में बांट दिया गया। श्री मीणा ने प्रस्तावित अभियान के बारे में बल को बताया और पुलिस बल, डकैतों के छिपने के ठिकाने की तरफ पैदल चल दिया। लगभग 2 घंटे पैदल चलने के पश्चात पुलिस पार्टी छिपने के ठिकाने पर पहुँची, जो कि चंबल नदी के तट के नजदीक एक ऊँची जगह पर था और चारों तरफ से घनी झाड़ियों से घिरा हुआ था। डकैत गिरोह का पहरा देने वाले व्यक्ति ने पुलिस पार्टी को देख लिया और गिरोह को चौकस कर दिया, जिन्होंने पुलिस पार्टी पर गोलीबारी शुरू कर दी। श्री मीणा ने डकैतों को आत्मसमर्पण करने के लिए ललकारा। लेकिन गिरोह ने पुलिस दल पर गोलीबारी जारी रखी। पुलिस दल, जो कि ढलान की तरफ था, निश्चित रूप से अलाभकारी स्थिति में था। श्री मीणा ने तत्काल पुलिस दल को छिपने के ठिकाने को घेरने का निदेश दिया। चतुराईपूर्ण चाल के रूप में श्री मीणा ने पार्टियों का नेतृत्व कर रहे पुलिस उपाधीक्षक मनोज सिंह और अवधेश गोस्वामी को एक ऊँची भौगोलिक पोजीशन पर पहुँचने का निदेश दिया और स्वयं व्यक्तिगत रूप से धावे का नेतृत्व करने का निर्णय लिया तथा एक छोटी सी पुलिस पार्टी के साथ छिपने के ठिकाने में घुस गए। इसी दौरान, डकैतों ने कांस्टेबल भोला और हैड कांस्टेबल गणेश राम पर गोलीबारी कर दी जो गोलीबारी करके एस डी ओ पी अतर के नेतृत्व वाली पार्टी, जो अन्य दिशा से छिपने की ठिकाने की तरफ बढ़ रही थी, को फँस प्रदान कर रहे थे। दो पुलिस कार्मिकों की जान जोखिम में देखकर, श्री मीणा डकैतों द्वारा निरंतर की जा रही गोलीबारी और अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की परवाह किए बिना, धावा बोलते हुए आगे बढ़े और अपनी ए के-47 से गोलीबारी शुरू कर दी और एक डकैत को दायें हाथ पर ही मार गिराया, जिसकी पहचान बाद में देवेन्द्र उर्फ मुन्ना परिहार के रूप में की गई और उससे एक 12 बोर की बंदूक बरामद की गई। इस अवसर पर भोन्ड पुलिस की अरज से 3,000/- रु० और इटावा पुलिस की ओर से 2,500/- रु० का इनाम था। इस वीरतापूर्ण कार्रवाई से डकैत गिरोह को बड़ा भारी धक्का लगा और वे दर्रे में कूदकर भागने लगे। श्री मीणा अपने बल को प्रोत्साहित करते हुए लगातार आगे बढ़ते रहे। इसी बीच, पुलिस उपाधीक्षक मनोज कुमार सिंह ने फुरती से कार्रवाई करते हुए, कांस्टेबल मुन्ना लाल की तरफ गोलीबारी कर रहे एक डकैत को मार गिराया। इस डकैत की पहचान, धनू लोधी उर्फ फौजी, निवासी शाहदपुर पुलिस स्टेशन राय, जिला हमीरपुर (उत्तर प्रदेश) के रूप में की गई। उससे 12 बोर की बंदूक और बड़ी संख्या में कारतूस बरामद किए गए। इसी बीच अन्य डकैत अंधेरे और जाने-पहचाने इलाके का लाभ उठाते हुए भाग गए। श्री मीणा और उनकी पार्टी ने लगभग 9 घंटे तक उनका पीछा किया और उनको मूरोंग दर्रे के छिपने के ठिकाने में तलाश लिया और वहाँ से पुलिस स्टेशन पछाया गांव, जिला इटावा (उत्तर प्रदेश) में मंसा राम का पुरा गांव के

नजदीक छिपने के ठिकाने की तरफ पैदल बढ़े । लगभग प्रातः 6 बजे जब पुलिस पार्टी इस गांव के नजदीक दरों की तलाशी ले रही थी, तब वे रज्जन गुर्जर गिरोह द्वारा एल एम जी से की गई गोलियों की बौछार से भौचके रह गए । यह गिरोह दरें के ऊपरी सिरे पर छिपा हुआ था तथा उसने पुलिस पार्टी को देख लिया था । इस गिरोह ने पुलिस दल पर अंधाधुंध गोलीबारी शुरू कर दी । डकैतों द्वारा की गई गोलियों की बौछार से न घबराते हुए श्री मीणा ने पुलिस पार्टी को जवाबी गोलीबारी करने और छिपने के ठिकाने को घेरने का आदेश दिया । श्री मीणा ने व्यक्तिगत रूप से कुछ कांस्टेबलों के साथ छिपने के ठिकाने के ऊपरी सिरे की तरफ बढ़ने के लिए पुलिस पार्टी का नेतृत्व किया । पुलिस पार्टी के दृढ़संकल्प को देखकर, डकैतों के गिरोह ने स्वयं को छोटे-छोटे ग्रुपों में विभाजित कर लिया और दरें में विभिन्न जगहों से गोलीबारी करके पुलिस पार्टी को उलझाए रखा । दृढ़संकल्प पुलिस पार्टी द्वारा की गई जवाबी कार्रवाई के परिणामस्वरूप 3 डकैतों नामतः (1) भगवंत उर्फ सुखराम, निवासी भरसैन जिला औरैया (उत्तर प्रदेश), (2) बबलू उर्फ राजेश, निवासी सिमरा, टिकमगढ़ (मध्य प्रदेश) और (3) राजू उर्फ धर्मेन्द्र लोधी, निवासी नागला बिशुन पुलिस स्टेशन बालाराई जिला इटावा (उत्तर प्रदेश) का सफाया हो गया । उनसे दो 12 बोर की राइफले और गोला बारूद के साथ एक देश में निर्मित बंदूक बरामद की गई । रज्जन गुर्जर और गिरोह के 7-8 सदस्य, अपहृत व्यक्तियों के साथ यमुना नदी में कूदने में सफल हो गए लेकिन, पुलिस पार्टी द्वारा निरंतर पीछा करने और गोलीबारी करने के कारण डकैतों को 5 अपहृत व्यक्तियों को छोड़ने के लिए विवश होना पड़ा ।

इस मुठभेड़ में, सर्वश्री गाजीराम मीणा, भा0पु0से0, पुलिस अधीक्षक और मनोज कुमार सिंह, पुलिस उपाधीक्षक ने अदम्य वीरता, साहस एवं उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया ।

ये पदक, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4(i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 17 नवंबर, 2001 से दिया जाएगा ।

(बरूण मित्रा)
निदेशक

स0 170 - प्रेज/2003-राष्ट्रपति, मध्य प्रदेश पुलिस के निम्नलिखित अधिकारी को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:-

अधिकारी का नाम और रैंक

श्री गाजीराम मीणा,
पुलिस अधीक्षक

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए पदक प्रदान किया गया:

खूखार डकैत निर्भय सिंह गुर्जर का गिरोह भिंड, इटावा, ओरया, जालोन और कानपुर जिलों के सीमावर्ती क्षेत्रों में लगभग 20 वर्षों से लूटमार कर रहा था। इस गिरोह ने 8 हत्याओं, 43 डकैतियों और 44 अपहरण सहित क्षेत्र में 150 से भी अधिक अपराध किए। गिरोह के सरगना पर उत्तर प्रदेश पुलिस की ओर से 50,000/- ₹0 का इनाम और मध्य प्रदेश पुलिस की तरफ से 25,000/- ₹0 का इनाम था। यह गिरोह इस क्षेत्र में निरंतर फिरौती के लिए अपहरण के अपराध कर रहा था। घना दर्रा/जंगल इस गिरोह के लिए छिपने की एक आदर्श जगह थी। श्री जी आर मीणा, पुलिस अधीक्षक, भिंड ने इस गिरोह की गतिविधियों को रोकने और इसे नियंत्रित करने के कार्य को चुनौती के रूप में लिया और भिंड में और उत्तर प्रदेश से सटे क्षेत्रों में मुखबिरों का एक अच्छा खासा तंत्र तैयार किया और गहन तलाशी/गश्त अभियान शुरू किए ताकि उस उबड़-खाबड़ भू-भाग से भली-भांति परिचित हो सकें। 25.03.2001 को, इस गिरोह ने अपने एजेंटों के माध्यम से सेना में भर्ती का प्रलोभन देकर घोखे से 8 व्यक्तियों का भिंड जिले से अपहरण कर लिया। इस सनसनीखेज अपराध से भिंड पुलिस को इस गिरोह के विरुद्ध अपने अभियानों को आगे और तेज करने के लिए काफी प्रेरित किया। 18.4.2001 को श्री जी आर मीणा को एक सूचना प्राप्त हुई कि निर्भय सिंह गुर्जर का गिरोह जिला जालोन (उत्तर प्रदेश) में रामपुरा के दर्रा और घने जंगल में मौजूद है। श्री मीणा अपने बल के साथ रामपुरा, जो कि भिंड से लगभग 100 कि०मी० दूर है, की ओर रवाना हुए। यह मालूम हुआ कि यह गिरोह लगभग 25 लोगों का मजबूत दल है और उनके पास 18 अपहृत व्यक्ति हैं तथा एक के 56 राइफलों सहित आधुनिक और स्वचालित हथियारों से लैस है। श्री मीणा ने पुलिस बल को चार पार्टियों में बांट दिया और जंगल/दर्रा में गहन तलाशी अभियान शुरू कर दिया। पुलिस पार्टी ने खतरनाक दर्रा में लगभग 3 घंटे की तलाशी के पश्चात माई गांव के दांग (दर्रा और घना जंगल) में इस गिरोह को ढूंढ लिया। पुलिस पार्टी को देखकर, गिरोह ने उन पर भारी गोलीबारी शुरू कर दी। इसके बदले में पुलिस पार्टी ने भी डकैतों को मारकरा और एक योजनाबद्ध रक्षात्मक अभियान शुरू कर दिया, जिसके परिणामस्वरूप गिरोह इधर-उधर बिखर गया। श्री मीणा और उनकी पार्टी, इस तथ्य के बावजूद भी कि उस समय अंधेरा हो गया था भाग रहे डकैतों के गिरोह का लगातार पीछा करती रही। लगातार पीछा करते रहने/तलाशी अभियानों के कारण पुलिस पार्टी का दिनांक 19.4.2001 को लगभग 0300 बजे गांव नौनावाली (पुलिस स्टेशन माधोगढ़ जिला जालोन) के नजदीक डकैतों से सामना हुआ। भाग रहे गिरोह का पीछा करते श्री मीणा के नेतृत्व वाली पुलिस पार्टी ने डकैतों द्वारा की जा रही भारी गोलीबारी को परवाह नहीं की और उनका पीछा जारी रखा और लगभग 0500 बजे, डकैतों के गिरोह की एक टुकड़ी को पुलिस स्टेशन रौण, गांव थानपुरा की सीमा के नजदीक पाहुज नदी के तट पर ढूंढ लिया। श्री मीणा के साथ उनकी छोटी सी पार्टी ने डकैतों को आत्मसमर्पण करने के लिए ललकारा, लेकिन गिरोह ने इसका जवाब पुलिस पार्टी पर गोलीबारी करके दिया। डकैतों की ओर से की जा रही गोली बारी से उनकी तरफ बढ़ रहे श्री मीणा और पुलिस पार्टी भयभीत नहीं हुए। एक डकैत ने कांस्टेबल बाल गोपाल तिवारी पर गोली चला दी, लेकिन वे बाल-बाल बच गए क्योंकि गोली उन्हें छूती हुई निकल गई। डकैत ने पुनः कांस्टेबल तिवारी को

निशाना बना कर गोली चलाई। यह देखकर, श्री मीणा जो कांस्टेबल के साथ थे, अपनी जान की परवाह न करते हुए आगे बढ़े, और उसे धक्का देकर नीचे गिरा दिया तथा डकैत पर अपनी ए के-47 राइफल से गोली चला दी। गोली डकैत को लगी और वह वहीं का वहीं ढेर हो गया। यदि श्री मीणा वीरतापूर्ण कार्रवाई न करते तो कांस्टेबल बाल गोपाल तिवारी की जान खतरे में पड़ सकती थी। पुलिस और डकैतों के बीच आपसी गोलीबारी का लाभ उठाते हुए, अपहृत व्यक्तियों में से एक डकैतों के चंगुल से बच कर भाग निकलने में सफल हो गया। पुलिस द्वारा किए गए जबरदस्त हमले के कारण डकैतों को भागने पर मजबूर होना पड़ा और ऐसा करते समय उन्होंने तीन अपहृत व्यक्तियों को नदी के पानी में धकेल दिया। छोटी सी पुलिस पार्टी द्वारा तुरंत किए गए बचाव अभियान से इन तीन व्यक्तियों की जान बच गई। मारे गए डकैत की पहचान बाद में राजू उर्फ शिव नारायण परिहार सुपुत्र शंकर सिंह परिहार, निवासी गांव सलोखड़ा, पुलिस स्टेशन बिठौली, जिला हटावा उत्तर प्रदेश के रूप में की गई, जिस पर 2500/- ₹0 का इनाम घोषित था। उसके पास से एक 12 बोर की बंदूक भी बरामद की गई।

इस मुठभेड़ में, श्री गाजीराम मीणा, पुलिस अधीक्षक ने अदम्य वीरता, साहस एवं उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

यह पदक, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4(i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिया जा रहा है तथा फलस्वरूप नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 19 अप्रैल, 2001 से दिया जाएगा।

(बरूण मित्रा)

निदेशक

सं० 171 - प्रेज/2003-राष्ट्रपति, मध्य प्रदेश पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:-

अधिकारियों का नाम और रैंक

सर्व/श्री

1. संजय राणा, पुलिस अधीक्षक
2. वाई.के. तिवारी, सी.एस.पी.

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए पदक प्रदान किया गया:

गांव रामपुरा, पुलिस स्टेशन नयागांव, जिला भिंड की तरफ हरी सिंह काच्छी के कुख्यात डाकू गिरोह के आगे बढ़ने की सूचना प्राप्त होने पर, पुलिस मुखबिर द्वारा दिखाए, डकैत गिरोह के आने के संभावित रास्ते पर 24/25 फरवरी, 1996 के बीच की रात को पुलिस बल की तीन टुकड़ियां लगा दी गईं। श्री संजय राणा पार्टी सं. 1 के प्रभारी थे। जब रात को 1.20 बजे डकैत दिखाई दिए तब श्री राणा ने उन्हें आत्मसमर्पण करने के लिए ललकारा। जवाब में, डकैतों ने पुलिस कर्मियों को मारने के उद्देश्य से पार्टी सं. 1 पर गोलीबारी शुरू कर दी। पार्टी सं. 1 के पुलिस कर्मियों ने अपने बचाव में जवाबी गोलीबारी शुरू कर दी। श्री राणा ने असाधारण साहस का परिचय देते हुए और अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की परवाह किए बिना वे अपनी आड़ वाली पोजीशन से बाहर निकले और डकैतों की पोजीशन की तरफ बढ़े। जब डकैतों ने श्री राणा को खुले में आते देखा, तो उन्होंने इन्हें मारने के उद्देश्य से भारी गोलीबारी शुरू कर दी। निडरता और अपनी जान की परवाह न करते हुए श्री राणा भारी गोलीबारी के बीच डकैतों की तरफ लगातार रेंगते हुए बढ़े। डकैतों के नजदीक पहुंचने पर, श्री राणा ने उन्हें अपने इथियार डालने और समर्पण करने के लिए कहा लेकिन डकैतों ने श्री राणा पर अंधाधुंध गोलीबारी की। श्री राणा ने अपने बचाव में जवाबी गोलीबारी की जिसके परिणामस्वरूप एक डकैत मारा गया। आपसी गोलीबारी में पुलिस बल द्वारा शेष डकैत भी मार गिराए गए। श्री राणा द्वारा मारे गए डकैत की पहचान बाद में हरी सिंह काच्छी, गिरोह के सरगना के रूप में की गई जिस पर मध्य प्रदेश सरकार द्वारा 15000/-रु० का इनाम घोषित किया हुआ था। इस मुठभेड़ में मारे गए अन्य डकैत रामसिया काच्छी और मुन्ना काच्छी थे, और दोनों पर मध्य प्रदेश सरकार द्वारा 5000/-रु० की घोषणा भी की हुई थी। इस मुठभेड़ में हरी सिंह काच्छी के पूरे गिरोह का सफाया हो गया। जब श्री संजय राणा, पुलिस अधीक्षक के अधीन पार्टी सं. 1 ने अपने बचाव में डकैतों पर गोलीबारी शुरू की तो डकैत हाथ-पैर मारते हुए श्री वाई.के. तिवारी के अधीन पार्टी सं. 2 की तरफ बढ़े। श्री वाई.के. तिवारी ने उन्हें समर्पण करने के लिए ललकारा। डकैतों ने श्री तिवारी की आवाज सुनने पर उनकी पार्टी पर अंधाधुंध गोलीबारी शुरू कर दी। श्री तिवारी ने अपनी पार्टी के साथ डकैतों पर गोलीबारी की। श्री तिवारी घुटनों पर रेंगते हुए आगे बढ़े, वे हाथापाई करके डकैतों को पकड़ना चाहते थे। एक डकैत ने श्री तिवारी पर बहुत निकट से गोली चलाई लेकिन वह श्री तिवारी के बहुत नजदीक से निकल गई और वे सौभाग्य से बच गए। श्री तिवारी ने उस डकैत को दूसरी गोली चलाने से पहले ही मार गिराया। इस डकैत की पहचान रामसिया उर्फ भेरंत काच्छी, जिस पर 5000/-रु० का इनाम था, के रूप में की गई।

मुठभेड़ स्थल से निम्नलिखित शस्त्र, गोलाबारूद और अन्य मदें बरामद की गईं :-

(क) .315 बोर की राइफल

(ख)	.12 बोर डी.बी.बी.एल. गन	:	01
(ग)	.12 बोर एस.बी.बी.एल. गन	:	01
(घ)	.315 बोर के जिंदा कारतूस	:	06
(ङ)	.12 के जिंदा कारतूस	:	10
(च)	315 बोर के खाली कारतूस	:	17
(छ)	12 बोर के खाली कारतूस	:	22
(ज)	प्रतिदिन इस्तेमाल के बरतन-भांडे		

इस मुठभेड़ में, सर्वश्री संजय राणा, पुलिस अधीक्षक और वाई.के. तिवारी, सी.एस.पी. ने अदम्य वीरता, साहस एवं उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया ।

ये पदक, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4(i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 25 फरवरी, 1996 से दिया जाएगा ।

बख्श मिश्रा
(बख्श मिश्रा)
निदेशक

सं० 172 - प्रेज/2003-राष्ट्रपति, मध्य प्रदेश पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:-

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

1. दिनेश चंद सागर, पुलिस अधीक्षक
2. दिलीप भंडारी, एस.डी.ओ.पी.

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए पदक प्रदान किया गया:

30.9.02 को श्री डी.सी. सागर, पुलिस अधीक्षक, देवास और श्री दिलीप भंडारी, एस.डी.ओ.पी., सोनकच ने नरेन्द्र कंजर और इन्द्र बलाई, जिन्होंने देवास और पड़ोसी जिलों में आतंक फैला रखा था और जिन्होंने अपने गिरोह के साथ क्रमशः 43 और 38 जघन्य अपराध किए थे, को तलाशने हेतु अपनी टीमों का नेतृत्व किया। उनके विरुद्ध अदालत से कई वारंट जारी हुए थे और उनके सिरों पर क्रमशः 20,000/-रु० और 50,000/-रु० का इनाम घोषित किया हुआ था। 29.9.2002 को उन्होंने एक लाख और पचास हजार की फिरोती के लिए एक युवा हरिजन लड़के का अपहरण कर लिया जो अपने माता-पिता का इकलौता पुत्र था और चौबीस घंटों में फिरोती की राशि नहीं देने पर उसे जान से मारने की धमकी दी। 30.9.02 को उक्त दोनों अधिकारियों ने पैदल चलते और रेंगते हुए अपराधियों का पीछा किया और उन्हें जंगल में मदती पहाड़ी में एक खेत में घेर लिया और अपराधियों को चेतावनी देते हुए आत्मसमर्पण करने के लिए कहा ताकि बंधक को छुड़ाया जा सके। अपराधियों ने चेतावनी को अनसुना करते हुए बंधक को सामने करते हुए अपने घातक हथियारों से निरंतर गोलीबारी शुरू कर दी। श्री सागर जांघ में गोली लगने से घायल हो गए और चिकित्सा के दौरान उनके शरीर से छह पैलेट्स भी निकाली गईं। श्री भंडारी, जांघ और शरीर में पांच गोलियां लगने से घायल हो गए, जिनमें से दो चोटें बहुत गंभीर किस्म की थीं तथा चिकित्सा के दौरान उनके शरीर से भी अठारह पैलेट्स निकाली गईं। गिरोह द्वारा की जा रही निरंतर गोलीबारी के बीच दोनों अधिकारी चतुराई से बंधक को सही सलामत बचाने में सफल हो गए और दोनों खूंखार अपराधियों नरेन्द्र कंजर और इन्द्र बलाई का सफाया कर दिया तथा दो खतरनाक अपराधियों जयपाल और हंसराज को भी शस्त्र और लूटी गई एक लाख रु० की राशि के साथ गिरफ्तार कर लिया। अपराधियों से पांच कट्टे (12 बोर), एक कट्टा (32 बोर), एक एम.आई. गन, 36 जिंदा कारतूस (12 बोर), 6 जिंदा गोलियां (32 बोर) और एक लाख रु० बरामद किए गए।

इस मुठभेड़ में, सर्व/श्री दिनेश चंद सागर, पुलिस अधीक्षक और दिलीप भंडारी, एस.डी.ओ.पी. ने अदम्य वीरता, साहस एवं उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पदक, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4(i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 30 सितम्बर, 2002 से दिया जाएगा।

०२०१ १५/११
(बरूण मित्रा)
निदेशक

सं० 173 - प्रेज/2003-राष्ट्रपति, महाराष्ट्र पुलिस के निम्नलिखित अधिकारी को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:-

अधिकारी का नाम और रैंक

श्री नारायण ईश्वर भोई
सहायक उप-निरीक्षक

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए पदक प्रदान किया गया:

एक हमलावर महेन्द्र गणपति पिदानेकर, आयु 32 वर्ष, जो पश्चिम अपार्टमेंट प्रभादेवी, मुंबई का है और जिसका नाम अनुसंधान अध्येता के रूप में फ्लोरिडा विश्वविद्यालय, यू.एस.ए. से काट दिया गया है, सांगली की एक श्रीमती मयूरी का पति है। उनका 1 1/2 वर्ष का एक बच्चा भी है जिसका नाम गणेश है। हमलावर और उसकी पत्नी मयूरी के बीच कुछ विवाद था। 13 मई, 2002 को हमलावर अपने बच्चे, जिसे वह जबरदस्ती ले आया था, को साथ लेकर 20-15 बजे एस.टी.बस. अर्थात् अजारा-मुंबई बस से मुंबई जा रहा था। हमलावर की पत्नी उससे अपना पुत्र देने का अनुरोध कर रही थी लेकिन उसने मना कर दिया और उसे धमकी दी। उसने एस.टी. स्टैंड पर ड्यूटी पर तैनात पुलिस कांस्टेबल से अपने बच्चे को छुड़ाने की प्रार्थना की। तथापि उन्होंने एस.टी. चालक को बस को शाहपुरी पुलिस स्टेशन ले जाने के लिए कहा। हमलावर बहुत हिंसक और क्रोधित हो उठा था। उसके सीधे हाथ में चाकू था जिसे उसने बायें हाथ से पकड़े अपने पुत्र गणेश की तरफ किए हुए था। उसने बच्चे के साथ ही साथ बस के 40 यात्रियों, जो कि भयभीत थे और केवल इस घटना को देख रहे थे, को जान से मार डालने की धमकी दी। पुलिस स्टेशन के द्वार पर, हमलावर ने पुलिस को आगे आने का साहस न करने की धमकी दी नहीं तो वह बच्चे को मार देगा। इसके बावजूद, सहायक उप-निरीक्षक नारायण ईश्वर भोई ने अदम्य साहस के साथ और अपनी जान को गंभीर खतरे में डालकर बस में प्रवेश किया और हमलावर को तत्काल दबोच लिया और बच्चे को उसके हाथों से छुड़ा लिया लेकिन ऐसा करते समय, हमलावर ने उन पर चाकू से हमला कर दिया तथा भोई स्कंधास्थि के बायें किनारे पर चाकू लगने से गंभीर रूप से जखमी हो गए तथा सौभाग्य से और तत्काल की गई शल्य चिकित्सा से उनकी जान बच गई।

इस मुठभेड़ में, श्री नारायण ईश्वर भोई, सहायक उप-निरीक्षक ने अदम्य वीरता, साहस एवं उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

यह पदक, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4(i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिया जा रहा है तथा फलस्वरूप नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 13 मई, 2002 से दिया जाएगा।

4201/1517
(बरूण मित्रा)
निदेशक

स0 174 - प्रेज/2003-राष्ट्रपति, महाराष्ट्र पुलिस के निम्नलिखित अधिकारी को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:-

अधिकारी का नाम और रैंक

श्री संजय देशमुख,
उप निरीक्षक

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए पदक प्रदान किया गया:

17.5.2000 को 8-9 डकैतों के गिरोह ने लासलगांव में गुंजाल पेट्रोल पम्प और निफाड में महालक्ष्मी पेट्रोल पम्प में डकैती-डाली और 58018/-रुपये लूट लिए। उन्होंने एक चोरी की टाटा सूमो का प्रयोग किया। एस.डी.पी.ओ. बी.जी. शेखर, निफाड सब-डिवीजन ने पी.एस.आई. देशमुख को डकैतों का पीछा करने और पिम्पलगांव रनवाड रोड पर नाकाबंदी का प्रबंध करने के निर्देश दिए। उन्होंने उपलब्ध अपर्याप्त स्टाफ के साथ आगरा राजमार्ग के पास रनवाड पर नाकाबंदी लगानी प्रारम्भ कर दी। डकैती के बाद लासलगांव-रनवाड रोड पर 120 कि.मी. प्रति घंटे की रफ्तार से टाटा सूमो में जा रहे डकैतों ने पी.एस.आई. देशमुख और 2 पुलिस कर्मियों को सड़क पर खड़ा देखा। उन्होंने पी.एस.आई. देशमुख और उनके स्टाफ को कुचलने के इरादे से तेज गति में चल रहे वाहन को उनकी ओर मोड़ा। श्री देशमुख तत्काल सड़क से बाहर कूदे और स्वयं को इस खतरनाक हमले से बचा लिया। उन्होंने तत्काल स्वयं को नियंत्रित किया और सरकारी जीप में डकैतों का पीछा करना प्रारम्भ किया। डकैत वाहन को सोगरस फाटा की तरफ मुम्बई-आगरा राजमार्ग पर ले गए। टायर फट जाने के कारण डकैतों का टाटा सूमो पर नियंत्रण नहीं रहा और उसमें से 8/9 डकैत बाहर निकले और घातक हथियारों और लूटी सम्पत्ति के साथ पास के खेत में और ऊबड़-खाबड़ बंजर जमीन पर भागना प्रारम्भ किया। पी.एस.आई. देशमुख ने उन्हें खेत में भागते देखा और तत्काल जीप से उतरे और अपर्याप्त पुलिस स्टाफ के साथ डकैतों का पीछा करना प्रारम्भ किया। लगातार भागते हुए पुलिस स्टाफ पीछे छूट गया और वह अकेले रह गए। पी.एस.आई. देशमुख को अकेले देख डकैत अचानक पीछे मुड़े और गंडासे से उन पर हमला कर दिया जिससे उनके सीने और महत्वपूर्ण अंग जख्मी हो गए। गंभीर रूप से घायल होने के बावजूद उन्होंने अपने प्राणों की रक्षा करने और उन्हें पकड़ने के लिए अपनी सर्विस पिस्तौल से डकैतों की तरफ 4 राउण्ड गोलियां चलाई। इस मुठभेड़ हमले में एक डकैत घायल हो गया और अन्य भाग गए। पी.एस.आई. देशमुख के सीने की हड्डी टूट गई और गंभीर चोटें आईं और उन्हें चांदवाड सरकारी अस्पताल ले जाया गया। घायल डकैत की अस्पताल में मृत्यु हो गई। घातक हथियार जैसे गंडासा, डुपलिकेट चाबियों का गुच्छा, लासलगांव और निफाड पेट्रोल पम्पों से लूटी गई नगदी उस डकैत की व्यक्तिगत तलाशी लेने पर बरामद हुई। डकैतों द्वारा प्रयोग की गई चोरी की टाटा सूमो में गंडासे इशौड़े, रेडकश, तलवारें, चाकू भी पाए गए। इस गिरोह के अन्य डकैतों के कब्जे से विस्फोटक जैसे फाव डेटोनेटर, फ्यूज बायर भी पाए गए, जांच-पड़ताल से भी पता चला कि डकैतों के इस गिरोह ने संगली, कोल्हापुर, पुना जिला और पुना शहर क्षेत्र में लूट-पाट, डकैतियाँ, हत्या के प्रयास, पुलिस पर हमला आदि जैसे बहुत से गंभीर अपराध किए थे। गैंग का नेतृत्व वानावाडी पुलिस स्टेशन (पुना शहर) का अपराधिक पृष्ठ छवि वाले गैंगस्टर दादा अजीनाथ तोरदमल निवासी पटोदा, जिला बीड ने किया था।

इस मुठभेड़ में, श्री संजय देशमुख, उप निरीक्षक ने अदम्य वीरता, साहस एवं उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

यह पदक, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4(i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिया जा रहा है तथा फलस्वरूप नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 17 मई, 2000 से दिया जाएगा।

बलरूप मित्रा
(बलरूप मित्रा)
निदेशक

सं0 175 - प्रेज/2003-राष्ट्रपति, महाराष्ट्र पुलिस के निम्नलिखित अधिकारी को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:-

अधिकारी का नाम और रैंक

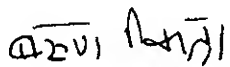
श्री दीपक रत्नाकर शिंदे,
कांस्टेबल

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए पदक प्रदान किया गया:

1.11.2001 को सिंधुदुर्ग जिले से लगे गांव तारेले, तालुक कनकावली में, बैंक ऑफ महाराष्ट्र, तारेले शाखा बैंक स्टाफ द्वारा 10 लाख ₹0 धनराशि कनकावली खजाने में जमा कराने हेतु रिक्शे में ले जाई जा रही थी। कार में जा रहे पांच डकैतों ने रिक्शे को बीच में रोका और बंदूक की नोक पर 10 लाख ₹0 लूट लिए। सूचना प्राप्त होने पर राजपुर पुलिस स्टेशन के यू.एम. भोंसले, निरीक्षक और पी.डी. सलुन्हे, उप निरीक्षक अपने स्टाफ के साथ 1050 बजे मुंबई गोवा राष्ट्रीय राजमार्ग सं0 17 की ओर चल दिए और जकतनाकां और उसके आस-पास के क्षेत्र की नाकाबंदी शुरू कर दी। लगभग 1145 बजे, अपराधीयों, जो अब आटोरिक्शा में सवार थे, ने राजापुर जकतनाका में पुलिस नाकाबंदी को भांप लिया। वे तुरंत रिक्शा से उतर गए और विपरीत दिशा में जा रही एक बस में चढ़ गए। पुलिस कर्मियों को उनकी गतिविधियां संदेहास्पद लगीं और बस का पीछा शुरू कर दिया। तीनों संदिग्ध व्यक्ति जल्दी में बस से नीचे उतर गए और भागना शुरू कर दिया। श्री सलुन्हे, उप निरीक्षक ने उनका पीछा किया और शोर मचाया। अपराधी पिस्तौल और रिवाल्वर से लैस थे। उन्होंने पुलिस पर गोलियां चलाईं और कंडक्टर (खाकी वर्दी में), जो नीचे उतर गया था, को पुलिस कार्मिक समझ कर काफी पास से गोली मार दी। इस आपाधापी में एक अपराधी को लोगों ने पकड़ लिया और अन्य दो घटनास्थल से भाग गये। पुलिस पार्टी शेष अभियुक्तों का पीछा करते रहे। उनमें से एक पास के जंगल में छिप गया, और पुलिस निरीक्षक भोंसले उसको पकड़ने में कामयाब हो गए। दूसरा अर्जुन नदी में कूद पड़ा और दूर भागने लगा। यह देखकर कि पुलिस और जनता एकत्र हो गई है डकैत ने अपने आग्नेयास्त्र से धमकाया। अभियुक्त ने श्री सलुन्हे पर दो राउन्ड दागे जिनका निशाना चूक गया। श्री सलुन्हे, उप निरीक्षक उसका पीछा कर रहा था। इसी बीच, श्री दीपक रत्नाकर शिंदे निहत्थे नदी में कूद गए और नदी में डकैत को बढ़ने से रोका। अभियुक्त को आत्मसमर्पण कराने के लिए मजबूर करने के लिए श्री सलुन्हे ने उसे आत्मसमर्पण कराने के लिए कहते हुए अपने सर्विस रिवाल्वर से हवा में दो राउन्ड चलाए। तथापि, डकैत ने अधिकारी पर दो राउन्ड गोलीबारी करके जवाब दिया। जब अभियुक्त ने अधिकारी पर पुनः गोली चलाने के लिए पोजीशन ली, तब श्री सलुन्हे के पास उस पर गोली चलाने के अलावा और कोई चारा नहीं बचा था। अभियुक्त घायल हो गया और उसने अधिकारी पर पुनः गोली चलाने का प्रयास किया। लेकिन, श्री दीपक रत्नाकर शिंदे, जो नजदीक आ गए थे, ने डकैत को पानी में खाली हाथों से पकड़ लिया और उसे निहत्था कर दिया। श्री सलुन्हे की गोली से मारा गया अभियुक्त मोरा रोड़, थाने का नितिन उर्फ स्विटी रघुबीर सनील था और थाने और मुंबई में उसके द्वारा किए गए 13 जघन्य अपराधों में उसकी तलाश थी। अन्य दो अभियुक्त अर्थात् घाटकोपर, मुंबई का विजय वसंत केदारी और मुंबई का शबीर मोहम्मद सईद थे जिनकी मुंबई में उनके द्वारा किए गए 5 और 7 अपराधों में तलाश थी, मुंबई में कुख्यात गिरोहों से संबंध रखते थे। उनसे लूटी गई पूरे 10 लाख ₹0 की धनराशि बरामद कर ली गई। होंडा सिटी सहित इस अपराध में इस्तेमाल किए गए दो वाहन, एक पिस्तौल, एक रिवाल्वर और छुरे भी बरामद किए गए।

इस मुठभेड़ में, श्री दीपक रत्नाकर शिंदे, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस एवं उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

यह पदक, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4(i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिया जा रहा है तथा फलस्वरूप नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 1 नवम्बर, 2001 से दिया जाएगा।


(बरूण मित्रा)
निदेशक

सं0 176 - प्रेज/2003-राष्ट्रपति, मणिपुर पुलिस के निम्नलिखित अधिकारी को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक का प्रथम बार सहर्ष प्रदान करते हैं:-

अधिकारी का नाम और रैंक

श्री एन. राजन सिंह,

उप निरीक्षक

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए पदक प्रदान किया गया:

29.11.2001 को लगभग 3 बजे अपराह्न को जब उप निरीक्षक राजन सिंह 5 कांस्टेबलों के साथ, जिनमें चालक भी शामिल था, इम्फाल बाजार क्षेत्र में गश्त पर थे, उन्हें एक विश्वसनीय सूचना प्राप्त हुई कि कैंग्लेइपाक कम्यूनिस्ट पार्टी (के.सी.पी.) के कुछ सदस्य पूरी तरह से शस्त्रों से लैस उस क्षेत्र में सुरक्षा बलों पर हमला करने के इरादे से, इम्फाल से लगभग 7 कि.मी. दूर सेकता मरवा लेकई के एक खाईदम लेईसंग सिंह, जो स्वयं के.सी.पी. संगठन का सदस्य है, के घर में शरण लिए हुए हैं। उप निरीक्षक राजन सिंह लगभग 3.30 बजे अपराह्न को नियंत्रण कक्ष इम्फाल को कुमुक भेजने हेतु सूचना देते हुए अपने गिने-चुने कर्मियों के साथ तुरन्त उस स्थान के लिए रवाना हुए। वे उस घर की तरफ गए, जब पार्टी घेरा डालने के लिए पोजीशन ले रही थी, तो अधुनातन हथियारों जैसे ए.के. कारबाइन इत्यादि से पूरी तरह से लैस अतिवादियों ने पुलिस पार्टी पर भारी गोलीबारी शुरू कर दी। पुलिस पार्टी, जिसका नेतृत्व उप निरीक्षक राजन सिंह कर रहे थे, ने भी अतिवादियों की ओर जवाबी गोलीबारी शुरू की। भारी गोलीबारी से यह अनुमान लगाया जा सकता था कि वहाँ कम से कम 5/6 के.सी.पी. के सदस्य थे। उप निरीक्षक राजन सिंह और उसकी पार्टी घर की उत्तरी दिशा से बढ़े। उप निरीक्षक एन. राजन सिंह ने कांस्टेबल एल. गोगो सिंह और कांस्टेबल मोहम्मद मुहाशिन को नाले के पीछे पोजीशन लेकर घर के बायें हिस्से को कवर करने के लिए कहा और अन्य दो कांस्टेबलों अर्थात् ए.के. इबोतोम्बा सिंह और के.एच. इन्गोबी सिंह को घर के दायीं तरफ से कवर करने के लिए कहा। फिर उप निरीक्षक एन. राजन सिंह और कांस्टेबल मोहम्मद अख्तर घर के दरवाजे पर गोलीबारी करते हुए घर के सामने एक छोटे ग्राऊन्ड में गए और लंबे केले के पेड़ों के घने झुंड के पीछे आड़ ली। घर की खिड़की, जहाँ से उनकी तरफ गोलीबारी की जा रही थी, पर गोलीबारी करते हुए, उप निरीक्षक एन. राजन सिंह घर के पूर्वोत्तर कोने की ओर बढ़े और घर की पूर्वोत्तर दीवार के पीछे आड़ ली। उन्होंने दीवार के साथ-साथ घर के दरवाजे की ओर धीरे-धीरे बढ़ना शुरू किया। तथापि, वहाँ बीच में एक खिड़की थी। इसलिए, नीचे रेंगते हुए आना पड़ा और बहुत संकटपूर्ण स्थिति में खिड़की से गुजरे। जब वे दरवाजे के नजदीक पहुँचे, तो विरोधी पार्टी से कुछ देर के लिए गोलीबारी बंद हो गई। उप निरीक्षक एन. राजन सिंह घर के सामने वाले दरवाजे से तुरन्त घर में घुसे और अपनी ए.के.-47 राइफल से कमरे के अंदर अतिवादियों पर गोलीबारी कर दी। काफी निकट की इस गोलीबारी में एक अज्ञात सशस्त्र युवक, जिसकी शिनाख्त बाद में खनगेमबाम नेतराजीत सिंह, (30) पुत्र समारम बाईबंग मानक के के.एच. कंधार सिंह, कांग्लेइपाक कम्यूनिस्ट (के.सी.पी., एक गैर-कानूनी संगठन) के सूचीबद्ध और कट्टर सदस्य के रूप में हुई, गोली लगने से मारा गया। शव की तलाशी लेने पर, चैम्बर में 1 (एक) मिस-फायर्ड राउन्ड से भरी 1 (एक) ए.के. 56 असाल्ट राइफल और मैगजीन में 10 (दस) सक्रिय राउन्ड बरामद किए गए।

इस मुठभेड़ में, श्री एन. राजन सिंह, उप निरीक्षक ने अदम्य वीरता, साहस एवं उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

यह पदक, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4(i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिया जा रहा है तथा फलस्वरूप नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 29 नवम्बर, 2001 से दिया जाएगा।

(अ.प्र.) मित्रा
(वरुण मित्रा)
निदेशक

सं० 177 - प्रेज/2003-राष्ट्रपति, मणिपुर पुलिस के निम्नलिखित अधिकारी को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:-

अधिकारी का नाम और रैंक

श्री के. जयन्त सिंह,
अपर पुलिस अधीक्षक

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए पदक प्रदान किया गया:

5.11.2001 को लगभग 1230 बजे इस विश्वसनीय सूचना के आधार पर कि यू.जी. अतिवादी तत्व, जिन्होंने 27.10.2001 को श्री ए. शामूगोड सिंह, स्कूल के निदेशक का अपहरण कर लिया था, ने नोगपोक कैथलमन्ही गांव क्षेत्र में और इसके आसपास पीड़ित व्यक्ति के साथ शरण ले रखी है, उपर्युक्त क्षेत्र के लिए प्रस्थान करने हेतु श्री के. जयन्त सिंह, अपर पुलिस अधीक्षक इम्फाल पश्चिम जिला की कमान में इम्फाल पूर्वी जिला और इम्फाल पश्चिम जिला के कमांडो की एक संयुक्त पार्टी का गठन किया गया। इस पार्टी को अग्रिम पार्टी, मध्य पार्टी और रियर पार्टी के रूप में तीन पार्टियों में विभाजित किया गया। जब रियर पार्टी जिसमें श्री के. जयन्त सिंह, अपर पुलिस अधीक्षक भी शामिल थे, जब इम्फाल माफोड डैम रोड पर लाइकोईचिंग पहुंचने वाली थी तो लगभग 1.30 बजे अपराह्न में कुछ अज्ञात युवकों को एक टाटा ट्रक में विपरीत दिशा अर्थात् माफोड डैम की तरफ से आते देखा गया। चूंकि ट्रक में सवार युवकों की ऐसे दूरवर्ती क्षेत्र में आवाजाही संदेह पैदा कर रही थी, श्री जयन्त ने उन्हें जांच-पड़ताल के लिए रोका। अचानक युवक वाहन से नीचे कूदे और छितर कर विभिन्न दिशाओं में भाग गए। एक युवक जो श्री जयन्त के बिल्कुल समीप था ने पिस्तौल निकाल ली। श्री जयन्त फुर्ति के साथ उस युवक पर झपट पड़े और उसे जमीन पर गिरा दिया और युवक के साथ हाथापाई शुरू हो गई। इस भिड़ंत के दौरान युवक को श्री जयन्त पर दो गोलियां चलाने का मौका मिल गया जो उनके चेहरे के निचले भाग में लगी। जिससे इनकी ठोड़ी में बाईं ओर गले पर जख्म हो गए। श्री जयन्त ने घायल होने के बावजूद युवक को दबोच लिया, अपनी ए.के. 47 राइफल से जवाबी गोलीबारी की और युवक को वहीं पर मार गिराया, जिसकी पहचान बाद में यौनाउजम कबीचन्द्र उर्फ प्रेमानंद मैतई पुत्र टी एच. मनीमोहन मैतई, निवासी वांगू तेरा लुपा मरुप बाजार, कंगलैई याओल कन्ना लुप (ओकेन घड़ा) अवैध संगठन के एक कट्टर कार्यकर्ता के रूप में हुई। युवक से चीन निर्मित 087 "नोरिनको" अंकित मैगजीन में 7 जिन्दा गोलियों से भरी एक 9 एम एम पिस्तौल बरामद की गई। इस बीच, एक अन्य युवक ने सशस्त्र युवक को जमीन पर गिरा देख पुलिस की तरफ एक हथगोला फेंकने का प्रयास किया। इस नाजुक क्षण में, कांस्टेबल ए.एस. लवजॉय तंगखुल ने अपनी ए.के.-47 राइफल से युवक को मारा और उसका स्थल पर ही सफाया कर दिया। युवक की पहचान बाद में नाइथोओजम बेला उर्फ सनातन पुत्र एन. बीराचन्द्र थांगा सालाम लैकई निवासी अवैध संगठन के.वाई.के.एल.(ओ.) के एस/एस द्वितीय लेफ्टिनेंट के रूप में हुई। युवक से एक हथगोला बरामद किया गया।

इस मुठभेड़ में, श्री के. जयन्त सिंह, अपर पुलिस अधीक्षक ने अदम्य वीरता, साहस एवं उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

यह पदक, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4(i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिया जा रहा है तथा फलस्वरूप नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 5 नवम्बर, 2001 से दिया जाएगा।

(बलरूप मित्रा)
निदेशक

सं० 178 - प्रेज/2003-राष्ट्रपति, मणिपुर पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:-

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

1. एल. गोगो सिंह, कांस्टेबल
2. एन जी. बिनोद सिंह, कांस्टेबल

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए पदक प्रदान किया गया:

5 मई, 2002 को प्रातः लगभग 3.30 बजे, इस विश्वसनीय सूचना के आधार पर कि कुछ सशस्त्र युवक, जिन पर घाटी में रहने वाले अतिवादी होने का संदेह था, सुरक्षा बलों पर घात लगाने के उद्देश्य से नाहारुप गाँव के सामान्य क्षेत्रों में पनाह लिए हुए हैं और इधर-उधर घूम रहे हैं, तभी उप निरीक्षक पी. जॉन सिंह और उप निरीक्षक एम. विनोद कुमार सिंह के नेतृत्व में इम्फाल पूर्वी जिला पुलिस कमांडो की एक टीम विद्रोह-विरोधी अभियान चलाने हेतु शीघ्रता से उक्त क्षेत्र की ओर रवाना हुई। जब यह पार्टी लगभग 4.30 बजे इरील नदी के तट पर नाहारुप अवांग लेकई पहुँची, तो तभी कुछ युवकों, जो गाँव में पहले से पनाह लिए हुए थे, ने अपने अधुनातन हथियार निकाल लिए और कमांडो पर गोलीबारी शुरू कर दी। इस पार्टी ने पोजीशन ले ली और जवाबी गोलीबारी शुरू कर दी और सशस्त्र युवकों को पीछे हटने तथा गाँव के दक्षिण की तरफ भागने के लिए मजबूर कर दिया। उप निरीक्षक एम. बिनोद कुमार सिंह, कांस्टेबल एल. गोगो और कांस्टेबल एम. बिनोद कुमार सिंह ने रुक-रुक कर गोलीबारी कर रहे युवकों का पीछा किया। दूसरी कमांडो पार्टी, जिसका नेतृत्व उप निरीक्षक पी. जॉन सिंह कर रहे थे, बचने के संभावित रास्तों को बंद करने के लिए दक्षिणी दिशा की ओर बढ़ी। उप निरीक्षक पी. जॉन सिंह और उनकी पार्टी द्वारा प्रभावी रोक लगाने से पहले, भाग रहे युवक अचानक उप-निरीक्षक जॉन सिंह की कमांडो पार्टी, जिसके काफी नजदीक पीछे-पीछे कांस्टेबल एन जी. बिनोद सिंह भी थे, के सामने आ गए और भारी गोलीबारी शुरू कर दी। जवाबी गोलीबारी की गई लेकिन वह असरदार सिद्ध नहीं हुई क्योंकि वे युवक लाभकारी स्थिति में थे और आड़ लिए हुए थे जबकि उप निरीक्षक जॉन सिंह और कांस्टेबल एन जी. बिनोद बड़ी खराब और दुष्कर स्थिति में थे। ऐसी स्थिति में, उप निरीक्षक जॉन सिंह द्वारा की जा रही कवरिंग गोलीबारी की आड़ में कांस्टेबल एन जी. बिनोद सिंह बड़ी चतुरता से उन युवकों की ओर बढ़े। इसी बीच, उप निरीक्षक बिनोद कुमार सिंह और कांस्टेबल एल. गोगो, उप निरीक्षक पी. जॉन के साथ मिल गए। यह आभास होने पर कि सशस्त्र युवक बच कर भाग निकल सकते हैं, उप निरीक्षक पी. जॉन सिंह भी युवकों की ओर बढ़े जबकि उप निरीक्षक बिनोद कुमार और कांस्टेबल एल. गोगो कवरिंग गोलीबारी करते रहे। उनमें से एक युवक ने उनकी इस कार्रवाई को देख लिया और उप निरीक्षक जॉन और कांस्टेबल एन जी. बिनोद सिंह पर तत्काल गोलीबारी शुरू कर दी, लेकिन वे बाल-बाल बच गए। उप निरीक्षक पी. जॉन सिंह और कांस्टेबल एन जी. बिनोद ने निडरता से, अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की चिंता किए बगैर फुर्ती के साथ जवाबी गोलीबारी की और एक सशस्त्र युवक को घटनास्थल पर ही मार गिराया। युवक की पहचान बाद में एशियन गाँव, पुलिस स्टेशन सैकुल के एनगुलजामग उर्फ अमांग ग्यूटे, प्रतिबंधित गैर-कानूनी संगठन यू.एन.एल.एफ. (यूनाइटेड नेशनल लिबरेशन फ्रंट) के सूचीबद्ध कट्टर कार्यकर्ता के रूप में की गई। इसी बीच, उप निरीक्षक बिनोद कुमार और कांस्टेबल एल. गोगो बाँसों के झुरमुट की ओर बढ़े जिसके पीछे शेष युवकों ने आड़ ले रखी थी। इस कार्रवाई को देखकर एक युवक ने कमांडो पर ग्रेनेड फेंकने का प्रयास किया। लेकिन उप निरीक्षक बिनोद कुमार और कांस्टेबल एल. गोगो ने फुर्ती दिखाते हुए उस युवक पर गोलीबारी कर दी जिससे वह घटनास्थल पर ही मारा गया। मारे गए युवक की पहचान बाद में तारोथखुल अवांग लेकई के थंगजम बुगबुंग उर्फ इबुनो सिंह के रूप में की गई। दोनों मृत उग्रवादियों से निम्नलिखित बरामद हुआ -

(क) 11 जिंदा कारतूस के साथ एक ए.के. 56 राइफल (ख) एक ए.के. 56 मैगजीन (ग) एक चीनी हैंड ग्रेनेड (घ) एक. गोला बारूद के 5 खाली केस

इस मुठभेड़ में, सर्व/श्री एल. गोगो सिंह, कांस्टेबल और एन जी. बिनोद सिंह, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस एवं उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पदक, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4(i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 5 मई, 2002 से दिया जाएगा।

(बलरूप मित्रा)
निदेशक

सं० 179 - प्रेज/2003-राष्ट्रपति, मणिपुर पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:-

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

1. मोहम्मद अख्तर हुसैन, कांस्टेबल
2. टी.एच. सेमुअल परोऊ, कांस्टेबल

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए पदक प्रदान किया गया:

12 जून, 2002 की सुबह, एक विश्वसनीय सूचना प्राप्त होने पर कि गैरकानूनी संगठन नामतः पीपुल्स लिबरेशन आर्मी (पी.एल.ए.) के कुछ सशस्त्र संदिग्ध यू.जी. तत्व, खुराई लामलांग क्षेत्र के आस-पास राज्य की सुरक्षा और अखंडता के प्रतिकूल गतिविधियां करने और अन्य नापाक गतिविधियां जैसे लूट खसोट और सुरक्षा बलों पर घात लगा कर हमला करने आदि को अंजाम देने के इरादे से घूम रहे हैं, निरीक्षक एन. राजेन सिंह, ओ.सी. कमाण्डो यूनिट, इम्फाल पूर्वी जिला के नेतृत्व में पुलिस कमाण्डों की एक टीम तलाशी अभियान चलाने के लिए उपर्युक्त क्षेत्र की ओर रवाना हुई। जब निरीक्षक एन. राजेन सिंह और इनकी टीम में शामिल (i) मोहम्मद अख्तर हुसैन (ii) एल. गोगो सिंह (iii) मुहारसिन (iv) टी.एच. सेमुअल परोऊ (v) एच. ईश्वोरचन्द गांव के रास्ते में एक स्थान से दूसरे स्थान तक इस तरह से गश्त कर रहे थे कि वे संदिग्ध राइफ़ीरो और वाहनों की तलाशी और जांच कर सकें और उसी के साथ-साथ अचानक मुठभेड़ अथवा भाग रहे वाहन का पीछा करने जैसी किसी भी स्थिति से निपटने के लिए स्वयं को तैयार रख सकें। (i) पापयो जोऊ (ii) के.एच. रंजीत सिंह (iii) मुस्ताक (iv) अब्दुल सत्तार (v) ए. राजेन सिंह (vi) ए. निमाई कांस्टेबलों को लेकर गठित एक सचल टीम को भाग रहे वाहन को रोकने के लिए तैनात किया गया। इसे सुकर बनाने के लिए, उन्हें लामलोग बाजार चौराहे पर तैनात किया गया। सूक्ष्म रूप से योजना तैयार कर लेने पर, उस पर कार्रवाई की गई। दो युवकों को मोटर-साइकिल पर आते देखा गया और युवकों को अत्यधिक संदेहास्पद अवस्था में देखने पर, निरीक्षक एन. राजेन सिंह ने उन्हें जांच-पड़ताल के लिए रुकने को कहा। युवकों ने उनकी बात को अनसूनी कर अपनी मोटरसाइकिल की गति बढ़ाई और भागने लगे तथा पुलिस के जाल से बचने का प्रयास करने लगे। पुलिस टीम ने तेजी से उनका पीछा किया। बार-बार चेतावनी देने के बावजूद युवकों ने एक पिस्तौल निकाली और कमाण्डो की तरफ गोलीबारी की और निरीक्षक एन. राजेन सिंह ने भी अपनी ए.के.-47 राइफल से जवाबी कार्रवाई की। युवकों में से एक, मोटर साइकिल से कूदा और खुराई लाई अवांगबी के समीप आरा मशीन मिल परिसर में भागा। निरीक्षक एन. राजेन सिंह, कांस्टेबल एल.गोगो सिंह भी अपनी जिप्सी से कूदे और 2 कांस्टेबल नामतः (i) मोहम्मद अख्तर हुसैन और (ii) सेमुअल भी निरीक्षक एन. राजेन सिंह से लगभग 100 मीटर की दूरी पर जिप्सी से कूदे। निरीक्षक एन. राजेन सिंह ने वायरलैस सेट के माध्यम से एक अन्य सचल टीम को भागते युवक का पीछा करने का निदेश दिया। आरा मशीन मिल के परिसर में सशस्त्र युवक लकड़ियों की आड़ लेकर पुलिस कर्मियों पर लगातार गोलीबारी करता रहा। पुलिस टीम ने भी प्रत्युत्तर में गोलियां चलाई और आगे बढ़े। जब कांस्टेबल मोहम्मद अख्तर हुसैन उस दिशा की ओर बढ़े जहां युवक आश्रय लिए हुए प्रतीत होता था, तभी उस युवक ने कांस्टेबल अख्तर हुसैन को पीछे से देख लिया और उस पर हमला करने का प्रयास किया। चीख की आवाज सुनकर, कांस्टेबल टी.एच. सेमुअल परोऊ, उस युवक पर झपट पड़े और उसके साथ गुथमगुथा हो गए। कांस्टेबल मोहम्मद अख्तर हुसैन गोलीबारी के साथ लड़ाई में शामिल हो गए। थोड़ी देर चली मुठभेड़ के पश्चात, युवक जिसकी पहचान बाद

में कोईराव लायरम्बी लाईकैई के ईलांगबम बिमोल उर्फ काडाम्बा उर्फ जितेन उर्फ लोएम्बा पी.एल.ए. के एक सूचीबद्ध और कुख्यात सदस्य के रूप में हुई, को दबोच लिया और गिरफ्तार कर लिया गया। उससे एक 9 एम.एम. पिस्तौल जिसके चेम्बर में एक बिना चले राउन्द के साथ 9 एम.एम. गोलाबारुद के तीन जिन्दा राउन्द बरामद किए गए। अन्य युवक जो मोटरसाइकिल चला रहा था का भी अन्य जिप्सी टीम द्वारा पीछा किया गया। थोड़ी देर पीछा करने के बाद, मोटर साइकिल खुराई लाल अवांगबी से लगभग 500 मीटर खुराई पुथीबा लैईकाई की एक खाई में गिर गई। युवक स्थानीय लोगों की आबादी वाले क्षेत्र में भाग गया। पुलिस टीम द्वारा तत्काल क्षेत्र की घेराबंदी की गई और तलाशी अभियान चलाया गया। निरीक्षक एन. राजेन सिंह की जिप्सी टीम भी अभियान में शामिल हो गई। युवक ने पुलिस टीम पर एक आउट हाउस के पीछे से हथगोला फेंकने का प्रयास किया। कांस्टेबल मोहम्मद अख्तर हुसैन और कांस्टेबल सेमुअल ने तत्काल उसके नापाक हरादे को नोटिस कर लिया और साथ ही साथ गोलीबारी कर उसे वहीं पर मार गिराया। उसकी पहचान कुम्बी मायाई लैईकैई के नोंगमैथम बिशेशवर उर्फ मनीमेटम, पी.एल.ए. के एक सूचीबद्ध और कट्टर सदस्य के रूप में हुई और उससे चीनी हथगोला बरामद किया गया।

इस मुठभेड़ में, सर्व/श्री मोहम्मद अख्तर हुसैन, कांस्टेबल और टी.एच. सेमुअल पुरोऊ, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस एवं उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पदक, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4(i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिये जा रहे हैं तथा फलस्वरूप नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 12 जून, 2002 से दिया जाएगा।

२२.११.०३
(वरुण मित्रा)
निदेशक

सं० 180 - प्रेज/2003-राष्ट्रपति, मणिपुर पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:-

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

1. एम सुधीर कुमार मैतई, उप निरीक्षक
2. के. राकेश सिंह, कांस्टेबल
3. एम. आयौबा सिंह, राइफलमैन

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए पदक प्रदान किया गया:

24.12.2001 को लगभग 1030 बजे विशेष सूत्र से एक विश्वसनीय सूचना प्राप्त हुई कि अत्याधुनिक हथियारों से लैस कुछ भूमिगत तत्व, जिन पर कंगलैई योबोल कन्ना लुप (के.वाई.के.एल.) के सदस्य होने का संदेह है, किसी भी क्षण उचित अवसर पाकर सुरक्षा कानवाह पर घात लगाकर हमला करने के उद्देश्य से गांव मायाई कैथेल, निंगेल और आईरोंग थांगखुल में और आस-पास के अत्यधिक दूरवर्ती पहाड़ी क्षेत्रों में घूम रहे हैं। श्री के. जयन्त सिंह, अपर पुलिस अधीक्षक, पश्चिम इम्फाल की समग्र कमान में पश्चिम इम्फाल जिला और थाओबल जिले के कमाण्डो की टीम का एक संयुक्त बल गठित किया गया और इस क्षेत्र की तरफ रवाना हुआ। लगभग 1230 बजे जब कमाण्डो आईरोंग तंगखुल गांव के पहाड़ी क्षेत्र में तलाशी अभियान चला रहे थे, तो सशस्त्र अतिवादियों के एक ग्रुप ने विभिन्न दिशाओं से उन पर गोलीबारी की। चूंकि भूमिगत तत्व, जिनके पास अत्याधुनिक हथियार थे, पहाड़ी क्षेत्र के ऊंचाई वाले भाग से सुरक्षित पोजीशन लेकर विभिन्न दिशाओं से गोलीबारी कर रहे थे, जबकि कमाण्डो की स्थिति बड़ी विकट थी, इन्होंने स्वयं को दो ग्रुपों में विभाजित किया और अतिवादियों पर दो विभिन्न दिशाओं से हमला किया। सर्व/श्री के जयन्त सिंह, अपर पुलिस अधीक्षक, एम सुधीर कुमार, उप निरीक्षक, कृष्णातोबी, उप निरीक्षक, किशोर चन्द उप निरीक्षक और कुछ अन्य पुलिस कार्मिकों को लेकर गठित एक ग्रुप की सशस्त्र उग्रवादियों के साथ मैलखल तुरल के रूप में ज्ञात आईरोंग तंगखुल गांव के एक नाले के समीप भीषण मुठभेड़ हुई, जबकि सर्व/श्री देवेन्द्र, उप निरीक्षक ओकेने, उप निरीक्षक सन्तोष, उप निरीक्षक संजोय, उपनिरीक्षक रांता कुमार, उप निरीक्षक राजूखान, सहायक उप निरीक्षक जैयाउद्दीन को लेकर गठित अन्य ग्रुप और उनकी पार्टियों का अन्य अतिवादियों के एक ग्रुप से नंगजेनताबी पहाड़ी के रूप में ज्ञात एक छोटी सी पहाड़ी पर सामना हुआ। मोतखाल तुरल के समीप मुठभेड़ में चट्टानों के बड़े ढेर के पीछे उच्च स्थान में पोजीशन लेकर सशस्त्र अतिवादियों ने लाभप्रद पोजीशन ले रखी थी जबकि कमाण्डो, जो कम संख्या में थे, के पास गोलीबारी का जवाब देने के लिए मुश्किल पोजीशन थी। तथापि, कमाण्डो उप निरीक्षक एम. सुधीर कुमार मैतई, कांस्टेबल कोइजान राकेश सिंह और राइफलमैन एम. आयौबा सिंह, जिन्हें विद्रोह प्रतिरोधी कार्रवाईयों में अच्छा अनुभव था, फुर्ती के साथ अपने प्राणों की परवाह किए बिना अतिवादियों की तरफ बढ़े और भारी गोलीबारी के बीच उस क्षेत्र जहां अतिवादियों ने पोजीशन ले रखी थी के समीप जाने में सफल हो गए। यह कमाण्डो गोलीबारी करते हुए आगे बढ़े और उन चट्टानों के ढेर को, जिनके पीछे अतिवादियों ने पोजीशन ले रखी थी, उड़ा दिया और आगे चली मुठभेड़ में एक सशस्त्र अतिवादी मारा गया और दूसरा माइखाल नाले की तरफ घने जंगल की आड़ में लचकर भागने में सफल हो गया। बाद में मारे गए अतिवादी को पहचान मोईराथम पिरियोकुमार सिंह पुत्र एबोचौआबा सिंह, निवासी हिइरोक थोकलियोन लैइकज, गैरकानूनी संगठन कंगलैई योबोल कन्ना लुप (के.वाई.के.एल.) के एक कट्टर कार्यकर्ता के रूप में हुई।

मारे गए अतिवादी से (i) 15 जिन्दा राउन्द से भरी एक मैगजीन के साथ एक ए.के. 56 राइफल, (ii) के.वाई.के.एल. अंकित एक बैज, (iii) संगठन की एक रसीद बुक, (iv) दो बुकलैट और (v) तीन मांग पत्र आदि बरामद हुए।

इस मुठभेड़ में, सर्व/श्री एम. सुधीर कुमार मैतई, उप निरीक्षक, के. राकेश सिंह, कांस्टेबल और एम. आयौबा सिंह, राइफलमैन ने अदम्य वीरता, साहस एवं उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पदक, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4(i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 24 दिसम्बर, 2001 से दिया जाएगा।

4/2/03
(बसुण मित्रा)
निदेशक

सं० 181 - प्रेज/2003-राष्ट्रपति, मेघालय पुलिस के निम्नलिखित अधिकारी को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:-

अधिकारी का नाम और रैंक

श्री एम० खारकरंग, मे०पु०से०

पुलिस उप अधीक्षक, शिलांग

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए पदक प्रदान किया गया:

श्री एम. खारकरंग, मे०पु०से०, पुलिस उप अधीक्षक (रि-ओरगन.) को इनके एक सूत्र ने 16.02.02 की शाम को सूचित किया कि एच एन एल सी एक प्रतिबन्धित उग्रवादी संगठन के वरिष्ठ नेताओं का एक दल उस रात इथियारों की खेप लाने के लिए बांग्लादेश जा रहा है। सूत्र के अनुसार नेताओं को दाक्की (मेघालय भारत-बांग्लादेश सीमा पर) से होकर जाना है। इस दौरान, उग्रवादियों के उस देश में अड्डा बनाए अन्य शीर्ष नेताओं के साथ मिलने और मेघालय में विघटनकारा गतिविधियों के लिए योजना बनाने का कार्यक्रम है। श्री एम० खारकरंग, पुलिस उप अधीक्षक ने एक अल्प नोटिस पर, स्वयं एक उप निरीक्षक, एक सहायक उप निरीक्षक और नौ कांस्टेबलों को लेकर एक पुलिस टीम का गठन किया और तत्काल दाक्की के लिए रवाना हो गए। यह पार्टी दाक्की में 1900 बजे पहुंची और वहां एक "नाका" लगाया। अधिकारी ने अपनी टीम के साथ पूरी रात उग्रवादियों के पहुंचने का इंतजार किया। जब 17.02.02 की सुबह 0600 बजे तक कोई नहीं आया, श्री एम. खारकरंग ने रास्ते में रोककर प्रतिकारी कार्रवाई करने का निर्णय लिया अगर उग्रवादी आसूचना रिपोर्ट के अनुसार सचमुच बांग्लादेश जा रहे होंगे। उन्होंने अपनी शिलांग वापसी के लिए लैएतलिंगकोट-स्मित से होकर जाने वाला रास्ता चुना जिसका उग्रवादी अक्सर प्रयोग किया करते थे, यद्यपि यह लम्बा रास्ता था फिर भी इन्होंने राजमार्ग का प्रयोग नहीं किया। महत्वपूर्ण बात यह है कि यह टीम 11 घण्टे की थकाऊ रात्रि चौकसी और पिछली शाम से लगातार यात्रा के पश्चात् पूरी तरह थक चुकी थी। स्मित गांव के समीप, 0730 बजे अधिकारी ने, जो पार्टी की दो मारुति जिपसियों में आगे चल रहे थे तथा वाहन को स्वयं चला रहे थे, विपरीत दिशा से एक स्थानीय टैक्सी को आते देखा जिसके सवार उन्हें संदिग्ध लगे। इन्होंने उन्हें रूकने का संकेत दिया, परन्तु टैक्सी ने संकेत की नजरंदाजी की और भाग गए। अधिकारी और इनकी पार्टी ने तत्काल अपने वाहनों को पीछे घुमाया, टैक्सी का पीछा किया और उनसे आगे बढ़ गए। आगे बढ़ने पर उग्रवादियों, जो कुल छह थे, ने टैक्सी छोड़ दी और पैदल भागना शुरू कर दिया और साथ ही साथ पुलिस पार्टी पर गोलीबारी करते रहे। श्री एम. खारकरंग ने अपनी पार्टी को बंटने और उग्रवादियों का पीछा करने का आदेश दिया। उग्रवादी छोटी सी पुलिस पार्टी से बच कर विभिन्न दिशाओं में चंतुराई से भागने का प्रयास कर रहे थे। अधिकारी ने स्वयं उग्रवादियों में से एक, जो नजदीकी घरों के झुण्ड के अन्दर भाग गया का पीछा किया। जब श्री एम. खारकरंग उग्रवादी के समीप पहुंचे तो उसने एक घर के पीछे आड़ ले ली और बहुत नजदीक से श्री खारकरंग पर चार गोलियां चलाई। श्री खारकरंग ने अपनी सुरक्षा की परवाह न करते हुए अपनी सर्विस पिस्तौल से उग्रवादी पर जवाबी गोलीबारी की और उसे घायल कर दिया। अधिकारी और उग्रवादी के बीच तब तक गोलीबारी जारी रही जब तक एक गोलो उग्रवादी को नहीं लग गई जिससे वह अक्षम हो गया। उग्रवादी जिसकी बाद में जख्मों के कारण मृत्यु हो गई, की पहचान डोनबोक जरवः उर्फ बुश, एच एन एल सी के एक वरिष्ठ कट्टर नेता के रूप में हुई। उससे जिन्दा गोलाबारूद के साथ एक 9 एम एम पिस्तौल और एक इथगोला बरामद किया गया। सारे अभियान में सशस्त्र एच एन एल सी के तीन वरिष्ठ कार्यकर्ता, जिसमें वह उग्रवादी भी शामिल था, जिसकी अधिकारी के साथ करीबी मुठभेड़ हुई थी, मारे गए। जिन्दा गोलाबारूद के साथ तीन 9 एम एम पिस्तौलें और एक इथगोला बरामद किया गया। एक एच एन एल सी उग्रवादी गिरफ्तार किया गया।

इस मुठभेड़ में, श्री एम. खारकरंग, मे०पु०से०, पुलिस उप अधीक्षक ने अदम्य वीरता, साहस एवं उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

यह पदक, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4(i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिया जा रहा है तथा फलस्वरूप नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 17 फरवरी, 2002 से दिया जाएगा।

42/11/03

(बरूण मित्रा)

निदेशक

सं० 182 - प्रेज/2003-राष्ट्रपति, मेघालय पुलिस के निम्नलिखित अधिकारी को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:-

अधिकारी का नाम और रैंक

श्रीमती सी.ए. लिंगवा,
पुलिस उप अधीक्षक (शहर), शिलांग

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए पदक प्रदान किया गया:

03.01.2002 की शाम को यह सूचना प्राप्त हुई कि प्रतिबन्धित उग्रवादी संगठन डाइन्यूट्रेप नेशनल लिबरेशन काउंसिल (एच एन एल सी) के कुछ शीर्ष नेता सुरक्षा बलों पर घात लगाकर हमला करने की योजना बनाने के लिए 04.01.2002 की सुबह री-भोई जिला (मेघालय) के अन्तर्गत उमसनिंग गांव में एक घर में बैठक करेंगे। यह सूचना प्राप्त होने पर, श्रीमती सी.ए. लिंगवा, मे०पु०से०, पुलिस उप अधीक्षक (शहर), शिलांग अपने 5 (पांच) व्यक्तिगत गनमैन के साथ उमसनिंग गई और उग्रवादियों को पकड़ने के लिए एक अभियान चलाने के उद्देश्य से उसी शाम को संदिग्ध घर को मार्क कर लिया। अगले दिन, यही टीम सुबह पांच बजे दो सिविल वाहनों में शिलांग से चली। चूंकि संदिग्ध घर तक दो विभिन्न रास्तों से ही पहुंचा जा सकता था अतः टीम को तीन कार्मिकों के दो पार्टियों में विभाजित किया गया और प्रत्येक पार्टी को एक वाहन में भेजा गया। जबकि श्रीमती सी.ए. लिंगवा और दो गनमैन को लेकर बनाई गई पार्टी एक रास्ते से गई, दूसरी पार्टी 3 (तीन) गनमैन के साथ दूसरी दिशा से चली। सुबह 8.30 बजे एक ऑटो-रिक्शा उस दिशा से उस घर की तरफ आया, जहां श्रीमती सी.ए. लिंगवा और उनकी टीम ने पोजीशन ले रखी थी। जैसे ही ऑटो रिक्शा पास आया, तो श्रीमती सी.ए. लिंगवा ने इसमें सवार एक व्यक्ति नामतः मिकतोर लापांग, जो एच एन एल सी का एक कट्टर कार्यकर्ता था, को पहचान लिया, जो री-भोई जिले में इस संगठन का एरिया कमाण्डर भी था। इस बात को सब जानते थे कि जब मिकतोर लापांग सफर करता है तो वह हमेशा अत्यधिक शस्त्रों से लैस रहता है। वह ऑटोरिक्शा में अन्य व्यक्ति के साथ पीछे की सीट पर बैठा हुआ था जबकि आगे की सीट पर दो व्यक्ति बैठे हुए थे। जब ऑटो-रिक्शा, उस घर के सामने आकर रुका जहां उग्रवादियों की बैठक होनी थी, तो श्रीमती सी.ए. लिंगवा तत्काल अपने गनमैन के साथ ऑटो रिक्शा की तरफ गई। जबकि श्रीमती लिंगवा ने फुर्ति के साथ दाईं तरफ जिस ओर मिकतोर लापांग बैठा था से उसे रोकने का प्रयास किया, उसी समय एक गनमैन ऑटो के बाईं तरफ भागा। एक गनमैन को बैकअप के लिए पीछे रखा गया। यह आभास होने पर कि उन्हें रोका जा रहा है, मिकतोर लापांग और अन्य सवार ऑटो रिक्शा से कूद पड़े। श्रीमती लिंगवा, मिकतोर लापांग को पकड़ने के लिए पीछे भागीं। इस बात को भांप कर कि वह पकड़ा जाएगा, लापांग ने उन पर बहुत नजदीक से अपने रिवाल्वर से तीन गोलियां चलाईं और घर के अहाते में घुसकर बच निकलने का प्रयास किया। श्रीमती लिंगवा ने अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की परवाह किए बिना, जवाबी गोलीबारी की और उसकी जांच पर गोली मार दी। वह लड़खड़ाया परन्तु अपने हथियार से उन पर गोलीबारी करते हुए घर के पीछे की ओर भागा। इसके बावजूद, श्रीमती लिंगवा बिल्कुल विचलित नहीं हुई और गोलीबारी करते हुए उग्रवादी का पीछा करती रही। इन्होंने इसे दो और गोलियां मारी और इस बार वह जमीन पर गिर गया। इस बीच, दो अन्य कार्यकर्ता (काडर) नामतः (1) डानलांग खोंगपदहा और (2) पीरखतलदंग लेबा, जो बचकर भागने का प्रयास कर रहे थे, को सी/1760 ए.बी. नायर और सी/111 सी क्षेत्री ने दबोच लिया। आपसी गोलीबारी में डानलांग खोंगपदहा के हाथ में गोली लगी। एक ए.के.-47 असाल्ट राइफल के साथ दो भरी हुई मैगजीनें और एक रिवाल्वर जिसका प्रयोग उसने श्रीमती सी.ए. लिंगवा पर गोली चलाने के लिए किया था, मिकतोर लापांग से बरामद की गई। श्रीमती सी.ए. लिंगवा, मे०पु०से०, पुलिस उप अधीक्षक (शहर), शिलांग ने अपनी जान को गम्भीर जोखिम के बावजूद कट्टर एच एन एल सी कमाण्डर, मिकतोर लापांग को उसके दो सहयोगियों के साथ गिरफ्तार करने में अनुकरणीय साहस, दृढ़ निश्चय और बहादुरी का परिचय दिया। असाधारण सूझबूझ, दूरदृष्टि और सतर्क योजना का प्रदर्शन करते हुए, वह सशस्त्र अतिवादियों को जिन्दा पकड़ने में सफल रही।

इस मुठभेड़ में, श्रीमती सी.ए. लिंगवा, पुलिस उप अधीक्षक ने अदम्य वीरता, साहस एवं उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

यह पदक, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4(i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिया जा रहा है तथा फलस्वरूप नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 4 जनवरी, 2002 से दिया जाएगा।

बसुण मित्रा
(बसुण मित्रा)
निदेशक

सं० 183 - प्रेज/2003-राष्ट्रपति, पंजाब पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:-

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

1. स्नेहदीप शर्मा, पुलिस उपाधीक्षक
2. पुपिन्दर कुमार, कांस्टेबल

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए पदक प्रदान किया गया:

आसूचना ब्यूरो से कार्रवाई योग्य आसूचना प्राप्त होने पर एक मामला दर्ज किया गया और श्री स्नेहदीप, पुलिस, उपाधीक्षक को स्वापक पदार्थों, जाली मुद्रा आदि के एक परेषण के साथ आई एस आई से संबंधित, सीमा-पार के संचालकों को गिरफ्तार करने के निदेश दिए गए। श्री स्नेहदीप ने तत्काल कार्रवाई की और अपने गनमैन के साथ स्थल पर पहुंचने पर परेषण का आदान-प्रदान कर रहे अपराधियों को ललकारा। एक दुःसाहसी राष्ट्र विरोधी तत्व, सुखबीर ने अपनी पिस्तौल से गोलीबारी प्रारम्भ कर दी और कुछ दूरी पर खड़ी कार की तरफ भागने लगा। श्री स्नेहदीप और उनके पी एस ओ कांस्टेबल पुपिन्दर कुमार ने घातक गोलीबारी के बीच बिना कवर के खुली सड़क पर अपराधी का पीछा किया। श्री स्नेहदीप ने राहगीरों को नुकसान पहुंचाए बिना सावधानी से गोलीबारी का जवाब दिया। इस बीच, कार में बैठे एक अपराधी कश्मीर सिंह ने भी गोलीबारी प्रारम्भ कर दी और सुखबीर को बचाकर ले जाने का प्रयास किया। श्री स्नेहदीप और उनके पी एस ओ, सुखबीर के साथ भिड़ गए और उसे दबोचने में सफल हो गए। ऐसा करते समय, कांस्टेबल पुपिन्दर कुमार गोली छू जाने के कारण जख्मी हो गए। कांस्टेबल पुपिन्दर को सुखबीर की चौकसी के लिए छोड़ कर, श्री स्नेहदीप ने अब कश्मीर सिंह जो उन पर लगातार गोलीबारी कर रहा था, को गिरफ्तार करने का प्रयास किया। तथापि, दो गोलियां उसकी कार में लगने के बावजूद कश्मीर सिंह भागने में सफल रहा। इस मुठभेड़ के दौरान, श्री स्नेहदीप और कांस्टेबल पुपिन्दर कुमार पर सुखबीर ने 9 राउण्ड गोलीबारी की, जबकि कश्मीर सिंह ने 15 राउण्ड गोलियां चलाई। श्री स्नेहदीप ने जवाब में अपनी सर्विस पिस्तौल से 5 राउण्ड गोलियां चलाई। 9 खाली खोखों के साथ एक .32 बोर पिस्तौल, .22 पिस्तौल के 15 खाली खोखे, दानेदार रूप में 2 कि०ग्रा० हीरोइन, 20,000/- रुपये की जाली भारतीय मुद्रा नोट, एक ग्रे रंग की इंडिका कार और 40,000/- रुपये भारतीय मुद्रा नोट बरामद किए गए।

इस मुठभेड़ में, सर्व/श्री स्नेहदीप शर्मा, पुलिस उपाधीक्षक और पुपिन्दर कुमार कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस एवं उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पदक, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4(i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 18 मार्च, 2003 से दिया जाएगा।

बसुण मित्रा
(बसुण मित्रा)
निदेशक

सं० 184 - प्रेज/2003-राष्ट्रपति, पंजाब पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:-

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

1. एच.एस. सिद्धू, भा.पु.से., वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक
2. कुलदीप सिंह, सहायक उप निरीक्षक, सं. 100/के एच एन
3. अमरजीत सिंह, सी-II, सं. 263/के एच एन
4. शमशेर सिंह, सी-II, सं. 1615/जुल्ल

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए पदक प्रदान किया गया:

श्री एच.एस. सिद्धू ने सेना आसूचना के साथ पाक आई.एस.आई. से जुड़े संदिग्ध आतंकवादी तत्वों के विरुद्ध एक व्यापक अभियान प्रारम्भ किया। मामले को दर्ज करने के पश्चात इन्होंने अभियान की योजना बनाई और अपने कार्मिकों को व्यक्तिगत रूप से अभियान स्थल पर तैनात किया। अपने कर्मियों को तैनात कर लेने पर, श्री हरीत ने दो संदिग्ध आई.एस.आई. उग्रवादियों को, इस आशा के साथ कि वे हथियारों का जखीरा लिए होंगे, ललकारा और इन्होंने अपने पी.एस.ओज. सहायक उप निरीक्षक कुलदीप सिंह और सी-II अमरजीत सिंह के साथ उन्हें गिरफ्तार करने का प्रयास किया। उनमें से एक भागा और एक कार में बैठने में सफल रहा। श्री हरीत ने अपने पी.एस. ओज. के साथ हमला किया और कार को घेर लिया। संदिग्ध आतंकवादी को दबोचने के उद्देश्य से हरीत और सी-II अमरजीत सिंह, कार में एक तरफ से घुस गए जबकि सहायक उप निरीक्षक कुलदीप सिंह ने चालक की तरफ से कवर किया। सहायक उप निरीक्षक कुलदीप सिंह का हाथ कार के दरवाजे में दब गया जब वह संदिग्ध आतंकवादी को गर्दन से पकड़ने का प्रयास कर रहे थे। इसी बीच, सिविल कपड़ों में जालन्धर पुलिस के कांस्टेबल शमशेर सिंह ने भी अभियुक्त को दबोचने का प्रयास किया। श्री शमशेर सिंह अभियुक्त द्वारा चलाई गई गोली से घायल हो गए। घायल होने और अत्यधिक जोखिम के बावजूद सी-II शमशेर सिंह पुलिस टीम के साथ फिर से सशस्त्र अपराधी पर झपटे। इस बीच अभियुक्त ने श्री हरीत और सी-II अमरजीत सिंह पर नजदीक से गोली चलाई जिससे सी-II अमरजीत सिंह घायल हो गए। श्री हरीत ने अपने जख्मी पी.एस.ओ. को खतरनाक स्थिति से बाहर निकाला और फिर से सशस्त्र राष्ट्र-विरोधी तत्व पर झपटे। इस पूरी प्रक्रिया में, श्री हरीत यद्यपि सर्विस पिस्तौल से लैस थे फिर भी इन्होंने गोली नहीं चलाई ताकि दूसरी तरफ सहायक उप निरीक्षक कुलदीप सिंह को कोई खतरा न हो। अपने को धिरा पाकर और हरीत और इनके पी.एस.ओज. की कार्रवाई से घबराकर अभियुक्त ने घोर हताशा में स्वयं को गोली मार ली। बाद में उसकी पहचान, संदीप जोहर उर्फ दीपक उर्फ दीपक सिंह उर्फ भूरी निवासी विकास पुरी, नई दिल्ली, एक दुर्दान्त गैंगस्टर, और आई.एस.आई. संचालकों के साथ स्पष्ट सम्पर्कों वाले एक राष्ट्र विरोधी तत्व और दिल्ली, उत्तर प्रदेश और हरियाणा में हत्याओं, फिरोती के लिए अपहरण और अन्य घृणित अपराध में व्यापक रूप से संलिप्त होने का रिकार्ड रखने वाले के रूप में हुई। कार्रवाई के पश्चात बीस .30 बोर चीन निर्मित स्वचालित पिस्तौलें, सौ .30 बोर जिन्दा कारतूस, 2 प्रयोग किए गए कारतूसों के साथ एक अमेरिकी निर्मित कोल्ट .32 बोर स्वचालित पिस्तौल, 32 बोर पिस्तौल के 30 जीवित राउन्ड, 4 जिन्दा राउन्ड के साथ एक .32 बेस रिवाल्वर और एक जेन कार बरामद की गई।

इस मुठभेड़ में, सर्व/श्री एच.एस. सिद्धू, भा.पु.से., वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक, कुलदीप सिंह, सहायक उप निरीक्षक, अमरजीत सिंह, सी-II और शमशेर सिंह, सी-II ने अदम्य वीरता, साहस एवं उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पदक, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4(i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 8 मार्च, 2003 से दिया जाएगा।

बलरूप मित्रा

(बलरूप मित्रा)

निदेशक

सं0 185 - प्रेज/2003-राष्ट्रपति, तमिलनाडु पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:-

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

1. आशुतोष शुक्ला, भा.पु.से., उप महानिरीक्षक, कोयम्बदूर
2. मोहम्मद शकील अख्तर, भा.पु.से., पुलिस उपायुक्त, मुदरै शहर
3. एम. अशोक कुमार, पुलिस अधीक्षक, एस.टी.एफ. इरोड
4. आर. कालीमुथु, सहायक पुलिस आयुक्त, मुदरै शहर
5. एस. शेखर, उपाधीक्षक पुलिस

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए पदक प्रदान किया गया:

श्री आशुतोष शुक्ला, भा.पु.से., उप महानिरीक्षक, कोयम्बदूर रेंज, जिनकी सहायता श्री शकील अख्तर, पुलिस उपायुक्त, मुदरै शहर, श्री एम. अशोक कुमार, पुलिस अधीक्षक, श्री कालीमुथु, सहायक पुलिस आयुक्त और श्री एस. शेखर, पुलिस उपाधीक्षक कर रहे थे, को पुलिस महानिदेशक, तमिलनाडु, द्वारा भगोड़े खूंखार आतंकवादी इमाम अली, जो 7.3.2002 को पुलिस हिरासत से भाग गया था, को ढूँढने के लिए तैनात विशिष्ट रूप से प्रतिनियुक्त किया गया था। इमाम अली पुत्र हालिथ, जो मेलूर, मुदरै जिले का एक मुस्लिम कट्टरपंथी था, वह 8.8.1993 को चेन्नई में आर.एस.एस. कार्यालय की इमारत में हुए बम विस्फोट, जिसमें 11 लोग मारे गए थे और 7 जखमी हो गए थे, सहित बहुत से बम हमलों के मामलों में आरोपी था। इमाम अली ने देशी रिवाल्वरो और पिस्तौलों सहित बमों को बनाने में निपुणता हासिल कर ली थी। उसे 29.8.1995 को गिरफ्तार किया गया। आर.एस.एस. कार्यालय में बम विस्फोट मामले का विचारण चितपुट में चल रहा था, तभी इमाम अली और उसके साथी थिरुमंगलम में पुलिस हिरासत से भाग गए। इमाम अली के साथी ने मार्गदर्शी पार्टी पर देशी बम फेंके और देशी हथियारों से गोलियां चलायीं। इमाम अली ने मार्गदर्शी कांस्टेबल से ए.के.-47 छोन ली और गोलियां चलाई जिससे भय पैदा हो गया और कुछ कांस्टेबल गंभीर रूप से जखमी हो गए। भागने के पश्चात इमाम अली ने "अल मुजाहिदीन" नाम से अपना ग्रुप बनाया, जिसका काम गरीब मुस्लिम युवकों को अपने ग्रुप में शामिल करना था। इमाम अली और उसका साथी अति विशिष्ट व्यक्तियों, पुलिस अधिकारियों की हत्या करने और हिन्दू मंदिरों तथा महत्वपूर्ण स्थलों में विस्फोट करने और इस प्रकार से विभिन्न धार्मिक ग्रुपों के बीच वैमनस्य को बढ़ावा देने की अपनी योजनाओं को अंजाम देने के लिए और अधिक शस्त्रों, गोलाबारूद और विस्फोटक प्राप्त करने की साजिश रची थी। इमाम अली और उसके साथियों की अवस्थिति जो डकैती और लूटपाट जिनमें विस्फोटक इस्तेमाल किए गए थे, के मामलों में भी आरोपी थे, का पता लगाने की जिम्मेवारी एम.एस.आर. नगर, बैंगलूर में 28.9.2002 निर्धारित की गई थी। कर्नाटक पुलिस के साथ प्रारंभिक विचार-विमर्श किया गया, श्री शुक्ला, उप महानिरीक्षक और श्री अख्तर, पुलिस उपायुक्त ने श्री अशोक कुमार के नेतृत्व वाली एस.टी.एफ. पार्टी और कर्नाटक पुलिस जिसका नेतृत्व पुलिस उपायुक्त श्री गोपाल बी. होसुर कर रहे थे, को ब्रीफ किया। दल 29.9.2002 को 2.30 बजे घटनास्थल पर पहुँचा। कर्नाटक पुलिस के पुलिस उपायुक्त श्री गोपाल बी. होसुर ने बाहरी क्षेत्र की घेराबंदी कर दी ताकि लोगों में तनावग्रस्त न हो और ऑपरेशन क्षेत्र के नजदीक न आए। भगोड़े अभियुक्त के कमरे का दरवाजा उप महानिरीक्षक श्री आशुतोष शुक्ला और पुलिस उपायुक्त श्री शकील अख्तर ने खटखटाया और उग्रवादियों से आत्मसमर्पण करने के लिए कहा गया। बार-बार की गई अपील के

बावजूद संवासियों ने दरवाजा नहीं खोला और उनकी एक कमरे से दूसरे कमरे में जाने की आवाज को सुना जा सकता था। इसी बीच, किसी ने छिपने की जगह के आगे के कमरे के सामने से, सड़क की तरफ खुलने वाली खिड़की से गोलीबारी शुरू कर दी। पुलिस अधीक्षक श्री एम. अशोक कुमार, उप महानिरीक्षक श्री अशुतोष शुक्ला, पुलिस उपायुक्त, श्री मोहम्मद शकील अख्तर, ने घर के बरामदे में दिवारों के पास आड़ ली और पुलिस उपाधीक्षक श्री शेखर और सहायक पुलिस आयुक्त श्री कालीमुथु ने मुख्य सड़क से लगी खिड़की के नजदीक आड़ ली। तभी प्रवेश द्वार के नजदीक बरामदे में शीशे से एक गोली चलाई गई। चूंकि उप महानिरीक्षक और पार्टी लेटी हुई पोजीशन में थी, खिड़की के कांच के टुकड़े से दो, उप निरीक्षक विन्सेंट और सरवन देवेन्द्रन तथा पी.सी. अरुलदास जखमी हो गए। दरवाजे के नजदीक खिड़की से दो आंसू गैस के गोले दागे गए और खिड़की को लकड़ी के तख्ते से कवर किया गया। श्री आर. कालीमुथु, सहायक पुलिस आयुक्त और श्री एस. शेखर और पार्टी ने गली के सामने वाली खिड़की से आंसू गैस के गोले दागे और उन्हें आत्मरक्षा में सावधानीपूर्वक जवाबी गोलीबारी चलाने के लिए कहा गया। चूंकि संवासी बाहर नहीं आ रहे थे, इसलिए दरवाजे को तोड़ कर खोला गया, उप महानिरीक्षक श्री आशुतोष शुक्ला, पुलिस उपायुक्त श्री मोहम्मद शकील अख्तर, पुलिस अधीक्षक अशोक कुमार ने अंदर छलांग लगा दी और तीन उप निरीक्षकों ने लेटी हुई पोजीशन में दरवाजे के निकट आड़ ले ली। कांस्टेबल चेल्लादुरई ने योजनानुसार साथ-साथ सर्च लाइट जला दी। तथापि, आंसू गैस के कारण कमरे के अंदर साफ नहीं दिखाई दे रहा था। कमरे के अंदर से की गई गोलीबारी के कारण उप निरीक्षक सेल्वाक्कन डेविड के सीधे हाथ की अंगुली उड़ गई। अन्य कोई उपाय न सूझकर, उप महानिरीक्षक श्री शुक्ला और पार्टी ने जवाब में आत्मरक्षा में भारी जवाबी गोलीबारी कर दी। मुठभेड़ थमने के पश्चात, गंभीर रूप से जखमी इमाम अली, उसके साथी सीनिआप्पा, मोहम्मद इब्राहिम, मंगा बशीर यास्मिन, सीनिआप्पा की पत्नी को अस्पताल ले जाया गया जहाँ उन्हें मृत लाया गया घोषित किया गया। इस वीरतापूर्ण कार्रवाई में 11 पुलिसकर्मी जखमी हो गए, और उनमें दो गंभीर रूप से जखमी हो गए। इमाम अली द्वारा भागने के दौरान छीनी गई 1 ए.के.-47, तीन देश निर्मित आग्नेयास्त्र और अन्य विस्फोटक डिवाइस बरामद हुए।

इस मुठभेड़ में, सर्व/श्री आशुतोष शुक्ला, भा.पु.से., उप महानिरीक्षक, मोहम्मद शकील अख्तर, भा.पु.से., पुलिस उपायुक्त, एम. अशोक कुमार, पुलिस अधीक्षक, एस.टी.एफ., आर. कालीमुथु, सहायक पुलिस आयुक्त, एस. शेखर, पुलिस उपाधीक्षक ने अदम्य वीरता, साहस एवं उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पदक, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4(i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 29 सितम्बर, 2002 से दिया जाएगा।

१२५। १५/११
(बरूण मित्रा)
निदेशक

स0 186 - प्रेज/2003-राष्ट्रपति, त्रिपुरा पुलिस के निम्नलिखित अधिकारी को उनकी वीरता के लिए राष्ट्रपति का पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:-

अधिकारी का नाम और रैंक

श्री सुबल देबबर्मा, (मरणोपरांत)
कांस्टेबल

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए पदक प्रदान किया गया:

कांस्टेबल सुबल देबबर्मा को एक अन्य डी ए आर साऊथ कर्मी के साथ 19.12.02 को मैथोलोंग एस.पी.ओ. कैंप पर तैनात किया गया था । 4.4.03 को 0400 बजे कांस्टेबल सुबल देबबर्मा ने संतरी ड्यूटी की बारी-बारी से अदला-बदली के हिस्से के रूप में मैथोलोंग एस.पी.ओ. कैंप पर तीन अन्य एस.पी.ओ. के साथ संतरी ड्यूटी का कार्यभार संभाला । उन्होंने उक्त कैंप की संतरी ड्यूटी से सी/2870 सुका पादा जमातिया को कार्यमुक्त किया । जैसे ही उन्होंने लगभग 0400 बजे संतरी ड्यूटी का कार्यभार संभाला, अतिवादियों के एक ग्रुप ने, जो लगभग 30/40 की संख्या में थे, ने एस पी ओ कैंप पर कैंप के चारों तरफ से अचानक हमला कर दिया । अतिवादियों ने अपनी ए.के.-47, 7.62 एस.एल.आर., आर.पी.जी. इत्यादि जैसे स्वचालित हथियारों से गोलीबारी शुरू कर दी । गोलीबारी की आवाज सुनकर कांस्टेबल सुबल देबबर्मा ने अपनी 7.62 एस.एल.आर. से जवाबी-गोलीबारी शुरू कर दी । कांस्टेबल सुबल देबबर्मा को अतिवादियों से लड़ते हुए अपने साहस के बारे में इतना विश्वास था कि वे अपनी संतरी चौकी से रेंगते हुए बाहर निकल आए और अतिवादियों की गोलीबारी का जवाब देने के लिए पास ही की उपयुक्त जगह पर पहुँच गए । उन्होंने ऐसा केवल कैंप में तैनात पुलिस कर्मियों तथा एस.पी.ओ. की जान बचाने और साथ ही शस्त्र और गोलाबारूद बचाने के लिए किया । गोलीबारी करने के दौरान, कांस्टेबल सुबल देबबर्मा का दुर्भाग्यवश सिर और शरीर का पिछला हिस्सा गंभीर रूप से जख्मी हो गया और उन्होंने घावों के कारण दम तोड़ दिया । वे अपने जीवन का बलिदान करके अन्य पुलिस कर्मियों और एस.पी.ओ. की जान बचाने में सफल हुए ।

इस मुठभेड़ में, (दिवंगत) श्री सुबल देबबर्मा, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस एवं उच्चकोटि की कार्यप्रणाली का परिचय दिया ।

यह पदक, राष्ट्रपति का पुलिस पदक नियमावली के नियम 4(i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिया जा रहा है तथा फलस्वरूप नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 4 अप्रैल, 2003 से दिया जाएगा ।

बलरूप मित्रा
(बलरूप मित्रा)
निदेशक

सं0 187 - प्रेज/2003-राष्ट्रपति, उत्तर प्रदेश पुलिस के निम्नलिखित अधिकारी को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:-

अधिकारी का नाम और रैंक

श्री मुकुल गोयल, भा0पु0से0
वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक, मेरठ

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए पदक प्रदान किया गया:

दिल्ली पुलिस के श्री राजवीर सिंह, सहायक पुलिस आयुक्त, विशेष प्रकोष्ठ, लोधी कालोनी, नई दिल्ली मेरठ आए और आज दिनांक 2.8.2002 को लगभग 1830 बजे महानिरीक्षक, मेरठ जोन से मिले और उन्हें बताया कि वे उस टेलीफोन वार्ता, के संबंध में उनसे मिलने आए हैं, जो उनके और श्री के.के. पाल, विशेष पुलिस आयुक्त, आसूचना के बीच हुई थी। उन्होंने बताया कि उन्हें विश्वसनीय सूत्रों से एक ग्रामाधिक सूचना प्राप्त हुई है कि पुष्पेन्द्र उर्फ पुष्पी जाट सुपुत्र दिवान सिंह निवासी नगला कुम्हा, पुलिस स्टेशन कुम्हेर, जिला भरतपुर, राजस्थान, एक बांछित कुख्यात अपराधी जिस पर इनाम घोषित है, और जिसने दिल्ली और उत्तर प्रदेश सहित विभिन्न राज्यों में आतंक फैला रखा है; मेरठ में वेदव्यासपुरी औद्योगिक क्षेत्र, प्रतापपुर और प्रभात नगर में घूम रहा है और इस समय एक नीले रंग की एक्सेट कार सं0 यू.पी. 15 के 7045 इस्तेमाल कर रहा है। इस सूचना के प्राप्त होने पर, डा0 विक्रम सिंह, महानिरीक्षक, मेरठ जोन, मेरठ ने मुकुल गोयल, वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक, मेरठ को बुलाया और स्थिति स्पष्ट करने के पश्चात उन्हें इस अभियान का नेतृत्व करने का निदेश दिया। श्री राजवीर सिंह, सहायक पुलिस आयुक्त विशेष प्रकोष्ठ, दिल्ली के साथ विचार-विमर्श के पश्चात, श्री गोयल ने टीमों का गठन किया। सभी टीमों की निर्देश दिए गए थे कि उन्हें, उन्हें सौंपे गए क्षेत्र में उपर्युक्त एक्सेट कार को तलाशने के लिए घूमना है। यदि किसी को भी यह कार दिखाई दे तो वह श्री गोयल को सूचना दे और शेष दल तत्काल उस कार का पीछा करे और ऐसा करते समय यह ध्यान रखे कि इसका पता न चले। किसी भी हालत में यह कार, आदेश के बिना रोकी नहीं जानी चाहिए। टीमों को यह भी चेतावनी दी गई कि बिना आदेश के कोई भी गोली न चलाए जब तक कि किसी को जान का खतरा न हो। श्री गोयल के नेतृत्व वाले दल ने एक्सेट कार सं0 यू.पी. 15 के 7045 को देखा और तदनुसार दल के सभी सदस्यों को चौकस कर दिया। एक व्यक्ति, जिसकी पहचान बाद में पुष्पेन्द्र उर्फ पुष्पी जाट सुपुत्र दिवान सिंह निवासी कुम्हा के रूप में की गई, चाट बाजार में कार खड़ी करने के पश्चात कार से बाहर आया। इस पर, श्री गोयल ने उन सभी टीमों को चौकस कर दिया जो चाट बाजार पहुँच चुकी थी और उन्हें अपनी-अपनी पोजिशने लेने के निदेश दिए तथा पहले से दिए अनुदेशों के अनुसार कार्रवाई करने हेतु कहा। रिजर्व पार्टी ने उक्त एक्सेट कार को कवर कर लिया जबकि अवरोधक दल दो भागों में बँट गया और स्वयं चाट बाजार के दोनों तरफ खड़े हो गए। राजवीर सिंह, सहायक पुलिस आयुक्त विशेष प्रकोष्ठ, दिल्ली के साथ श्री गोयल और शेष दल आगे बढ़े और पुष्पेन्द्र उर्फ पुष्पी को जोर से आवाज देकर, उसे घेरने वाली पुलिस पार्टी के समक्ष, आत्मसमर्पण करने के लिए कहा। इस पर, पुष्पेन्द्र ने अपनी पैट से रिवाल्वर निकाल कर श्री गोयल को मारने के इरादे से उन पर गोली चला दी। श्री गोयल बाल बाल बच गए। उस समय, बच्चों, महिलाओं और बुजुर्ग लोगों सहित बहुत से लोग चाट बाजार में मौजूद थे। वहाँ उपस्थित लोगों की सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए और पुलिस कर्मियों के बीच किसी भी प्रकार का भ्रम पैदा होने से रोकने की दृष्टि से, श्री गोयल ने आगे होकर टीम का नेतृत्व किया और पुष्पेन्द्र को गिरफ्तार करने का प्रयास किया। लेकिन पुष्पेन्द्र ने पुलिस कर्मियों को मारने के इरादे से पुलिस पार्टी पर गोलीबारी जारी रखी। इस पर श्री गोयल आगे बढ़े और आत्मरक्षा में गोलियाँ चलाई। श्री राजीव सिंह, सहायक पुलिस आयुक्त और अन्य पुलिस कर्मियों ने भी अत्यधिक साहस का प्रदर्शन कर नियंत्रित गोलीबारी करके उनकी सहायता की। लगभग 2015 बजे अपराधी को गोली लगी और वह जमीन पर गिर पड़ा। वेबलें कंपनी की एक .455 बोर की इंग्लिश फैक्टरी निर्मित रिवाल्वर सं0 180475 उसके सीधे हाथ के नजदीक जमीन पर पड़ी हुई पाई गई और जिसमें 5 खाली कारतूस और 01 जिंदा कारतूस मिला।

इस मुठभेड़ में, श्री मुकुल गोयल, भा0पु0से0, वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक ने अदम्य वीरता, साहस एवं उच्चकोण की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

यह पदक, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4(i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिया जा रहा है तथा फलस्वरूप नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 2 अगस्त, 2002 से दिया जाएगा।

4/5/03
(बलराम मिश्रा)
निदेशक

सं० 188 - प्रेज/2003-राष्ट्रपति, उत्तर प्रदेश पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:-

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

1. शैलेन्द्र सिंह, कांस्टेबल (मरणोपरांत)
2. तारा दत्त वैला, निरीक्षक, एस.एच.ओ.

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए पदक प्रदान किया गया:

26.09.2001 को कुछ अज्ञात अपराधियों द्वारा श्री पन्ना लाल शर्मा का उनके ईट के भट्टे से अपहरण कर लिए जाने के बारे में पुलिस स्टेशन खुर्जा देहात से सूचना प्राप्त होने पर श्री राजीव कृष्ण, वरिष्ठ पुलिस अधिकारी ने संबंधित अधिकारियों के साथ सभी संबद्ध सड़कों की चौकियां शुरू कर दी। इस बीच, एस.ओ. खुर्जा देहात ने वायरलेस पर सूचना दी कि एक संदिग्ध सफेद मारुति कार को कुछ राइफलों ने चोला से बालीपुरा की तरफ जाते देखा है। लगभग 1445 बजे एस.एच.ओ., सिकन्दराबाद ने अपनी ओर आती सफेद मारुति कार को देखा और उसे रोकने का प्रयास किया परन्तु संदिग्धों ने कार नहीं रोकी और पुलिस पार्टी पर गोलीबारी प्रारम्भ कर दी। बारल की ओर से आ रहे एस.एच.ओ. और अपर पुलिस अधीक्षक, डी.सी. मिश्रा और अन्य ने भागती हुई कार का पीछा करना शुरू कर दिया। संदिग्ध व्यक्तियों ने अपनी कार को कच्ची पटरी की तरफ मोड़ दिया और पुलिस पार्टी के दबाव के कारण अपहृत व्यक्ति को कार में ही छोड़, पटरी की बाईं तरफ गन्ने के खेत की तरफ भागने लगे। अपहृत व्यक्ति से जानकारी प्राप्त करने के पश्चात यह पक्का हो गया कि ये ही वे अपराधी थे जिन्होंने भट्टे के मालिक का अपहरण किया था। श्री मिश्रा, अपर पुलिस अधीक्षक ने उपलब्ध बल के साथ स्थान की घेराबंदी कर दी और उन्हें समर्पण करने को कहा। अपराधियों ने पुलिस पार्टी पर गोलीबारी की और बचकर भागने का प्रयास किया परन्तु पुलिस पार्टी ने उन्हें बचकर भागने नहीं दिया। अपराधियों ने एक खेत में शरण ले रखी थी जो कि लगभग 120-125 बीघे क्षेत्र में था, और फसल लगभग 10-12 फुट ऊंची और घनी थी। वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक ने चार ट्रैक्टरों की व्यवस्था की। वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक के नेतृत्व में एस.ओ. खुर्जा देहात श्री इन्द्रपाल सिंह, उप निरीक्षक डी.पी. सिंह और एस.एच.ओ. सिकन्दराबाद श्री टी.डी. वैला के नेतृत्व में पुलिस पार्टी तलाशी के लिए खेत में घुस गई। तलाशी के दौरान दोनों ओर से गोलीबारी हुई और एस.एच.ओ. सिकन्दराबाद ने वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक को सूचित किया कि एक अपराधी मारा गया है। एक कांस्टेबल भी घायल हुआ। एस.एच.ओ., सिकन्दराबाद ने वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक को यह भी सूचित किया कि तीन आतताइयों को ट्रैक्टर के दाईं तरफ देखा गया है जिन्होंने पुलिस पर गोलीबारी प्रारम्भ कर दी है। एक गोली श्री शैलेन्द्र सिंह, कांस्टेबल के गले में लगी जिससे वह घायल हो गए और उन्होंने जख्मों के कारण प्राण त्याग दिए और पुलिस के अन्य सदस्य बाल-बाल बच गए क्योंकि गोलियां चारों तरफ से आ रही थीं। एस.एच.ओ., सिकन्दराबाद श्री टी.डी. वैला ने पुलिस पार्टी को संगठित किया और गोलीबारी का जवाब दिया। पुलिस पार्टी की गोलीबारी से एक अपराधी मारा गया। शेष घनी बेल बूटियों के बीच से होकर बचकर भाग निकले। मारे गए अपराधी के पास एक .315 बोर देशी इथियार पड़ा हुआ था। पुलिस पार्टी ने बाकि अपराधियों को तलाशने का काम प्रारम्भ किया। वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक, श्री राजीव कृष्ण, उस दिशा की ओर भागे जहां से अपराधियों के भाग जाने की आशा की जा रही थी। इस समय तक, ठीक-ठीक नजर नहीं आ रहा था और अपराधी जली लाइट वाले ट्रैक्टर पर पुलिस कार्मिकों को देख सकते थे। 15 मिनट पश्चात अपराधी गन्ने के घने कच्छ वनस्पति में प्रवेश कर गए। तथापि, अपराधी ने वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक के रोडर पर गोलियां चलाई लेकिन वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक और उनके गनर ने अपराधी पर गोली चलाकर उसे घटना स्थल पर ही मार गिराया। मारे गए अपहरणकर्ताओं की पहचान धर्मपाल उर्फ धर्मा गुर्जर, निवासी सिलारपुर, नौएडा, अनिल कुमार गुर्जर, निवासी गिरधरपुर, पुलिस स्टेशन दादरी, रामवीर चौहान, निवासी शिवाल खास, पुलिस स्टेशन जानी, मेरठ के रूप में हुई। कारतूसों के साथ 1 सी.एम.पी. 12 बोर, कारतूसों के साथ 1 डी.बी.बी.एल. गन, 315 बोर, कारतूसों के साथ 1 रिवाल्वर 38 बोर सी.एम. और कारतूसों के साथ 1 सी.एम.पी. 315 बोर मारे गए व्यक्तियों से बरामद की गई।

इस मुठभेड़ में, (दिवंगत) श्री शैलेन्द्र सिंह, कांस्टेबल और श्री तारा दत्त वैला, निरीक्षक ने अदम्य वीरता, साहस एवं उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पदक, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4(i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 26 सितम्बर, 2001 से दिया जाएगा।

अ. ज. मिश्रा
(बरूण मिश्रा)
निदेशक

सं० 189 - प्रेज/2003-राष्ट्रपति, उत्तर प्रदेश पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:-

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

1. गुरदर्शन सिंह, भा०पु०से०, उप महानिरीक्षक
2. आलोक सिंह, भा०पु०से०, पुलिस अधीक्षक
3. शेषमणि त्रिपाठी, पुलिस उपाधीक्षक
4. जय शंकर प्रसाद, उप निरीक्षक

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए पदक प्रदान किया गया:

21.4.2002 को श्री गुरदर्शन सिंह, उप महानिरीक्षक, विन्ध्याचल रेंज को एक सूचना प्राप्त हुई कि प्रतिबंधित माओवादी काम्युनिस्ट सेंटर (एम सी सी) के 8 से 10 खतरनाक नक्सलवादियों की कुछ जघन्य अपराध करने की योजना बनाने और उन्हें अंजाम देने के उद्देश्य से, पुलिस स्टेशन धुंधी के गांव कराहिया, में एक घर में इकट्ठा होने की संभावना है। श्री गुरदर्शन ने तत्काल श्री आलोक सिंह, पुलिस अधीक्षक सोनभद्र को उपलब्ध पुलिस बल के साथ तेजी से उस गांव में जाने का निदेश दिया। श्री आलोक सिंह ने आगे नजदीक के पुलिस स्टेशनों के एस ओ और थाना प्रभारियों को पुलिस बल के साथ मियोरपुर चौकी पर पहुंचने का निदेश दिया। मियोरपुर चौकी पर पहुंचने पर, पुलिस पार्टियों को दो भागों में बांट दिया गया, जिनमें से एक का नेतृत्व स्वयं पुलिस अधीक्षक कर रहे थे। इन पार्टियों को समुचित रूप से समझाने के पश्चात वे वाहनों में गांव की ओर चल पड़े। जब वे गांव के नजदीक पहुंचे तब पार्टियों ने अपने वाहन वहीं छोड़ दिए और योजनानुसार चारों ओर फैल गए और दो विभिन्न दिशाओं से जंगल से होकर फुर्ती के साथ लक्षित घर की तरफ आगे बढ़े। नक्सलवादियों ने अपने को बड़े कौशल के साथ छिपाया हुआ था और वे रणनीतिक ढंग से पोजीशन लिए हुए थे। पुलिस पार्टी को देखकर, नक्सलवादियों ने पुलिस पार्टी पर गोलीबारी करते हुए बचने का प्रयास किया। नक्सलवादियों द्वारा की गई गोलीबारी में एक गोली श्री आलोक सिंह की बुलेटप्रूफ जैकेट में लगी। श्री आलोक सिंह, ने विचलित हुए बिना पार्टी को नक्सलवादियों का पीछा करने का निदेश दिया। इसी बीच, शेष नक्सलवादियों ने उस घर में पोजीशन ले ली और पुलिस पार्टी पर अंधाधुंध गोलीबारी शुरू कर दी। श्री आलोक सिंह ने तत्काल उस घर की घेराबंदी कर दी। इसी दौरान, श्री गुरदर्शन सिंह, उप महानिरीक्षक अतिरिक्त पुलिस बल के साथ घटनास्थल पर पहुंच गए और स्थिति का जायजा लिया। श्री गुरदर्शन सिंह ने नक्सलवादियों को खदेड़ने की योजना बनाई और उपलब्ध बल को तीन हमलावार पार्टियों में बांट दिया। प्रथम पार्टी को घर के पूर्वोत्तर दरवाजे पर तैनात कर उसका नेतृत्व स्वयं गुरदर्शन सिंह, उप महानिरीक्षक ने किया। द्वितीय पार्टी का नेतृत्व पश्चिमी तरफ से श्री आलोक सिंह, पुलिस अधीक्षक कर रहे थे और पूर्वोत्तर की तरफ से तृतीय पार्टी का नेतृत्व श्री शेषमणि त्रिपाठी, पुलिस उपाधीक्षक कर रहे थे। ये पार्टियां लक्षित घर की तरफ बढ़ी। घर के निकट पहुंचने पर, श्री गुरदर्शन सिंह ने नक्सलवादियों को अपने हथियार सौंपने और आत्मसमर्पण करने के लिए कहा लेकिन नक्सलवादी अपनी अंतिम सांस तक लड़ने के लिए दृढ़संकल्प थे और उन्होंने अंधाधुंध गोलीबारी शुरू कर दी। गोलियों की बौछारों से विचलित हुए बिना, श्री गुरदर्शन सिंह ने उप निरीक्षक जय शंकर प्रसाद को पीछे की तरफ से टाइल वाली छत पर चढ़ने और उस कमरे में धुएँ के गोले दागने का निदेश दिया, जहाँ आतंकवादी लाभकारी स्थिति में थे। इस कार्रवाई को देखकर, नक्सलवादियों ने छत की तरफ गोलीबारी की जिसके परिणामस्वरूप श्री जयशंकर प्रसाद टाइलों की

किरचों से घायल हो गए। अपने जख्मों और अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की परवाह न करते हुए, इन्होंने उस घर में घुए के गोले दाग दिए। इसके कारण नक्सलवादियों ने पुलिस पार्टी, जिसका नेतृत्व उप महानिरीक्षक स्वयं कर रहे थे, पर गोलीबारी तेज कर दी। जवाबी गोलीबारी की गई। आपसी गोलीबारी में श्री गुरदर्शन सिंह उप महानिरीक्षक की बुलैटप्रूफ जैकेट पर गोलियां लगीं। श्री गुरदर्शन सिंह ने बिना किसी भय के और अपनी जान की परवाह न करते हुए गोलीबारी जारी रखी और अपनी पार्टी के मनोबल को ऊंचा रखा। मुठभेड़ के दौरान, तीन नक्सलवादी मारे गए और एक गंभीर रूप से जख्मी हो गया। जख्मी नक्सलवादी ने बाद में जख्मों के कारण दम तोड़ दिया। मारे गए नक्सलवादियों की पहचान बाद में (1) राजकुमार गौड़ उर्फ राजेश उर्फ शत्रुघन, निवासी चपकी, पुलिस स्टेशन भाभनी, जिला सोनभद्र (2) राजू उर्फ राजा निवासी बिहार राज्य (3) बसंत लाल उर्फ शत्रुनाश निवासी चपकी, पुलिस स्टेशन भाभनी, जिला सोनभद्र (4) सुरेश गौड़ उर्फ पवन निवासी भुलैया पतेरी, टोला, पुलिस स्टेशन दुधी, जिला सोनभद्र के रूप में की गई। मुठभेड़ स्थल से निम्नलिखित शस्त्र और गोलाबारूद भी बरामद किए गए:

.303 पुलिस राइफल	:	01
डी बी बी एल गन (फैक्टरी निर्मित)	:	01
एस बी बी एल (फैक्टरी निर्मित)	:	02
देश निर्मित स्टेन गने	:	02

जिंदा और चल चुके 303 बोर और 12 बोर के कारतूस।

प्रतिबंधित नक्सलवादी गुट एम सी सी का उत्तेजक/आपत्तिजनक साहित्य।

इस मुठभेड़ में, सर्वश्री गुरदर्शन सिंह, भा0पु0से0, उप महानिरीक्षक, आलोक सिंह, भा0पु0से0, पुलिस अधीक्षक, शोषमणि त्रिपाठी, पुलिस उपाधीक्षक और जय शंकर प्रसाद, उप निरीक्षक ने अदम्य वीरता, साहस एवं उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पदक, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4(i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 21 अप्रैल, 2002 से दिया जाएगा।

बलरूप मिश्रा
(बलरूप मिश्रा)
निदेशक

सं० 190 - प्रेज/2003-राष्ट्रपति, उत्तर प्रदेश पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:-

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्वश्री

1. राजीव कुमार, कांस्टेबल
2. कश्मीर सिंह, कांस्टेबल

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए पदक प्रदान किया गया:

मामचंद गिरोह, जिसने गांव मिरागपुर, गांव दूधाली, गांव सधारनपुर दुगचड़ी के जंगल में फिरौती के लिए एक कपड़ा व्यापारी सतपाल गांधी का अपहरण कर लिया था, के संबंध एक सूचना प्राप्त हुई। उक्त सूचना उच्च अधिकारियों के पास भेज दी गई। अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक, गिरोह को गिरफ्तार करने और श्री सतपाल गांधी की सुरक्षित रिहाई हेतु देवबंध में पड़ाव डाले हुए थे। 17.09.1998 को थाना प्रभारी हरी किशन बशिष्ठ, झाइवर राजबीर सिंह सहित कांस्टेबल राजीव कुमार, कांस्टेबल कश्मीर सिंह, कांस्टेबल देवेन्द्र कुमार के साथ अपहृत व्यक्ति और गिरोह को तलाशने में व्यस्त थे। इस संबंध में मुखबिर ने ओ पी मंगलूर रोड पर सूचना दी कि अपहृत व्यक्ति और गिरोह मिरागपुर के जंगल में उपस्थित हैं और गिरोह फिरौती के लिए प्रयास कर रहा है और इसकी वहाँ पूरे दिन रुकने की संभावना है। मुखबिर के साथ थाना प्रभारी, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक को सूचना देने चीनी मिल के गेस्ट हाऊस गए और इस बारे में विचार-विमर्श किया। अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक के निदेश पर पुलिस स्टेशन देवबंध से पुलिस बल और पी ए सी की एक प्लाटून मंगाई गई और उन्हें गेस्ट हाऊस में गिरोह के सदस्यों और उनके पास मौजूद हथियारों के संबंध में बताया गया और उन्हें अपहृत व्यक्ति की जान बचाने का निदेश दिया गया। बल को तीन पार्टियों में बांट दिया गया। प्रथम पार्टी के प्रभारी अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक थे, द्वितीय पार्टी के राघवेन्द्र सिंह एस ओ नागल और तीसरी पार्टी के प्रभारी उप निरीक्षक श्री प्रती पाल सिंह रौतेला थे। पहली पार्टी, मुखबीर के साथ दुगचंदी के रास्ते गिरोह की तरफ गई जहाँ अपहृत सतपाल गांधी रखा गया था, दूसरी पार्टी गाइड देवेन्द्र के साथ उस स्थान की ओर बढ़ी जहाँ से अपहृत व्यक्ति को ले जाने की संभावना थी। तीसरी पार्टी ने गांव सधारनपुर की ओर से कांस्टेबल बिजेन्द्र सिंह के निदेशानुसार गन्ने के खेत को कवर किया जहाँ गिरोह की शरण लेने की संभावना थी और जहाँ से वे बचकर भाग सकते थे। आर टी सैट के माध्यम से एस ओ मंगलूर और ज्ञानबेदा को गिरोह के संबंध में बताया तथा अवरोधक के रूप में बल तैनात करने के लिए कहा। पहली और तीसरी पार्टी ने गांव दुगचंदी में अपने वाहन छोड़ दिए तथा दूसरी पार्टी ने गांव मिरागपुर में अपना वाहन छोड़ दिया और मुखबिर तथा गाइड द्वारा बताए अनुसार, तीनों पार्टियों को लगभग 13.00 बजे गन्ने के खेतों में तैनात किया। अपहृत व्यक्ति के साथ मामचंद गिरोह लगभग 13.30 बजे सपरूरा के खेत में लगे हैंड पंप से पानी लेने के लिए आया। मुखबिर ने अपराधियों की ओर इशारा किया और कहा कि जिसने अंडरवियर और बनियान पहना हुआ है वह अपहृत व्यक्ति सतपाल गांधी है। अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक द्वारा ललकारने पर, अपराधियों ने पुलिस कर्मियों पर गोलीबारी शुरू कर दी। अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक ने पार्टी को आगे बढ़ने और अपहृत व्यक्ति को छुड़ाने का आदेश दिया और कहा कि वे उन्हें कवरींग फायर देंगे। जैसे ही अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक, महेन्द्र सिंह नेगी, एस ओ और उप निरीक्षक सुनील पचौरी ने गोलीबारी शुरू की, कांस्टेबल राजीव कुमार और कांस्टेबल कश्मीर सिंह ने अपराधियों पर हमला कर दिया और अपहृत व्यक्ति को उनके चंगुल से छुड़ा लिया, उसे नीचे लिटा दिया और अपराधियों की तरफ से की जा रही गोलीबारी से उसको कवर किया। अपराधियों ने

पुलिस पार्टी के साथ-साथ अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक पर अनेक राउन्द गोलीबारी की लेकिन बुलैटप्रूफ जैकेटों के कारण वह असरदार साबित नहीं हुई। पुलिस पार्टी पर गोलीबारी करते हुए अपराधी विपरीत दिशा में भागे लेकिन पुलिस द्वारा उन्हें घेर लिया गया। दूसरी और तीसरी पार्टी और एस ओ मंगलोर श्री विनोद कुमार, उप निरीक्षक श्री संजय चौहान, कांस्टेबल नीरज कुमार, कांस्टेबल बिजेन्द्र कुमार और कांस्टेबल उदय वीर तोमर ने 5 अभियुक्तों को गिरफ्तार कर लिया। पुलिस गोलीबारी के परिणामस्वरूप, तीन अपराधी मृत पाए गए। एक अपराधी का शव हैड पंप के उत्तरी दिशा पर पड़ा हुआ था, उसकी पहचान गांव मनकी के दिनेश के रूप में की गई और उसके पास से एक 315 बोर की सी एम पी बरामद की गई तथा इस अपराधी के बायें हाथ पर मामचंद लिखा हुआ था। चाक रोड पर पास पड़े तीसरे अपराधी के नजदीक एक 12 बोर सी एम पी पाई गई अपराधी की पहचान गांव, मेघराजपुर के बबलू के रूप में की गई।

ये मुठभेड़ में, सर्वश्री राजीव कुमार, कांस्टेबल और कश्मीर सिंह, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस एवं उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पदक, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4(i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 17 सितंबर, 1998 से दिया जाएगा।

बलरूप मिश्रा
(बलरूप मिश्रा)
निदेशक

सं० 191 - प्रेज/2003-राष्ट्रपति, उत्तर प्रदेश पुलिस के निम्नलिखित अधिकारी को उनकी वीरता के लिए राष्ट्रपति का पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:-

अधिकारी का नाम और रैंक

श्री विनोद कुमार मिश्रा, (मरणोपरांत)

उप-निरीक्षक

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए पदक प्रदान किया गया:

13.3.1997 को दिवंगत श्री विनोद कुमार मिश्रा अपनी पार्टी के साथ गश्त ड्यूटी पर थे । गश्त के दौरान उन्होंने बिना नम्बर की यामहा मोटर साइकिल पर तीन व्यक्तियों को आते देखा । मोटर चालक ने मोटर साइकिल नहीं रोकੀ । उप-निरीक्षक श्री मिश्रा और अन्य पुलिस कर्मियों ने मोटर साइकिलों/साइकिलों पर उनका पीछा किया । अपराधियों को रूकने के लिए कहा गया । चेतावनी को सुनने की बजाय, उन्होंने पुलिस पार्टी पर गोलियां चला दी । पुलिस पार्टी ने अपने बचाव में जवाबी गोलीबारी की । आपसी गोलीबारी के दौरान, अपराधियों द्वारा चलाई गई एक गोली श्री मिश्रा को लगी । श्री मिश्रा ने जख्मी होने के बावजूद, अपनी पिस्तौल से अपराधी पर गोली चलाई और अपराधियों में से एक को मार गिराया । मुठभेड़ के दौरान, पुलिस द्वारा की गई गोलीबारी में एक और अपराधी भी मारा गया । शेष तीसरा अपराधी, हालांकि बचने में कामयाब हो गया । श्री मिश्रा ने, बाद में, जख्मों के कारण दम तोड़ दिया । मारे गए अपराधियों की पहचान हिलाल, पुत्र इफ्तीज, निवासी मसाराबाद, रामपुर और नन्हा साधु उर्फ यासीन पुत्र अली हुसैन, निवासी बगीचा ऐमना, रामपुर, कुख्यात अपराधी, जिनकी गिरफ्तारी पर 10,000/- ₹0 और 2,500/- ₹0 का इनाम था, के रूप में की गई और उनसे दो देशी पिस्तौल और काफी मात्रा में कारतूस बरामद किए गए ।

इस मुठभेड़ में, (दिवंगत) श्री विनोद कुमार मिश्रा, उप निरीक्षक ने अदम्य वीरता, साहस एवं उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया ।

यह पदक, राष्ट्रपति का पुलिस पदक नियमावली के नियम 4(i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिया जा रहा है तथा फलस्वरूप नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 13 मार्च, 1997 से दिया जाएगा ।

ब.रू. मिश्रा

(बरूण मिश्रा)

निदेशक

सं० 192 - प्रेज/2003-राष्ट्रपति, उत्तर प्रदेश पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:-

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

1. राजेश कुमार गुप्ता, कांस्टेबल (मरणोपरांत)
2. संतोष कुमार, कांस्टेबल

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए पदक प्रदान किया गया:

20.12.1999 को श्री शिव कुमार त्यागी, उप निरीक्षक/सी.पी. को सिधबाबा जगतपुर और हेमपुर जंगल में छान-बीन अभियान के दौरान, कुख्यात अपराधी छत्तरपाल को अपने साथियों के साथ डोने के संबंध में सूचना प्राप्त हुई। इस सूचना पर तुरंत कार्रवाई करते हुए, एक छान-बीन पार्टी को दो ग्रुपों में बांट दिया गया, एक ग्रुप का नेतृत्व श्री शिव कुमार त्यागी, उप निरीक्षक और दूसरे का श्री शियोदन सिंह, 47वीं बटालियन पी.ए.सी. के पी.सी. कर रहे थे। पुलिस पार्टी को देखकर, अपराधियों ने पुलिस पार्टी पर गोलीबारी शुरू कर दी। पुलिस पार्टी ने अपराधियों को ललकारा और आत्मरक्षा में गोलियां चलाई। आपसी गोलीबारी के दौरान, श्री राजेश कुमार गुप्ता, कांस्टेबल और संतोष कुमार, कांस्टेबल, अदम्य साहस का परिचय देते हुए तथा अपनी जान को भारी खतरे में डालकर अपराधियों में से दो का सफाया करने में कामयाब हो गए। दोनों कांस्टेबल गोलियों से गंभीर रूप से जख्मी हो गए। बाद में, राजेश कुमार गुप्ता, कांस्टेबल की चिकित्सा के दौरान मृत्यु हो गई। घटनास्थल से बड़ी संख्या में जिंदा कारतूसों के साथ एक फैक्टरी निर्मित लूटी हुई एस.बी.बी.एल. गन, एक देशी .315 बोर की राइफल, बड़ी संख्या में जिंदा और खाली कारतूस तथा 31,800/-रु० नकद बरामद किए गए।

इस मुठभेड़ में, (दिवंगत) श्री राजेश कुमार गुप्ता, कांस्टेबल और श्री संतोष कुमार, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस एवं उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पदक, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4(i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 20 दिसंबर, 1999 से दिया जाएगा।

७/२/०४
(बरूण मित्रा)
निदेशक

सं० 193 - प्रेज/2003-राष्ट्रपति, पश्चिम बंगाल पुलिस के निम्नलिखित अधिकारी को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:-

अधिकारी का नाम और रैंक

श्री बापी सेन (मरणोपरांत)

साजेंट, कोलकाता पुलिस

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए पदक प्रदान किया गया:

दिनांक 31.12.2002/1.1.2003 की रात्रि में कोलकाता पुलिस का साजेंट बापी सेन अपने मित्रों के साथ हजारों कोलकाता-वासियों की भांति नव वर्ष की संख्या पर नगर में गये थे। लगभग 1.30 बजे जब साजेंट बापी सेन और उसके मित्र मारुति कार में रफी अहमद किदवाई रोड़ पर जा रहे थे तो साजेंट ने देखा कि एक टैक्सी में हुड़दंगी युवाओं का एक ग्रुप अतिशुब्ध अवस्था में तेजी से जा रहे मोटर साइकिल पर अपने पुरुष साथी के साथ जा रही महिला का पीछा कर रहा था। एक अनुभवी पुलिस अधिकारी होने के कारण साजेंट सेन के मन में एक संदेह गहराया तथा उन्होंने टैक्सी में जा रहे शरारती तत्वों का पीछा करने का निर्णय लिया। ये शरारती तत्व अश्लील तरीके से इशारे कर रहे थे तथा मोटर साइकिल पर बैठी महिला को गालियां बक रहे थे। अचानक एन.सी. चटर्जी स्ट्रीट पर हिन्द सिनेमा के निकट मोटर साइकिल रुक गई क्योंकि शराब के नशे में धुत शरारती तत्वों ने मोटर साइकिल पर बैठी महिला के बालों को खींच लिया। शरारती तत्वों ने, जो संख्या में पांच थे, टैक्सी से बाहर लपके और मोटर साइकिल सवारों को घेर लिया महिला के साथ छेड़छाड़ करने का प्रयास किया। इस घोर अत्याचार के कृत्य ने बापी सेन को जो अब तक चुपचाप टैक्सी का पीछा कर रहा था, क्रुद्ध कर दिया। वह तुरंत मारुति कार से उतरे और असहाय महिला के सम्मान की रक्षा के लिए अपनी जान और वैयक्तिक सुरक्षा की परवाह किए बगैर निहत्थे ही उन शरारती तत्वों पर झपट पड़े। जब साजेंट हुड़दंगी युवाओं का बहादुरी से मुकाबला कर रहे थे, महिला और उसका साथी वहां से सुरक्षित निकल गए। ये शरारती तत्व संख्या में पांच थे उन्होंने साजेंट को सरलता से काबू कर लिया। उन्होंने साजेंट को निर्दयतापूर्वक लात घुंसों से मारा तथा उसे घायल करके अचेतावस्था में सड़क पर छोड़ गए। बापी सेन की सहायता के लिए कोई आगे नहीं आया तथा अधमरे पुलिस अधिकारी का लहुलुहान शरीर सड़क पर पड़ा रहा। तदोपरांत बड़ बाजार पुलिस थाने में श्री अशोक सेन गुप्ता की शिकायत पर मामला दर्ज किया गया। साजेंट बापी सेन जिंदगी और मौत के बीच झूलता रहा और अंततः दिनांक 6.1.2003 को जख्मों के कारण उन्होंने दम तोड़ दिया। जांच के दौरान टैक्सी का पता लगा लिया गया। उक्त टैक्सी के सवारों की शिनाख्त कोलकाता पुलिस की रिजर्व फोर्स के कांस्टेबलों के रूप में की गई तथा उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया। श्री बापी सेन ने एक युवा महिला के सम्मान और उसकी गरिमा की रक्षा के लिए कर्तव्य की पुकार पर अपने प्राण न्यौछावर कर दिए।

(दिबंगत) श्री बापी सेन, साजेंट ने अदम्य वीरता, साहस एवं उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

यह पदक, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4(i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिया जा रहा है तथा फलस्वरूप नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 1 जनवरी, 2003 से दिया जाएगा।

(ब.रू. मित्रा)

(बरूण मित्रा)

निदेशक

स0 194 - प्रेज/2003-राष्ट्रपति, पश्चिम बंगाल पुलिस के निम्नलिखित अधिकारी को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सद्गर्ष प्रदान करते हैं:-

अधिकारी का नाम और रैंक

श्री उमेश चंद्र दास,
सहायक उप निरीक्षक

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए पदक प्रदान किया गया:

28.02.2002 को प्रातः एक गुप्त सूचना पर कार्रवाई करने के उद्देश्य से पुलिस अधिकारियों और बनारहट तथा धूपगुड़ी पुलिस स्टेशनों के बल की एक संयुक्त टीम, पुलिस स्टेशन बनारहट, जिला जलपाईगुड़ी, पश्चिम बंगाल के अंतर्गत दिआना नदी पर पहुँची। वहाँ सभी पुलिस अधिकारियों और बलों को तीन ग्रुपों में बाँट दिया गया। उनमें से एक ग्रुप में सहायक उप निरीक्षक उमेश चंद्र दास, कांस्टेबल महेन्द्र चामलिंग, कांस्टेबल अनूप छेत्री और कांस्टेबल श्याम थापा थे। श्री दास ने इस ग्रुप का नेतृत्व किया और दिआना नदी के तट के मध्य में बड़े-बड़े शिलाखण्डों के पीछे पोजीशन ले लीं। लगभग 11.00 बजे 8/9 माओवादी उग्रवादियों का एक ग्रुप भूटान की तरफ नदी के तट के साथ-साथ नीचे आता देखा गया। उनमें से दो उग्रवादी अधुनातन आग्नेयास्त्र लाते देखे गए। जब उग्रवादी श्री दास और उनकी टीम द्वारा ली गई पोजीशन के निकट पहुँचे तो उन्होंने पुलिस पार्टी को लक्ष्य करके अपने आग्नेयास्त्रों से गोलीबारी शुरू कर दी। श्री दास बायें बाजू पर गोली लगी। श्री दास और उनकी पुलिस पार्टी ने जवाबी गोलीबारी की। श्री दास द्वारा की गई गोलीबारी से हमलावर उग्रवादियों में से एक घटनास्थल पर ही मारा गया जिसकी पहचान बाद में, कुमार थापा उर्फ छेत्री उर्फ भोटे उर्फ नक्कटा के रूप में की गई। शेष उग्रवादियों ने भागना शुरू कर दिया। श्री दास ने काफी पीछा करने के बाद बच कर भाग रहे उग्रवादियों में से एक उग्रवादी नामतः कुमार छेत्री को 7.62 कारतूसों के आठ राउंड से भरी एक चीन निर्मित राइफल, 7.62 गोलाबारूद के ग्यारह राउंड के साथ एक चार्जर क्लिप के साथ गिरफ्तार कर लिया। मारे गए उग्रवादी से 9 एम.एम. जिंदा कारतूसों के तीन राउंड से भरी एक कारबाइन मशीनगन और 9 एम.एम. जिंदा कारतूसों के 28 राउंड से भरी एक मैगजीन भी बरामद की गई।

इस मुठभेड़ में, श्री उमेश चंद्र दास, सहायक उप निरीक्षक ने अदम्य वीरता, साहस एवं उच्चकोटि की कार्यप्रणाली का परिचय दिया।

इस पदक, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4(i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिया जा रहा है तथा फलस्वरूप नियम 4 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 28 फरवरी, 2002 से दिया जाएगा।

बसु मित्रा
(बसु मित्रा)
निदेशक

सं० 195 - प्रेज/2003-राष्ट्रपति, पश्चिम बंगाल पुलिस के निम्नलिखित अधिकारी को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:-

अधिकारी का नाम और रैंक

श्री कैलाश चन्द्र मीणा
पुलिस अधीक्षक

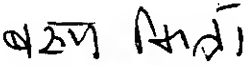
उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए पदक प्रदान किया गया:

6.6.2002 को 8.35 बजे, श्री कैलाश चंद्र मीणा, भा.पु.से. पुलिस अधीक्षक, पश्चिम मेदिनीपुर को एक गुप्त सूचना प्राप्त हुई कि सी.पी.आई.-एम.एल. (पी.डब्ल्यू.) का एक सशस्त्र ग्रुप कुछ राजनैतिक नेताओं या क्षेत्र में कार्य कर रहे कुछ सरकारी अधिकारियों की हत्या करने और इस प्रकार से स्थानीय लोगों में दशाहत पैदा करने की कुछ नापाक कार्रवाई करने की दृष्टि से गोलतोर पुलिस स्टेशन के तहत मेताला गांव के नजदीक एक घने जंगल में इकट्ठा हुए हैं। यह सूचना प्राप्त होने पर श्री मीणा ने तत्काल एक योजना बनाई और जिले के कुछ वरिष्ठ अधिकारियों के साथ एक बड़ी पुलिस बल टुकड़ी के साथ तुरंत मेताला जंगल की ओर चल पड़े। श्री मीणा के नेतृत्व में पुलिस पार्टी उसी दिन लगभग 11.45 बजे मेताला जंगल पहुंची और उस जगह को ढूंढने जहाँ सी.पी.आई.-एम.एल. (पी.डब्ल्यू.) कार्यकर्ता इकट्ठे हुए थे, हेतु घने जंगल में प्रवेश करने के लिए पैदल चल पड़े। श्री मीणा के नेतृत्व में बल के दस्ते ने जगह को घेर लिया और तलाशी शुरू कर दी। पुलिस पार्टी को देख, उग्रवादियों ने अचानक पुलिस पार्टी पर अंधाधुंध गोलीबारी शुरू कर दी। श्री मीणा ने अपनी पहचान बतलाई और उन्हें आत्मसमर्पण करने के लिए कहा लेकिन इसका कुछ भी प्रभाव नहीं पड़ा। अपनी जान और सरकारी संपत्तियों को बचाने और उग्रवादियों को पकड़ने के लिए कोई विकल्प न पाकर, पुलिस अधीक्षक के नेतृत्व में पुलिस पार्टी ने उचित चेतावनी देने के पश्चात गोलीबारी शुरू कर दी। बल की अन्य दो टुकड़ियों को सतर्क कर दिया गया और उन्हें भी पी.डब्ल्यू. उग्रवादियों को बच कर भागने से रोकने के लिए अन्य दिशाओं से जंगल को घेरने के लिए कहा गया। पुलिस गोलीबारी का इच्छित परिणाम हुआ और उग्रवादियों द्वारा की जा रही गोलीबारी कुछ समय बाद बंद हो गई। जंगल की व्यापक तलाशी लेने के बाद दो उग्रवादियों को उनके सामान के साथ गिरफ्तार किया गया और एक उग्रवादी मृत पाया गया जबकि अन्य उग्रवादी जंगल से भागने में सफल हो गए। पुलिस पार्टी ने जंगल की व्यापक तलाशी ली। बाद में शव की पहचान गिरफ्तार किए गए दो अभियुक्तों द्वारा, एक सुभाष कर्माकर (25) पुत्र बारा गर्राह का पंचानन, पुलिस स्टेशन सारंगा, जिला बांकुरा के रूप में की गई। शव के पास से ए.315 राइफल भी पाई गई।

गिरफ्तार किए गए अभियुक्तों ने अपना नाम (1) देबी प्रसाद मेहतो पुत्र मीनारामदिह के कीर्ति मेहतो और (2) अमल घोरई पुत्र तुपलादी के सुनील घोरई, पुलिस स्टेशन, गोलतोर बताया।

इस मुठभेड़ में, श्री कैलाश चन्द्र मीणा, पुलिस अधीक्षक ने अदम्य वीरता, साहस एवं उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

यह पदक, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4(i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिया जा रहा है तथा फलस्वरूप नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 6 जून, 2002 से दिया जाएगा।


(ब.रूण मिश्रा)
निदेशक

सं० 196 - प्रेज/2003-राष्ट्रपति, सीमा सुरक्षा बल के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:-

अधिकारियों के नाम और रैंक

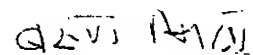
- सर्व/श्री
1. जावेद अहमद मीर, कांस्टेबल
 2. मान सिंह, हैड कांस्टेबल

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए पदक प्रदान किया गया:

1 मई, 2002 को गांव सम्बूर, जिला पुलवामा (जम्मू और कश्मीर) में कुछ उग्रवादियों की उपस्थिति के बारे में विशेष आपरेशन ग्रुप (एस ओ जी), पुलवामा की विशिष्ट सूचना पर, श्री एस.ए. अल्वी, कमांडेंट 104 बटालियन, सीमा सुरक्षा बल ने विशेष घेराबन्दी और तलाशी अभियान की योजना बनाई। योजना के अनुसार चार अधिकारियों की कमान में घेराबन्दी पार्टियों ने एस ओ जी पुलवामा के साथ 0530 बजे गांव को चारों दिशाओं से घेर लिया। जब घेराबन्दी पूरी होने की थी कि उग्रवादियों ने घेराबन्दी को तोड़ने और बचकर निकल भागने के उद्देश्य से एक घेराबन्दी पार्टी पर गोलीबारी की। कांस्टेबल राम अवतार, जो बाल-बाल बचे, ने अपनी एल एम जी से प्रत्युत्तर में गोलीबारी की और उग्रवादियों को पीछे हटने पर मजबूर कर दिया। श्री सुरेन्द्र सिंह, सहायक कमांडेंट के नेतृत्व में एक तलाशी पार्टी जब गांव की तलाशी ले रही थी तो उसने एक घर से एक राकेट लांचर बरामद किया। उप निरीक्षक गुरमीत चन्द के नेतृत्व में अन्य तलाशी पार्टी जब एक घर के पुराने भाग की तलाशी ले रही थी तो उन पर घर में छिपे उग्रवादियों ने अत्याधुनिक हथियारों से भारी गोलीबारी की और उसके बाद ग्रेनेड फेंके। घर की तुरन्त प्रभावी घेराबन्दी की गई। श्री एस ए अल्वी, कमांडेंट और श्री जे.सी. सिंगला, द्वितीय कमान अधिकारी ने अपनी पार्टियों को बगल के दो घरों में तैनात किया और उग्रवादियों को प्रभावी गोलीबारी करके उलझाए रखा। दोनों तरफ से गोलीबारी जारी रही। मौका पाकर लक्षित घर पर दो एच ई राकेट दागे गए जिससे उग्रवादियों को घर से बाहर कूदने और परिसर की दीवार के पीछे पोजीशन लेने पर बाध्य होना पड़ा। श्री जे.सी. सिंगला, द्वितीय कमान अधिकारी ने तत्काल सैनिकों को पुनः संगठित किया यद्यपि उग्रवादी लगातार भारी गोलीबारी कर रहे थे, इस पार्टी पर कुछ ग्रेनेड फेंके गये जिससे कांस्टेबल जावेद अहमद मीर बाल-बाल बचे, कांस्टेबल जावेद अहमद मीर विलसित हुए बिना और अपनी निजी सुरक्षा की परवाह न करते हुए उग्रवादियों की पोजीशन की तरफ रेंगते हुए गए। उन्होंने उग्रवादी पर गोलीबारी की और उसे घटनास्थल पर ही मार गिराया। एक अन्य उग्रवादी, परिसर की दीवार के पीछे से आतंरिक घेराबन्दी पार्टी पर लगातार गोलीबारी जारी रखे हुए था। इस पार्टी के हैड कांस्टेबल मान सिंह भी बाल-बाल बचे। उन्होंने तब अपनी जान को खतरे में डाल कर उस गन को शांत करने का निर्णय लिया जो इन और इनके साथियों पर गोलियां बरसा रही थी। लघु चतुराई के साथ कार्रवाई करते हुए हैड कांस्टेबल मान सिंह, परिसर की दीवार में खुले हुए भाग से उग्रवादी की तरफ कूदे तथा सटीक और कारगर गोलीबारी की और नजदीकी लड़ाई में उग्रवादी को मार गिराया। मारे गए दोनों उग्रवादियों की पहचान बाद में शौकर अहमद दार पुत्र अब्दुल अजीज डार निवासी सम्बूर (पुलवामा) और शाहनवाज अहमद खांडे पुत्र जल्लाउद्दीन खांडे निवासी लाडू पुलवामा, दोनों हिजबुल मुजाहिद्दीन संगठन के पाकिस्तान प्रशिक्षित उग्रवादियों के रूप में की गई। तलाशी के पश्चात् एक राकेट लांचर, दो ए.के. राइफलें, एक यू जी बी एल, एक चीनी पिस्तौल, एक वायरलैस सैट और गोलाबारूद बरामद किया गया।

इस मुठभेड़ में, सर्व/श्री जावेद अहमद मीर, कांस्टेबल और मान सिंह, हैड कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस एवं उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पदक, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4(i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 1 मई, 2002 से दिया जाएगा।



(बरूण मिश्रा)

निदेशक

सं० 197 - प्रेज/2003-राष्ट्रपति, सीमा सुरक्षा बल के निम्नलिखित अधिकारी को उनकी वीरता के लिए राष्ट्रपति का पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:-

अधिकारी का नाम और रैंक

श्री बी श्रीनिवास मूर्ति
सहायक कमांडेंट

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए पदक प्रदान किया गया:

28.1.2002 को, ग्राम पांडिया मौडल्ला (श्रीनगर) में उग्रवादियों की उपस्थिति के बारे में विशिष्ट सूचना प्राप्त होने पर, अन्य बटालियनों की क्यू आर टी और सहायक कमांडेंट (जी) जकूरा तथा एस ओ जी के सहयोग से 18वीं बटालियन के सैनिकों ने गांव में एक मकान को घेर लिया। निदेश देने पर मकान में मौजूद सिविलियन बाहर आ गए परन्तु अन्दर छिपे हुए उग्रवादियों ने अन्धाधुन्ध गोलीबारी करना प्रारंभ कर दिया तथा हथगोले भी फेंके। इस गोलीबारी का जवाब दिया गया। सहायक कमांडेंट (टी) वी.एस. मूर्ति के नेतृत्व में एक पार्टी को मकान पर धावा बोलने तथा फंसे हुए उग्रवादियों को बाहर निकालने के निदेश दिए गए। यह पार्टी लक्षित मकान के गैराज तक पहुंचने में सफल रही परन्तु उग्रवादियों ने इसे देख लिया तथा उन्होंने भारी गोलीबारी की और हथगोले फेंके जिसमें कांस्टेबल रामकुमार को एक गोली लगी तथा तीन अन्य किरचे लगने के कारण जख्मी हो गए। घायल कार्मिकों को तत्काल निकालने के लिए एक बंकर वाहन बुलवाया गया जिसके कारण गोलीबारी अस्थायी तौर पर बंद हो गई। तत्पश्चात उग्रवादियों ने घायल को निकालने से रोकने के लिए बंकर वाहन पर भारी गोलीबारी की। विचलित हुए बिना सहायक कमांडेंट (टी) वी.एस. मूर्ति ने अपनी पार्टी को पुनर्संगठित किया तथा उग्रवादियों को मार गिराने तथा घायल को निकालने हेतु सहयोग प्रदान करने के लिए कवरींग गोलीबारी की। इसी बीच, डैड कांस्टेबल टी.बी. छेत्री, कांस्टेबल बाल कृष्णन के साथ जो आन्तरिक घेराबंदी में तैनात थे, ने बड़ी चतुराई से अपना स्थान बदल लिया ताकि उग्रवादियों को उलझाए रखा जा सके और इस प्रक्रिया में उन पर भारी गोलीबारी हुई। वे पूरी रात अपने मोर्चे पर डटे रहे तथा उन्होंने उग्रवादियों को भागने का अवसर नहीं दिया। 29.1.2002 को सुबह उग्रवादियों ने बराबर के भवन में भागने का एक बार फिर प्रयास किया तथा वे डैड कांस्टेबल टी.बी. छेत्री के समक्ष आ गए जिसने उग्रवादियों को घायल कर दिया। इससे उग्रवादियों को वापस जाना पड़ा तथा इस प्रकार उन्हें भागने से रोक दिया गया। तथापि, डैड कांस्टेबल टी.बी. छेत्री ने अपनी जान की परवाह किए बिना असाधारण साहस का परिचय दिया लेकिन उग्रवादियों की गोली छाती में लगने से उन्होंने घटना स्थल पर ही प्राण त्यागकर दे दिए। भवन में पुनः प्रवेश करने पर उग्रवादियों ने फिर से गोली चलाना प्रारंभ कर दिया तथा मुठभेड़ जारी रही। लगभग 9.30 बजे सहायक कमांडेंट (टी) वी.एस. मूर्ति के नेतृत्व वाली पार्टी को लक्षित मकान पर धावा बोलने का कार्य सौंपा गया। सहायक कमांडेंट मूर्ति बंकर वाहन को लक्षित मकान के निकट ले गए तथा एक खुली खिड़की से मकान में हथगोले फेंके। अन्दर से जोरदार गोलीबारी हुई। लगभग चार बजे सायं पार्टी ने उस मकान पर धावा बोला जिसमें उग्रवादी छिपे हुए थे उन्होंने कमरों में हथगोले फेंके। रसोईघर में छिपे एक उग्रवादी की मौत हो गई तथा गैस सिलिन्डर में विस्फोट होने के कारण लगी आग में उसका शरीर बुरी तरह झुलस गया। शेष बचे दो उग्रवादियों ने धावा पार्टी तथा घेराबंदी पर गोलीबारी की। सहायक कमांडेंट (टी) वी.एस. मूर्ति ने एक उग्रवादी को लक्ष्य बनाया तथा उसे घटना स्थल पर ही मार गिराया। दूसरा उग्रवादी सुरक्षित स्थान की ओर बढ़ा तथा बाद में पार्टी के अन्य सदस्यों द्वारा की गई गोलीबारी में मारा गया। तत्पश्चात मकान की तलाशी ली गई तथा तीन उग्रवादियों को पहचान (क) सैफुल्ला निवासी पाकिस्तान, अल बदर के कार्यवाहक प्रमुख (ख) हिज्बी निवासी पाकिस्तान, अल बदर के उप जिला कमांडर (ग) उस्मान निवासी पाकिस्तान, अलबदर के कंपनी कमांडर के रूप में की गई। क्षेत्र की तलाशी के बाद 03 ए.के. 56 राइफल, ए.के. के लिए 01 यू बी जी एल, 1 चीन निर्मित ग्रेनेड, 01 वायरलेस सैट (एन्टेना सहित), 66, 259/- ₹0 नकद, 960.20 ग्राम सोने की मदे, 150 ग्राम चांदी की मदे बरामद हुई।

इस मुठभेड़ में, श्री बी श्रीनिवास मूर्ति, सहायक कमांडेंट ने अदम्य वीरता, साहस एवं उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

यह पदक, राष्ट्रपति का पुलिस पदक नियमावली के नियम 4(i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिया जा रहा है तथा फलस्वरूप नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 28.1.2002 से दिया जाएगा।

०२.०१.०३
(बसुण मित्रा)
निदेशक

सं० 198 - प्रेज/2003-राष्ट्रपति, सीमा सुरक्षा बल के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:-

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

1. के.एस. सूद, कमांडेन्ट
2. रामफल, हैड कांस्टेबल

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए पदक प्रदान किया गया:

29.7.2001 को लगभग 20.15 बजे रात्रि को श्री के.एस. सूद, कमांडेन्ट को ए श्रेणी के उग्रवादी तथा हिजबुल मुजाहिदीन संगठन के बटालियन कमांडर मुस्तफा खान तथा दो उग्रवादियों की गांव गोइगाम, पुलिस थाना कनजार, बारामूला (जम्मू और कश्मीर) में उपस्थित होने के बारे में विशिष्ट सूचना मिली। तत्काल कमांडेन्ट श्री के.एस. सूद ने चार अधिकारियों, तीन अधीनस्थ अधिकारियों तथा अपनी बटालियन के 95 अन्य रैंकों और राष्ट्रीय राइफल्स के अलभग 70 जवानों को लेकर एक अभियान की योजना बनाई। रात्रि 00.30 बजे ग्राम गोइगाम को घेर लिया गया। सर्वप्रथम बच निकलने के सभी रास्तों को बंद करके घर-घर की तलाशी लेने का कार्य प्रारंभ किया गया। प्रातः 8.30 बजे श्री के.एस. सूद को सूचना मिली कि उग्रवादियों ने एक मस्जिद के निकट एक जियारत में मोर्चा लगा लिया है। इनका इरादा जियारत तथा मस्जिद की पवित्रता भंग करना तथा इसका दोष सुरक्षा बलों पर मढ़ना है। तत्काल ग्राम की सभी मस्जिदों को घेर लिया गया। मस्जिद के समीप जियारत में छिपे उग्रवादियों को आत्मसमर्पण करने को कहा गया परन्तु उन्होंने गोलियां चलाना प्रारंभ कर दिया। मुठभेड़ प्रारंभ हो गई तथा सारा दिन चलती रही। सायं लगभग 17.00 बजे एक संदेश पकड़ा गया जिसमें उग्रवादियों को अंधेरा होने तक डटे रहने तथा अंधेरे का लाभ उठाकर भागने को कहा गया था। ज्यों ही अंधेरा गहराने लगा उग्रवादी जियारत की इमारत के मुख्य द्वार से बाहर आए तथा भाग जाने के इरादे से जियारत की चार दीवारी के दोनों कोनों पर मोर्चा संचालित किया। उन्होंने भारी गोलीबारी शुरू कर दी जिसका सुरक्षा बलों ने उत्तर दिया। तथापि, सुरक्षा बलों की गोलीबारी असरदार नहीं थी क्योंकि उग्रवादी जियारत की पांच फुट ऊंची चार दीवारी के पीछे से फायरिंग कर रहे थे जिससे उन्हें बेहतर आड़ मिली हुई थी। गतिरोध उत्पन्न हो गया तथा जिसे तोड़ना आवश्यक हो गया था। स्थिति को तुरंत समझ कर, श्री सूद तथा उनके गार्ड हैड कांस्टेबल रामफल ने अपनी सुरक्षा को जोखिम में डाल कर तथा उग्रवादियों द्वारा की जा रही गोलीबारी का सामना करते हुए जियारत की चार दीवारी के पीछे उग्रवादियों के मोर्चे पर हमला बोल दिया तथा उन पर अनेक हथगोले फेंके जिसके परिणामस्वरूप मुस्तफा खान सहित तीनों दुर्दान्त उग्रवादी मारे गए। मारे गए दो अन्य दो उग्रवादियों की पहचान बाद में फारुख अहमद भट, निवासी हर्दाबूरा तथा जहूर अहमद निवासी ग्राम इकरमुला सोइबक के रूप में हुई। क्षेत्र की तलाशी के दौरान गोला बारूद सहित तीन ए.के. राइफलें बरामद की गईं।

इस मुठभेड़ में, श्री के.एस. सूद, कमांडेन्ट तथा श्री रामफल, हैड कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस एवं उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पदक, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4(i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 30 जुलाई, 2001 से दिया जाएगा।

(ब.रूपा मित्रा)

(बरूपा मित्रा)
निदेशक

सं० 199 - प्रेज/2003-राष्ट्रपति, सीमा सुरक्षा बल के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:-

अधिकारियों के नाम और रैंक

- सर्व/श्री
1. विवेक सक्सेना, सहायक कमांडेन्ट
 2. इमामुद्दीन, कांस्टेबल

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए पदक प्रदान किया गया:

23.7.2001 को श्री विवेक सक्सेना, सहायक कमांडेन्ट, द्वितीय बटालियन, सीमा सुरक्षा बल को उनके क्षेत्र में उग्रवादियों की गतिविधियों के बारे में सूचना मिली। तत्काल, श्री सक्सेना कमांडो प्लाटून के 18 अन्य रैंकों के साथ मणिपुर के जिला सुगनु के ग्राम लुनिल हिल्स में घात लगाने के लिए पहुंचे। ऊबड़-खाबड़ भूमि तथा मौसम का विश्लेषण करने के बाद उन्होंने उग्रवादियों के बच निकलने के रास्तों/संभावित पहुंच मार्गों को कवर करने के लिए इन्होंने घात पार्टी को तीन ग्रुपों में विभाजित किया तथा उन्हें ब्यौरेवार दिशा निदेश देने के बाद घात पार्टियों को रात्रि 20.30 बजे तैनात कर दिया। रात्रि लगभग 21.30 बजे, घात लगा कर डटे रहते हुए श्री विवेक सक्सेना के नेतृत्व वाली पार्टी ने कुछ अनजान व्यक्तियों को संदेहास्पद तरीके से घूमते देखा। उन्हें आत्मसमर्पण के लिए ललकारे जाने पर संदेहास्पद उग्रवादियों ने स्वचालित इथियारों से सीमा सुरक्षा बल पार्टी की ओर गोलियां चलाई। सीमा सुरक्षा बल पार्टी ने भी प्रत्युत्तर में गोलियां चलाई परन्तु उग्रवादियों ने गोली-बारी जारी रखी तथा बच निकलने की कोशिश में अपनी पोजीशन बदलते रहे। श्री सक्सेना के साथ कांस्टेबल इमामुद्दीन तथा अन्य लोग अपनी जान की परवाह न करते हुए उग्रवादियों पर दूट पड़े तथा भागते हुए उग्रवादियों का पीछा करते रहे तथा उन पर गोलियां चलाते रहे। उग्रवादियों का पीछा करने के दौरान कांस्टेबल इमामुद्दीन, जो अपनी एल एम जी से गोलियां चला रहे थे, उग्रवादियों के समीप जा पहुंचे परन्तु उग्रवादियों की एक गोली उनके बाएं कंधे में जा लगी। गोली से गंभीर रूप से घायल होने और उग्रवादियों की भारी गोलीबारी के बावजूद कांस्टेबल इमामुद्दीन भूमि पर लेट गए तथा उग्रवादियों पर लंबी दूरी से गोली बर्षा की और दो उग्रवादियों को घटना स्थल पर ही मार गिराया। श्री विवेक सक्सेना, सहायक कमांडेन्ट ने अपने साथी को गंभीर रूप से घायल तथा दर्द से कराहते देख, घायल कांस्टेबल को उठा कर सुरक्षित स्थान पर पहुंचाया परन्तु स्वयं उग्रवादियों की भारी गोलीबारी में घिर गए। श्री सक्सेना कूदकर एक सुरक्षित स्थान पर पहुंच गए, कवर ली तथा साथ ही साथ उग्रवादियों पर गोलियां चलाते रहे जिसके परिणामस्वरूप एक उग्रवादी और मारा गया। तलाशी लेने पर तीन उग्रवादियों के शवों के साथ दो ए.के. श्रेणी की राइफलें, चार ए.के. राइफल मैगजीने तथा ए.के. श्रेणी के गोला बारूद के तीस रौंद बरामद हुए।

इस मुठभेड़ में, श्री विवेक सक्सेना, सहायक कमांडेन्ट तथा श्री इमामुद्दीन, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस एवं उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पदक, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4(i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 23 जुलाई, 2001 से दिया जाएगा।

ब.रुणा मित्रा

(बरुणा मित्रा)

निदेशक

सं० 200 - प्रेज/2003-राष्ट्रपति, सीमा सुरक्षा बल के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सङ्घर्ष प्रदान करते हैं:-

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्वश्री

1. जे.बी. सांगवान, कमांडेन्ट, द्वितीय बटालियन, सीमा सुरक्षा बल
2. आर.के. थापा, उप कमांडेन्ट, द्वितीय बटालियन, सीमा सुरक्षा बल
3. टी. परमेश्वरन, कांस्टेबल, द्वितीय बटालियन, सीमा सुरक्षा बल

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए पदक प्रदान किया गया:

चूडाचांदपुर जिला (मणिपुर) के ग्राम लांगजा के समीप सामान्य क्षेत्र डम्पी आरक्षित वन में पी एल ए उग्रवादियों की उपस्थिति की सूचना के आधार पर एक विशेष अभियान कूटनाम 'ललकार' की योजना बनाई गई तथा 11.8.2001 को सायं 7 बजे उसे कार्य रूप दिया गया। यह अभियान उप महानिरीक्षक, सीमा सुरक्षा बल के समग्र पर्यवेक्षण में चलाया गया तथा सीमा सुरक्षा बल की विभिन्न बटालियनों के सैनिकों ने इस में भाग लिया। सीमा सुरक्षा बल पार्टियों ने प्रातः 3.00 बजे अपने-अपने मोर्चे सम्भाल लिए तथा डम्पी वन की भली भान्ति घेराबंदी कर ली। द्वितीय बटालियन दो सुसज्जित सशस्त्र पार्टियाँ, जिनमें से एक का नेतृत्व श्री जे.बी. सांगवान कमांडेन्ट तथा दूसरी का श्री आर.के. थापा उप कमांडेन्ट कर रहे थे, ने डम्पी वन क्षेत्र में एक साथ सात स्थानों पर छापे मारे। सूचना प्राप्त हुई कि उग्रवादी ग्राम लांगजा की ओर जा रहे हैं। श्री जे.बी. सांगवान, कमांडेन्ट ने स्थिति की पुनरीक्षा की तथा स्टाफ पार्टियों को पुनर्संयोजित किया। श्री सी.एस. सिंह के नेतृत्व वाली एक स्टाफ पार्टी ने उग्रवादियों को देखा जो उनके द्वारा अपहृत सिविलियनों की आंखों पर पट्टी बांधे हुए उनके साथ-साथ चल रहे थे। मुठभेड़ शुरू हो गई जिसके दौरान कांस्टेबल परमेश्वरन ने असाधारण पहल दिखाते हुए भागने का यत्न कर रहे उग्रवादियों का पीछा किया। आपसी गोलीबारी में कांस्टेबल परमेश्वरन गोलियों से गंभीर रूप से घायल हो गए परन्तु वे एक उग्रवादी को मारने में सफल रहे। कांस्टेबल परमेश्वरन को तुरंत इम्फाल के अस्पताल ले जाया गया। श्री जे.बी. सांगवान, कमांडेन्ट तथा श्री आर.के. थापा, उप कमांडेन्ट के नेतृत्व में पार्टियाँ तत्काल घटनास्थल पर पहुंचीं तथा चल रहे अभियान में शामिल होकर इसे बल प्रदान किया। लगभग 1000 बजे श्री सांगवान ने एक उग्रवादी को घायल अवस्था में, गोलियाँ चलाते देखा। बहादुरी का प्रदर्शन करते हुए श्री सांगवान रेंगते हुए उसकी ओर गए और उसे मार गिराया। अचानक समूह ही छिपे हुए एक अन्य उग्रवादी ने उन पर हमला कर दिया परन्तु श्री सांगवान की फुर्ती से की गई कार्रवाई में वह मारा गया। इसी प्रकार, श्री आर.के. थापा, उप कमांडेन्ट के नेतृत्व में दूसरी पार्टी की उग्रवादी से मुठभेड़ हुई। बहादुरी से कार्रवाई करते हुए और असाधारण साहस का परिचय देते हुए श्री थापा ने निकट की लड़ाई में एक अन्य उग्रवादी को मार गिराया। उग्रवादियों ने विभिन्न दिशाओं में भागना प्रारंभ कर दिया तथा स्टाफ पार्टियों ने दो उग्रवादी मार गिराए। उक्त अभियानों में, पांच दुर्दान्त उग्रवादी नामतः (क) मो० अखन, निवासी बोरायान्गबी जिला बिशुनपुर (ख) निनाथौजाम इबुनो निवासी करंग, थांगा, जिला बिशुनपुर (ग) सोन्सुथांग इमार, निवासी लांगजा, जिला बिशुनपुर (घ) प्रेम बाटा निवासी करंग, थांगा जिला, बिशुनपुर (ङ) खोंगसाई निवासी सैकुल, जिला सेनापति मारे गए तथा एक अशिम कोम निवासी जंगलिन्पाई, जिला सी सी पुर को पकड़ लिया गया। निम्नलिखित शस्त्रास्त्र व गोला बारूद तथा उपस्कर घटनास्थल से प्राप्त हुए: (क) ए.के. सीरिज राइफल - 3 नग (ख) ए.के. मैगजीन - 5 नग, (ग) ए.के. गोला बारूद, 86 जिन्दा रौंद (घ) रेडियो सेट (केनवुड) - 01 (जापानी)।

इस मुठभेड़ में, सर्वश्री जे.बी. सांगवान, कमांडेन्ट, आर.के. थापा, उप कमांडेन्ट तथा टी परमेश्वरन, कांस्टेबल न अदम्य वीरता, साहस एवं उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पदक, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4(i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 12 अगस्त, 2001 से दिया जाएगा।

(बसुण मित्रा)

निदेशक

सं० 201 - प्रेज/2003-राष्ट्रपति, सीमा सुरक्षा बल के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी बीमा के लिए पुरस्कार पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:-

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

1. जे.आर. गौतम, सहायक कमांडेन्ट
2. एम. कुमार, कास्टेबल

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए पदक प्रदान किया गया:

5.8.2001 को, उग्रवादियों के मणिपुर के थौबल जिला क्षेत्र में वांगुड से काकचिंग की ओर आने के बारे में विशिष्ट सूचना के आधार पर, श्री जांगली राम गौतम, सहायक कमांडेन्ट, द्वितीय बटालियन, सीमा सुरक्षा बल ने अपने सैनिकों को वांगजिना खुनाऊ ट्राई जंक्शन पर घात लगाने के बारे में ब्रीफ किया। रात्रि लगभग 2100 बजे बच निकलने के सभी रास्तों को सील करके घात लगाई गई। घात पार्टी ने देखा कि ग्राम वांगू की ओर से एक हीरो हॉडा मोटर साइकिल आ रही है तथा उसके पीछे एक मझौला टाटा 709 आ रहा है। घात पार्टी ने मोटर साइकिल सवार को रोक लिया तथा सहायक कमांडेन्ट जांगलीराम गौतम के संकेत पर उसे दबोच लिया। तत्पश्चात्, जब टाटा 709 बने कमाने का संकेत किया गया तो वाहन में बैठे सवारों ने, जो उग्रवादी थे, अपने स्वचालित हथियारों से तत्काल घात पार्टी पर गोलियां चलानी प्रारंभ कर दी और वाहन से बाहर कूदकर भागने का प्रयास किया। सहायक कमांडेन्ट, जांगलीराम गौतम तथा कास्टेबल एम. कुमार ने उग्रवादियों का पीछा किया तथा उन पर गोलियां चलाने रहे। घात पार्टी का जबरित जब्त कारवाई के कारण उग्रवादियों को समीप में ही शिला खंड के पीछे मोर्चा लगाना पड़ा। मोर्चा लगाने के बाद उग्रवादियों ने घात पार्टी पर जोरदार गोलीबारी की। सहायक कमांडेन्ट जांगलीराम गौतम तथा कास्टेबल एम. कुमार घात के खेत से रेंगते हुए उग्रवादियों की ओर बढ़ते गए। उग्रवादियों के बहुत नजदीक पहुंचने के बाद कास्टेबल एम. कुमार ने एक उग्रवादी को स्थल पर ही मार गिराया जबकि सहायक कमांडेन्ट जांगलीराम गौतम ने दो उग्रवादियों को घायल कर दिया जो अंतर्ध्वंस का लाभ उठाकर बच कर भाग निकले हालांकि, कुछ दूर जाकर वे घायल होने के कारण मर गए। क्षेत्र को तलाशी लेने पर एक एक 56 राइफल, दो मैगजीन, अठाइस एके, गोलाबारूद, एक टाटा 709 तथा एक मोटर साइकिल बरामद हुई।

इन घटभट में, सर्वश्री जे.आर. गौतम, सहायक कमांडेन्ट तथा एम. कुमार, कास्टेबल ने तत्काल बचाव कार्य में एक उच्चकोटि की कर्तव्यपरयता का परिचय दिया।

ये पदक, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4(1) के अंतर्गत बीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा कास्टेबल एम. कुमार को 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 5 अगस्त, 2001 से दिया जाएगा।

(संलग्न मित्र)

निदेशक

सं० 202 - प्रेज/2003-राष्ट्रपति, सीमा सुरक्षा बल के निम्नलिखित अधिकारी को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:-

अधिकारी का नाम और रैंक

श्री हृषिकेश बराल

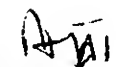
उप निरीक्षक, 194वीं बटालियन

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए पदक प्रदान किया गया:

10.5.2002 को चार उग्रवादियों के ग्राम गोईगाम जिला बडगाम (जम्मू और कश्मीर) में मौजूदगी के बारे में विशिष्ट सूचना के आधार पर श्री प्रतुल गौतम, स्थानापन्न कमांडेन्ट, 194वीं बटालियन, सी0सु0 बल ने एक अभियान की योजना बनाई तथा इसे कार्य रूप दिया। अभियान दल को चार भागों में विभाजित किया गया तथा गांव को चारों ओर से घेर लिया गया। उप निरीक्षक श्री हृषिकेश बराल के नेतृत्व वाली पार्टी ने गांव के पूर्व में बाहरी इदबंदी पर मोर्चा लगाया। श्री बराल उप निरीक्षक की पार्टी ने देखा कि खड़ी फसल और उबड़-खाबड़ जमीन का लाभ उठाकर दो उग्रवादी बाहर निकलने का प्रयास कर रहे हैं। जब यह पार्टी उग्रवादियों को भागने से रोकने के लिए चतुराई के साथ आगे बढ़ रही थी तो उग्रवादियों ने घेरा तोड़ने तथा भाग निकलने के लिए भारी गोलीबारी की। उपनिरीक्षक एच. बराल ने तत्काल मोर्चा संभाला और जवाबी कार्रवाई की। अचानक एक उग्रवादी श्री बराल के सामने आया तथा अपने स्वचालित हथियार से गोलियों की बौछार की, परन्तु श्री बराल बाल बाल बच गए। अपनी तथा पार्टी की जान को खतरा देखते हुए श्री बराल अपनी जान की परवाह किए बिना खुले में आ गए तथा उग्रवादी को आमने-सामने की लड़ाई में उलझा कर उसे स्थल पर ही मार गिराया। शेष उग्रवादी भी सैनिकों द्वारा बाद में की गई कार्रवाई में मारे गए। क्षेत्र की तलाशी लेने पर चारों उग्रवादियों के शवों के साथ चार ए.के. श्रेणी की राइफलें, पांच हथगोले, एक अन्दर बैरल ग्रेनेड लांचर, दो अन्दर बैरल ग्रेनेड लांचर, ग्रेनेड्स तथा गोला बारूद बरामद हुआ। बाद में मारे गए उग्रवादियों की पहचान (क) मो० अब्दुल रहमान उर्फ रोफ अख्तर निवासी बहावलपुर, पंजाब (पाकिस्तान) (ख) मोहम्मद अली उर्फ अबुल मगीर निवासी पाकिस्तान (ग) परवेज ज्ञान निवासी बदरान बडगाम (जम्मू और कश्मीर) (घ) अबदुल रहमान वेग उर्फ शेरखान पुत्र सनुल्ला बेग के रूप में हुई।

इस मुठभेड़ में, श्री हृषिकेश बराल, उप निरीक्षक ने अदम्य वीरता, साहस एवं उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

यह उच्च पुलिस पदक नियमावली के नियम 4(i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिया जा रहा है तथा फलस्वरूप नियम 4 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 10 मई, 2002 से दिया जाएगा।

(420) 

(बरूण मिश्रा)

निदेशक

सं0 203 - प्रेज/2003-राष्ट्रपति, सीमा सुरक्षा बल के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:-

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

1. श्री संदीप कुमार, कांस्टेबल, 58वीं बटालियन (मरणोपरांत)
2. श्री के. कुटुरप्पा, कांस्टेबल, 58वीं बटालियन

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए पदक प्रदान किया गया:

दिनांक 9 मई, 2002 को ग्राम बलरामा जिला अनंतनाग (जम्मू और कश्मीर) के आस-पास उग्रवादियों की आवाजाही के बारे में सूचना प्राप्त होने पर सीमा सुरक्षा बल की 58वीं बटालियन की टुकड़ियों ने सीमा सुरक्षा बल की छठी बटालियन के सहयोग से एक विशेष अभियान की योजना बनाई तथा उसे निष्पादित किया। प्रातः लगभग 5.00 बजे सीमा सुरक्षा बल की 58वीं बटालियन के कांस्टेबल संदीप कुमार तथा कांस्टेबल के. कुटुरप्पा ने क्षेत्र की घेराबंदी की। उन्होंने दो संदेहास्पद व्यक्तियों को अपनी ओर आते देखा। दोनों कांस्टेबलों ने एक दूसरे को सतर्क किया तथा संदेहास्पद व्यक्तियों को ललकारा। संदेहास्पद व्यक्तियों ने, जो वास्तव में उग्रवादी थे, भागने के लिए अपना रास्ता बदल दिया जिससे कांस्टेबल संदीप कुमार अपनी पोजीशन छोड़ने और उन्हें रोकने के लिए आगे बढ़े। एक उग्रवादी ने तत्काल वह शॉल उतार फेंका जो उसने अपना हथियार छिपाने के लिए ओढ़ रखा था तथा अपनी स्वचालित राइफल से गोली चलाई। कांस्टेबल संदीप कुमार को सीने के ऊपरी भाग में एक गोली लगी परन्तु उसने अपना संतुलन नहीं खोया तथा प्रभावी गोलीबारी से उसे अक्षम कर दिया। इसी बीच, घने झाड़-झंखाड़ ऊबड़-खाबड़ भूमि का फायदा उठा कर दूसरा उग्रवादी भागने में सफल हो गया। जल्दी ही और उग्रवादी उससे आ मिले जो या तो पहले गांव छोड़ जा चुके थे अथवा आस-पास के गांवों में छिपे हुए थे। उग्रवादियों ने मुठभेड़ के स्थान पर भारी गोलीबारी की ताकि वे कांस्टेबल संदीप कुमार को साहसपूर्ण हमले के कारण घायल फंसे हुए अपने साथी को छोड़ा सके। कांस्टेबल कुटुरप्पा जो अपने मांछों से अब तक संदीप कुमार की कार्रवाई को कवर कर रहा था स्थिति का जायजा लेने के लिए खुले स्थान पर आ गया। उसने देखा कि कांस्टेबल संदीप कुमार, जो अभी भी जवाबी कार्रवाई कर रहे थे, की पोजीशन की तरफ गोलियों की बौछार आ रही थी, अचानक कांस्टेबल संदीप कुमार के सिर में एक गोली लगी और उनकी मृत्यु हो गई। कांस्टेबल संदीप कुमार की ओर से प्रतिरोध बढ़ हो जाने पर घायल उग्रवादी ने भाग जाने का प्रयास किया। तब कांस्टेबल कुटुरप्पा अपने दिवंगत साथी द्वारा छोड़े गए अधूरे कार्य को पूरा करने के लिए मैदान में कूद पड़े। गोलियों की बौछार का सामना करते हुए उन्होंने भागने का प्रयास कर रहे उग्रवादी पर धावा बोला तथा उस पर गिराया। मारा गया उग्रवादी, जो उस क्षेत्र का नहीं था, की शिनाख्त "तश्करी" (कूट नाम) पाकिस्तानी राष्ट्रिक के तौर पर हुई। उग्रवादी से एक ए.के. 56 राइफल बरामद हुई।

इस मुठभेड़ में, (दिवंगत) श्री संदीप कुमार, कांस्टेबल तथा श्री के. कुटुरप्पा कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, सहस्र एवं उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पदक, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4(i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 9 मई, 2002 से दिया जाएगा।

(वरुण मिश्र)

निदेशक

स0 204 - प्रेज/2003-राष्ट्रपति, सीमा सुरक्षा बल के निम्नलिखित अधिकारी को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:-

अधिकारी का नाम और रैंक

श्री मल्कीयत सिंह (भरणीपरांत)

उप निरीक्षक, नौवीं बटालियन

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए पदक प्रदान किया गया:

11.1.02 को, उप निरीक्षक अमित कुमार वर्मा के नेतृत्व में सीमा सुरक्षा बल की नौवीं बटालियन की एक विशेष अभियान पार्टी, एक सुनसान अलग-थलग पड़े मकान में उग्रवादियों के छिपे होने की खबर पाकर पुलवामा क्षेत्र की ओर रवाना हुई। जब पार्टी मकान की घेराबंदी कर रही थी तो इस पर मकान में छिपे हुए उग्रवादियों ने गोलीबारी की जिसका सीमा सुरक्षा बल पार्टी ने जवाब दिया। जब श्री अमित कुमार वर्मा, उप निरीक्षक जवानों को मकान के चारों ओर तैनात कर रहे थे ताकि बच कर भागने के रास्तों को बंद किया जा सके, तो उग्रवादियों द्वारा दागी एक गोली उनकी बाईं जांघ में आ लगी। श्री अमित कुमार वर्मा, उप निरीक्षक को पुलवामा सिविल अस्पताल पहुंचाया गया। नौवीं बटालियन, 104 बटालियन, डी सी (जी) तथा एस ओ जी पुलवामा से और कुमुक भेजी गई। उप निरीक्षक मल्कीयत सिंह के नेतृत्व में नौवीं बटालियन की कुमुक पार्टी ने उबड़-खाबड़ जमीन को कवर करते हुए पूर्वी भाग में मोर्चा लगाया जबकि अन्य पार्टियों ने शेष क्षेत्र को कवर किया। गोलीबारी के दौरान उग्रवादियों द्वारा रखे गए विस्फोटक फट गए और मकान में आग लग गई। इसके परिणामस्वरूप उग्रवादियों में से एक, अन्धाधुन्ध गोलियां चलाते हुए मकान के पूर्वी ओर से खिड़की से बाहर कूद पड़ा। जब यह उग्रवादी घेरा तोड़ने को ही था, उसी समय उप निरीक्षक मल्कीयत सिंह ने असाधारण साहस दिखाते हुए उस उग्रवादी को एक से एक की भीषण मुठभेड़ में उलझा लिया तथा उसे वहीं मार डाला। जब उप निरीक्षक मल्कीयत सिंह इस उग्रवादी से उलझे हुए थे तभी मकान में छिपे अन्य उग्रवादी ने गोली चलाई जो उनके सिर पर लगी। उप निरीक्षक, मल्कीयत सिंह को तुरंत पुलवामा अस्पताल पहुंचाया गया बाद में घावों के कारण उनकी मृत्यु हो गई। मकान में फंसे उग्रवादी पर तब तक गोली चलाई गई जब तक कि उसने गोलीबारी बंद नहीं कर दी। गोलीबारी रूकने पर नौवीं बटालियन के सैनिकों ने क्षेत्र की तलाशी ली। तलाशी में दो उग्रवादियों के शव बरामद हुए जिनमें से एक को मल्कीयत सिंह ने मारा था। क्षेत्र की तलाशी लेने पर ए.के. ग्रेणी की 2 राइफलें, एक चोनी पिस्तौल, एक हथगोला, एक वायरलेस सैट तथा गोला बारूद बरामद हुआ। मारे गए उग्रवादियों की पहचान हिलाल अहमद, पुत्र गुलाम मोहम्मद शाह निवासी पास्वर, पुलिस थाना राजपुरा, जिला पुलवामा तथा इत्यात उल्ला गुलाम मोहम्मद निवासी ग्राम मशवाड़ा, पुलिस थाना कैल्लर, जिला पुलवामा दोनों एच एम (पी टी एम) से संबंधित थे।

इस मुठभेड़ में, (दिवंगत) श्री मल्कीयत सिंह, उप निरीक्षक ने अदम्य वीरता, साहस एवं उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

यह पदक, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4(i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिया जा रहा है तथा फलस्वरूप नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 11 जनवरी, 2002 से दिया जाएगा।

425/1

(बरूण मित्रा)

निदेशक

सं० 2/15 - प्रेज/2003-राष्ट्रपति, सीमा सुरक्षा बल के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सन्मार्ग प्रदान करते हैं:-

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

1. जे.सी. सिंगला, द्वितीय कमान अधिकारी, 104वीं बटालियन, सीमा सुरक्षा बल
2. करम सिंह लास नायक, 104वीं बटालियन, सीमा सुरक्षा बल

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए पदक प्रदान किया गया:

28 फरवरी, 2002 को लगभग 11.50 रात्रि में ग्राम करीमाबाद जिला पुलवामा (जम्मू और कश्मीर) में तीन उग्रवादियों की मौजूदगी के बारे में विशिष्ट सूचना प्राप्त होने पर श्री जे.सी. सिंगला द्वितीय कमान अधिकारी, 104वीं बटालियन, सीमा सुरक्षा बल ने विशेष घेराबंदी और तलाशी अभियान की योजना बनाई। 0315 बजे तक गांव की घेराबंदी कर ली गई थी। लगभग 0640 बजे मस्जिद से गांव वालों को विद्यालय भवन में एकत्र होने के बारे में घोषणा की गई। लास नायक करम सिंह, जो घेराबंदी पार्टी के सदस्य थे, ने एक उग्रवादी को नाले के रास्ते निकलने का प्रयास करते हुए देखा। वे संयत बने रहे तथा उग्रवादी को समीप आने दिया तथा तत्पश्चात उसे ललकारा। उग्रवादी ने भारी गोलीबारी करके तुरन्त घेराबंदी तोड़ने की कोशिश की। लास नायक करम सिंह ने गोलीबारी का जवाब दिया जिससे उग्रवादी नाले में ही दुबक गया। इसके साथ ही श्री जे.सी. सिंगला द्वितीय कमान अधिकारी अपनी पार्टी के साथ घटना स्थल पर पहुंचे तथा नियंत्रण अपने हाथ में लिया। लास नायक करम सिंह रेंगकर उग्रवादी के पास पहुंचे तथा उग्रवादी पर प्रभावी गोलीबारी की तथा उसे घटनास्थल पर मार गिराया। द्वितीय कमान अधिकारी द्वारा एकत्र सूचना के अनुसार उसी गांव के लाड़ी मौहल्ले में एक गौशाला में दो और उग्रवादी छिपे हुए थे। श्री सिंगला ने तत्काल चार पार्टियां बनायीं तथा उग्रवादियों की भारी गोलीबारी के बावजूद लक्षित मकान को घेर लिया। श्री जे.सी. सिंगला ने हथगोले फेंकने का निदेश दिया जिसके कारण उग्रवादियों को गौशाला से कूदकर बाहर आना पड़ा। तथापि उग्रवादी गौशाला में पुनः प्रवेश करने में सफल हो गए जहां वे पहले अच्छी तरह छिपे हुए थे तथा घेराबंदी पार्टी पर भारी गोलीबारी करने लगे। अविचलित, श्री जे.सी. सिंगला ने खिड़की के रास्ते एक हथगोला गौशाला में फेंका जिससे उग्रवादी गंभीर रूप से जख्मी हो गए। तत्पश्चात उन्होंने गौशाला पर धावा बोलने का निर्णय लिया। घायल उग्रवादियों ने धावा बोलने वाली पार्टी पर भारी गोलीबारी की। अभियान के दौरान श्री सिंगला का एक उग्रवादी से आमना-सामना हो गया, उन्होंने उग्रवादी पर अचूक गोलीबारी की जिसके परिणामस्वरूप उग्रवादी स्थल पर ही मारा गया। तत्पश्चात श्री सिंगला अपनी पार्टी को गौशाला के पिछवाड़े के मकान में ले गए। इस मकान में कोई खिड़की या छेद नहीं था तथा उन्होंने एक और जोखिम मोल लेकर, खुले स्थान में भाकर एक जगह खोलकर उग्रवादियों पर हथगोले फेंके। घायल उग्रवादियों ने श्री सिंगला पर जवाबी गोलीबारी की जिसमें वे बाल-बाल बच गए। श्री सिंगला ने धैर्य नहीं खोया तथा एक और हथगोला अंदर फेंका। दृढ़ निश्चय और बहादुरी का प्रदर्शन करते हुए उन्होंने पॉली चलाई और एक अन्य उग्रवादी को मौके पर मार गिराया। मारे गए उग्रवादियों की शिनाख्त:-

- (क) इम्तियाज अहमद वानी उर्फ हिलाल पुत्र नूर मुहम्मद वानी, हिजबुल मुजाहिदीन गुट का उग्रवादी पुलवामा निवासी।
- (ख) फिरदौस अहमद वानी उर्फ तसलीम पुत्र मो. रमजान वानी निवासी: विष्णु दुबगाम, जिला पुलवामा (जम्मू और कश्मीर) हिजबुल मुजाहिदीन गुट का पाकिस्तान प्रशिक्षित उग्रवादी।
- (ग) इरशाद अहमद डार उर्फ शदाम पुत्र अब्दुल गफ्फार निवासी काइल, जिला पुलवामा (जम्मू और कश्मीर) एक पाकिस्तान प्रशिक्षित उग्रवादी तथा हिजबुल मुजाहिदीन गुट के जिला कमांडर के रूप में हुई।

तीन ए.के. श्रृंखला राइफलें, एक चीनी पिस्तौल, एक यू.पी.जी.एल, तीन वायरलेस सेट, 2 राइफल ग्रेंड, 2 हथगोले, छः इलेक्ट्रिक डेटोनेटर बरामद हुए।

इस मुठभेड़ में, सर्व/श्री जे.सी. सिंगला, द्वितीय कमान अधिकारी और करम सिंह, लास नायक ने अदम्य वीरता, साहस एवं उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

यह पदक, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4(i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 1 मार्च, 2002 से दिया जाएगा।

(बरूण मिश्रा)

निदेशक

सं० 206 - प्रज/2003-राष्ट्रपति, सीमा सुरक्षा बल के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करने हैं:-

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

1. पी.आर. शर्मा, सहायक कमांडेंट, 104वीं बटालियन, सीमा सुरक्षा बल
2. राकेश कुमार, कांस्टेबल, 104वीं बटालियन, सीमा सुरक्षा बल

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए पदक प्रदान किया गया:

दिनांक 13 मार्च, 2002 को ग्राम लगभग 2300 बजे नेहामा, पुलिस स्टेशन एवं जिला पुलवामा (जम्मू एवं कश्मीर) में कुछ उग्रवादियों की मौजूदगी के बारे में विशिष्ट सूचना प्राप्त होने पर श्री एस.ए. अल्वी, कमांडेंट ने एक विशेष अभियान की योजना बनाई। 14 मार्च, 2002 को 5 बजे ग्राम नेहामा की प्रभावी घेराबंदी की गई। सूरज की पहली किरण के साथ ही गांव की सुनियोजित तथा पूर्ण तलाशी प्रारंभ की गई जो पांच घंटे तक चली। लगभग 11.50 बजे जब श्री पी.आर. शर्मा, सहायक कमांडेंट के नेतृत्व में एक पार्टी अब्दुल गनी डार पुत्र गुलाम मोहम्मद डार के घर की तलाशी ले रही थी तो उस पर घर के अंदर अच्छी तरह मोर्चा लिए हुए उग्रवादियों द्वारा भारी गोलीबारी की गई। अविचलित, श्री पी.आर. शर्मा ने अपनी जान के लिए भारी खतरे के बीच लक्षित मकान के समीप अपनी तलाशी पार्टी के साथ रणनीतिक तौर पर मोर्चा जमाया तथा उग्रवादियों के भागने के प्रयासों को विफल कर दिया। इस मौके पर श्री एस.ए. अल्वी कमांडेंट ने अभियान की कमान अपने हाथ में ले ली तथा लक्षित मकान के चारों ओर तत्काल प्रभावी आन्तरिक घेरा डाला। उग्रवादियों तथा सीमा सुरक्षा बल के जवानों के बीच 1 घंटे से अधिक समय तक भारी गोलीबारी हुई। श्री पी.आर. शर्मा, कांस्टेबल राकेश कुमार के साथ रेंगते हुए युक्तिपूर्ण तरीके से लक्षित मकान की ओर बढ़े तथा खिड़की से हथगोले फेंके। तथापि उग्रवादी बराबर के कमरों में चले गए तथा गोलीबारी तथा हथगोले फेंकते रहे। लक्षित मकान पर स्वचालित ग्रेनेड लांचर से गोलीबारी की गई जिससे उग्रवादियों को बाहर कूदने के लिए मजबूर होना पड़ा तथा आन्तरिक घेराबंदी पर गोलियां चलाते हुए भागने का प्रयास किया। एक उग्रवादी ने श्री पी.आर. शर्मा को तथा दूसरे उग्रवादी ने श्री राकेश कुमार को उलझाए रखा। श्री शर्मा तथा कांस्टेबल राकेश कुमार ने अपना मोर्चा छोड़ा तथा उग्रवादियों के आमने-सामने आ गए तथा उग्रवादियों पर प्रभावी गोलीबारी की। उग्रवादी एकदम भौंचक्के रह गए। परन्तु भागने की कोशिश में अंधाधुंध गोलीबारी जारी रखी। तथापि श्री शर्मा तथा कांस्टेबल राकेश कुमार ने सतर्कता बरती तथा उन्हें कोई अवसर नहीं दिया। दृढ़ निश्चय तथा निशानेबाजी के ऊंचे मानदंडों का प्रदर्शन करते हुए उन्होंने आमने-सामने की भीषण लड़ाई में उग्रवादियों को मार गिराया। बाद में दोनों दुर्दान्त उग्रवादियों की शिनाख्त अबू मुजाहिद उर्फ अब्दुल्ला जावेद निवासी सियाल कोट (पाकिस्तान), डिवीजनल कमांडर तथा लश्कर-ए-तैयबा गुट के "बी" श्रेणी पाकिस्तानी प्रशिक्षित और अब्बू हाफिज निवासी पाकिस्तान, लश्कर-ए-तैयबा के पाक प्रशिक्षित उग्रवादी के रूप में हुई। क्षेत्र की तलाशी में पर दो ए.के. श्रृंखला राइफलें, एक पिस्तौल, दो वायरलैस सैट तथा गोलाबारूद बरामद हुआ।

इस मुठभेड़ में, सर्व/श्री पी.आर. शर्मा, सहायक कमांडेंट तथा राकेश कुमार, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस एवं उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पदक, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4(i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 14 मार्च, 2002 से दिया जाएगा।

21/2/03, 11/3/03
(बरूण मित्रा)
निदेशक

सं0 207 - प्रेज/2003-राष्ट्रपति, सीमा सुरक्षा बल के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:-

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

1. राम नारायण, कांस्टेबल, नौवीं बटालियन, सीमा सुरक्षा बल
2. के.जी. रामनाथन, कांस्टेबल, नौवीं बटालियन, सीमा सुरक्षा बल

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए पदक प्रदान किया गया:

25 मार्च, 2002 को जम्मू और कश्मीर के जिला पुलवामा के ग्राम नवगांव के अब्दुल रशीद बाघे पुत्र फत बाघे के मकान में दो उग्रवादियों की मौजूदगी के बारे में विशिष्ट सूचना के आधार पर सीमा सुरक्षा बल की नौवीं बटालियन के कमांडेंट श्री बी0एस0 कसाना ने जमीनी वास्तविकताओं का आकलन कर तत्काल योजना बनाई। प्रातः लगभग 3.30 बजे श्री बी.एस. कसाना की कमान में पार्टी ने ग्राम नवगांव की तीन विभिन्न दिशाओं से घेराबंदी कर ली तथा लक्षित मकान को पृथक् आन्तरिक घेरा डाला गया। जब आन्तरिक घेरा डाला जा रहा था तभी लक्षित मकान में छिपे उग्रवादियों ने सैनिकों पर हथगोले फेंके तथा भारी गोलीबारी की। पार्टी ने इसका उत्तर दिया तथा उग्रवादियों को भागने का अवसर नहीं दिया। उग्रवादियों ने तब पीछे की खिड़की खोली और हथगोले फेंके तथा भारी गोलीबारी की ताकि वे घमाके, धूल और अंधेरे का लाभ उठाकर भाग सकें। कांस्टेबल रामनारायण तथा कांस्टेबल के0जी0 रामनाथन को इकट्ठा मोर्चे पर लगाया गया था। भागते हुए उग्रवादियों की भारी गोलीबारी के कारण दोनों कांस्टेबल गोलियों से जख्मी हो गए परन्तु वे विचलित नहीं हुए। इन बहादुर कांस्टेबलों ने उग्रवादियों से एक के साथ एक की मुठभेड़ प्रारंभ की। कांस्टेबल रामनारायण ने असाधारण सूझ बूझ का प्रदर्शन करते हुए वीरतापूर्ण कार्रवाई में एक उग्रवादी को मार गिराया। कांस्टेबल के.जी. रामनाथन ने अपने घावों तथा अपने जीवन की परवाह न करते हुए दूसरे उग्रवादी पर गोली चलाई जो उग्रवादी की छाती पर लगी और वह गंभीर रूप से घायल हो गया। यह उग्रवादी, बाद में अनुवर्ती कार्रवाई में मारा गया। लक्षित मकान तथा आसपास के मकानों के तलाशी लेने पर दो उग्रवादियों के शवों के साथ दो ए.के. 56 राइफलें, 6 पिस्तौल ग्रेनेड, एक पिस्तौल ग्रेनेड लांचर, 19 ग्रेनेड यू. बी. जी. एल, तीन हैन्ड ग्रेनेड, दो एन्टी टैंक राइफल ग्रेनेड्स एक एन्टी टैंक सुरंग एक कम्पास, चार वायरलेस सैट तथा गोला बारूद बरामद हुआ। मारे गए उग्रवादियों की पहचान बाद में मोहम्मद अल्लाफ गनई उर्फ सैफुल्ला, पुत्र मो0 अब्दुल्ला गनई, निवासी वाची, जिला पुलवामा (जम्मू और कश्मीर) जो हिजबुल मुजाहिदीन संगठन का पाकिस्तान में प्रशिक्षित उग्रवादी था, तथा गुल खान उर्फ मुसीब पुत्र रेजब खान, निवासी नवगांव, जिला पुलवामा (जम्मू और कश्मीर) हिजबुल मुजाहिदीन संगठन के बटालियन कमांडर के रूप में की गई।

इस मुठभेड़ में, श्री रामनारायण कांस्टेबल तथा श्री के0जी0 रामनाथन, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस एवं उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

य पदक, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4(i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 25 मार्च, 2002 से दिया जाएगा।

(बरुण मित्रा)
निदेशक

सं० 208 - प्रज/2003-राष्ट्रपति, सीमा सुरक्षा बल के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सन्मूर्ध प्रदान करते हैं:-

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

1. एन.एस. ढाका, सहायक कमांडेंट
2. श्री श्याम लाल राय, कांस्टेबल (मरणोपरांत)
3. शौकत अली, कांस्टेबल

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए पदक प्रदान किया गया:

गांव खुरमपोरा, जिला पुलवामा (जम्मू और कश्मीर) में गुलजार अहमद पाल पुत्र अब्दुल माजिद पाल के घर में उग्रवादियों की उपस्थिति के संबंध में 9 अप्रैल, 2002 को एक विशिष्ट सूचना मिलने पर, एक घेराबंदी और एक तलाशी अभियान की योजना बनाई गई और इसे 9वीं बटालियन सीमा सुरक्षा बल द्वारा निष्पादित किया गया। गांव की सभी दिशाओं से घेराबंदी कर दी गई। वहाँ पर सिविलियनों की कोई आवाजाही नहीं थी, जिससे घर में उग्रवादियों के होने की पुष्टि हुई। श्री ढाका, सहायक कमांडेंट अपने दल के साथ लक्षित घर की ओर युक्तिपूर्ण तरीके से बढ़ रहे थे, तभी एक उग्रवादी ने भारी गोलीबारी करते हुए बचने का असफल प्रयास किया। कांस्टेबल श्याम लाल राय ने स्थिति के अनुसार तुरंत कार्रवाई की और उग्रवादी पर गोलियों की बौछार कर दी। उग्रवादी जखमी हो गया परंतु उसने पलट कर कांस्टेबल श्याम लाल पर गोलीबारी की जिन्होंने घटनास्थल पर दम तोड़ दिया और उग्रवादी भी मर गया। श्री ढाका के नेतृत्व वाली पार्टी ने पड़ोस की इमारत से भारी गोलीबारी की, जिसे तत्काल निष्क्रिय कर दिया गया। उग्रवादियों ने फिर उसके बाद अचानक ग्रेनेड फेंके जिसके कारण श्री ढाका का बायां कंधा और सीना जखमी हो गए। घायल होने के बावजूद, वे जवाबी गोलीबारी करते रहे और अभियान का पर्यवेक्षण किया। एक इलाक़े कार्रवाई में, दूसरे उग्रवादी ने भारी गोलीबारी करते हुए भागने का प्रयास किया। श्री ढाका ने अपने गंभीर घावों की अनदेखी कर और अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की परवाह न करते हुए, अनुकरणीय तरीके से कार्रवाई की और उग्रवादी को मार गिराया। उसके बाद दलों को पास की इमारतों की तलाशी लेने का निर्देश दिया गया। इनमें से एक इमारत में छिपे तीसरे उग्रवादी ने गोलीबारी शुरू कर दी, जिसके जवाब में दलों ने गोलीबारी की। कांस्टेबल शौकत अली ने पंखल की ओर रेंगते हुए घर की दिवार की ओर बढ़े और एक इथगोला फेंका जिससे उग्रवादियों ने तुरंत वापिस फेंक दिया, जिससे सीमा सुरक्षा बल के दो कार्मिक जखमी हो गए। उग्रवादी ने कांस्टेबल शौकत अली पर भी गोलियां चलाई और उनका हाथ जखमी कर दिया। घायल होने के बावजूद उन्होंने दो ग्रेनेड फेंके और छिपे हुए उग्रवादी का सफाया कर दिया। क्षेत्र की तलाशी लेने पर, दो ए.के.राइफलें, एक पिस्तौल, दो हैंड ग्रेनेड, एक वायरलेस सेट और गोलाबारूद के साथ-साथ तीनों उग्रवादियों के शव बरामद हुए। मारे गए उग्रवादियों की पहचान (i) रिदाज अहमद भट पुत्र मोहम्मद अबदुल्ला निवासी हारना डेन्हु, जिला पुलवामा (जम्मू और कश्मीर) (ii) जहीदुल अस्लाम उर्फ़ आबु कासिम निवासी कराची (पाकिस्तान) और (iii) जावेद अहमद उर्फ़ अबु अली निवासी कोटली बंदर (पाकिस्तान), सभी एल.ई.टी. के सदस्य के रूप में हुई।

इस मुठभेड़ में, सर्व/श्री एन.एस.ढाका, सहायक कमांडेंट, (दिवंगत) श्याम लाल राय, कांस्टेबल और शौकत अली, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस एवं उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पदक, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4(i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 9 अप्रैल, 2002 से दिया जाएगा।

(वरुण मित्रा)

निदेशक

सं० 209 - प्रेज/2003-राष्ट्रपति, सीमा सुरक्षा बल के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए राष्ट्रपति का पुलिस पदक/पुलिस पदक सहित प्रदत्त करते हैं:-

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

1. कृष्ण कुमार हुडा, हैड कांस्टेबल, (भरणोपरांत)
सीमा सुरक्षा बल, 171वीं बटालियन, (वीरता के लिए राष्ट्रपति का पुलिस पदक)
2. रमेश कुमार, कांस्टेबल, 171वीं बटालियन, सीमा सुरक्षा बल (वीरता के लिए पुलिस पदक)

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए पदक प्रदान किया गया:

2.8.2002 को जम्मू और कश्मीर के जिला बडगाम के ग्राम मालपुरा में एक मकान में विदेशी उग्रवादियों की उपस्थिति के बारे में विश्वस्त सूचना के आधार पर सीमा सुरक्षा बल की 171वीं बटालियन के कमांडेंट श्री वी.पी. पुरोहित ने एक अभियान की योजना बनाई। योजना के अनुसार ग्राम मालपुरा के बाहर घेराबंदी की गई। तत्पश्चात, कमांडेंट श्री वी.पी. पुरोहित अपनी पार्टी के साथ लक्षित मकान की ओर बढ़े और एक आन्तरिक घेराबंदी की। दिन का उजाला होने के कारण उग्रवादियों ने सैनिकों की हलचल देख ली तथा खतरे का अनुमान लगाते हुए सैनिकों पर भारी गोलीबारी की। कमांडेंट पुरोहित की जाँघ में एक गोली लग गई। परन्तु वे गोलियों का जवाब देते रहे। अचानक दो उग्रवादियों ने भारी गोलीबारी करते हुए श्री पुरोहित पर धावा बोल दिया। जख्मी होने के बावजूद इन्होंने गोलीबारी की ओर एक उग्रवादी को घटनास्थल पर ही मार गिराया। दूसरे उग्रवादी के साथ उनकी हाथापाई हुई और उग्रवादी ने श्रीपुरोहित को सीने में गोली मार दी जिसके कारण उनकी मौत हो गई। इसी बीच, कांस्टेबल रमेश कुमार और तीसरे फंसे हुए उग्रवादी के बीच गोलीबारी चल रही थी। जब कांस्टेबल रमेश कुमार ने अपने कमांडेंट की स्थिति देखी तो उन्होंने गोलीबारी का रुख उस उग्रवादी की ओर कर दिया जो उनके कमांडेंट से गुप्तमगुथा हो रहा था। इसके परिणामस्वरूप उग्रवादी को हथियार छोड़ कर अपना जान बचाकर भागने के लिए मजबूर होना पड़ा। इसी बीच, कांस्टेबल रमेश कुमार के बाजू में गोली लग गई जिससे वे गंभीर रूप से जख्मी हो गए। घायल होने के बावजूद, कांस्टेबल रमेश कुमार ने अद्वितीय साहस का परिचय दिया तथा अपने प्राणों की परवाह न करते हुए गोलीबारी जारी रखी तथा उस उग्रवादी को घायल करने में सफल हो गए। तथापि, इसी बीच लक्षित मकान की छत से उग्रवादी द्वारा चलाई गई एक गोली कांस्टेबल रमेश कुमार को लग गई जिसके कारण वे निष्क्रिय हो गए। इस स्थिति का लाभ उठाकर मकान की सबसे ऊँची छत से गोली चला रहा उग्रवादी कूद गया और घायल उग्रवादी की ओर भागा ताकि अपनी और अपने साथी की जान बचा सके। आन्तरिक घेराबंदी में मोर्चा जमाएँ हैड कांस्टेबल कृष्ण कुमार हुडा ने भागते हुए दोनों उग्रवादियों को देख लिया और इन्होंने अपनी जान की परवाह किए बिना अद्वितीय साहस का परिचय देते हुए खुले में आ गए तथा उग्रवादी द्वारा की जा रही भारीगोलीबारी के बावजूद उनका पीछा किया। हैड कांस्टेबल कृष्ण कुमार हुडा महान ध्यावसायिक चातुर्य तथा बहादुरी का प्रदर्शन करते हुए, भागते हुए एक उग्रवादी को मारने में सफल हो गए। तथापि, इस दौरान उनके दाएँ हाथ में गोली लग गई। हालांकि, उनकी बाजू से तेजी से खून बह रहा था, फिर भी हैड कांस्टेबल कृष्ण कुमार हुडा आखिरी उग्रवादी का पीछा करते रहे। उक्त उग्रवादी ने अचानक एक नाले में कटी हुई जमीन में मोर्चा संपाल लिया तथा गोलियों की बौछार कर दी जो हैड कांस्टेबल कृष्ण कुमार हुडा के सीने और पेट के निचले भाग में लगी और इन्होंने घावों के कारण घटनास्थल पर ही दम तोड़ दिया। उग्रवादी घनी मक्का की फसल और ऊबड़ खाबड़ भूमि का लाभ उठाकर अपना हथियार छोड़ भाग खड़ा हुआ। क्षेत्र की तलाशी लेने पर दो उग्रवादियों के शवों के साथ 3 एके. राइफलें, पांच ग्रेनेड तथा गोलाबारूद बरामद हुआ। मारे गए उग्रवादियों की पहचान सलाउद्दीन अफगानी तथा जावेद अली भाई, दोनों ही पाकिस्तान निवासी के रूप में हुई।

इस मुठभेड़ में, सर्व/श्री (दिवंगत) कृष्ण कुमार हुडा, हैड कांस्टेबल तथा रमेश कुमार, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस एवं उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पदक, राष्ट्रपति का पुलिस पदक/पुलिस पदक नियमावली के नियम 4(i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 2 अगस्त, 2002 से दिया जाएगा।

कृष्ण मित्रा
(वरुण मित्रा)
निदेशक

सं० 210 - प्रेज/2003-राष्ट्रपति, सीमा सुरक्षा बल के निम्नलिखित अधिकारी को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:-

अधिकारी का नाम और रैंक

श्री नेहम नगुलि

सहायक कमांडेंट, 138वीं बटालियन, सीमा सुरक्षा बल

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए पदक प्रदान किया गया:

जिला पुलवामा (जम्मू और कश्मीर) में उग्रवादियों द्वारा ग्राम रातसन तथा अमीराबाद, त्राल को जोड़ने वाले कच्चे रास्ते का प्रयोग किए जाने के बारे में विशिष्ट सूचना प्राप्त होने पर सहायक कमांडेंट नेहम नगुलि तथा सीमा सुरक्षा बल की 138वीं बटालियन के चुनिंदा सैनिकों ने 16.9.2002 को घात लगाई। श्री नगुलि कांस्टेबल संजीव कुमार के साथ जब अपना मोर्चा बदल कर वैकल्पिक मोर्चे की ओर जा रहे थे तो उसी समय मकदूम मोहम्मद की गलियों से उग्रवादियों ने निकट से भारी गोलीबारी की तथा ग्रेनेड लांचर से ग्रेनेड दागे। श्री नगुलि ने धैर्य बनाए रखा, तत्काल गोलियों का उत्तर दिया जिससे वे उग्रवादियों पर भारी पड़ सके। वे भारी गोलीबारी के दौरान कांस्टेबल संजीव कुमार के साथ सुरक्षित तथा लाभकारी मोर्चे पर पहुंच गए। तथापि, तूफानी मौसम की वजह से यह क्षेत्र कीचड़ और फिसलन भरा होने के कारण कांस्टेबल संजीव कुमार एक नाले में गिर पड़े। श्री नगुलि, सहायक कमांडेंट ने कांस्टेबल के जीवन को खतरा भांप कर अपनी जान की परवाह किए बिना भारी गोलीबारी के बीच कांस्टेबल को बाहर निकाल लिया। प्रकाश करने वाले बमों के द्वारा क्षेत्र में प्रकाश करके श्री नगुलि बहुदरी का परिचय देते हुए उग्रवादियों की तरफ झपटे तथा उनमें से एक को गोली से मार गिराया। तत्पश्चात् श्री नगुलि तथा कांस्टेबल संजीव कुमार ने शेष भागते हुए उग्रवादियों का पीछा किया। तथापि, उग्रवादी अंधेरे और तूफानी मौसम का लाभ उठाते हुए भाग निकले। क्षेत्र की तलाशी लेने पर मारे गए एक उग्रवादी के शव के साथ एक ए.के. सीरिज राइफल, एक अंडर बैरल ग्रेनेड लांचर, छः राइफल ग्रेनेड, एक हैंड ग्रेनेड तथा एक वायरलेस सेट बरामद किया गया। मारे गए उग्रवादी की पहचान सरफराज मीर उर्फ अबू तल्हा निवासी त्राल पाइन, जिला पुलवामा (जम्मू और कश्मीर) के रूप में हुई।

इस मुठभेड़ में, श्री नेहम नगुलि, सहायक कमांडेंट ने अदम्य वीरता, साहस एवं उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

यह पदक, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4(i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिया जा रहा है तथा फलस्वरूप नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 16 सितम्बर, 2002 से दिया जाएगा।

ब. व. मिश्रा
(वरुण मिश्रा)
निदेशक

सं० 211 - प्रेज/2003-राष्ट्रपति, सीमा सुरक्षा बल के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:-

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

1. आर.एस. रावत, सहायक कमांडेंट, नौवीं बटालियन, सीमा सुरक्षा बल
2. सत्येन्द्र सिंह, कांस्टेबल, नौवीं बटालियन, सीमा सुरक्षा बल

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए पदक प्रदान किया गया:

जम्मू और कश्मीर में जिला पुलवामा के ग्राम चिलिपोरा में दो विदेशी उग्रवादियों की उपस्थिति के बारे में विशिष्ट सूचना प्राप्त होने पर सीमा सुरक्षा बल की 9वीं बटालियन ने 1.9.2002 को एक अभियान चलाया। सीमा सुरक्षा बल के कमांडेंट बी.एस. लक्ष्मण, श्री विनोद अधिकारी, सहायक कमांडेंट तथा श्री आर.एस. रावत, सहायक कमांडेंट ने लक्षित ग्राम के चारों ओर प्रभावी घेराबंदी की। सैनिकों की गतिविधियों को माप कर दोनों उग्रवादियों ने भागने का असफल प्रयास किया परन्तु आन्तरिक घेराबंदी के सैनिकों ने उन्हें दृढ़ता से रोक लिया तथा उन्हें पास के मकान में शरण लेने हेतु मजबूर कर दिया। आस-पास के मकानों की तलाशी चल रही थी कि सहायक कमांडेंट श्री आर.एस. रावत पर घिरे हुए उग्रवादियों द्वारा गोलियां चलाई गईं तथा ग्रेनेड्स फेंके गए। श्री रावत ने इस आक्रमण का तत्काल उत्तर दिया तथा छिपे हुए उग्रवादियों पर हथगोले फेंके। अधिकारी, अनुकरणीय साहस का परिचय देते हुए तथा अपने प्राणों की परवाह न करते हुए आड़ लिए हुए उग्रवादियों की ओर रेंगकर पहुंचे तथा उन पर भारी गोलीबारी की जिससे उन्हें अपना मोर्चा छोड़ना पड़ा। एक उग्रवादी ने भागने का प्रयास किया, जब श्री रावत की उससे आमने-सामने मुठभेड़ हुई तो अपने प्राणों की परवाह न करते हुए इन्होंने सटीक गोलीबारी करके उस उग्रवादी को स्थल पर ही मार गिराया। दूसरे फंसे हुए उग्रवादी तथा सैनिकों के बीच भारी गोलीबारी चलती रही। उग्रवादी भी भागने की दृष्टि से अपनी पोजीशन बदल कर सुरक्षित पोजीशन पर चला गया तथा आन्तरिक घेराबंदी किए हुए सैनिकों पर रुक-रुक कर गोलियां चलाता रहा। कांस्टेबल सत्येन्द्र सिंह, ने अच्छी तरह आड़ लिए हुए उग्रवादी को अपनी पोजीशन छोड़ने पर मजबूर करने के लिए, अपनी सुरक्षित पोजीशन छोड़ दी और निकट पहुंचकर छिपे हुए उग्रवादी पर गोलियां चलाई। स्वयं को घिरा हुआ पाकर उग्रवादी भारी गोलीबारी करता हुआ, दौड़ता हुआ सीधा कांस्टेबल सत्येन्द्र सिंह के मोर्चे की ओर गया। कांस्टेबल सत्येन्द्र सिंह ने धैर्य नहीं खोया तथा अद्वितीय साहस का परिचय देते हुए उग्रवादी को मार गिराया। क्षेत्र की तलाशी लेने पर दो उग्रवादियों के शवों के साथ-साथ दो ए.के. सीरिज राइफले, दो हथगोले, एक वायरलेस सैट तथा गोलाबारूद बरामद हुआ। मारे गए उग्रवादियों की पहचान बादशाह खान, निवासी मुलतान तथा मो. अली, दोनों ही पाकिस्तान के निवासी, के रूप में की गई।

इस मुठभेड़ में, सर्व/श्री आर.एस. रावत, सहायक कमांडेंट एवं सत्येन्द्र सिंह, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस एवं उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पदक, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4(i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 1 सितम्बर, 2002 से दिया जाएगा।

०१२७/११/०३
(वरूण मित्रा)
निदेशक

सं 212 - प्रेज/2003-राष्ट्रपति, सीमा सुरक्षा बल के निम्नलिखित अधिकारी को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:-

अधिकारी का नाम और रैंक

श्री शंभुनाथ यादव

कांस्टेबल, 194वीं बटालियन, सीमा सुरक्षा बल

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए पदक प्रदान किया गया:

जम्मू और कश्मीर के कुपवाड़ा जिले के मुथाल क्षेत्र में उग्रवादी की उपस्थिति के बारे में विशिष्ट सूचना मिलने पर 29.7.2002 को सीमा सुरक्षाबल की 69वीं बटालियन के सैनिकों ने एक अभियान चलाया। अभियान दल में 19 कार्मिक थे जिनमें 3 सैनिक थे। जब सैनिक लक्षित क्षेत्र में पहुंचे तो उग्रवादियों ने भारी गोलीबारी प्रारंभ कर दी तथा वे आड़ वाली पोजीशन लेने के लिए समीप के नाले में कूद पड़े। उप कमांडेंट श्री आनंद सिंह भी कुमुक के साथ पहुंच गए। श्री आनंद सिंह, उप कमांडेंट ने स्थिति का जायजा लिया तथा सैनिकों की पुनः तैनाती की। उग्रवादी, जो आड़ लिए हुए थे, सैनिकों को रोकने के लिए रुक-रुक कर गोलियां चलाते रहे। उग्रवादियों तथा सैनिकों के बीच कुछ समय तक गोलियां चलती रहीं। इस गोलीबारी के दौरान एक गोली सिपाही मोमिन के सिर में लगी और वे वहीं गिर पड़े तो बेहोशी की हालत में उग्रवादी के मोर्चे की ओर लुढ़कने लगे। ऐसी स्थिति में कांस्टेबल शंभुनाथ यादव ने अनुकरणीय साहस का परिचय दिया और अपने घायल साथी की जान बचाने के लिए उग्रवादी को निष्क्रिय करने के लिए उसकी ओर दौड़ पड़े। इस प्रक्रिया में कांस्टेबल यादव भी गोली लगने से घायल हो गए तथा तेजी से खून बहने तथा अनेक फ्रैक्चरों के बावजूद इन्होंने साहसपूर्वक उग्रवादी को उलझाए रखा तथा अन्ततः उसे निष्क्रिय करने में सफल हो गए। क्षेत्र की तलाशी लेने पर मृतक उग्रवादी के शव के साथ-साथ एक ए.के. सीरिज राइफल तथा गोला बारूद बरामद हुआ।

इस मुठभेड़ में, श्री शंभुनाथ यादव, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस एवं उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

यह पदक, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4(i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिया जा रहा है तथा फलस्वरूप नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 29 जुलाई, 2002 से दिया जाएगा।

22/7/11
(बरूण मित्रा)
निदेशक

सं० 213 - प्रेज/2003-राष्ट्रपति, सीमा सुरक्षा बल के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:-

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री।

1. बुलंद हुसैन, कांस्टेबल
2. राकेश कुमार, कांस्टेबल

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए पदक प्रदान किया गया:

12 मार्च, 2002 को, सामान्य क्षेत्र बोरगली, गांव खादून, जिला राजौरी (जम्मू और कश्मीर) में उग्रवादियों की उपस्थिति के संबंध में एक विशिष्ट सूचना के आधार पर, सीमा सुरक्षा बल की 200वीं बटालियन की टुकड़ियों द्वारा एक विशेष अभियान की योजना बनाई गयी और चलाया गया। जब सीमा सुरक्षा बल पार्टी खादून गांव पहुँची, तो उग्रवादियों ने तलाशी दल पर विभिन्न दिशाओं से स्वचालित हथियारों से भारी गोलीबारी की और इसके पश्चात ग्रेनेड लांचर से ग्रेनेड दागे। गोलीबारी और कार्रवाई कला का उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हुए टुकड़ियां पार्टी कमांडर के निदेशों के तहत अभियान के पहले ही चरण में दो उग्रवादियों को मार गिराने में कामयाब हो गयी। जब यह मुठभेड़ चल रही थी, तो कट आफ पार्टी में तैनात कांस्टेबल राकेश कुमार और कांस्टेबल बुलंद हुसैन ने घेराबंदी से दो उग्रवादियों को बच कर भागते हुए देखा। दोनों कांस्टेबलों ने अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की परवाह न करते हुए और अपने अन्य कार्मिकों के आने की प्रतीक्षा किए बगैर, भारी गोलीबारी के बीच बच कर भाग रहे उग्रवादियों का पीछा करना शुरू कर दिया। मुठभेड़ स्थल से 8 कि.मी. के क्षेत्र में एक घंटे से ज्यादा समय तक उनका पीछा किया गया और गोलीबारी चली। कठिन भूभाग में उग्रवादियों का पीछा करने के दौरान, उग्रवादियों ने उबड़-खाबड़ क्षेत्र में पोजीशन ले ली और दोनों कांस्टेबलों पर भारी गोलीबारी की। इसी बीच, कांस्टेबल राकेश कुमार ने कांस्टेबल बुलंद हुसैन को कवरींग गोलीबारी करने का निदेश दिया, जिसके दौरान कांस्टेबल राकेश कुमार काफी निकट आ गए और उन्होंने एक हैंड ग्रेनेड फेंका जिससे एक उग्रवादी घायल हो गया। कांस्टेबल राकेश कुमार साहसिक कार्रवाई करते हुए कवरींग गोलीबारी के बीच रेंगते हुए छिपे हुए उग्रवादी के नजदीक गए और उसके बाद हुई आमने-सामने की मुठभेड़ में और एक उग्रवादी को घटनास्थल पर मार गिराया। तथापि इसी बीच, अन्य उग्रवादी घ. घारफूस और उबड़-खाबड़ भूभाग का लाभ उठाकर भागने में कामयाब हो गए। क्षेत्र की तलाशी लेने पर, दो ए.के. राइफलों और तीन हैंड ग्रेनेडों के साथ-साथ तीन उग्रवादियों के शव बरामद हुए। मारे गए दो उग्रवादियों की पहचान बशीर उर्फ कमरान पुत्र कलामुद्दीन निवासी गांव हासोत, तहसील मोहा, जिला उधमपुर (जम्मू और कश्मीर), हिजबुल मुजाहिद्दीन गुट के एरिया कमांडर और दूसरे की पहचान उसके पास से बरामद दस्तावेजों के आधार पर मुख्तियार के रूप में हुई। तथापि तीसरे उग्रवादी की पहचान नहीं हो सकी।

इस मुठभेड़ में, सर्व/श्री बुलंद हुसैन, कांस्टेबल और राकेश कुमार, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस एवं उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पदक, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4(i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 12 मार्च, 2002 से दिया जाएगा।

वर्णन
(बरूण मित्रा)
निदेशक

स0 214 - प्रेज/2003-राष्ट्रपति, सीमा सुरक्षा बल के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:-

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

1. बी.एस. कसाना, कमांडेंट
2. जयपाल, कांस्टेबल

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए पदक प्रदान किया गया:

उग्रवादियों के एक ग्रुप की मौजूदगी जिन्होंने गांव नेवा एक्सटेन्शन गुदुर, जिला पुलवामा (जम्मू और कश्मीर) में मोहम्मद युसुफ पुत्र अब्दुल गनी के घर में शरण ले रखी थी के संबंध में जम्मू और कश्मीर पुलिस पुलवामा से एक विशिष्ट सूचना प्राप्त होने पर श्री बी. एस. कसाना, कमांडेंट, 9वीं बटालियन सीमा सुरक्षा बल द्वारा 9 जुलाई, 2002 को एक विशेष अभियान की योजना बनाई गई और इसे कार्यान्वित किया गया। श्री कसाना के नेतृत्व में 9वीं बटालियन सीमा सुरक्षा बल की टुकड़ियों ने तीन विभिन्न दिशाओं से गांव की घेराबंदी की। जब श्री कसाना और उनकी पार्टी लक्षित घर पर पहुँचे तो उग्रवादियों ने पार्टी पर भारी गोलीबारी की और उसके बाद ग्रेनेड फेंके। सीमा सुरक्षा बल पार्टी चौकस थी, इसलिए वे बाल-बाल बच गए। उसके बाद श्री कसाना ने घेराबंदी को ठीक-ठाक किया और एक ऊँचे घर में पोजीशन ली तथा श्री राजीव कपूर द्वितीय प्रमारी को विपरीत दिशा से इसी प्रकार के मकान में पोजीशन लेने के निदेश दिए। गोलीबारी चलती रही। अच्छी तरह मोर्चा सम्भाले उग्रवादियों को बाहर निकलने के लिए मजबूर करने के लिए राकेट लांचर, स्वचालित ग्रेनेड लांचर और ग्रेनेड दागे गए, जिसके परिणामस्वरूप उग्रवादियों के कब्जे में रखे विस्फोटक और एक गैस सिलेंडर फट गया और मकान में आग लग गई। एक उग्रवादी बचने के अथक प्रयास में अंधाबुंध गोलीबारी करते हुए घर से बाहर कूदा। कांस्टेबल जयपाल जो कि अंदरूनी घेरे में था, को एक गोली लगी और उनकी उर्वस्थि टूट गई। गोली लगने के कारण हुए गंभीर जख्म से अविचलित और अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की परवाह न करते हुए उन्होंने उग्रवादी को बीच में ही रोक, गोली चलाई और उसे घटनास्थल पर ही मार गिराया। श्री कसाना कमांडेंट ने भारी गोलीबारी के बीच अंदरूनी घेराबंदी को पुनः व्यवस्थित किया। जब वे अपनी पार्टी के साथ और ज्यादा ग्रेनेड फेंकने के लिए युक्तिपूर्ण तरीके से आगे बढ़ रहे थे, उग्रवादी ने पार्टी पर एक ग्रेनेड फेंका। अपनी पार्टी के कार्मिकों की जान खतरे में भांपकर श्री कसाना ने प्रतिक्रिया, तत्काल और ठंडे दिमाग से साहस का परिचय दिया। अपने जीवन की सुरक्षा की परवाह किए बिना उन्होंने ग्रेनेड उड़ाया और उसे वापिस उस घर में फेंक दिया और इस प्रकार से अपनी पार्टी के कार्मिकों को गंभीर रूप से जख्मी होने/हताहत होने से बचा लिया। अपने पर भारी दबाव के कारण, दूसरा उग्रवादी भी बाहर कूदा और श्री कसाना और उसकी पार्टी की तरफ भारी गोलीबारी शुरू कर दी। श्री कसाना, जो अभियान का नेतृत्व कर रहे थे, ने काफी निकट की लड़ाई में उग्रवादी को तत्काल उलझा लिया और उत्कृष्ट साहस का प्रदर्शन करते हुए गोलीबारी की और उस उग्रवादी को घटनास्थल पर ही मार गिराया। क्षेत्र की तलाशी लेने पर दो ए.के. ग्रेणी की राइफले, गोलाबारूद और एक वायरलेस सेट के साथ-साथ मारे गए दो उग्रवादियों के शव बरामद हुए। मारे गए उग्रवादियों की पहचान निम्न प्रकार से की गई :-

- (क) अकादे बिल उर्फ अबु हुरार निवासी सियालकोट (पाकिस्तान), डिजबुल मुजाहिदीन गुट का बटालियन कमांडर।
- (ख) मुरताक अहमद भट पुत्र मोहम्मद रमजान भट निवासी गांव गुदुर, पुलिस स्टेशन और जिला पुलवामा (जम्मू और कश्मीर)।

इस मुठभेड़ में, सर्व/श्री बी.एस. कसाना, कमांडेंट और जयपाल, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस एवं उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पदक, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4(i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 9 जुलाई, 2002 से दिया जाएगा।

427/ मित्रा
(बक़्श मित्रा)
निदेशक

सं० 215 - प्रेज/2003-राष्ट्रपति, सीमा सुरक्षा बल के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:-

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

1. श्याम सिंह, कांस्टेबल
2. उदयपाल सिंह, कांस्टेबल
3. अन्सुयालाल, कांस्टेबल

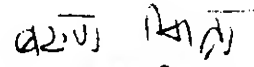
उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए पदक प्रदान किया गया:

यह सूचना मिलने पर कि उग्रवादियों ने मवार नाला, जिला अनंतनाग (जम्मू और कश्मीर) के साथ लगी पर्वत-श्रेणी के ढलान पर यारी पथरी क्षेत्र में पड़ाव डाला हुआ है, 27.06.2002 को 77वीं बटालियन सीमा सुरक्षा बल के श्री वाई.एस. बिष्ट, द्वितीय प्रभारी और श्री के.एस. पठानिया, सहायक कमांडेंट के नेतृत्व में एक अभियान की योजना बनाई गई और चलाया गया। अभियान दल को दो ग्रुपों में बांटा गया। श्री के.एस. पठानिया, सहायक कमांडेंट की कमान में पहले ग्रुप ने मवार वन क्षेत्र में घात लगाई और श्री वाई.एस. बिष्ट, द्वितीय प्रभारी की कमान में द्वितीय ग्रुप को युक्तिपूर्ण तरीके से यारीपथरी क्षेत्र में तैनात किया गया। वहाँ उग्रवादियों की कोई गतिविधियाँ दिखाई नहीं दी, इसलिए दोनों पार्टियों ने वहाँ से हटने का निर्णय लिया। जब पहले ग्रुप ने हटना शुरू किया, तो क्षेत्र में छिपे हुए उग्रवादियों द्वारा इस पर गोलीबारी की गई। पार्टी ने जवाबी गोलीबारी की और श्री पठानिया ने उग्रवादियों को घेरने के लिए अपने ग्रुप को युक्तिपूर्ण तरीके से आगे बढ़ाया। जब वे आगे बढ़ रहे थे, तो पार्टी पर उग्रवादियों ने भारी गोलीबारी कर दी, लेकिन पार्टी उग्रवादियों पर प्रभावी गोलीबारी करने की स्थिति में नहीं थी क्योंकि वे चट्टानों के पीछे छिपे हुए थे। कांस्टेबल श्याम सिंह, जो स्काउट-टुकड़ी का नेतृत्व कर रहे थे, ने लगभग 70 गज दूर ऊपर एक उग्रवादी को देखा। शिलाखण्डों और वृक्षों की आड़ का पूरा इस्तेमाल करते हुए और अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की चिंता न करते हुए, वे युक्तिपूर्ण तरीके से उग्रवादी के पास पहुँचे और उसे आमने-सामने की गोलीबारी में उसे मार गिराया। इसी बीच दूसरा ग्रुप भी शामिल हो गया और घेराबंदी को पुनः व्यवस्थित किया गया। क्योंकि शेष उग्रवादियों की पोजीशन पता नहीं लग सकी इसलिए ग्रुप ने उग्रवादियों को बूढ़ने के प्रयासों को तेज कर दिया। तलाशी अभियान के दौरान, कांस्टेबल उदयपाल सिंह और कांस्टेबल श्याम सिंह ने अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की परवाह न करते हुए धीरे-धीरे एक संदिग्ध उग्रवादी की पोजीशन की ओर बढ़े और ग्रेनेड फेंके। इस समय एक उग्रवादी ने भागने का प्रयास किया और गोलीबारी पुनः शुरू हो गई। कांस्टेबल उदयपाल सिंह और कांस्टेबल अन्सुयालाल ने उग्रवादियों पर कारगर रूप से गोलीबारी करने हेतु खुले में अपनी पोजीशन को बदलते हुए उत्कृष्ट साहस और वीरता का प्रदर्शन किया और दो और उग्रवादियों को मार गिराया। क्षेत्र की तलाशी लेने पर, दो ए.के. श्रेणी की राइफलें, चार हैंड ग्रेनेड और गोलाबारूद के साथ-साथ सभी तीन उग्रवादियों के शव भी बरामद हुए। मारे गए उग्रवादियों की शिनाख्त निम्नलिखित रूप से की गई :-

- (i) एजाज अहमद खान पुत्र गुलाम रसूल खान निवासी पंजगाम, पुलिस स्टेशन कोकरनाग, जिला अनंतनाग (जम्मू और कश्मीर)
- (ii) निसार अहमद खान पुत्र अब्दुल रजाक निवासी कुमार (दुश्वागाम), तहसील दोर, जिला अनंतनाग (जम्मू और कश्मीर)
- (iii) मंजूर अहमद मलिक पुत्र गुलाम अहमद मलिक निवासी बुच्छ, पुलिस स्टेशन कोकरनाग, जिला अनंतनाग (जम्मू और कश्मीर)

इस मुठभेड़ में, सर्व/श्री श्याम सिंह, कांस्टेबल, उदयपाल सिंह, कांस्टेबल, अन्सुयालाल, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस एवं उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पदक, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4(i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 27 जून, 2002 से दिया जाएगा।


(बरूण मिश्रा)
निदेशक

सं० 216 - प्रेज/2003-राष्ट्रपति, सीमा सुरक्षा बल के निम्नलिखित अधिकारी को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:-

अधिकारी का नाम और रैंक

श्री मुख्तियार अहमद खान

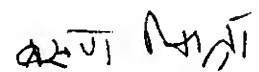
कांस्टेबल, 142वीं बटालियन, सीमा सुरक्षा बल

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए पदक प्रदान किया गया:

जोर क्षेत्र, कालाकोट, जिला राजौरी (जम्मू और कश्मीर) में उग्रवादियों की उपस्थिति के संबंध में विशिष्ट सूचना के आधार पर, 142वीं बटालियन सीमा सुरक्षा बल की टुकड़ियों द्वारा लक्षित क्षेत्र में एक अभियान चलाया गया। 21 मार्च, 2002 को 1900 बजे, तीन संदिग्ध मकानों की घेराबंदी की गई और उनकी तलाशी ली गई लेकिन तलाशी के दौरान वहाँ कुछ भी नहीं मिला। इसी दौरान, पार्टी ने उग्रवादियों से सहानुभूति रखने वाले को पकड़ा, जिसने उस क्षेत्र के बारे में विस्तार से बताया जहाँ उसने उग्रवादियों को भोजन और कंबल दिये थे। पार्टी कमांडर ने तत्काल एक ठोस योजना बनाई और टुकड़ियों को तीन ग्रुपों में बाँटा और उस क्षेत्र की पुनः तलाशी शुरू कर दी। अगली सुबह 10.00 बजे उग्रवादियों से संपर्क हुआ। कांस्टेबल मुख्तियार अहमद खान, जो क्विक रिएक्शन टीम का सदस्य था, ने एक अग्रणी स्काऊट के रूप में, घने जंगल में जाते समय काफी निकट से एक उग्रवादी को देखा और पार्टी को सतर्क किया। इसी दौरान, उग्रवादियों ने सीमा सुरक्षा बल पार्टी पर भारी गोलीबारी शुरू कर दी, जिसके परिणामस्वरूप कांस्टेबल ओम प्रकाश गोली लगने से जखमी हो गए और उनके शरीर से बड़ी तेजी से रक्त बहने लगा। अपने जखमी साथी की हालत देखकर और जखमी कांस्टेबल को लक्ष्य बनाकर उग्रवादियों द्वारा की जा रही भारी गोलीबारी के बावजूद, कांस्टेबल मुख्तियार अहमद खान अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की परवाह न करते हुए अपनी आड़ से बाहर आए और उग्रवादी पर हमला किया और आमने-सामने की लड़ाई में उसे गोली मार दी। उस क्षेत्र की तलाशी लेने पर, एक ए.के. श्रेणी की राइफल, दो हैंड ग्रेनेड और गोला बारूद के साथ-साथ एक उग्रवादी का शव बरामद हुआ। मारे गए उग्रवादी की पहचान बाद में आलमगीर खान, एक विदेशी उग्रवादी के रूप में हुई।

इस मुठभेड़ में, श्री मुख्तियार अहमद खान, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस एवं उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

यह पदक, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4(i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिया जा रहा है तथा फलस्वरूप नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 22 मार्च, 2002 से दिया जाएगा।


(बरूण मिश्रा)
निदेशक

सं० 217 - प्रेज/2003-राष्ट्रपति, सीमा सुरक्षा बल के निम्नलिखित अधिकारी को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सड़क प्रदान करते हैं:-

अधिकारी का नाम और रैंक

श्री हरजीत सिंह (भरणोपरांत)

उप-निरीक्षक

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए पदक प्रदान किया गया:

29.03.2002 को उग्रवादियों ने टेक मुख्यालय 142वीं बटालियन सीमा सुरक्षा बल का लक्ष्य बनाया (जम्मू और कश्मीर) पर हमला किया। उन्होंने रसोइघर के साथ लगे टीन शेड पर अंधाधुंध गोलीबारी की और हैंड ग्रेनेड फेंकते, जिसके परिणामस्वरूप यूनिट के दो अनुचर मारे गए और दूसरा गंभीर रूप से जखमी हो गया। इस हमले के पश्चात उग्रवादों अंधे का लाभ उठाकर भाग गए। श्री मिरदुल सोनोवाल, द्वितीय प्रभारी स्थानापन्न कमांडेंट ने तत्काल टुकड़ियों को लामबंद किया और तीन कॉलम को उग्रवादियों के बचकर निकलने के संभावित रास्तों को बंद करने के लिए रवाना किया। इसी बीच, सूबेदार धर्मपाल, जो एक कॉलम का नेतृत्व कर रहे थे, को स्थानीय लोगों से यह भालूम हुआ कि उग्रवादी बाजीमत क्षेत्र में जंगल की ओर बच कर भागे हैं। इसलिए कॉलम शिलाखण्डों वाले घने जंगल, जहां भाग रहे उग्रवादियों को अच्छी आड़ मिली, में गया। जब टुकड़ियां बाजीमत क्षेत्र के नजदीक पहुंचीं, तभी सूबेदार क.सी. खंडूजी ने अपने कॉलम को दो पार्टियों में बांट दिया, एक का नेतृत्व उप निरीक्षक हरजीत सिंह कर रहे थे और दूसरे का नेतृत्व वे स्वयं कर रहे थे। उप निरीक्षक हरजीत सिंह और पार्टी ने पश्चिमी दिशा से उग्रवादियों को तलाशना शुरू किया जबकि सूबेदार खंडूजी और पार्टी सुदूरपूर्व तरफ से बाजीमत के ओर बढ़े। उप निरीक्षक, हरजीत सिंह ने स्थिति का सावधानीपूर्वक आकलन करने और क्षेत्र का जायजा लेने के पश्चात उस क्षेत्र की घेराबंदी की जहां पर उग्रवादियों के छिपे होने की आशंका थी। यह महसूस करने पर कि वे फिर गए हैं, उग्रवादियों ने सीमा सुरक्षा बल पार्टी पर गोलीबारी शुरू कर दी और इस प्रक्रिया में उनकी पोजीशनों का पता लग गया। उसके पश्चात, सीमा सुरक्षा बल पार्टी और उग्रवादियों के बीच भीषण गोलीबारी हुई। इसी बीच सूबेदार कोमल सिंह के नेतृत्व वाली पार्टी भी आकर उप निरीक्षक हरजीत सिंह के नेतृत्व वाली पार्टी में शामिल हो गई और ये टुकड़ियां एक उग्रवादी का भार गिराने में सफल हो गईं। तथापि, इस भारी गोलीबारी के दौरान, सूबेदार कोमल सिंह, कांस्टेबल ए. रविन्द्रन और कांस्टेबल एस. बालासुंदर गंभीर रूप से जखमी हो गए। शेष उग्रवादी टुकड़ियों पर गोलीबारी और ग्रेनेड फेंकते रहे। एक ग्रेनेड सूबेदार खंडूजी और उप निरीक्षक हरजीत सिंह के नजदीक फट गया, जिसकी तजह्जुब से जख्मी हो गए। जख्मी से अविचलित और अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा को बिल्कुल भी परवाह न करते हुए, उप निरीक्षक हरजीत सिंह ने छिपे हुए उग्रवादियों की ओर एक हैंड ग्रेनेड फेंका और उन पर गोलीबारी की और एक उग्रवादी को मारने तथा दूसरे को जख्मी करने में कामयाब हो गए। इसी बीच, एक उग्रवादी उग्रवादी, जो घने झाड़ियों में छिप हुआ था, ने अपनी हथौड़े बहाल कर के उप निरीक्षक हरजीत सिंह पर गोलीबारी की और उन पर तोड़ दिया। क्षेत्र की तलाशी लेने पर, दो ए.के. ग्रेणों की राइफलें, दो हैंड ग्रेनेड और बड़ी मात्रा में गोलाबारी के साथ मारे गए दो उग्रवादियों के शव बमराद हुए। मारे गए उग्रवादियों की पहचान बाद में लश्कर-ए-तैयबा गुट के अबूलासा और अबुलालिद के रूप में हुई।

इस मुठभेड़ में, (दिवंगत) श्री हरजीत सिंह, उप निरीक्षक ने अदम्य वीरता, इम्तदाद एवं उत्कृष्ट कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

यह पदक, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4(i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिया जा रहा है तथा फलस्वरूप नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 29 मार्च, 2002 से दिया जाएगा।

(सह्या भत्ता)
निदेशक

सं० 218 - प्रेज/2003-राष्ट्रपति, सीमा सुरक्षा बल के निम्नलिखित अधिकारी को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:-

अधिकारी का नाम और रैंक

श्री मुकेश कुमार वर्मा,

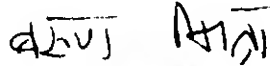
सहायक कमांडेंट

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए पदक प्रदान किया गया:

6 जुलाई, 2002 को, 200वीं बटालियन सीमा सुरक्षा बल एक्स ऑपरेशनल बेस तराला की एक गश्त पार्टी को नारी जंगल के तरांबा क्षेत्र में गश्त के दौरान, सोकरनका क्षेत्र, तहसील दरहल, जिला राजौरी (जम्मू और कश्मीर) में एक "ढोक" में उग्रवादियों की उपस्थिति के बारे में मालूम हुआ। पार्टी कमांडर श्री मुकेश कुमार वर्मा, सहायक कमांडेंट, ने तत्काल यह सूचना श्री हेमंत कुमार, उप कमांडेंट को दे दी, जो नजदीक के क्षेत्र में तलाशी अभियान कर रहे थे और उनसे उग्रवादियों के बच कर भागने के संभावित रास्तों को रोकने के लिए कहा। श्री मुकेश कुमार वर्मा, सहायक कमांडेंट ने अपनी पार्टी को दो ग्रुपों में बांटा और संदिग्ध "ढोक" की दो तरफ से घेराबंदी कर दी। यह भांपकर कि उन्हें घेर लिया गया है उग्रवादियों ने टुकड़ियों पर भारी गोलीबारी कर दी जिस पर जवाबी गोलीबारी की गई। तथापि उग्रवादी, घने जंगल का लाभ उठाते हुए "ढोक" से बच कर भागने में कामयाब हो गए। बदली हुई स्थिति का सही परिप्रेक्ष्य में आकलन करते हुए, श्री वर्मा ने भाग रहे उग्रवादियों का पीछा करने और उन्हें तलाशने का निर्णय लिया। श्री वर्मा ने तत्काल उपलब्ध टुकड़ियों को पुनः संगठित किया और उस संदिग्ध क्षेत्र की, जहाँ उग्रवादी निकल पाए थे, की छानबीन शुरू कर दी। जब तलाशी चल रही थी, तभी पार्टी पर भारी गोलीबारी की गई। जवाबी गोलीबारी की गई लेकिन यह कारगर साबित नहीं हुई क्योंकि उग्रवादियों ने गुफा में अच्छी तरह से मोर्चाबंदी कर रखी थी। उस गुफा पर पहुँचना बहुत मुश्किल था और उस पर उग्रवादियों द्वारा प्रभावशाली रूप से पहरा दिया हुआ था। स्थिति को भांपते हुए, श्री वर्मा भारी गोलीबारी से अविचलित और अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की परवाह न करते हुए, गुफा की तरफ रंगते हुए बढ़े और एक हैंड ग्रेनेड फेंका। अपने आप को घिरा हुआ पाकर उग्रवादी बचने के प्रयास में, अपने हथियारों से गोलीबारी करते हुए गुफा से तेजी से बाहर आए। श्री वर्मा ने बहुत तेजी से गुफा के काफी निकट पोजीशन ले ली और भाग रहे उग्रवादियों पर गोलीबारी की और एक उग्रवादी को घटनास्थल पर मार गिराया तथा अन्य दो को जख्मी कर दिया। तथापि जख्मी उग्रवादियों ने अपने हथियार छोड़कर, पास ही के नाले में छलांग लगा दी और घने जंगल का लाभ उठाते हुए बच कर भाग गए। बाद में इस बात की पुष्टि हुई कि एक जख्मी उग्रवादी 8 जुलाई 2002 को मर गया। शेष का तलाशी लेने पर, तीन ए.के. श्रेणी की राइफले, एक हैंड ग्रेनेड, एक वायरलेस सैट और बड़ी मात्रा में गोला बारूद के साथ एक उग्रवादी का शव बरामद हुआ। मारे गए उग्रवादियों की पहचान अजम उर्फ दाऊद और साराजीत दोनों पर किए गए निवासों, के रूप में हुई।

इस मुठभेड़ में, श्री मुकेश कुमार वर्मा, सहायक कमांडेंट, ने अदम्य वीरता, साहस एवं उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

यह पदक, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4(i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिया जा रहा है तथा फलस्वरूप नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 6 जुलाई, 2002 से दिया जाएगा।


(वरुण मित्रा)
निदेशक

सं0 219 - प्रेज/2003-राष्ट्रपति, सीमा सुरक्षा बल के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:-

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

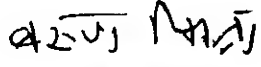
1. नानक चन्द, उप कमांडेंट
2. राम प्रसाद जाट, कांस्टेबल

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए पदक प्रदान किया गया:

सामान्य क्षेत्र गालदून, जिला उधमपुर (जम्मू और कश्मीर) में उग्रवादियों की उपस्थिति के बारे में एक विशिष्ट सूचना के आधार पर 3 फरवरी, 2002 को 102 बटा0 सीमा सुरक्षा बल के जवानों द्वारा एक अभियान की योजना बनाई गई और अभियान चलाया गया। लक्षित क्षेत्र में पहुंचने पर अभियान पार्टी ने उग्रवादियों के बचकर भाग निकलने के सभी रास्तों पर रोक लगा दी। तब इस पार्टी को दो ग्रुपों में विभाजित किया गया और श्री नानक चन्द, उप कमांडेंट और श्री दिनेश कुमार, सहायक कमांडेंट के नेतृत्व में एक तलाशी अभियान चलाया गया। जब तलाशी अभियान चल रहा था, तो श्री नानक चन्द, उप कमांडेंट के नेतृत्व वाली पार्टी पर गालदून की ओर से उग्रवादियों द्वारा भारी गोलीबारी की गई। गोलीबारी का जवाब दिया गया और पार्टी चतुराई के साथ उग्रवादियों की ओर आगे बढ़ी। इस बीच, दो उग्रवादियों ने श्री नानक चंद और इनकी पार्टी पर भारी गोलीबारी करते हुए बचकर भागने का प्रयास किया। इस मौके पर श्री नानक चंद ने अपनी निजी सुरक्षा की परवाह न करते हुए स्वयं उग्रवादियों के सामने आ गए और व्यावसायिक कौशल तथा साहस का परिचय देते हुए बचकर भाग रहे उग्रवादियों पर सटीक गोलीबारी की और उनमें से एक को स्थल पर ही मार गिराया। अपने सहयोगी का इश्र देख कर, दूसरा उग्रवादी, बचकर भाग निकलने के प्रयास में जंगल की तरफ भागा। भागते हुए उग्रवादी को देख कर कांस्टेबल राम प्रसाद जाट ने अपनी निजी सुरक्षा की परवाह किए बिना अत्यधिक उबड़-खाबड़ भू भाग में उग्रवादी का लगभग आधे घण्टे तक पीछा किया। उग्रवादी ने तब एक बड़े पेड़ के पीछे खड़ी ढाल पर पोजीशन ले ली और कांस्टेबल राम प्रसाद जाट पर गोलीबारी प्रारम्भ कर दी। मुश्किल स्थिति का आकलन कर और उग्रवादी के बचकर भागने की सम्भावना को देखते हुए कांस्टेबल राम प्रसाद जाट अपनी निजी सुरक्षा की परवाह न कर अत्यधिक साहस के साथ पीछे की तरफ से उग्रवादी की पोजीशन की ओर बढ़े और नीचे उस स्थान पर कूद गए तथा आमने-सामने की लड़ाई में उग्रवादी को मार गिराया। क्षेत्र की तलाशी लेने पर दो उग्रवादियों के शव के साथ एक ए.के. श्रेणी राइफल, एक हथगोला और गोलाबारूद बरामद किया गया। मारे गए उग्रवादियों की पहचान मोहम्मद इरफान हुसैन पुत्र अब्दुल रशीद, जिला डोडा (जम्मू और कश्मीर) तथा मोहम्मद फारूक पुत्र अब्दुल रशीद निवासी उधमपुर (जम्मू और कश्मीर) के रूप में की गई।

इस मुठभेड़ में, सर्व/श्री नानक चन्द, उप कमांडेंट और राम प्रसाद जाट, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस एवं उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पदक, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4(i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 3 फरवरी, 2002 से दिया जाएगा।


 (बरूण मिश्रा)
 निदेशक

सं० 220 - प्रेज/2003-राष्ट्रपति, सीमा सुरक्षा बल के निम्नलिखित अधिकारी को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:-

अधिकारी का नाम और रैंक

श्री करण सिंह

हैड कांस्टेबल

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए पदक प्रदान किया गया:

मौ. अब्दुला शेख नामक व्यक्ति के मकान में दो उग्रवादियों की मौजूदगी के बारे में विशिष्ट सूचना के आधार पर, सीमा सुरक्षा बल की 9वीं बटालियन की टुकड़ियों द्वारा 5 अगस्त, 2002 को गांव दुबगाम, जिला पुलवामा (जम्मू और कश्मीर) में एक अभियान चलाया गया। घेराबंदी के दौरान संदिग्ध व्यक्ति पकड़े गए और तलाशी अभियान से पता चला कि दो उग्रवादी, गुलाम हुसैन लोन नामक व्यक्ति के घर में छिपे हुए हैं। तदनुसार लक्षित मकानों के इर्द-गिर्द अंदरूनी और बाहरी तैराकियां चलाई गईं और उसके बाद सुव्यवस्थित रूप से उग्रवादियों की तलाश शुरू की गई। लक्षित मकान की तलाशी श्री ए.के. राय, सहायक कमांडेंट और हैड कांस्टेबल करण सिंह ने ली। जब हैड कांस्टेबल करण सिंह ने लक्षित मकान में धाक-पण्डर का दरवाजा खोला तो वहां छिपा एक उग्रवादी भारी गोलीबारी करते हुए बाहर कूदा। हैड कांस्टेबल करण सिंह इस अचानक घटना से भौंचके हो गए लेकिन उच्च कोटि का साहस दिखाते हुए, बिना धबराहट और अपने जीवन की सुरक्षा की परवाह न करते हुए उग्रवादी से भिड़ गए तथा हाथपाई में उग्रवादी को मार गिराया। दूसरे उग्रवादी को अचानक कार्रवाई में टुकड़ियों ने मार गिराया। मारे गए उग्रवादियों की पहचान निम्न रूप में की गई :-

- (i) शबीर अहमद मल्ला उर्फ अब्दु बकीर, पुत्र अकबर, निवासी चाकबद्रीनाथ, जिला पुलवामा (जम्मू और कश्मीर)
- (ii) आफताब भट्ट उर्फ साजद निवासी पाक अधिकृत कश्मीर।

इसके अतिरिक्त घटनास्थल से 2 ए.के. श्रेणी राइफलें, एक वायरलेस सैट और गोलाबारूद बरामद किया गया।

इस मुठभेड़ में, श्री करण सिंह, हैड कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस एवं उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

यह पदक, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4(i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिया जा रहा है तथा फलस्वरूप नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 5 अगस्त, 2002 से दिया जाएगा।

(बलरूप मित्रा)

(बलरूप मित्रा)

निदेशक

सं० 221 - प्रेज/2003-राष्ट्रपति, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के निम्नलिखित अधिकारी को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:-

अधिकारी का नाम और रैंक

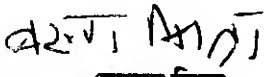
श्री रामवीर गुप्ता
निरीक्षक/जी.डी. 112वीं बटालियन,
केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए पदक प्रदान किया गया:

25.01.2001 को 1550 बजे, आवाग बाजार, लोकताक (मणिपुर) स्थित ई/112 के कम्पनी कार्मिक बालीबाल खेल रहे थे। सभी कम्पनियों और बटालियन का भण्डार ई/112 में रखा जाता है। सी.क्यू.एम.एच. और स्टोरमैन कांस्टेबल पी. सुब्बा भी वहीं रहते थे। 1550 बजे कांस्टेबल पी. सुब्बा स्टोर से बाहर आया और अचानक अपनी एस.एल.आर. से पहले स्टोर के सामने स्थित गार्ड रूम पर उसके बाद बालीबाल खेल रहे कार्मिकों पर और उसके बाद मुख्य द्वार के मोर्चा नं. 1 में सतरी पर गोलियां चलाई। कांस्टेबल पी. सुब्बा द्वारा इस अंधाधुंध गोलीबारी के कारण, सर्व/श्री वीरेन्द्र कुमार, ए.एस. महालिंगम, चमन लाल, शम्भू नाथ, सभी कांस्टेबल और हेड कांस्टेबल श्री शक्ति चन्द गम्भीर रूप से जखमी हो गए और शेष कार्मिकों को अपनी जान बचाने के लिए इधर-उधर भागना पड़ा। कांस्टेबल पी. सुब्बा, एल.एम.जी. के साथ कैम्प से भाग निकलने के ह्रादे से मोर्चा सं. 1 में उपलब्ध भरी हुई एल.एम.जी. और एल.एम.जी. मैगजीनों के भरे हुए बॉक्स को कब्जे में करने के लिए मोर्चा सं. 1 की तरफ बढ़ा या वह कुछ और जघन्य अपराध भी कर सकता था। लेकिन जैसे ही कांस्टेबल पी. सुब्बा ने मार्चा सं. 1 में घुसने की कोशिश की तो निरीक्षक रामवीर गुप्ता, जो मोर्चा सं. 1 के अंदर थे, ने एक हाथ से कांस्टेबल पी. सुब्बा को राइफल पकड़ी और दूसरे हाथ से उसकी गर्दन पकड़ ली तथा उसके बाद थोड़ी देर तक हाथापाई होने के बाद, निरीक्षक रामवीर गुप्ता कांस्टेबल पी. सुब्बा को दबोचने और उसे निशस्त्र करने में सफल हो गए। इसी बीच, अन्य कम्पनी कार्मिक भी निरीक्षक रामवीर गुप्ता के बचाव के लिए वहां पहुंच गए और कांस्टेबल पी. सुब्बा के कब्जे से 7.62 मी.मी. की 20 राउन्ड से भरी एस.एल.आर. की दो मैगजीनों के साथ एस.एल.आर. बरामद की। निरीक्षक रामवीर गुप्ता ने, कांस्टेबल पी. सुब्बा को दबोचने में उच्च कोटि का साहस और जिम्मेवारी तथा अत्यधिक वीरता का परिचय दिया और हिंसक हो गए जवान को निशस्त्र करके अपनी ही नहीं बल्कि कई अन्य कार्मिकों की जानें भी बचाई।

इस मुठभेड़ में, श्री रामवीर गुप्ता, निरीक्षक/जी.डी. ने अदम्य वीरता, साहस एवं उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

यह पदक, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4(i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिया जा रहा है तथा फलस्वरूप नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 25 जनवरी, 2001 से दिया जाएगा।


(बरूण मिश्रा)
निदेशक

सं0 222 - प्रेज/2003-राष्ट्रपति, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के निम्नलिखित अधिकारी को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:-

अधिकारी का नाम और रैंक

श्री संजय कुमार,

निरीक्षक, "एफ" कम्पनी,

32वीं बटालियन, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए पदक प्रदान किया गया:

25.02.2002 को तड़के "एफ" कम्पनी 32वीं बटालियन, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल, रक्तिया चरा, पश्चिम त्रिपुरा के निरीक्षक संजय कुमार को सूचना मिली कि ए.टी.टी.एफ. ग्रुप के एक कट्टर आतंकवादी को अन्य के साथ, पुलिस स्टेशन जिरानिया के अन्तर्गत गांव उडाई कोबरा पारा में देखा गया है। निरीक्षक संजय कुमार ने अपनी कम्पनी की दो प्लाटूनों के साथ घेराबंदी की और 0730 बजे से विशेष तलाशी अभियान चलाया। जब प्लाटून, लगभग 0730 बजे तलाशी अभियान चला रही थी तो तीन उग्रवादियों के एक ग्रुप ने अचानक नजदीक के जंगल से निरीक्षक संजय कुमार की प्लाटून पर स्वचालित हथियारों से गोलियां चलानी शुरू कर दी। जब कार्मिक जबाबी गोलीबारी कर रहे थे तो निरीक्षक संजय कुमार एक हैड कांस्टेबल और एक कांस्टेबल के साथ उग्रवादियों पर अचानक हमला करने के लिए एक किनारे से आगे बढ़े। लेकिन उग्रवादियों ने निरीक्षक संजय कुमार को अपनी तरफ आगे बढ़ते हुए देख लिया और निरीक्षक संजय कुमार की पार्टी पर हथगोला फैका और गोलियां चलाई। अनुकरणीय वीरता दिखाते हुए निरीक्षक संजय कुमार एक हैड कांस्टेबल के साथ उग्रवादियों के मोर्चे के नजदीक रंगते हुए चुपके-चुपके बढ़ने लगे। उग्रवादियों ने निरीक्षक संजय कुमार पर हताशा में और अधिक हथगोले फैके। निरीक्षक संजय कुमार ने घने जंगल की आड़ ली और गोलीबारी के बीच उग्रवादियों के मोर्चे के नजदीक सफलतापूर्वक पहुंच गए और उग्रवादियों पर कारगर गोलीबारी की जिसके परिणामस्वरूप एक उग्रवादी घटनास्थल पर ही मारा गया। अन्य दो उग्रवादी घने जंगल का फायदा उठाकर भागने में सफल हो गए। मारे गए उग्रवादी की पहचान बाद में सामपराई देबबर्मा उर्फ इब्राहिम देबबर्मा पुत्र गोवन्दि देबबर्मा, निवासी बिनोन कोबरा पारा, थाना जिरानिया पश्चिमी त्रिपुरा के रूप में हुई जिसके सिर पर त्रिपुरा सरकार ने एक लाख रु0 का इनाम घोषित कर रखा था। मुठभेड़ के स्थान से मारे गए उग्रवादी से एक चीन निर्मित हथगोला (सक्रिय) 230रु0.नगद, 7.62-ए.के. 47 के 6 खोल, दो फोटो, उग्रवादी/शास्त्र/गोलाबारुद के बारे में अभिशंसी सूचना वाली एक डायरी बरामद हुई।

इस मुठभेड़ में, श्री संजय कुमार, निरीक्षक ने अदम्य वीरता, साहस एवं उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

यह पदक, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4(i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिया जा रहा है तथा फलस्वरूप नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 25 फरवरी, 2002 से दिया जाएगा।

(बसुणा मित्रा)
निदेशक

सं0 223 - प्रेज/2003-राष्ट्रपति, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक/पुलिस पदक का बार सहर्ष प्रदान करते हैं:-

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

1. राजीव यादव, सहायक कमांडेंट (वीरता के लिए पुलिस पदक का बार)
2. रेवत सिंह, हैड कांस्टेबल, जी.डी.
3. संजय कुमार, कांस्टेबल

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए पदक प्रदान किया गया:

गांव जीरा तिरंग नयापारा, पुलिस स्टेशन धुधनोई, जिला गोलपाड़ा (असम) में 7 उल्फा उग्रवादियों के रुकने/छिपे होने के बारे में आसूचना रिपोर्ट के आधार पर 15.3.2001 को श्री राजीव यादव, सं./कमांडेंट की कमान में केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की 128वीं बटालियन के दो सेक्सन सिविल पुलिस के साथ विशेष अभियान चलाने के लिए उपर उल्लिखित गांव गए। उग्रवादी, श्री हरीश चन्द्र राभा, गांव जीरा तिरंग के मकान में छिपे हुए थे। गांव के बाहरी हिस्से में पहुंचने पर, लगभग 1100 बजे, पार्टी ने अपने वाहन पीछे छोड़ दिए और लगभग 4-5 किलोमीटर पैदल गए। श्री राजीव यादव, सं./कमांडेंट ने स्थिति का जायजा लेकर अपने दल को विभाजित किया। इन्होंने एक पार्टी को मकान की घेराबंदी करने और दूसरी को सर्जिकल हमला करने के लिए रखा। अचानक, मकान के अंदर छिपे उग्रवादियों ने दो दिशाओं से पार्टी पर भारी गोलीबारी की। स्थिति को भांपते हुए स. कमांडेंट राजीव यादव और सिविल पुलिस के उप निरीक्षकों ने दूसरी तरफ से हमला करने का निर्णय लिया और वे, हैड कांस्टेबल रेवत सिंह और कांस्टेबल संजय कुमार के साथ चतुराई से मकान के नजदीक गए ताकि उग्रवादी छिपने के स्थान से पास के घने जंगल से होकर भाग न जाएं। इसी समय, सहायक कमांडेंट राजीव यादव ने देखा कि दो उग्रवादी मकान से भागने की कोशिश में केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल पार्टी पर अपने स्वचालित हथियारों से गोलीबारी करते हुए बाहर आ रहे हैं। श्री यादव ने, अपने उपर हो रही भारी गोलीबारी की परवाह न करते हुए तत्काल कार्रवाई की। वे उग्रवादियों के नजदीक पहुंचे और उन दोनों को घटनास्थल पर ही मार गिराया। जब यह कार्रवाई चल रही थी तो मकान के कमरों के अंदर छिपे दूसरे उग्रवादी भारी गोलीबारी करते रहे। चूंकि बांस के झुंड, गोलियों को लक्षित निशाने तक जाने से रोक रहे थे, अतः कांस्टेबल संजय कुमार, जिनके पास एल.एम.जी. थी, उग्रवादियों द्वारा की जा रही भारी गोलीबारी के बीच अनुकरणीय साहस का प्रदर्शन करते हुए आगे बढ़े और इन्होंने उस मकान के नजदीक बेहतर पोजीशन सम्भाल ली। उन्होंने उस दिशा की ओर कारगर गोलीबारी की जहां से उग्रवादी भारी गोलीबारी कर रहे थे और तब तक गोलीबारी करते रहे जब तक कि उग्रवादियों ने गोलियां चलानी बंद नहीं कर दी। कुछ मिनटों तक इंतजार करने के बाद, संजय कुमार कमरे में गए जहां पर इन्होंने देखा कि तीन उग्रवादी अधुनातन हथियारों के साथ मरे पड़े हैं। इसी बीच, हैड कांस्टेबल रेवत सिंह ने मकान के दूसरे कमरे में एक उग्रवादी को देखा, जो आगे बढ़ रहे कार्मिकों पर बिना सोचे-समझे गोली चला रहा था। वे युक्तिपूर्ण तरीके से रेंगते हुए आगे बढ़े और खिड़की से अंदर कूदे और इससे पहले कि वह उग्रवादी कोई प्रतिक्रिया करता उसे निष्क्रिय कर दिया। इस अभियान के दौरान 6 उग्रवादियों को मार गिराने के अलावा, उनके कब्जे से 5 एके. -56 राइफलें, बड़ी मात्रा में गोलाबारूद के साथ 2 यू.एम.जी., और अभिशंसी दस्तावेज बरामद हुए। अभियान के दौरान मारे गए उग्रवादियों की पहचान बाद में, (1) प्रणव काकति (2) रजत राभा, (3) खगेन कालिता, (4) भागवान मेघी, (5) चितरंजन दास और (6) विल्व गोहेन, इ.एन.आई.जी.एम.ए. ग्रुप के उल्फासंवर्ग के कट्टर उग्रवादियों के रूप में हुई।

इस मुठभेड़ में, सर्व/श्री राजीव यादव, सहायक कमांडेंट रेवत सिंह, हैड कांस्टेबल/जी.डी. और संजय कुमार, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस एवं उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पदक, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4(i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष सेवा भी दिनांक 15 मार्च, 2001 से दिया जाएगा।

8201 अज्ञात
(बसुण मित्र)
निदेशक

सं० 224 - प्रेज/2003-राष्ट्रपति, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:-

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

1. वी.पी. सिंह, उप कमांडेंट, 51वीं बटालियन, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल
2. रिछपाल सिंह, कांस्टेबल, 51वीं बटालियन, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए पदक प्रदान किया गया:

पश्चिमी त्रिपुरा जिले के पुलिस स्टेशन विशालगढ़ क्षेत्र में केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की 51वीं बटालियन के कमांडेंट द्वारा 9.2.2002 को एक विशेष अभियान की योजना बनाई गई। श्री वी.पी. सिंह, उप कमांडेंट की कमान में केन्द्रीय रिजर्व पुलिस की 51वीं बटालियन की एक प्लाटून ने 9.2.2002 को 0900 बजे से गांव रंगमाला, हरमा और धारियाथाल के क्षेत्र में घेराबंदी और तलाशी अभियान शुरू किया। लगभग 1330 बजे प्लाटून गांव हरमा के नजदीक पहुंची और कुछ संदिग्ध मकानों की घेराबंदी करनी शुरू कर दी। सुरक्षा बलों को देखकर एक मकान से एक व्यक्ति ने जंगल की तरफ भागना शुरू कर दिया। भाग रहे व्यक्ति को देखकर श्री वी.पी. सिंह, उप कमांडेंट ने उसे ललकारा और उसका पीछा किया। भाग रहे व्यक्ति ने जब देखा कि उसका पीछा किया जा रहा है तो उसने श्री वी.पी. सिंह पर इथगोला फेंका। श्री वी.पी. सिंह ने मोर्चा सम्भाला और भाग रहे इस उग्रवादी पर गोली चलाई। इन्होंने उग्रवादी का पीछा करते समय इनके साथ चल रहे कांस्टेबल रिछपाल सिंह को दूसरी तरफ जाने का निदेश दिया जहां से वह उग्रवादी पर प्रभावी छंग से गोलीबारी कर सके। श्री रिछपाल सिंह भाग रहे उग्रवादी को रोकने के लिए तत्काल खेत के दूसरी तरफ गए। उग्रवादी ने कांस्टेबल रिछपाल सिंह को आते देख उन पर दूसरा इथगोला फेंका। कांस्टेबल रिछपाल सिंह अपनी जान को खतरे की परवाह न कर, रेंगते हुए उपयुक्त स्थान की तरफ गए और उग्रवादी को काबू में करने के लिए उस पर गोली चलाई। श्री रिछपाल सिंह ने गोलीबारी और इथगोलों के विस्फोट के बीच उसके भागने का रास्ता बंद कर दिया जिसके परिणामस्वरूप उग्रवादी भाग नहीं सका। श्री वी.पी. सिंह, उप कमांडेंट अपनी जान की परवाह न करते हुए उग्रवादी, जिसने अब तक मेंढ के पीछे मोर्चा सम्भाल लिया था, पर प्रभावी गोलीबारी करने के लिए मोर्चा सम्भालने के लिए रेंगते हुए आगे बढ़े। उग्रवादी ने श्री वी.पी. सिंह उप कमांडेंट पर पुनः गोली चलाई। वे गोलीबारी के दौरान और अपने जीवन को भारी खतरे के बावजूद, उपयुक्त आड़ लेने के लिए लुढ़कते हुए गए और अपनी ए.के. 47 राईफल से उग्रवादी पर गोली चलाई और उसे मार गिराने में सफल हुए। इसी बीच, दूसरे व्यक्ति ने गांव की तरफ भागना शुरू किया। श्री वी.एस. कृष्णा सहायक कमांडेंट, जो गांव की घेराबंदी कर रहे थे, ने उसे देख लिया और भाग रहे उग्रवादी का पीछा किया तथा उस पर गोली चलाए बिना उसे जीवित पकड़ लिया। विभिन्न दिशाओं को भागने की उग्रवादियों की यह युक्ति केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल को धोखा देने के लिए थी, ताकि एन.एल.एफ.टी. का एरिया कमांडर जंगल में भाग सके। तथापि, श्री वी.पी. सिंह, उप कमांडेंट और कांस्टेबल रिछपाल सिंह ने उग्रवादियों की योजना नाकाम कर दी और एक कट्टर उग्रवादी को मार गिराने और दूसरे को पकड़ने में सफल हुए। पकड़े गए व्यक्ति की पहचान रणजीत देबबर्मा उर्फ लोटानिस पुत्र धीरेन्द्र देबबर्मा, गांव हरमा, पुलिस स्टेशन विशालगढ़, जिल पश्चिमी त्रिपुरा, एन.एल.एफ.टी. के एक सूचीबद्ध उग्रवादी के रूप में हुई। मारे गए उग्रवादी की पहचान स्वयंभू "मेजर" बेन्जामिन हरनखवाल, एन.एल.एफ.टी. (नेशनल लिबरेशन फ्रंट आफ त्रिपुरा) का एरिया कमांडर के रूप में की गई। मारे गए उग्रवादी के शव से एक .32 रिवाल्वर (भारतीय आयुध फैक्ट्री निर्मित), तीन सक्रिय .32 राउन्ड,

एन.ईल.एफ.टी. के त्रिपुरा किंगडम की एक "टेक्स" उगाही की रसीद बुक और अन्य अभिशंसी दस्तावेज बरामद हुए। एकड़े गए उग्रवादी से बांग्लादेश की मुद्रा 1000 टका और 19000रु0 भारतीय मुद्रा बरामद हुई।

इस मुठभेड़ में, सर्व/श्री वी.पी. सिंह, उप कमांडेंट और रिष्णाल सिंह, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस एवं उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पदक, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4(i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 9 फरवरी, 2002 से दिया जाएगा।

अरुण मिश्रा

(बरूण मिश्रा)

निदेशक

s0 225 - प्रेज/2003-राष्ट्रपति, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए राष्ट्रपति का पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:-

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

1. सतनाम सिंह, हेड कांस्टेबल, 36वीं बटालियन, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल (मरणोपरांत)
2. वी.एम. त्रिपाठी, हेड कांस्टेबल, 36वीं बटालियन, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल (मरणोपरांत)

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए पदक प्रदान किया गया:

19.2.99 को लगभग 1700 बजे, श्री अजीत कुलश्रेष्ठ, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की 36वीं बटालियन के तत्कालीन कमांडेंट 3 कार्मिकों नामतः हेड कांस्टेबल सतनाम सिंह, हेड कांस्टेबल वी.एम. त्रिपाठी और लांसनायक माधव चन्द डिमरी के साथ, एरिया पेट्रोल पार्टी की जांच करने हेतु जी.ओ.मैस जिराबाम, मणिपुर (यूनिट मुख्यालय) से पैदल बाहर आए। श्री अजीत कुलश्रेष्ठ सिविल वर्दी में थे और वे अपने साथ इथियार भी नहीं लाए थे। जी.ओ.मैस से लगभग 300 मीटर दूर आने पर कमांडेंट ने अपनी यूनिट पेट्रोलिंग पार्टी की आकस्मिक जांच करने के लिए नजदीक स्थित ग्रेफ कैम्प की तरफ वापस जाने का निर्णय लिया। जब कमांडेंट की पार्टी लगभग 1730 बजे वापस मुड़ी तो उनके सामने से आधी बौंड़ी वाला एक लाल-पीला टाटा ट्रक गुजरा और रुक गया। अचानक सेना की वर्दी में 4/5 उग्रवादियों, जो ट्रक में छिपे हुए थे, ने केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल पार्टी पर अंधाधुंध गोलियां चलानी शुरू कर दी। हेड कांस्टेबल वी.एम. त्रिपाठी और लांसनायक एम.सी. डिमरी, कमांडेंट के आगे क्रमशः दाहिनी और बायीं तरफ थे और हेड कांस्टेबल सतनाम सिंह, कमांडेंट के पीछे थोड़ी दाहिनी ओर थे और ट्रक के बहुत नजदीक थे। हेड कांस्टेबल वी.एम. त्रिपाठी और हेड कांस्टेबल सतनाम सिंह ने अपनी जान की परवाह न करते हुए प्रभावी ढंग से गोलियों का जबाब दिया। लांसनायक एम.सी. डिमरी, जो कमांडेंट के आगे और बायीं तरफ थे, ने नजदीक ही सुरक्षित मोर्चा सम्भाला और उग्रवादियों के विरुद्ध मुठभेड़ में मदद की। जिसके परिणामस्वरूप दो उग्रवादी मारे गए और शेष उग्रवादियों को मारे गए उग्रवादियों के शव को छोड़ वापस हटने और घटनास्थल को छोड़ने पर मजबूर होना पड़ा। इस मुठभेड़ में, हेड कांस्टेबल सतनाम सिंह और हेड कांस्टेबल त्रिपाठी जिन्होंने कमांडेंट को बौंड़ी कवर प्रदान की हुई थी, उग्रवादियों द्वारा की गई भारी और अंधाधुंध गोलीबारी से गंभीर रूप से जखमी हो गए और अपना जीवन न्यौछावर कर दिया, जिससे कमांडेंट श्री अजीत कुलश्रेष्ठ की जान बच गई।

इस मुठभेड़ में, (दिवंगत) सर्व/श्री सतनाम सिंह, हेड कांस्टेबल और वी.एम. त्रिपाठी, हेड कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस एवं उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पदक, राष्ट्रपति का पुलिस पदक नियमावली के नियम 4(i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 19 फरवरी, 1999 से दिया जाएगा।

अरुण मिश्रा

(बरूण मिश्रा)

निदेशक

स0 226 - प्रेज/2003-राष्ट्रपति, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:-

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

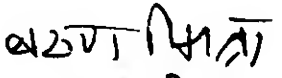
1. बी.एस. नेगी, उप निरीक्षक (अब निरीक्षक), 122वीं बटालियन, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल
2. हरीश चन्द्र रामचन्द्र जाधव, कांस्टेबल, 122वीं बटालियन, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए पदक प्रदान किया गया:

गांव इचवुटे (बडगाम) में दो केंद्र उग्रवादियों की मौजूदगी के बारे में एस.ओ.जी. बडगाम से प्राप्त सूचना पर पुलिस अधीक्षक (आपरेशन) बडगाम के पूर्ण पर्यवेक्षण में एस.ओ.जी. बडगाम, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की 47वीं बटालियन, 122वीं बटालियन और 35 आर.आर. की टुकड़ियों में 8.9.2001 को एक संयुक्त अभियान चलाया। अंदरूनी घेरा डालने का कार्य एस.ओ.जी. और केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की टुकड़ियों और बाहरी घेरा डालने की जिम्मेवारी 35 आर.आर. की टुकड़ियों को दी गई। जब घेरा डालने वाली पार्टियों मोर्चा सम्भालने के लिए आगे बढ़ रही थी तो उग्रवादियों ने अंदरूनी घेरे पर अंधाधुंध गोलियां चलाई और इससे पहले कि बेल घेराबंदी पूरी कर लेते और रक्षात्मक मोर्चा सम्भालते, उग्रवादियों ने हथगोले फेंकने शुरू कर दिए। अघूरे, बाहरी और अंदरूनी घेरे का फायदा उठाकर एक उग्रवादी ने पास के नाले और मैदान से भागने की कोशिश की। दूसरे उग्रवादी ने उसे गोलीबारी करके ओड़ उपलब्ध कराई। केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की टुकड़ियों ने भी भाग रहे उग्रवादी पर गोलियां चलाई लेकिन उबड़-खाबड़ भू-क्षेत्र के कारण गोलीबारी प्रभावी नहीं रही। इसी समय उप निरीक्षक/जौ.डी. बी.एस. नेगी और कांस्टेबल/सी.डी. हरीशचन्द्र रामचन्द्र जाधव ने अदम्य साहस का परिचय दिया और भारी गोलीबारी की और दोनों उग्रवादियों द्वारा हथगोलों की बौछार के बीच लगभग 100 मीटर तक उग्रवादी का पीछा किया। इन्होंने एक उग्रवादी नामतः अब्दु खालिद को मार गिराया। बाद की कार्रवाई में, टुकड़ियों ने दूसरे उग्रवादी नामतः अब्दु इनीश को भी मार गिराया। दोनों उग्रवादी एल.ई.टी. के फिदायीन दस्ते से संबंधित और विदेशी उग्रवादी थे।

इस मुठभेड़ में, सर्व/श्री बी.एस. नेगी, उप निरीक्षक और हरीश चन्द्र रामचन्द्र जाधव, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस एवं उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पदक, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4(i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 8 सितम्बर, 2001 से दिया जाएगा।


(बसुण मित्रा)
निदेशक

सं० 227 - प्रेज/2003-राष्ट्रपति, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के निम्नलिखित अधिकारी को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:-

अधिकारी का नाम और रैंक

श्री बलदेव सिंह,
कान्सटेबल/ब्यूगलर, 22वीं बटालियन

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए पदक प्रदान किया गया:

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की ए/22वीं बटालियन के कान्सटेबल मुस्ताक अहमद, जम्मू और कश्मीर के एक आत्मसमर्पित आतंकवादी को, पुनर्वास संबंधी गृह मंत्रालय की विशेष स्कीम के तहत केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल में भर्ती किया गया था। कान्सटेबल मुस्ताक अहमद और शरथीबाडी गांव की एक असमी लड़की को आपस में प्यार हो गया और उन्होंने न्यायालय में शादी करने का निर्णय लिया। शादी करने की अपनी इच्छा के बारे में वह अपने कम्पनी कमान्डर श्री एस०एन० तिवारी, सहायक कमान्डेन्ट को सूचित करने के लिए उनके समक्ष पेश हुए। चूंकि इस शादी से विवाद और तनाव उत्पन्न होने की सम्भावना थी अतः श्री तिवारी ने सुझाव दिया कि कान्सटेबल को जल्दबाजी में कोई निर्णय नहीं लेना चाहिए और उसे अपने अभिभावकों से सलाह मशविरा कर लेना चाहिए जिसके लिए उन्होंने उसे छुट्टी पर जाने के लिए कहा। कम्पनी कमान्डर की सलाह से चिन्तित कान्सटेबल मुस्ताक अहमद अपनी राइफल और गोला बारूद जमा करने के लिए शस्त्रागार गया और शस्त्रागार एन.सी.ओ. से शस्त्र/गोला बारूद प्राप्त करने की रसीद जारी करने के लिए कहा। शस्त्रागार एन०सी०ओ० ने प्राप्ति रसीद देने से मना कर दिया क्योंकि शस्त्रों इत्यादि को जमा करने के बारे में प्रविष्टि केवल शस्त्रागार-इन-आऊट रजिस्टर में ही की जाती है। इस पर कान्सटेबल मुस्ताक अहमद पुलिस स्टेशन शरथीबाडी में अपने शस्त्र और गोला बारूद जमा कराने की मंशा से कम्पनी से चल पड़ा। कान्सटेबल मुस्ताक को शस्त्रों और गोला बारूद के साथ अकेले जाते देख डैड-कान्सटेबल शिव लाल और कान्सटेबल ब्यूगलर बलदेव सिंह ने पुलिस स्टेशन तक उसका पीछा किया और उसे समझाने और निराश्रय करने की कोशिश की। डैड-कान्सटेबल शिवलाल लिखित रसीद देने पर राजी हो गया यदि मुस्ताक अहमद अपने शस्त्र और गोला बारूद उसे सुपुर्द कर दे। उस समय श्री एस०एन० तिवारी, सहायक कमान्डेन्ट भी पुलिस स्टेशन पहुंच गए जिससे कान्सटेबल मुस्ताक अहमद बिगड़ गया और उसने तत्काल ग्रेनेड की सेफ्टी-पिन हटाई और उसे मेज पर फेंक दिया। खतरे को भांपते हुए, नजदीक खड़े कान्सटेबल ब्यूगलर बलदेव सिंह, ने कमरे में मौजूद केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल/असम पुलिस कार्मिकों की जान बचाने के लिए अदम्य साहस और कर्तव्यपरायणता का परिचय देते हुए तत्काल कार्रवाई की। अपनी जान को गम्भीर खतरे की परवाह न करते हुए कान्सटेबल बलदेव सिंह ने हथगोला उठाया और उसे कमरे से बाहर फेंकने की कोशिश की। दुर्भाग्य से हथगोला उनके हाथ में ही फट गया जिसके परिणामस्वरूप उनकी दाहिनी कलाई से उपर का हाथ उड़ गया और उनकी जांघ और पेट में भी किरचों से जख्म हो गए। इस प्रकार से सूझबूझ, अदम्य साहस और कर्तव्यपरायणता का परिचय देते हुए और अपने जीवन की परवाह न करते हुए उन्होंने कमरे में मौजूद कई व्यक्तियों की जान बचाई।

इस कार्रवाई में, श्री बलदेव सिंह, कान्सटेबल ने अदम्य वीरता, साहस एवं उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

यह पदक, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4(i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिया जा रहा है तथा फलस्वरूप नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 28 जुलाई, 2001 से दिया जाएगा।

02-01-11
(बरुण मित्रा)
निदेशक

सं० 228 - प्रेज/2003-राष्ट्रपति, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:-

अधिकारी का नाम और रैंक

सर्व/श्री

1. काबुली चरण मेहरी, लांस नायक (अब हैड कान्सटेबल)
2. रविन्द्र सिंह चौहान, कान्सटेबल, 41वीं बटालियन, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए पदक प्रदान किया गया:

30.11.2000 को सिविलियनों को सोन्डर से पट्टीमहल ले जाते हुए केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल पार्टी पर उग्रवादियों ने गोलीबारी की, कान्सटेबल रविन्द्र सिंह चौहान ने देखा कि तीन उग्रवादी नदी के उस पार घनी झाड़ियों से गोलियां चला रहे हैं। इस पर इन्होंने संदिग्ध स्थान पर अपनी एल.एम.जी. से तत्काल गोलियां चलाई, उग्रवादियों ने अंधाधुंध गोलियां चलाते हुए भागने की कोशिश की। उनमें से एक भाग गया जबकि अन्य दो ने पास के नाले में मोर्चा सम्भाल लिया। एक वीरतापूर्ण प्रयास में कान्सटेबल रविन्द्र सिंह चौहान और लांसनायक काबुलीचरण मेहरी अपने इथियारों के साथ 300 फुट तक लुढ़कते हुए गए और एक छोटे झूला पुल के पार उग्रवादियों के छिपने के ठिकाने के नजदीक रंगते हुए गए। कान्सटेबल रविन्द्र सिंह चौहान एल0एम0जी0 के साथ नाले के एक सिरे पर गए जबकि लांसनायक काबुली चरण मेहरी भारी गोलीबारी के बीच झुक कर नाले के दूसरे हिस्से पर मोर्चा सम्भाला। ललकाने पर उग्रवादी अंधाधुंध गोलीबारी करते हुए चिनाब नदी के उत्तर भाग, जहां पर कान्सटेबल रविन्द्र सिंह चौहान पहले ही मोर्चा सम्भाले हुए थे। इन्होंने अपनी एल0एम0जी0 से गोलीबारी कर दी और एक उग्रवादी को घटनास्थल पर ही मार गिराया और दूसरे को जख्मी कर दिया। भारी उग्रवादी की पहचान बाद में अब्दु-वालिद, एक पाकिस्तानी राष्ट्रिक और लश्कर-ए-तैयब्बा के जिला कमान्डर के रूप में हुई। इस वीरतापूर्ण कार्रवाई के स्थान से निम्नलिखित शस्त्र/गोलाबारुद बरामद हुआ:-

ए.के.-47 (1), मैगजीन (4), यूटिलिटी पाऊच (1) 7.62 X 39 एम0एम0 राउन्द (75), काम्बिनेशन टूल (1), ग्रेनेड (1), वायरलेस सेट (यासू) (1)।

इस मुठभेड़ में, सर्व/श्री काबुली चरण मेहरी, लांस नायक और रविन्द्र सिंह चौहान, कान्सटेबल ने अत्यंत वीरता, साहस एवं उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पदक, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4(i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 30 नवम्बर, 2000 से दिया जाएगा।

वज्र मित्रा
(बरूण मित्रा)
निदेशक

सं० 229 - प्रेज/2003-राष्ट्रपति, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के निम्नलिखित अधिकारी को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:-

अधिकारी का नाम और रैंक

श्री सुनील हजारा,
कान्सटेबल, 79वीं बटालियन

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए पदक प्रदान किया गया:

19.5.2002 को सूर्योदय से पहले लगभग 0330 बजे, 2-3 फिदायीन उग्रवादियों ने पुलिस स्टेशन माहोर, जिला उधमपुर (जम्मू और कश्मीर) के तहत गांव चासाना में सेना और केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल (बी/79) के एक संयुक्त शिविर पर अचानक हमला किया। उन्होंने पिछवाड़े में तैनात कान्सटेबल सूरजा बाली राय पर अचानक गोलियों की बौछार करके उसे मार गिराया। एक फिदायीन उग्रवादी ने खिड़की से रिहायशी बैक में इथगोला फेंका, जिससे केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल बी/79 बटालियन के 6 कार्मिक जख्मी हो गए। उग्रवादियों ने सेना पर भी भारी गोलीबारी की, जिसमें सेना के 3 जवानों की ग्रेनेड विस्फोट में तत्काल मृत्यु हो गई। सेना द्वारा दागे गए कुछ पेरा बमों की खोज में केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल सन्तरी कान्सटेबल प्रीतम सिंह, जो एल0एम0जी0 चौकी पर तैनात था, ने देखा कि एक उग्रवादी केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के शिविर की तरफ भाग रहा है। उसने अपनी एल0एम0जी0 से गोलियां चलाईं। तथापि, उग्रवादी सड़क के किनारे रिज पर नीचे कूदने में कामयाब हो गया। लगभग 0400 बजे गोलीबारी रुकी। इसी बीच, सेना से इस बात की पुष्टि करके कि एक फिदायीन सेना के शिविर के किनारे से भाग गया है, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल बी/79 के एक सक्षम सेक्शन ने शिविर के हर्ड-गिर्द, सूरज निकलते ही तलाशी अभियान शुरू कर दिया। भाग रहे एक उग्रवादी, जिसने शिविर से कुछ दूरी पर आड़ ले रखी थी, ने केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल, बी/79 बटालियन की तलाशी पार्टी पर गोलियां चला दीं। टुकड़ियों ने, फिदायीन का पता लगाने के लिए तत्काल मोर्चा सम्भाल लिया। इसी बीच, 79 बटालियन के कान्सटेबल सुनील हजारा, जो तलाशी पार्टी में थे, ने फिदायीन की गतिविधि को देख लिया और अदम्य साहस दिखाते हुए और अपनी जान की परवाह न करते हुए, छिपे हुए उग्रवादी तक गए और उस पर नजदीक से गोली चलाई, जिसके परिणामस्वरूप एक फिदायीन घटनास्थल पर ही मारा गया। इस कार्रवाई के दौरान, कान्सटेबल सुनील हजारा, फिदायीन की गोली की बौछार से बाल-बाल बचे, क्योंकि वह तलाशी पार्टी में आगे थे। मारे गए उग्रवादी के कब्जे से एक ए.के. 47 राइफल, राऊन्ड 99, और इथगोले-2, वायरलैस सैट-1, हाथ की घड़ी-1 और 1100 रु० नगद बरामद हुए।

इस मुठभेड़ में, श्री सुनील हजारा, कान्सटेबल ने अदम्य वीरता, साहस एवं उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

यह पदक, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4(i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिया जा रहा है तथा फलस्वरूप नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 19 मई, 2002 से दिया जाएगा।

(बलराम मित्रा)
निदेशक

सं० 230 - प्रैज/2003-राष्ट्रपति, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के निम्नलिखित अधिकारी को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:-

अधिकारी का नाम और रैंक

श्री आर.के. गुप्ता
सहायक कमान्डेन्ट

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए पदक प्रदान किया गया:

पुलिस स्टेशन बानी के अन्तर्गत सरथाल/राऊलका के उपरी भागों में उग्रवादियों की गतिविधियों के बारे में सिविल सूत्रों से एकत्र आसूचना के आधार पर, उग्रवादियों को पकड़ने के लिए 18.05.2002 को एक अभियान की योजना बनाई गई। श्री आर.के. गुप्ता, सहायक कमान्डेन्ट, खाडवा स्थित ओ.सी.डी/39 बटालियन, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल और केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल डी/39 बटालियन की दो प्लाटूनों सहित लोवांग/राऊलका सीमा चौकी के एस०टी०एफ० कार्मिकों, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल बी/39 बटालियन की एक टुकड़ी और पुलिस स्टेशन बानी के एक सेक्सन, ने उग्रवादियों को पकड़ने के लिए एक अभियान चलाया। जब ये पार्टियाँ लक्षित स्थान की तरफ जा रही थी तो एस०टी०एफ० पार्टी राऊलका ने गौगला के नजदीक कुछ इलचल देखी, ललकारने पर, उग्रवादियों ने गोलियाँ चलाई और उसके बाद मुठभेड़ हुई। श्री आर.के. गुप्ता, सहायक कमान्डेन्ट, ओ.सी. डी/39 बटालियन, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल ने अभियान का नियंत्रण अपने हाथ में लिया और टुकड़ियों को, क्षेत्र को सभी दिशाओं से घेरने का आदेश दिया। चूंकि वह क्षेत्र घनी घास/झाड़ियों से ढका हुआ था, इसलिए कोई दिख नहीं रहा था तथापि दोनों तरफ से गोलीबारी होती रही। सुझ-बुझ दिखाते हुए श्री आर.के. गुप्ता ने उग्रवादियों की दिशा में हथगोले फेंकने और साथ ही साथ गोलीबारी करने का आदेश दिया। एक घंटे बाद उग्रवादियों की तरफ से गोलीबारी बंद होने के बाद, श्री आर.के. गुप्ता, सहायक कमान्डेन्ट के नेतृत्व में एक तलाशी पार्टी ने क्षेत्र की तलाशी ली जहां, कुछ दूरी पर नाले की तरफ जाते हुए खून के घब्बे दिखाई दिए। श्री गुप्ता अपनी पार्टी के साथ रेंगते हुए चुपके से नाले की तरफ गए और एक बड़े शिलाखंड के पीछे छिपे एक उग्रवादी का पता लगाया। टुकड़ियों को आते देख, छिपे हुए उग्रवादी ने, श्री गुप्ता के नेतृत्व वाली पार्टी पर गोलियाँ चलाई, श्री गुप्ता बाल-बाल बच गए। श्री गुप्ता ने तत्काल मोर्चा सम्माला और अपनी ए.के. 47 राइफल से गोली चलाकर उग्रवादी को तत्काल मार गिराया। मारे गए उग्रवादी की पहचान बाद में, मो० अयाज भट्ट उर्फ खुश नसीब उर्फ परदेशी पुत्र दीन मोहम्मद, जिला कटुआ, (जम्मू और कश्मीर), डिजाब-उल-मुज्जाहिदीन गुट के बटालियन कमान्डर के रूप में की गई। मारे गए उग्रवादी से एक - ए.के. 47 राइफल, 4 ए.के. 47 मैगजीन, 16 ए.के. - 47 राउन्ड और 360 रु० नगद बरामद हुए।

इस मुठभेड़ में, श्री आर.के. गुप्ता, सहायक कमान्डेन्ट ने अदम्य वीरता, साहस एवं उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

यह पदक, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4(i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिया जा रहा है तथा फलस्वरूप नियम 5 के अंतर्गत स्वोकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 18 मई, 2002 से दिया जाएगा।

(अ.र. गुप्ता)
(वरुण मित्रा)
निदेशक

सं० 231 - प्रेज/2003-राष्ट्रपति, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए राष्ट्रपति का पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:-

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

1. जोगिन्दर सिंह, उप निरीक्षक/जी.डी. (मरणोपरांत)
2. नेत राम, हैड-कान्स्टेबल/जी.डी. (मरणोपरांत)

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए पदक प्रदान किया गया:

16.02.1998 को संसदीय चुनाव कार्य के लिए केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल बी/98 की तीन प्लाटून को तैनात किया गया था। उप-निरीक्षक/जी.डी. जोगिन्दर सिंह के नेतृत्व में बी/98 की एक प्लाटून ने 0730 बजे कम्पनी मुख्यालय लामफेलपट से कूच किया और पोरामपट में पुलिस अधीक्षक इम्फाल को रिपोर्ट किया। कान्वाई, एम.आर. बटालियन के साथ इरिलबर्ग के लिए गई। उप-निरीक्षक/जी.डी. जोगिन्दर सिंह, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल प्लाटून के पार्टी कमान्डर थे और हैड-कान्स्टेबल/जी.डी. नेतराम प्लाटून कमान्डर थे। उप निरीक्षक/जी.डी. जोगिन्दर सिंह ने, संचलन के बारे में अपने कार्मिकों को उपयुक्त रूप से समझाने के बाद, एक सिविल ट्रक के केबिन में मोर्चा सम्भाला। हैड-कान्स्टेबल/जी.डी. नेतराम, जिनके पास 21 एच.ई. बमों और 6 पैरा बमों के साथ 2" मोर्टार थे, ने कान्वाई के पीछे, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के ट्रक में टुकड़ियों के साथ मोर्चा सम्भाल लिया। जैसे ही कान्वाई इरिलबंग पुल के नजदीक पहुंची, 7 एम.आर. के सभी वाहनों ने पुल पार कर लिया और केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की कान्वाई को पीछे छोड़ तेज गति से आगे चले गए। जब केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की कान्वाई/वाहन पुल पार करने ही वाले थे कि तीनो वाहन, लगभग 30 पी.एल.ए. उग्रवादियों द्वारा लगाई गई घात में फंस गए। उन्होंने केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की कान्वाई पर भारी गोलीबारी की। केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल कार्मिकों ने तुरन्त जबाबी कार्रवाई की और लगभग 30-40 मिनट तक गोलीबारी होती रही। कान्वाई अर्थात् 7 एम.आर. बटालियन की प्लाटून के अन्य कार्मिकों, जो घात के स्थान से लगभग 1 किलोमीटर आगे थे, ने तत्काल इमला करने की कार्रवाई नहीं की हालांकि वे बाद में घटनास्थल पर पहुंच गए थे। जैसे ही गोलीबारी शुरू हुई, उप निरीक्षक/जी.डी. जोगिन्दर सिंह ने अपने कार्मिकों को वाहन से बाहर कूदने, मोर्चा सम्भालने और जबाबी कार्रवाई करने का आदेश दिया और वे स्वयं बाहर कूदे, मोर्चा सम्भाला और अपनी ए.के. 47 राइफल से उग्रवादियों का मुकाबला किया। गोलीबारी के दौरान गोली लगने से उनके अनेक जख्म हो गए, लेकिन जख्मी होने के बावजूद, वे उग्रवादियों पर गोलियां चलाते रहे और साथ ही साथ, यह कहकर अपने कार्मिकों को प्रोत्साहित करते रहे कि हिम्मत नहीं हारना, गोलीबारी जारी रखो, कोई न कोई मदद करने आएगा। गम्भीर रूप से जख्मी हो जाने के बावजूद, वे जबाबी हमले के दौरान अपने कार्मिकों को प्रोत्साहित करते रहे। घात/प्रतिघात के दौरान, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस के 8 कार्मिक मारे गए, 16 जख्मी हुए और केवल 3 सही सलामत बच पाए। उप निरीक्षक/जी.डी. जोगिन्दर सिंह द्वारा की गई जबाबी गोलीबारी में एक उग्रवादी मारा गया और अन्य वहां से भाग गए, इस प्रकार से केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल कार्मिकों से हथियार छीनने का उग्रवादियों का प्रयास विफल हो गया। बाद में उप निरीक्षक/जी.डी. जोगिन्दर सिंह ने जख्मों के कारण दम तोड़ दिया। जब उग्रवादियों ने गोलियां चलानी शुरू की तो हैड कान्स्टेबल/जी.डी. नेतराम, जो पीछे के ट्रक में बैठे थे, भी वाहन से बाहर कूद पड़े, अत्यधिक सूझ-बूझ का परिचय देते हुए मोर्चा सम्भाला और अपनी 2" मोर्टार से एच.ई. बम से उग्रवादियों पर फायर किया। दुर्भाग्यवश कुछ बम नहीं फटे। हैड-कान्स्टेबल/जी.डी. नेतराम ने यह महसूस करने पर कि 2" मोर्टार का प्रयोग बेकार है, वे रंगते हुए नजदीक पड़े एक जख्मी व्यक्ति के पास पहुंचे और उसका हथियार उठाकर उग्रवादियों की गोलीबारी का जवाब दिया और उग्रवादियों की आगे बढ़ने की गति को धीमा किया, जो केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के घायल कार्मिकों को मारने और उनके हथियार छीनने की मंशा से पहाड़ी ढलान से नीचे आने की कोशिश कर रहे थे। इस गोलीबारी में उन्हें भी अनेक जख्म हुए और बाद में जख्मों के कारण उन्होंने भी दम तोड़ दिया।

हस मुठभेड़ में, (दियगत) सर्व/श्री जोगिन्दर सिंह, उप निरीक्षक और नेतराम हैड-कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस एवं उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पदक, राष्ट्रपति का पुलिस पदक नियमावली के नियम 4(i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 15 फरवरी, 1998 से दिया जाएगा।

(बंरूप मित्रा)
निदेशक

सं० 232 - प्रेज/2003-राष्ट्रपति, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:-

अधिकारियों के नाम और रैंक

- | | |
|----|-------------------------------|
| | सर्व/श्री |
| 1. | पी.ए. दूबे, सहायक कमान्डेन्ट |
| 2. | निशार अहमद, कान्स्टेबल/जी.डी. |
| 3. | विनय कुमार, कान्स्टेबल/जी.डी. |

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए पदक प्रदान किया गया:

20.01.02 को लगभग 0330 बजे सिविल पुलिस से सूचना मिली कि उल्फा उग्रवादियों के एक ग्रुप ने गांव तोली भाग-II, पुलिस स्टेशन गोलकगंज (असम) में मो० अकबर अली अहमद के मकान में शरण ले रखी है। श्री पी०ए० दूबे, सहायक कमान्डेन्ट की कमान में, असम पुलिस की एक टुकड़ी के साथ, सी./24 की एक प्लाटून और मुख्यालय/केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की 24 बटालियन का एक सेक्सन विशेष अभियान चलाने के लिए तत्काल गांव तोली के लिए रवाना हुआ, जब यह ग्रुप उस मकान के नजदीक पहुंचा तो कान्स्टेबल विनय कुमार ने देखा कि एक व्यक्ति मकान के अन्दर खड़ा है। तत्काल पर उस व्यक्ति ने, जो उग्रवादी था, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल पर तुरंत गोलियां चलाई। कान्स्टेबल, विनय कुमार और निशार अहमद ने द्रुत गति से जबाब दिया और अपनी जान को खतरे में डालकर, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के दोनों कान्स्टेबलों ने उग्रवादी को मार गिराया। अन्दर बैठा उग्रवादी सतर्क हो गया और उसने केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल पार्टी पर भारी अन्धाधुंध और जबरदस्त गोलीबारी की। उसने उनके ऊपर हथगोले भी फेंके। केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के कार्मिकों ने अपनी जान की परवाह न करते हुए बहादुरी से जबाबी कर्तव्य की। लगभग आठ घंटे तक गोलीबारी हुई। इस मुठभेड़ में केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के कार्मिकों ने मकान से उनके ऊपर गोली चला रहे उग्रवादी को, इससे पहले कि वह कोई नुकसान करता, मार गिराया। भीषण गोलीबारी के बाद जब गोलीबारी बंद हो गई तो श्री पी.ए. दूबे, सहायक कमान्डेन्ट के आदेश पर केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की एक पार्टी ने तलाशी ली। इस दौरान एक उग्रवादी केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के कमान्डेन्ट को मार गिराने और भागने के प्रयास में अपने हथियार से केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल पार्टी पर गोलियां चलाते हुए अचानक बाहर आया। उसे कामयाबी नहीं मिली क्योंकि श्री पी.ए. दूबे, सहायक कमान्डेन्ट ने अत्यधिक साहस और सतर्कता दिखाते हुए आगे-सामने की लड़ाई में उग्रवादी को मार गिराया, इस प्रकार से पूरे उग्रवादी ग्रुप को उनके छिपने के ठिकाने पर ही समाप्त कर दिया। इस मुठभेड़ में, टुकड़ियों को कोई नुकसान पहुंचे बगैर कुल चार कट्टर उल्फा उग्रवादी मारे गए। बाद में तलाशी के दौरान एक ए.के. 56 राइफल, खाली कारतूस के साथ एक चीन निर्मित पिस्तौल, एक कारतूस शैट (सिंगापुर निर्मित) इटिना के साथ, काफी संख्या में सक्रिय कारतूस बरामद हुए। अभियान में मारे गए उग्रवादियों की पहचान बाद में (1) दिपेन डेका, (2) जगत नाथ (3) रजनी दास, (4) प्रसम नाथ के रूप में हुई।

इस मुठभेड़ में, सर्व/श्री पी.ए. दूबे, सहायक कमान्डेन्ट, निशार अहमद, कान्स्टेबल और विनय कुमार, कान्स्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस एवं उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पदक, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4(i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 20 जनवरी, 2002 से दिया जाएगा।

(बंरूप मित्रा)
निदेशक

सं० 233 - प्रेज/2003-राष्ट्रपति, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:-

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

1. मोहम्मद कलामुद्दीन, लांसनायक (अब हैड कान्सटेबल) 119वीं बटालियन
2. महेश सिंह, कान्सटेबल, 119वीं बटालियन

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए पदक प्रदान किया गया:

12.02.2001 को लगभग 1940 बजे लांसनायक मोहम्मद कलामुद्दीन शिविर के अन्दर गश्त ड्यूटी पर थे। उस समय कुछ फियादीन उग्रवादियों ने केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल कैम्प की बी/119वीं बटालियन पर हमला किया। उन्होंने हथगोले फेंके, राकेट दागे और उसके बाद भारी गोलीबारी की। लांसनायक कलामुद्दीन तुरन्त छत की चार दिवारी पर गए और हमले का जबाब दिया। हालांकि, मुठभेड़ के दौरान वे गोली लगने से जख्मी हो गए थे लेकिन इन्होंने संयम नहीं खोया और शिविर के अन्दर घुसने की कोशिश कर रहे फियादीन को मार गिराया। कान्सटेबल, महेश सिंह, जो मोर्चा सं० 8 पर सन्तरी ड्यूटी पर थे, ने तत्काल उग्रवादियों की गोलियों का जबाब दिया। जब इन्होंने पाया कि उग्रवादियों पर कारगर गोलीबारी करना कुछ कठिन है तो वे अपनी एल.एम.जी. के साथ मोर्चे से बाहर आए और प्रभावी जबाबी गोलीबारी की। जख्मी होने के बावजूद इन्होंने संयम नहीं खोया और उस फियादीन, जो शिविर में बी/119 के कार्मिकों को भारी नुकसान पहुंचाने के नापाक इरादे से शिविर के अन्दर घुसने की कोशिश कर रहा था, को मार गिराया। इन्होंने अपनी एल.एम.जी. से 79 राऊन्ड चलाए।

इस मुठभेड़ में, सर्व/श्री मो० कलामुद्दीन, लांसनायक (अब हैड कान्सटेबल) और महेश सिंह, कान्सटेबल ने अदम्य वीरता, साहस एवं उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पदक, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4(i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिये जा रहे हैं तथा फलस्वरूप नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 12 फरवरी, 2001 से दिया जाएगा।

महेश सिंह
(धरुण सिंह)
निदेशक

प्र. 114 - प्रेज/2003-राष्ट्रपति, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक प्रदान करते हैं:-

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

1. ए.के. बाजपेयी, उप-कमान्डेन्ट
2. नारायण सिंह, उप निरीक्षक

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए पदक प्रदान किया गया:

16 जनवरी, 2001 को एल.ई.टी. के 6 फिदायीन उग्रवादियों ने सेना की घर्दी में, राज्य वन विभाग की एक महिन्द्रा जीप में जिसे उसी दिन ही अपहृत किया गया था, स्वयं को मंत्री की एस्कोर्ट पार्टी का दिखावा करते हुए, हवाई अड्डे को जाते समय श्री अली मो० सागर, मंत्री, लोक निर्माण विभाग, जम्मू और कश्मीर के काफिले का पीछा किया। उन्होंने, अपने आपको मंत्री की एस्कोर्ट जताते हुए सिविल पुलिस नाका को भी धोखा दे दिया। सिविल पुलिस नाका को पार करने के बाद ये उग्रवादी तेजी से गेट सं० 1 पर गए, जहां पर उप निरीक्षक नारायण सिंह पोस्ट कमान्डर ने उन्हें रोका, क्योंकि इस स्थान से आगे हथियार ले जाने की सख्त मनाही थी। ये उग्रवादी तत्काल अपनी जीप से उतरे, ड्यूटी पर तैनात संतरी पर इथगोले फेंकने शुरू कर दिए और हवाई अड्डे के अन्दर घुसने के लिए अंधाधुंध गोलियां चलाई। केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के सन्तरीयों ने तत्काल मोर्चा सम्भाला और जबाबी कार्रवाई की। महानिरीक्षक (आपरेशन) केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल, श्रीनगर, जो सेनावर जा रहे थे को जब गेट सं० 1 पर फिदायीन हमले की सूचना मिली तो वे तुरन्त भाग कर घटनास्थल पर पहुंचे और आपरेशन की कमान सम्भाली। हवाई अड्डे पर गेट सं० 1 पर ड्यूटी कर रहे कान्सटेबल एस.के. कुशवाहा ने गोलियों का जवाब दिया और अपने मोर्चा के नजदीक एक उग्रवादी को मार गिराया और दूसरे को घायल कर दिया। इस कार्रवाई में, उन्हें उग्रवादी द्वारा चलाई गई एक गोली लगी लेकिन श्री कुशवाहा, तब तक गोलीबारी करते रहे जब तक वे बेहोश होकर गिर नहीं गए। बाद में उन्हें तत्काल अस्पताल पहुंचाया गया लेकिन उन्होंने जख्मों के कारण रास्ते में ही दम तोड़ दिया। श्री जगपती राम, हैड-कान्सटेबल एकसरे कक्ष के सामने वाहनो/यात्रियों की जांच और जामातलाशी का कार्य कर रहे थे। उग्रवादियों के हमले को देख, उन्होंने मोर्चे से अपनी राइफल निकाली और मोर्चा नं० 2 के नजदीक मोर्चा संभाल लिया। उन्होंने जबाबी कार्रवाई की और दो में से उस एक उग्रवादी को मार गिराया जो गेट सं० 1 को पार करने की कोशिश कर रहा था। उन्होंने दूसरे उग्रवादी को भी उलझाए रखा और उसे घायल कर दिया। घायल उग्रवादी ने वापस गोली चलाई जो श्री राम को लगी। हालांकि, हैड-कान्सटेबल राम ने मोर्चा बदलने की मंशा से मोर्चा नं० 1 की तरफ रेंगते हुए जाने की कोशिश की लेकिन उन्होंने वहीं पर दम तोड़ दिया। जांच और जामातलाशी की ड्यूटी कर रहे श्री नारायण सिंह, उप निरीक्षक ने देखा कि एक जीप तेजी से गेट सं० 1 की तरफ जा रही है। उन्होंने जीप को रोकने की कोशिश की, उग्रवादियों ने जीप रोकी और सन्तरी पर इथगोले फेंके और गोलियां चलाई। श्री नारायण सिंह ने तत्काल मोर्चा सम्भाला और गोलीबारी का जवाब दिया और एक उग्रवादी को निश्चिंत कर दिया जो पहले गोलीबारी में जख्मी हो गया था लेकिन हवाई अड्डे की तरफ दौड़ने की कोशिश कर रहा था। एक उग्रवादी, जो एकसरे रूप में जाने में कामयाब हो गया था, ने गोलियों की बौछार कर दी, जिसके परिणामस्वरूप केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की दो महिला कार्मिक जख्मी हो गईं। सुश्री बिन्दू कुमारे, कान्सटेबल ने अपनी राइफल उठायी और उग्रवादी की तरफ गोली चलाई। दूसरी तरफ से एक उग्रवादी ने कान्सटेबल (एम०) बिन्दू कुमारे पर वापस गोली चलाई जिससे वह गम्भीर रूप से

जख्मी हो गई। एक्सरे मशीन की ड्यूटी कर रहे श्री राम प्रकाश यादव, हैड-कान्सटेबल तत्काल महिला केबिन की तरफ गए और एक महिला कान्सटेबल का हथियार उठा लिया। यह देखकर कि उग्रवादी उसकी तरफ आ रहा है, वे उग्रवादी को निशस्त्र करने और उसे मार गिराने के लिए उग्रवादी पर कूद पड़े। तथापि उग्रवादी ने उन्हें जख्मी कर दिया और बाद में जख्मों के कारण उन्होंने भी दम तोड़ दिया। श्री पी० सी० जोशी, पुलिस महानिरीक्षक (आपरेशन) पहले ही घटनास्थल पर पहुंच चुके थे। श्री जोशी, भारी गोलीबारी के बीच रेंगते हुए एल.एम.जी. मोर्चा सं० 1 की तरफ बढ़े और वहां पहुंचे। उन्होंने पूरे अभियान का नियंत्रण अपने हाथ में लिया। श्री जोशी ने एक्सरे रूम की तरफ कवर फायरिंग दी, जहां से दो उग्रवादियों ने भागने की कोशिश की थी और वे एक्सरे रूम में दाखिल हुए। एक उग्रवादी, जो बायीं तरफ एक दुकान में छिपा हुआ था, ने हथगोला फेंका और अंधाधुंध गोलीबारी करनी शुरू कर दी। श्री जोशी ने अपने कार्मिकों को छठे जीवित उग्रवादी को उलझाए रखने के आदेश दिए। श्री जोशी उग्रवादी की गोली से बाल-बल बचे। श्री जोशी ने अपने कार्मिकों को उस दुकान पर गोली चलाने और हथगोले फेंकने का आदेश दिया जहां उग्रवादी ने शरण ले रखी थी। हथगोले के विस्फोट के कारण दुकाने जल गई और बुरी तरह से क्षतिग्रस्त हो गई। मलबे की तलाशी से उग्रवादी का शव और हथियार बरामद हुए। श्री ए०के० बाजपेयी, उप कमान्डेन्ट ने एक्सरे रूम की विपरीत दिशा में नाले में मोर्चा सम्भाला और गेट नं० 1 को कवरिंग फायरिंग दी। उग्रवादियों को निष्क्रिय करने के बाद वे अपने कार्मिकों को प्रोत्साहित करने के लिए रेंगते हुए मोर्चा नं० 3 की तरफ गए। उन्होंने हवाई-अड्डे के नजदीक दुकान की तरफ भी गोलियां चलाने की कोशिश की, जहां से छठा उग्रवादी भागा। श्री ए०के० शाहू, सहायक कमान्डेन्ट ने अपनी राइफल निकाली और अपने झाईवर के साथ सीधे गेट नं० 1 की तरफ गए और मोर्चा सम्भाला। उन्होंने हवाई-अड्डे की तरफ खुलने वाले एक्सरे रूम के दरवाजे को कवर किया और उग्रवादी के भागने के रास्ते को बंद कर दिया। श्री शाहू ने तब तक उग्रवादी को उलझाए रखा जब तक उसे खत्म नहीं कर दिया गया। 5 ए.के.-47 राइफल, 9 ए.के. 47 मैगजीन तथा 102 ए.के. राइफल के राऊन्ड घटनास्थल से बरामद किए गए।

इस मुठभेड़ में, सर्व/श्री ए.के. बाजपेयी, उप-कमान्डेन्ट और नारायण सिंह, उप निरीक्षक ने अदम्य वीरता, साहस एवं उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पदक, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4(i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 16 जनवरी, 2001 से दिया जाएगा।

०२.११/१२
(बसुण मित्रा)
निदेशक

स0 235 - प्रेज/2003-राष्ट्रपति, भारत-तिब्बत सीमा पुलिस के निम्नलिखित अधिकारी को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:-

अधिकारी का नाम और रैंक

श्री हरजीत सिंह,

निरीक्षक/जी.डी. 10वीं बटालियन

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए पदक प्रदान किया गया:

22.10.2002 को लगभग 0955 बजे कामार चौकी पर सूचना मिली कि लतीफ बकरवाल, निवासी डिंगपुर, जिला अनन्तनाग (जम्मू और कश्मीर) के मकान में आतंकवादी मौजूद हैं। गुप्तता बनाए रखने की दृष्टि से एक पार्टी, जिसमें 3 एस.ओ. और 26 अन्य रैंक थे, एक आत्मसमर्पित आतंकवादी सहित, सिविल बस में खादर के लिए चल पड़े। पार्टी को तीन भागों में विभाजित किया गया, और प्रत्येक का नेतृत्व एक अधीनस्थ अधिकारी ने किया, जो बाद में उस स्थान तक पैदल गए। इनमें से एक टीम के प्रभारी निरीक्षक/जी.डी. हरजीत सिंह थे। इन्होंने 8 अन्य रैंकों और एक आत्मसमर्पित उग्रवादी को सहायक के तौर पर लेकर, योजना के अनुसार 1045 बजे संदिग्ध मकान को उत्तरी दिशा की तरफ से घेर लिया। श्री आर.एस. चौहान, उप कमांडेंट ने जो 1115 बजे अभियान स्थल पर पहुंचे, सभी पार्टियों के साथ आवश्यक समन्वय करने के बाद, निरीक्षक हरजीत सिंह से संदिग्ध मकान की तलाशी लेने के लिए कहा। निरीक्षक/जी.डी. हरजीत सिंह ने हैड कांस्टेबल/जी.डी. नन्द लाल और कांस्टेबल/जी.डी. संजीव शर्मा को एल.एम.जी. के साथ मकान के दक्षिण-पश्चिमी दिशा में तैनात किया और वे स्वयं अपने मुखबिर और स्थानीय गाईड के साथ मकान के अंदर गए। घुसने की तलाशी लेने के बाद, जब वे एक लकड़ी की सीढ़ी से प्रथम तल को जा रहे थे तो इन्होंने देखा कि 16-17 साल की एक लड़की 02 बच्चों के साथ कमरे के अंदर बैठी है और इस लड़की ने कमरे में मौजूद आतंकवादियों को हमारी टुकड़ियों की उपस्थिति के बारे में बता दिया था। इसी बीच निरीक्षक/जी.डी. हरजीत सिंह ने 2 उग्रवादियों को देखा। उग्रवादियों को देखकर निरीक्षक/जी.डी. हरजीत सिंह अपने मुखबिर के साथ तेजी से कमरे से निकल गए क्योंकि उस समय पर उग्रवादियों के विरुद्ध कार्रवाई करना सम्भव नहीं था, क्योंकि उग्रवादी लाभप्रद स्थिति में थे और इन्होंने मकान के नजदीकी परिसर में तैनात टुकड़ियों को सतर्क कर दिया। इन्होंने मकान की उत्तरी दिशा में घने घासफूस से मोर्चा सम्भाला। आतंकवादी मुख्य दरवाजे पर गए और दोनों बच्चों को मानवीय ढाल बनाकर अंधाधुंध गोलियां चलानी शुरू कर दी। हैड कांस्टेबल/जी.डी. नन्द लाल और कांस्टेबल/जी.डी. संजीव शर्मा, जिन्होंने मकान से 25 मीटर दूर एक शिलाखंड के पीछे कवर ले रखी थी, पर उग्रवादियों ने भारी गोलीबारी की। कवरिंग फायर से इन अन्य रैंकों की जान बचायी गई और उन्हें सुरक्षित स्थान पर ले जाया गया। पार्टी ने दो निर्दोष बच्चों की जान भी बचाई जिन्हें आतंकवादियों ने बंधक बनाया हुआ था और उन्हें बिना किसी नुकसान के निकाल लिया। निरीक्षक/जी.डी. हरजीत सिंह ने उनकी जान बचाने में मुख्य भूमिका निभाई। लगभग 30 मिनट तक रुक-रुक कर भारी गोलीबारी होती रही। अपने आपको घिरा हुआ पाकर असमंजस की स्थिति पैदा करने और छलावा करने के उद्देश्य से आतंकवादियों ने पार्टी मकान को आग लगा दी। पार्टी ने मकान पर आर.एल. के दो बम फेंके, जिसके परिणामस्वरूप आतंकवादी दक्षिण-पश्चिमी दिशा की तरफ खिड़की से बाहर कूद गए और मकान से निकल रहे घने धुएँ और उत्तरी रिज पर घने घासफूस का फायदा उठाकर भागने की कोशिश में रेंगते हुए उत्तरी दिशा की गए। निरीक्षक/जी.डी. हरजीत सिंह ने पास की झाड़ियों में कुछ हलचल देखी लेकिन आतंकवादी को नहीं देख पाए। इन्होंने आतंकवादी की स्थिति का अंदाजा लगाया और झाड़ियों में गोलियां चलाने वाले ही

थे कि-छिपे हुए उग्रवादी ने ए.के. 47 से अंधाधुंध गोलियां चलानी शुरू कर दी। निरीक्षक/जी.डी. हरजीत सिंह जो गोलियों की बौछार का सामना करते हुए अपनी ए.के. 47 राइफल से लगभग 20 गज की दूरी से आतंकवादी पर गोली चलाई जिससे आतंकवादी घटनास्थल पर ही ढेर हो गया। मारे गए आतंकवादी की पहचान, बाद में मोहम्मद इरफान उर्फ अब्बु उसामुद्दीन, बटालियन कमांडर, एल.ई.टी. तंजीम, पाकिस्तानी निवासी के रूप में हुई। मारे गए आतंकवादी से निम्नलिखित बरामदगी की गई :-

क)	ए.के. 56 राइफल	1
ख)	ए.के. 56 मैगजीन	4
ग)	ए.के. सक्रिय गोलाबारूद	29 राउन्द
घ)	हथगोले	4 (मौके पर नष्ट किए गए)
ङ)	इलेक्ट्रॉनिक डिटोनेटर	12 (मौके पर नष्ट किए गए)
ग)	बहुप्रयोजनीय पाऊच	1

इस मुठभेड़ में, श्री हरजीत सिंह, निरीक्षक ने अदम्य वीरता, साहस एवं उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

यह पदक, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4(i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिया जा रहा है तथा फलस्वरूप नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 22 अक्टूबर, 2002 से दिया जाएगा।

०२०१/११/११
(बसुण मित्रा)
निदेशक

सं० 236 - प्रेज/2003-राष्ट्रपति, भारत-तिब्बत सीमा पुलिस के निम्नलिखित अधिकारी को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:-

अधिकारी का नाम और रैंक

श्री होशियार सिंह,

सहायक कमांडेंट/जी.डी. 16वीं बटालियन

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए पदक प्रदान किया गया:

17 जून, 2002 को 0400 बजे, श्री होशियार सिंह, सहायक कमांडेंट/जी.डी. को विश्वसनीय सूचना मिली कि एच.यू.एम. गुट का एक आतंकवादी जो बिसरान गांव का निवासी है, भारत-तिब्बत सीमा पुलिस के सामने आत्मसमर्पण करना चाहता है। होशियार सिंह ने तत्काल टैक हैडक्वाटर को सूचित किया और अपने सूत्र और पर्याप्त बल के साथ गांव बिसरान को गए। क्षेत्र को उपयुक्त रूप से देख लेने और घेराबंदी करने के बाद श्री होशियार सिंह, अन्य चार के साथ संबंधित मकान की तरफ गए और आतंकवादी को आत्मसमर्पण करने के लिए कहा। आतंकवादी, लियाकत अली, मकान से बाहर आया और उसने आत्मसमर्पण कर दिया। आत्मसमर्पण करने वाले आतंकवादी लियाकत अली से घटनास्थल पर पूछताछ करने के बाद पता चला कि एच.यू.एम. गुट के दो कट्टर आतंकवादी सामान्य क्षेत्र तृती में छिपने के ठिकाने पर छिपे हो सकते हैं। श्री होशियार सिंह पार्टी के साथ तत्काल उस स्थल की तरफ गए। जब पार्टी, छिपने के ठिकाने से लगभग 100 गज की दूरी पर पहुंची तो उग्रवादियों ने अपने अड्डे से गोलीबारी करनी शुरू कर दी। श्री होशियार सिंह, सहायक कमांडेंट ने अपनी पार्टी को तत्काल घेरा डालने और टैक हैडक्वाटर से कुमुक पहुंचने तक इंतजार करने के लिए कहा। आतंकवादी रुक-रुक कर गोलियां चलाते रहे जिसका श्री होशियार सिंह, सहायक कमांडेंट और इनकी टीम ने जबाब दिया। अतिरिक्त टुकड़ियां, घेराबंदी स्थान पर पहुंच गईं और उन्हें संवेदनशील स्थानों पर तैनात किया गया। श्री होशियार सिंह ने जब यह देखा कि आतंकवादियों ने अड्डे में अच्छा मोर्चा सम्भाल रखा तो राकेट लाउन्चर के कुछ गोले दागने का आदेश दिया। 3 गोले दागने पर एक उग्रवादी, छिपने के ठिकाने से दौड़ता हुआ बाहर आया और बच कर भाग निकलने के लिए अंधाधुंध गोलियां चलाता हुआ बिसरान नाले की तरफ गया। श्री होशियार सिंह, सहायक कमांडेंट, जिन्होंने प्रमुख स्थान पर मोर्चा सम्भाल रखा था, ने भाग रहे आतंकवादी पर गोली चलाई जो उसकी टांग पर लगी। घायल आतंकवादी झाड़ियों में गिर गया लेकिन सुरक्षा बलों पर गोलियां चलाता रहा। श्री होशियार सिंह, सहायक कमांडेंट ने महसूस किया कि विलम्ब करने से आतंकवादी नाले के रास्ते भाग सकते हैं इसलिए वे पत्थरों और पेड़ों की आड़ लेते हुए लगभग 50 मीटर तक रेंगते हुए गए। आतंकवादी जो यह सोच रहा था कि सुरक्षा बल उसका पीछा कर रहे हैं, भागने के प्रयास में लगातार पीछे गोलियां चला रहा था। इससे पीछा करना बहुत कठिन हो गया था। गोलियों की एक बौछार सहायक कमांडेंट, होशियार सिंह के पास से गुजर कर सामने की पहाड़ी पर जा लगी लेकिन इससे विचलित हुए बिना और यह जानते हुए कि पीछा करना घातक हो सकता है, अधिकारी ने अभूतपूर्व साहस का परिचय देते हुए, तेजी से मोर्चा बदला, सही निशाने पर और लगातार गोलियों का जबाब दिया जो शिलाखंड के पीछे मोर्चा सम्भाले हुए आतंकवादी को लगी और वह वहीं पर ढेर हो गया। इसी बीच, दूसरा आतंकवादी, मकान के आगे के भाग के एक किनारे से घने घासफूस और शिलाखंडों के पीछे छिपने के ठिकाने से जहां पर वह अच्छी आड़ लिए हुए छिपा था, लगातार गोलियां चलाता रहा। टुकड़ियों द्वारा तीनों दिशाओं से की जा रही गोलीबारी कारगर साबित नहीं हो रही थी। श्री होशियार सिंह, सहायक कमांडेंट ने यह महसूस किया कि देरी करने से आतंकवादियों को अंधेरे का फायदा उठाकर भागना आसान हो

जाएगा। इन्होंने अपनी पार्टी को आतंकवादी को उलझाए रखने के लिए सामने से मोर्चा लेने के लिए कहा। इस कार्य में अपनी जान को खतरे की सम्भावना से अवगत श्री होशियार सिंह, सहायक कमांडेंट, चार कमांडों के साथ वापस मुड़े और पिछवाड़े से मकान में घुसे और उस कमरे के बहुत करीब पहुँच गए, जहाँ से आतंकवादी गोली चला रहा था तथा खिड़की से दो हथगोले फेंके जो आतंकवादी को निष्क्रिय करने के लिए काफी थे। इस कार्रवाई में मारे गए दो आतंकवादियों की पहचान निम्न रूप से की गई :-

- (i) शहिनवाज अहमद पुत्र मीरबज खान, निवासी बिसरान, तहसील गन्दोह, जिला गन्दोह, डोडा (जम्मू और कश्मीर) एच.यू.एम. गुट ।
- (ii) शब्बीर अहमद पुत्र अब्दुल लतीन निवासी गोव चांगा, तहसील गन्दोह, जिला गन्दोह (जम्मू और कश्मीर), एच.यू.एम. गुट ।

घटनास्थल से 02 ए.के. 47/56 राइफलें, 4 ए.के. मैगजीन, 250 सक्रिय राऊन्ड, 8 ग्रेनेड, एक वी.एच.एफ.सेट, 910 रु० नगद, 5 कम्बल इत्यादि बरामद किए गए।

इस मुठभेड़ में, श्री होशियार सिंह, सहायक कमांडेंट/जी.डी. ने अदम्य वीरता, साहस एवं उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया ।

यह पदक, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4(i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिया जा रहा है तथा फलस्वरूप नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 17 जून, 2002 से दिया जाएगा ।

(बसुण मित्रा)
निदेशक

सं० 237 - प्रेज/2003-राष्ट्रपति, भारत-तिब्बत सीमा पुलिस के निम्नलिखित अधिकारी को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:-

अधिकारी का नाम और रैंक

श्री खुर्शीद अहमद,

कांस्टेबल/जी.डी. 10वीं बटालियन

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए पदक प्रदान किया गया:

हाल सितार वन के सामान्य क्षेत्र में मुख्तियार अहमद रायर, कूट नाम "हरिश", नामक एच.एम. गुट के एक उग्रवादी की मौजूदगी के बारे में 03.09.2002 को एक विशिष्ट सूचना के आधार पर "आपरेशन प्रीतपाल" कूट नाम से श्री पी.पी. सिंह, भा.पु.सेवा, उप महानिरीक्षक (जम्मू और कश्मीर-I) के पूर्ण पर्यवेक्षण में, राज्यपत्रित अधिकारी 3, अधीनस्थ अधिकारी 3 और 60 अन्य रैंकों के साथ एक घेराबंदी और तलाशी अभियान की योजना बनाई गई और चलाया गया। उग्रवादियों को तीन दिशाओं से घेरने के लिए तीन पार्टियों बनाई गईं और क्षेत्र की घेराबंदी करने के बाद 1400 बजे तलाशी शुरू की गई। घने घासफूस से आच्छादित खाई में छिपे उग्रवादी ने एक पार्टी पर भारी गोलीबारी की। टुकड़ियों ने जबाबी गोलीबारी की, हालांकि उग्रवादी की सही अवस्थिति को देखा नहीं गया। अपघात से बचने के लिए उग्रवादी की सही अवस्थिति जानना जरूरी था, इसलिए एक निरीक्षक और कांस्टेबल/जी.डी. खुर्शीद अहमद ने भ्रान्तिजनक गोली चलाई। उग्रवादी ने गोलियों की बौछार करके जबाब दिया और उसकी गोलियों से पता चल गया कि छिपा हुआ उग्रवादी अपना स्थान बदलता जा रहा है और सुरक्षा बलों को अपनी रणनीति बनाने का मौका नहीं दे रहा है। उग्रवादी को निष्क्रिय किए बिना घने घासफूस में जाना आत्मघाती कदम होता। दो घंटे से अधिक समय तक रुक-रुक कर गोलीबारी होती रही। कांस्टेबल/जी.डी. खुर्शीद अहमद ने महसूस किया कि वर्तमान रणनीति अंधेरे में उग्रवादियों को बच कर भाग निकलने में मददगार होगी। अपने साथियों के प्रति अत्यधिक चिन्तित कांस्टेबल/जी.डी. खुर्शीद अहमद ने अपने निरीक्षक/जी.डी. अशोक कुमार से झाड़ी-युक्त क्षेत्र में जाने की इजाजत मांगी और उन्हें कवरींग फायर प्रदान करने को कहा। अधिक समय गवाए बिना, कांस्टेबल/जी.डी. खुर्शीद अहमद, उग्रवादी की स्थिति का अनुमान लगाते हुए चुपके से घने घास-फूस में काफी अंदर तक चले गए, जबकि टीम के अन्य सदस्य विभिन्न दिशाओं से गोलियां चलाते रहे। वे उग्रवादी की गोलीबारी से उसकी सही स्थिति का पता लगाने का प्रयास करते हुए तेजी और चुपके से आगे बढ़ते रहे, इस बात को जानते हुए भी कि किसी भी क्षण उनके जीवन को भारी खतरा हो सकता है क्योंकि उग्रवादी बार-बार अपनी स्थिति बदल रहा था। इन्होंने अचानक एक शिलाखंड के पीछे केवल 10 मीटर की दूरी पर अपने आपको उग्रवादी के सामने पाया। उग्रवादी चौंकर रह गया, उसने कांस्टेबल खुर्शीद अहमद पर गोलियों की बौछार कर दी, जो चूक गई। जो से फायरबाई करते हुए कांस्टेबल ने अपनी ए.के. 47 से गोलियों की बौछार कर दी, जिससे उग्रवादी घटनास्थल पर ही डेर हो गया। बाद में मारे गए उग्रवादी की पहचान मुख्तियार अहमद रायर पुत्र श्री गुलाम नबी रायर, निवासी गांव लरिकपुरा, पुलिस स्टेशन और तहसील दोर, जिला अनन्तनाग (जम्मू और कश्मीर) एच.एम. तंजोब से संबंधित के रूप में हुई।

मारे गए उग्रवादी से 4 पैगजीनों और 30 गोलाबारूद के साथ एक ए.के. 47 राइफल और एक बहु-प्रयोजनीय शस्त्र बरामद हुआ।

इस मुठभेड़ में, श्री खुर्शीद अहमद, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस एवं उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

यह पदक, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4(i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिया जा रहा है तथा फलस्वरूप नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 3 सितम्बर, 2002 से दिया जाएगा।

(अ.प.) मिश्रा
(बरूण मिश्रा)
निदेशक

सं० 238 - प्रेज/2003-राष्ट्रपति, भारत-तिब्बत सीमा पुलिस के निम्नलिखित अधिकारी को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:-

अधिकारी का नाम और रैंक

श्री रतन लाल,

कांस्टेबल/जी.डी. 16वीं बटालियन

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए पदक प्रदान किया गया:

गावारी स्थित भारत तिब्बत सीमा पुलिस की चौकी को 20/21.5.2002 की रात को सूचना मिली कि सामान्य क्षेत्र गावारी में गांव इच्छर के नजदीक स्थित एक अलग-थलग मकान में एक अफगानी उग्रवादी ने शरण ले रखी है। भारत तिब्बत सीमा पुलिस चौकी, कालोथरन, सोटे और यूनिट के टैक हैडक्वार्टर को तत्काल सूचना भेजी गई, टुकड़ियों को तत्काल लामबंद किया गया और घुप अंधेरे में सदिग्ध मकान की घेराबंदी की गई। उग्रवादी ने बाहर सुरक्षा बलों की उपस्थिति को भांप कर अपने स्वचालित हथियार से गोलियों की बौछार की, जिसका टुकड़ियों ने जबाब दिया। धेरे को और तंग किया गया। अंदर छुपे उग्रवादी को चेतावनी दी गई लेकिन इसका कोई असर नहीं हुआ। कांस्टेबल रतन लाल जिन्होंने पास के मकान की छत पर मोर्चा सम्भाल रखा था, ने लगभग 0450 बजे, एक उग्रवादी को खिड़की से बाहर कूदते हुए देखा। अंधेरे और झाड़ी वाले नाला क्षेत्र का फायदा उठाते हुए उग्रवादी ने नजदीक के मकानों में से होकर भाग निकलने का प्रयास किया। भाग रहे उग्रवादी द्वारा की जा रही अंधाधुंध गोलीबारी और ग्रेनेड दागने के कारण टुकड़ियां नजदीक नहीं जा सकीं और यदि हमारी टुकड़ियां गोलियां चलाती तो गोलीबारी के कारण हमारे कार्मिक ही हताहत होते। इस समय कांस्टेबल रतन लाल ने महसूस किया कि आगे और देरी करने से उग्रवादी नजदीक के मकानों में भाग सकता है, वे, अपनी एल.एम.जी. से गोलीबारी करते हुए भाग रहे उग्रवादी के पीछे झाड़ी वाले नाले में कूद पड़े, इस बात से पूरी तरह अवगत कि इन्हें अपनी स्वयं की टुकड़ियों से कोई कवर फायरिंग नहीं मिलेगी और उनके जीवन को गम्भीर खतरा है क्योंकि भाग रहा उग्रवादी अंधाधुंध गोलीबारी कर रहा था और ग्रेनेड फेंक रहा था। कांस्टेबल/जी.डी. रतन लाल ने इस सबसे अविचलित रह कर अपनी एल.एम.जी. से गोलियों की दो सटीक बौछारें की जो खतरनाक अफगान उग्रवादी को लगे और वह वहीं ठेर हो गया। इस प्रकार से इन्होंने अपने साथियों को भी दोनों ओर से होने वाली गोलीबारी से बचाया। बाद में मारे गए उग्रवादी की पहचान एल.ई.टी. तंजीम के मुख्तक आलद के रूप में की गई। मारे गए उग्रवादी से एक एल.एम.जी. 56 राइफल और 3 पैगजीन, 35 बलिष्ठ कारतूस, एक पाउण्ड, एक हाथी हतारई बरामद हुआ।

इस घुउमैड में, श्री रतन लाल, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस एवं उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

यह पदक, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4(1) के अंतर्गत वीरता के लिए दिया जा रहा है तथा फलस्वरूप नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 20 मई, 2002 से दिया जाएगा।

(अ.प्र.) 12-107

(दशरथ मिश्रा)

निदेशक

सं० 239 - प्रेज/2003-राष्ट्रपति, भारत-तिब्बत सीमा पुलिस के निम्नलिखित अधिकारी को उनकी वीरता के लिए राष्ट्रपति की पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:-

अधिकारी का नाम और रैंक

श्री अशोक कुमार यादव

निरीक्षक/जी.डी. 18वीं बटालियन

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए पदक प्रदान किया गया:

कामार चौकी स्थित कम्पनी कमांडर "अल्फा" कम्पनी को एक विश्वसनीय सूचना मिली कि उग्रवादी 13.12.2002 को कामार और कपरान के बीच एक सिविल बस में यात्रा करेंगे। जिस पर अभियान की योजना बनाई गई और कम्पनी कमांडर की कमान में प्रशिक्षित कमांडो के एक ग्रुप को, क्विक रिएक्शन टीम के रूप में, सूत्र से अंतिम पुष्टि की प्रतीक्षा में कामार चौकी पर तैयार रखा गया। प्रारम्भिक सूचना की पुष्टि लगभग 1615 बजे की गई कि तीन उग्रवादियों का एक ग्रुप कामार और कपरान के बीच चलने वाली सिविल बस सं. जे.के. 01-सी-3422 में सवार हुए हैं। कम्पनी कमांडर तत्काल हरकत में आए। दो बुलैट ग्रुफ वाहनों में एक पार्टी, जिसमें एक अधिकारी, एस.ओ. 2 और अन्य रैंक-22 थे, सिविल बस में यात्रा कर रहे उग्रवादियों को पकड़ने के लिए कपरान की तरफ चल पड़े। कपरान के रास्ते में बस को पहचान की गई और जब जिप्सी बस सं.जे.के.-01-सी-3422 के ठीक पीछे थी तो उग्रवादी सतर्क हो गए और जैसे ही भारत तिब्बत सीमा पुलिस के कमांडो ने लगभग 1630 बजे कपरान में बस को रोका तो तीन उग्रवादी आगे के दरवाजे से बाहर कूद पड़े और वाहन/टुकड़ियों पर अंधाधुंध गोलियां चला दी। निरीक्षक/जी.डी. अशोक कुमार यादव जो वाहन के पीछे की सीट पर बैठे थे, ने अभूतपूर्व तेजी से कार्रवाई करते हुए अदभुत साहस और सूझ-बूझ का परिचय दिया। इन्होंने, उग्रवादियों द्वारा की जा रही गोलीबारी के सामने, अपने कार्मिकों को फायर-कवर देने के लिए कहा, जो तत्काल उपलब्ध कराई गई। इस बात को अच्छी तरह जानते हुए कि उनकी मृत्यु निश्चित है, अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की परवाह न करते हुए इन्होंने अपनी एके 47 एसाल्ट राइफल से गोलियां बरसाते हुए, वीरोचित तरीके से केवल 15-20 गज दूरी से उग्रवादियों पर गोलियां चलाई और अकेले ही एक ही प्रयास में तीनों उग्रवादियों को मार गिराया। तीनों उग्रवादी इस प्रकार की कार्रवाई की कतई उम्मीद नहीं कर रहे थे और वे पूरी तरह भौचक रह गए क्योंकि वे अंधाधुंध गोलियां बरसाते हुए अभी बस से बाहर कूदे ही थे। बाद में बस की तलाशी के दौरान, एक और ए.के. 56 राइफल बरामद हुई जो सम्भवतः जैसे ही उग्रवादी ने छोड़ी होगी जो एक सिविलियन के साथ भाग गया था। श्री यादव ने न केवल उग्रवादियों को ही मार गिराया बल्कि बस के 32 यात्रियों की सुरक्षा भी सुनिश्चित की। एल.ई.टी. तंजीम के मारे गए तीनों उग्रवादियों की पहचान निम्न प्रकार से की गई :-

- (i) अबू बकर - विदेशी उग्रवादी, पाकिस्तान से
- (ii) जैद - स्थानी उग्रवादी
- (iii) अब्दुल रहमान - स्थानी उग्रवादी

मारे गए उग्रवादियों/मुठभेड़ स्थल से 4-ए.के. 47/56 राइफले, 14 ए.के. मैगजीन, 368 ए.के. गोलाबारूद, 10 ट्रेडिगो, 1 रेडियो सेट, 3 बहुप्रयोजनीय पाऊंच और एक कमांडो जैकेट बरामद हुई।

इस मुठभेड़ में, श्री अशोक कुमार यादव, निरीक्षक ने अदम्य वीरता, साहस एवं उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

यह पदक, राष्ट्रपति का पुलिस पदक नियमावली के नियम 4(i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिया जा रहा है तथा फलस्वरूप नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 13 दिसम्बर 2002 से दिया जाएगा।

(बसुण मित्रा)
निदेशक

सं० 240 - प्रेज/2003-राष्ट्रपति, भारत तिब्बत सीमा पुलिस के निम्नलिखित अधिकारी को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:-

अधिकारी का नाम और रैंक

श्री के.एच. राजेन्द्र सिंघा

कांस्टेबल/जी.डी 11 वीं बटालियन

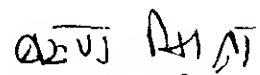
उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए पदक प्रदान किया गया:

हतिवारा-काकापोरा रोड के पश्चिम में स्थित 11वीं बटालियन भारत-तिब्बत सीमा पुलिस टैंक मुख्यालय लेथपोरा से लगभग एक किलोमीटर दूर सम्बोरा ग्राम के सांगरीपुरा मौहल्ले में दिनांक 1.5.02 को तड़के ऑपरेशन संबोराटेक चलाया गया। कमांडेंट, 3 अधिकारियों तथा टैंक मुख्यालय से 18 अन्य रैंकों को लेकर गठित भारत-तिब्बत पुलिस की 11वीं बटालियन के क्षेत्रीय गश्ती दल द्वारा गोलीबारी की आवाज सुनने की प्रतिक्रिया स्वरूप दो दिशाओं से संबोरा ग्राम के सांगरीपुरा मौहल्ले की ओर कूच किया। काकापोरा स्थित ई. कम्पनी से दो एस.ओ. तथा 19 अन्य रैंकों को लेकर गठित दूसरी पार्टी ने टी.एच.क्यू. पार्टी का साथ देने के लिए सी.एच.क्यू. से प्रस्थान किया। अभियान आई.टी.बी.पी. तथा एस.ओ.जी. ने संयुक्त रूप से चलाया। आई.टी.बी.पी. दो पार्टियों जो धावा पार्टी तथा कवर्गिंग पार्टी के तौर पर कार्य कर रही थीं, का नेतृत्व अधिकारी कर रहे थे। इसी प्रकार एस.ओ.जी. ने भी दो पार्टियों का गठन किया। मकानों की तलाशी अविलंब प्रारंभ की गई तथा संयुक्त टीमों ने चार मकानों की तलाशी पूरी कर ली। पांचवें मकान की तलाशी लेते समय पार्टी पर गोलियों की भारी बौछार हुई जिसमें आई.टी.बी.पी. का एक निरीक्षक/जी.डी. घायल हो गया। उग्रवादियों की अवस्थिति का पता लगने पर संदेहास्पद मकान को तत्काल घेर लिया गया। सी.टी./जी.डी.के.एच. राजेन्द्र सिंघा ने एल.एम.जी. के साथ उग्रवादियों का मुकाबला करते हुए केवल 12 फीट के फासले पर मकान के सामने मोर्चा सम्भाला। सुरक्षा बल हताहत न हो इसके लिए सी.टी./जी.डी. के.एच. राजेन्द्र सिंघा ने उग्रवादियों के दौंसले पस्त करने के लिए उन पर अचूक गोलीबारी की। उग्रवादियों ने यह अनुभव करने पर कि उन्हें घेरा जा रहा है, उनमें से एक उग्रवादी ने खिड़की से बाहर कूद कर भागने की कोशिश की। सी.टी./जी.डी. के.एच. राजेन्द्र सिंघा को उग्रवादियों से ऐसे प्रयास किए जाने का आभास था, उन्होंने अपनी जान की परवाह किए बगैर अपनी एल.एम.जी. उठाई और यह जानते हुए भी कि उनकी जान की भारी खतरा है द्रुतगति से उग्रवादी की तरफ गए, उग्रवादी के आमने-सामने हो गए तथा अपनी एल.एम.जी. से प्रभावी गोलीबारी करके उग्रवादी को घटना स्थल पर ही मार डाला। इसी प्रकार मकानों की तलाशी के दौरान एस.ओ.जी. कार्मिकों ने एक और उग्रवादी को मार डाला। हिजबुल मुजाहिदीन के मारे गए उग्रवादियों की शिनाख्त (i) शौकत अहमद डार पुत्र श्री अब्दुल अजीज डार निवासी सम्बोरा (ii) शेहनवाज अहमद खांडे उर्फ साकिर पुत्र जलालुद्दीन खांडे निवासी ग्राम लड्डु जिला पुलवामा के रूप में हुई।

मुठभेड़ स्थल से एक रॉकेट लांचर, 2 ए.के.-47 राइफलें, 7 ए.के. 47 मैगजीनें, 104 ए.के. श्रेणी के गोलाबारूद एक यू.बी.जी.एल. तथा मैगजीन सहित एक चीनी पिस्तौल बरामद हुई।

इस मुठभेड़ में, श्री के.एच. राजेन्द्र सिंघा, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस एवं उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

यह पदक, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4(i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिया जा रहा है तथा फलस्वरूप नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 1.5. 2002 से दिया जाएगा।


(वरूण मित्रा)
निदेशक

स0 241 - प्रेज/2003-राष्ट्रपति, भारत-तिब्बत सीमा पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:-

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

1. अशोक कुमार नेगी, उप कमांडेंट/जी.डी., 16वीं बटालियन
2. संतोष कुमार, कांस्टेबल/जी.डी. 16वीं बटालियन

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए पदक प्रदान किया गया:

क्षेत्र में उग्रवादियों पर दबाव बनाने की दृष्टि से श्री अशोक कुमार नेगी उप कमांडेंट, 16वीं बटालियन, भा.ति.सी.पु. ने गावड़ी और भारती क्षेत्र से एस.टी.एफ. पार्टियों की सहायता से दिनांक 3 मई, 2002 को तड़के घेराबंदी तथा तलाशी अभियान की योजना बनाई। आशय यह था कि उग्रवादियों पर दबाव डाला जाए कि वे स्वारा वन क्षेत्र में रिज की दूसरी तरफ की ओर चले जाएं ताकि अभियान चलाकर उन्हें घेरा जा सके। जैसा कि योजना बनाई गई थी, गावरी और भारती क्षेत्रों में चलाए गए घेराबंदी तथा तलाशी अभियान के परिणामस्वरूप उग्रवादी उम्मीद के अनुसार रिज की दूसरी ओर अर्थात् तलोप्रा चिल्ली, मलाथ तथा हादाल क्षेत्र में चले गए। एक विश्वस्त सूचना के आधार पर श्री अशोक कुमार नेगी उप कमांडेंट ने स्थानीय एस.टी.एफ. के समन्वय से नाली डोलू को जा रहे रास्ते पर जंगल क्षेत्र में घात लगाने की एक योजना बनाई। टुकड़ियों को 2/3 मई की रात को घात स्थान पर तैनात कर दिया गया तथा भागने के सभी संभावित मार्गों को कवर किया गया। श्री नेगी एक केन्द्रीय स्थान गंदोह में वायरलेस सेट पर सूचना का प्रबोधन कर रहे थे। 3 मई को लगभग 8.45 बजे घात पर बैठी टुकड़ियों ने नजदीक ही 7-8 नागरिकों की गतिविधियां देखी जिन्होंने ललकारने पर (उनमें से दो ने) सुरक्षा कार्मिकों पर गोलियां चला दी। गोली का तुरन्त जबाब दिया गया। उग्रवादियों ने भागने की कोशिश की। एक उग्रवादी नाले में घुसने में सफल हो गया जबकि दूसरे को जंगल में घेर लिया गया। श्री नेगी, टुकड़ियों के साथ तत्काल अभियान स्थल पर पहुंच गए। वन में घिरे उग्रवादी को आत्मसमर्पण करने के लिए कहा गया परन्तु वह रुक-रुक कर गोलियां चलाता रहा। इससे पहले कि उग्रवादी नाले में जाने में कामयाब हो जाय श्री अशोक कुमार नेगी डिप्टी कमांडेंट ने उग्रवादी को मारने के लिए उसकी तरफ आगे बढ़ने का निर्णय लिया। इसी बीच कुछ सैनिक दूसरे उग्रवादी का पीछा करने के लिए नेजी से नाले की तरफ आगे बढ़े। चूंकि वन में छिपे हुए उग्रवादी की स्थिति का पता नहीं था फिर भी श्री ए.के. नेगी डिप्टी कमांडेंट और कांस्टेबल संतोष कुमार अपनी जान के प्रति खतरे से पूरी तरह वाकिफ होते हुए नीचे नाले तक लगभग 100 मी. तक रेंगते हुए उग्रवादी के पास गए। अपने आस-पास हल्की सी हलचल देखकर उग्रवादी ने भारी गोलीबारी की जिससे श्री नेगी बाल-बाल बच गए जो अब, उग्रवादी के एक दम आमने सामने थे। श्री नेगी ने बहुत तेज कार्रवाई करके जबावी गोलीबारी की तथा उग्रवादी को स्थल पर ही मार गिराया। पाकिस्तान प्रशिक्षित इस उग्रवादी की शिनाख्त बाद में मो. अयूब कूट नाम हिजबुल मुजाहिदीन गुट के मोसोम, तहसील कमांडर के तौर पर हुई। तत्पश्चात श्री ए.के. नेगी डिप्टी कमांडेंट अपनी टीम के साथ नाले की ओर बढ़े। पहले से घेराबंदी के लिए तैनात टीम ने नाले के झाड़-झंखाड़ वाले क्षेत्र में एक अन्य उग्रवादी की उपस्थिति की पुष्टि की और उसे भागने से रोका गया। उसे खोज निकालना एक कठिन कार्य था क्योंकि वह सैनिकों के द्वारा भ्रान्तिजनक गोली चलाए जाने के बावजूद अपनी पोजीशन छिपा रहा था। श्री ए.के. नेगी डिप्टी कमांडेंट ने चुपके से नाले में जाने के लिए एस.टी.एफ. कार्मिकों सहित एक छोटी टीम को नियुक्त किया। कांस्टेबल संतोष कुमार ने स्वच्छा से अपने आपको इस कार्य के लिए पेश किया। यह कार्य खतरनाक

तथा समय साध्य था परन्तु इसके अलावा कोई विकल्प नहीं था। कां. संतोष कुमार ने अपनी जान की बिल्कुल भी परवाह न करते हुए, क्योंकि किसी भी क्षण उन पर हमला हो सकता था, टीम का नेतृत्व करते हुए, अद्वितीय साहस का प्रदर्शन करते हुए रंगते हुए एक झाड़ी से दूसरी झाड़ी तक गए। अचानक उन्हें महसूस हुआ कि उग्रवादी ने उन्हें पास आते हुए देख लिया है और इससे पहले कि वे कार्रवाई करते उग्रवादी ने एक हथगोला फेंका जो दो शिला खंडों के बीच कांस्टेबल संतोष कुमार के समक्ष गिरा परन्तु वे बाल-बाल बच गए। तत्काल जवाबी कार्रवाई में यह अनुभव करते हुए कि उग्रवादी ने भली-भांति चट्टानों के पीछे मोर्चा ले रखा था उसने एक हथगोला फेंका तथा चट्टानों की आड़ लेते हुए और ए.के. 47 से गोलियां चलाते हुए और अपनी जान की परवाह न करते हुए उग्रवादी पर घावा बोल दिया। हथगोले के हमले से उग्रवादी भौंचक्का रह गया क्योंकि उसे ऐसी कार्रवाई की आशा नहीं थी तथा वह कांस्टेबल संतोष कुमार की तेज कार्रवाई से मारा गया। मारे गए आतंकवादी की शिनाख्त बशीर अहमद गुज्जर पुत्र मीर मोहम्मद गुज्जर, निवासी हड्डल तहसील गंदोह के रूप में हुई जो हिजबुल मुजाहिदीन गुट के तहसील कमांडर के सीधे पर्यवेक्षण में कार्य कर रहा था। एक ए.के. 56 राइफल, 2 मैगजीन, एक वायरलेस सैट तथा एक हथगोला बरामद हुआ।

इस मुठभेड़ में, सर्व/श्री अशोक कुमार नेगी, उप कमांडेंट तथा संतोष कुमार, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस एवं उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पदक, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4(i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 3 मई, 2002 से दिया जाएगा।

12.12.03
(बसुण मित्रा)
निदेशक

सं0 242 - प्रेज/2003-राष्ट्रपति, भारत-तिब्बत सीमा पुलिस के निम्नलिखित अधिकारी को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:-

अधिकारी का नाम और रैंक

श्री छुन्नु लाल

कांस्टेबल/जी.डी. 20वीं बटालियन

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए पदक प्रदान किया गया:

दिनांक 29.8.2002 को 20वीं बटालियन, भा.ति.सी.पु. के कांस्टेबल/जी.डी., छुन्नु लाल तथा अन्य सदस्य काजीगुन्ड (जम्मू व कश्मीर) में नियमित सड़क क्लीयरेंस ड्यूटी कर रहे थे। उस स्थान पर सिविलियन आ-जा रहे थे। अचानक पार्टी ने देखा कि दो आतंकवादी सेंट्रल कॉर्पोरेटिव बैंक काजीगुन्ड से प्रत्यक्षतः बंदूक की नोक पर बैंक को लूटकर भाग रहे थे। व्यस्त स्थान होने के कारण आतंकवादी नागरिकों की ढाल का पूरा लाभ उठा रहे थे ताकि वे स्वयं सुरक्षित निकल सकें। गश्ती दल के पास जबाबी कार्रवाई के लिए बहुत कम समय था। इसी बीच भाग रहे आतंकवादियों ने आई.टी.बी.पी. पेट्रोल को देख लिया तथा भागते-भागते उन पर गोलियां दागी। गश्ती दल के लिए यह कठिन स्थिति थी क्योंकि भीड़-भाड़ वाला क्षेत्र होने के कारण उनके लिए गोली न चलाने के अलावा कोई विकल्प नहीं था। परन्तु कांस्टेबल/जी.डी. छुन्नु लाल आतंकवादियों के इस प्रकार बच निकलने को सहन नहीं कर पा रहा था और उन्होंने आतंकवादियों की अंधाधुंध गोलीबारी की परवाह नहीं करते हुए तत्काल उनका पीछा करने का साहसिक निर्णय लिया। एक तेज निशानेबाज होने के नाते कांस्टेबल/जी.डी. छुन्नु लाल ने निशाना साधा और उग्रवादियों में से एक, एल.ई.टी. संगठन के अबू मंसूर उर्फ मंसूर भाई को सर में गोली मारकर उसे घटनास्थल पर ही ढेर कर दिया। कांस्टेबल/जी.डी. छुन्नु लाल ने दूसरे आतंकवादी का पीछा करना जारी रखा और उसकी टांग में गोली मार दी। तथापि दूसरा आतंकवादी अंधेरे का लाभ उठाकर घायल होने के बावजूद पास के जंगल में भाग गया।

कार्रवाई के बाद निम्नलिखित बरामदगीएँ हुईं :-

1.	राइफल ए.के. 56	1
2.	मैगजीन ए.के. राइफल	2
3.	ए.के. 47 का गोलाबारूद	55 रौंद
4.	हथगोले	1
5.	भारतीय मुद्रा	31,830/-रु0
6.	वायरलेस सैट	1

इस मुठभेड़ में, श्री छुन्नु लाल, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस एवं उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

यह पदक, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4(i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिया जा रहा है तथा फलस्वरूप नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 29 अगस्त, 2002 से दिया जाएगा।

(बलरूप मित्रा)
निदेशक

सं० 243 - प्रेज/2003-राष्ट्रपति, केन्द्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:-

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

1. मदन मोहन फडिकर, कांस्टेबल
2. माणिक लाल घोष, कांस्टेबल

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए पदक प्रदान किया गया:

दिनांक 24.6.2002 को केन्द्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल यूनिट ओ.एन.जी.सी. जोरहाट के सर्व/श्री मदन मोहन फडिकर तथा माणिक लाल घोष को रीयर एस्कोर्ट जीप में दो अन्य कार्मिकों के साथ भूकम्पीय सर्वेक्षण पार्टी (जी.पी.-33) के कानवाय के रक्षण के लिए तैनात किया गया था। ओ.एन.जी.सी. भूकम्पीय सर्वेक्षण पार्टी (जी.पी.33) सन्जय सॉ मिल, बिरला दिफु स्थित आधार शिविर में अनुसंधान कार्य करने के बाद एक विस्फोटक जीप तथा इन्स्ट्रुमेंटल वैन के साथ लौट रही थी। जब भूकम्पीय सर्वेक्षण पार्टी 1630 बजे घन श्री रेलवे स्टेशन क्रासिंग के समीप दलदली आरक्षित वन पहुंची तो दीमा हलीम डौगा (डी.एच.डी.) के लगभग 20 उग्रवादियों के ग्रुप ने कानवाय पर घात लगायी। ज्यों ही पहले दो वाहन वहां से गुजरे डी.एच.डी. के उग्रवादी ग्रुप द्वारा दलदली आरक्षित वन जिला कारवी आंगलांग की पहाड़ियों के दोनों ओर से कानवाय पर भारी गोलीबारी के कारण पीछे वाला रक्षक वाहन जिसमें कांस्टेबल एम.एम. फडिकर तथा कांस्टेबल एम.एल. घोष दो अन्य कार्मिकों के साथ यात्रा कर रहे थे, तेजी से बाईं ओर मुड़ा। वे जीप से बाहर कूद गए तथा भूमि पर मोर्चा लिया तथा उग्रवादियों की दिशा में जवाबी गोलीबारी की। दस मिनट की गोलीबारी के बाद उग्रवादी ग्रुप ने कुछ समय के लिए गोलीबारी रोक दी तथा पुनः गोलीबारी शुरू की जिसका रक्षक दल ने उत्तर दिया। इस जवाबी गोलीबारी से उग्रवादी घात के स्थान को छोड़ने पर बाध्य हो गए। उग्रवादियों ने ए.के. 47, एस.एम.जी. आदि से अनेक फायर किए। मुठभेड़ के दौरान कांस्टेबल एम.एम. फडिकर को बाईं कॉलर बोन के नीचे गोली लगी। कांस्टेबल एम.एल. घोष के बाईं ओर गर्दन पर गोली लगी। हमला आठ घंटे तक चला। इसके बाद उग्रवादी सम्भवतः उनके पक्ष में कुछ लोगों के घायल हो जाने के कारण घात के स्थान से भाग गए। घायल हो जाने के बावजूद कांस्टेबल एम.एम. फडिकर और कांस्टेबल एम.एल. घोष द्वारा तत्काल तथा समय पर की गई कार्रवाई से ओ.एन.जी.सी. के 9 व्यक्तियों/ठेकेदार के मजदूरों तथा के.औ.सु. बल के 11 कार्मिकों के प्राणों के अलावा हथियार, इन्स्ट्रुमेंटल वैन तथा जीप में विस्फोटक बच गए।

इस मुठभेड़ में, सर्व/श्री मदन मोहन फडिकर, कांस्टेबल तथा माणिक लाल घोष, कांस्टेबल ने अदम्य वीरता, साहस एवं उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पदक, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4(i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 24.6.2002 से दिया जाएगा।

(बलरूप मित्रा)
निदेशक

सं० 244 - प्रेज/2003-राष्ट्रपति, असम राइफल्स के निम्नलिखित अधिकारी को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:-

अधिकारी का नाम और रैंक

श्री लक्ष्मण गौतम
राइफलमैन

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए पदक प्रदान किया गया:

दिनांक 18 अक्तूबर, 2002 को असम के सोनितपुर जिले में रिंगकंगपुर सामान्य क्षेत्र में एन.डी.एफ.बी. उग्रवादियों के छिपने के स्थान की अवस्थिति के बारे में सूचना प्राप्त होने पर 5 असम राइफल्स की टुकड़ियों ने तलाशी और नष्ट करो अभियान चलाया जिसमें राइफलमैन लक्ष्मण गौतम को स्काउट का नेतृत्व करने का भार सौंपा गया। छिपने के स्थान की तलाशी के दौरान लगभग 0415 बजे श्री लक्ष्मण गौतम ने झाड़ू झंखाड में कुछ हलचल देखी। उसने तत्काल पार्टी कमांडर को इसकी सूचना दी परन्तु उस पर गोली चलाई गई। अपने ऊपर अचूक गोलीबारी से अविचलित तथा अपनी जान की परवाह नहीं करते हुए उसने बगैर समय खोए गोलीबारी का जवाब दिया तथा एक उग्रवादी को घटना स्थल पर मार गिराया। उसने फिर अपने कंपनी कमांडर को भाग रहे उग्रवादियों की जानकारी दी और गोलीबारी करके सहायता की। जिसके परिणामस्वरूप अभियान के दौरान दो और उग्रवादी मारे गए। मारे गए आतंकवादियों के पास से निम्नलिखित बरामदगियां हुई :-

(i)	9 एम.एम. स्टेनगन एम.के. II	01
(ii)	9 एम.एम. पिस्तौल	01
(iii)	12 बोर एस.बी.बी.एल.	01
(iv)	9 एम.एम. सक्रिय कारतूस	10
(v)	12 बोर एस.बी.बी.एल. सक्रिय कारतूस/एफ.सी.सी. रौंद	04
(vi)	मेडिकल सैचल	01
(vii)	टोइलेटरिज सैचल	01

इस मुठभेड़ में, श्री लक्ष्मण गौतम, राइफलमैन ने अदम्य वीरता, साहस एवं उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

यह पदक, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4(i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिया जा रहा है तथा फलस्वरूप नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 18 अक्तूबर, 2002 से दिया जाएगा।

अ.ज. मिश्रा
(वरुण मित्रा)
निदेशक

सं० 245 - प्रेज/2003-राष्ट्रपति, असम राइफल्स के निम्नलिखित अधिकारी को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:-

अधिकारी का नाम और रैंक

श्री शिवलाल

राइफलमैन

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए पदक प्रदान किया गया:

दिनांक 31.7.2002 को कैप्टन आर.एम. नेगी के नेतृत्व में 6 असम राइफल्स के एक कालम को एन.एस.सी.एन. (आई.एम.) के उन उग्रवादियों को तलाशने और उनका विनाश करने का कार्य सौंपा गया जिन्होंने तिरप जिले में पहले यूनिट कानवाँय पर घात लगाई थी। कालम लगभग 03.00 बजे ओल्ड बंटिंग ग्राम के बाहरी क्षेत्र में पहुंचा। राइफलमैन शिवलाल कालम का लीडिंग स्काउट था। गांव पर 5.00 बजे तक निगरानी रखने के बाद कालम गांव के नजदीक गया। जैसे ही टुकड़ियां आगे बढ़ी गांव के बाहरी हिस्से के एक मकान में छिपे उग्रवादियों ने आगे बढ़ रहे स्काउटों पर स्वचालित हथियारों से गोलीबारी कर दी। राइफलमैन शिवलाल ने अनुकरणीय साहस तथा व्यावसायिक कौशल का प्रदर्शन करते हुए आड़ ली, रेंगते हुए उग्रवादियों के समीप पहुंचे ताकि उन पर बेहतर तौर पर नजर रख सकें तथा जवाबी गोलीबारी कर सकें। उन्होंने घर में दो उग्रवादियों को देखा। इसके बाद राइफलमैन शिवलाल अपनी जान की परवाह न करते हुए उग्रवादी की भारी गोलीबारी के बीच आगे बढ़े और एक शिलाखंड के पीछे आड़ ली, एक उग्रवादी को मार गिराया तथा एक को घायल कर दिया। घायल उग्रवादी अंधाधुंध गोलीबारी करता रहा जिससे आस-पास के मकानों में रहने वाले नागरिकों और टुकड़ियों को खतरा बना रहा। राइफलमैन शिवलाल ने अपनी कर्तव्य की सीमाओं के बाहर जाकर अद्वितीय साहस का प्रदर्शन करते हुए रेंगते हुए घायल उग्रवादी के पास पहुंचे जो अभी तक गोलीबारी कर रहा था और वहां उन्होंने उसे एकदम समीप से अपनी राइफल की गोलियों की बौछार से मार डाला। राइफलमैन शिवलाल की अकेली कार्रवाई से उसकी टुकड़ियां हताहत होने से बच गईं। मारे गए उग्रवादी की शिनाख्त एन.एस.सी.एन. (आई.एम.) के एस.एस. कारपोरल के सेमा के रूप में हुई। निम्नलिखित गोलाबारूद तथा युद्ध सरीखी सामग्री बरामद हुई:-

(i)	ए.के. 47 राइफल	1
(ii)	ए.के. 56 राइफल	1
(iii)	हथगोले	2
(iv)	ए.के. 47 रौंद	60
(v)	डेटोनेटर नं. 33	2
(vi)	ए.के. 47 मैगजीन	4

इस मुठभेड़ में, श्री शिवलाल, राइफलमैन ने अदम्य वीरता, साहस एवं उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

यह पदक, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4(i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिया जा रहा है तथा फलस्वरूप नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 31.7.2002 से दिया जाएगा।

02.05.18/0

(वरुण मित्रा)

निदेशक

सं० 246 - प्रेज/2003-राष्ट्रपति, असम राइफलस के निम्नलिखित अधिकारी को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:-

अधिकारी का नाम और रैंक

श्री लक्ष्मण सिंह,

राइफलमैन

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए पदक प्रदान किया गया:

24 सितम्बर, 2002 को आर.एम. 5105 में प्वाइंट 942 के समीप तैनात घात पार्टी के एक भाग के रूप में राइफलमैन लक्ष्मण सिंह ने साहस का परमोत्कृष्ट उदाहरण पेश किया। हवलदार शेर सिंह के सहयोगी के रूप में इन्होंने गांव वाइकहोंग आर.जी 4905 से उत्तर की ओर जा रहे रास्ते में संदेहास्पद परिस्थितियों में घूम रहे चार से पांच संदिग्ध व्यक्तियों, के एक ग्रुप को ललकारा। इस ग्रुप के संदिग्ध व्यक्तियों ने रुकने के बजाय अत्याधुनिक हथियारों और पिस्तौलों से गोलीबारी प्रारम्भ कर दी। अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की परवाह न करते हुए और समय गंवाए बगैर, इन्होंने हवलदार शेर सिंह के साथ तत्काल गोलीबारी का जवाब दिया और इससे पहले कि विद्रोही अंधेरे में हरिल नदी के पूर्वी किनारे के साथ-साथ बचकर निकल भागते, उनका पीछा किया। ये लगभग डेढ़ किलोमीटर तक निकट से उनका पीछा करते रहे और सागोलमंग मार्किट में पहुंच गए जहां एक बार फिर उनसे मुठभेड़ हुई। त्वरित कार्रवाई करते हुए राइफलमैन लक्ष्मण सिंह ने पहाड़ियों के दक्षिण की ओर बचकर भागने का प्रयास कर रहे विद्रोहियों पर गोलीबारी की और उन्हें मार गिराया। मारे गए विद्रोहियों की पहचान बाद में मणिपुर की प्रतिबंधित पीपुल्स लिबरेशन आर्मी (पी.एल.ए.) के कोनसम बॉय और इरेंगबम सुन्दर उर्फ नानाऊ के रूप में हुई। उनसे निम्नलिखित शस्त्र और गोलाबारूद बरामद किए गए :-

(क)	9 एम.एम. पिस्तौल	:	01 (एक)
(ख)	9 एम.एम. के जिन्दा राउन्द	:	06 (छह)
(ग)	पीपुल्स लिबरेशन आर्मी के अभिशंसी दस्तावेज		

इस मुठभेड़ में, श्री लक्ष्मण सिंह, राइफलमैन ने अदम्य वीरता, साहस एवं उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

यह पदक, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4(i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिया जा रहा है तथा फलस्वरूप नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 24 सितम्बर, 2002 से दिया जाएगा।

बलरूप मित्रा
(बलरूप मित्रा)
निदेशक

सं० 247 - प्रेज/2003-राष्ट्रपति, असम राइफल के निम्नलिखित अधिकारी को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:-

अधिकारी का नाम और रैंक

श्री मोहम्मद रियाकत,
राइफलमैन

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए पदक प्रदान किया गया:

केथेलमाम्बी आर.जी. 4020 जिला सेनापति मणिपुर के पास के गांव के मुख्य चर्च में कुकी रिवोल्यूशनरी आर्मी से संबंध रखने वाले छह सशस्त्र उग्रवादियों जो सादी वर्दी में थे, के विरुद्ध 17 दिसम्बर, 2002 को लगभग 1400 बजे एक पार्टी, जिसमें एक अधिकारी, दो जूनियर कमीशन्ड अधिकारी और 30 अन्य रैंक थे, द्वारा एक अभियान चलाया गया। कंपनी कमांडर ने शीघ्र ही स्थिति का मूल्यांकन करने के पश्चात पार्टी को 3 उप समूहों में बाँटा ताकि चर्च क्षेत्र में पूर्वोत्तर, दक्षिण पश्चिम और उत्तर पश्चिम दिशाओं से पहुँचा जा सके। राइफलमैन रसोइया मोहम्मद रियाकत, जो पार्टी का लीडिंग स्काउट था, नायब सूबेदार नसीब सिंह के नेतृत्व में उत्तर पश्चिम दिशा से चर्च की ओर बढ़ रहा था। जब पार्टी मुख्य चर्च की ओर बढ़ रही थी उन्हें कंपनी कमांडर ने सूचित किया कि उनके ग्रुप ने छह उग्रवादियों में से तीन को मार दिया है और वे भाग रहे उग्रवादियों का पीछा कर रहे हैं। इसी बीच दक्षिण पश्चिम दिशा से चर्च की ओर बढ़ रहे दूसरे ग्रुप ने चौथे उग्रवादी को मार गिराया। जब कंपनी कमांडर का ग्रुप भाग रहे उग्रवादियों का पीछा कर रहा था, तभी राइफलमैन रसोइया मोहम्मद रियाकत ने देखा कि नाले के पार तैनात कुकी रिवोल्यूशनरी आर्मी की वर्दी में लगभग 10 से 15 सशस्त्र उग्रवादी थे जो कंपनी कमांडर के सब ग्रुप पर गोलीबारी कर रहे थे। समूची पार्टी के पास इन वर्दीधारी सशस्त्र कांडरों की मौजूदगी के बारे में पहले से कोई सूचना नहीं थी। अपने कंपनी कमांडर के ग्रुप को आसन्न खतरे को भांपते हुए, उन्होंने राइफलमैन लेशराम इंगोशाबी सिंह से उनको कवर करने के लिए कहा और अपने सब ग्रुप कमांडर से अनुरोधों का इंतजार किए बिना उन्होंने आधी निर्मित दीवार के पीछे छलांग लगा दी और 15 उग्रवादियों पर भारी गोलीबारी शुरू कर दी। उन्होंने यह कार्रवाई अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की बिल्कुल परवाह न करते हुए की ताकि वे कंपनी कमांडर के सब ग्रुप की तरफ गोलीबारी न कर सके। उग्रवादी इस कार्रवाई से आश्चर्यचकित हो गए और उन्होंने तत्काल कंपनी कमांडर के ग्रुप पर गोलीबारी रोक दी। उन्होंने फिर राइफलमैन रसोइया मोहम्मद रियाकत के साथ उसके मुखबिर पर गोलीबारी शुरू कर दी जो तब तक दूसरी पोजीशन पर चले गए थे और उग्रवादियों पर गोलीबारी शुरू कर दी। जिसके परिणामस्वरूप, उग्रवादी सोचने लगे कि वे घिर गए हैं और वे अपना मोर्चा छोड़ जंगल में भाग गए। श्री रियाकत द्वारा समय से की गई इस कार्रवाई से न केवल कंपनी की पार्टी के कर्मियों की जानें बच गई बल्कि कुल मिलाकर इससे अभियान की सफलता मिली जिसके परिणामस्वरूप अपनी टुकड़ियों और सिविलियन में से किसी के भी हताहत हुए बिना कुकी रिवोल्यूशनरी आर्मी के चार कट्टर उग्रवादी मारे गए। मारे गए उग्रवादियों की पहचान निम्नलिखित के रूप में की गई :-

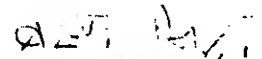
- (क) हेमसत चोंग्लोई उर्फ होपसन (स्वभू कैप्टेन), आयु 25 वर्ष
- (ख) मंगसत चोंग्लोई उर्फ कमांडो, आयु 29 वर्ष
- (ग) पेओचा चोंग्लोई उर्फ एलविस, आयु 20 वर्ष
- (घ) पेओलेन डिम्मेगेल, आयु 18 वर्ष

मुठभेड़ स्थल से निम्नलिखित शस्त्र और गोलाबारूद बरामद किया गया :-

(क)	9 एम.एम. पिस्तौल	02
(ख)	मैगजीन 9 एम.एम पिस्तौल	02
(ग)	9 एम.एम. बाल	09
(घ)	पॉइन्ट 22 राइफल	01
(ङ)	गोलाबारूद पॉइन्ट 22	07
(च)	लैटर की बेल्ट के साथ पिस्तौल पाउच	01
(छ)	वेब क्लोथ के साथ पिस्तौल पाउच	01

इस मुठभेड़ में, श्री मोहम्मद रियाकत, राइफलमैन ने अदम्य वीरता, साहस एवं उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया ।

यह पदक, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4(i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिया जा रहा है तथा फलस्वरूप नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 18.12.2002 से दिया जाएगा ।


(बरुण मिश्रा)
निदेशक

सं0 248 - प्रेज/2003-राष्ट्रपति, रेल मंत्रालय के निम्नलिखित अधिकारी को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:-

अधिकारी का नाम और रैंक

डा० सत्येन्द्र नारायण पांडे,
डिविजनल सुरक्षा आयुक्त (आर.पी.एफ., बी.आर.सी.)

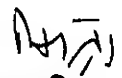
उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए पदक प्रदान किया गया:

गोधरा (गुजरात) में 27.2.2002 को साबरमती एक्सप्रेस पर भीड़ द्वारा हमला करने की सूचना प्राप्त होने पर, श्री एस.एन. पांडे डिविजनल सुरक्षा आयुक्त (डी.एस.सी.) ने स्थानीय आर.पी.एफ. यूनिट से आर.पी.एफ. कर्मियों को शस्त्र/गोलाबारुद के साथ लामबंद करने का आदेश दिया और गोधरा जाने के लिए एक हल्के इंजन और एक कोच उपलब्ध कराने हेतु ए.डी.आर.एम. से संपर्क किया। नरसंहार स्थल पर पहुँचने पर, श्री एस.एन. पांडे ने अपनी कमान में उपलब्ध सीमित स्टाफ को फंसे यात्रियों की सुरक्षा के लिए अतिसावधानीपूर्वक संगठित किया। जब वे साबरमती एक्सप्रेस के फंसे यात्रियों को ट्रेन में चढ़ने के लिए मना रहे थे तो रेल पटरी के पश्चिमी तरफ कुछ दुकानें जलनी शुरू हो गईं और इसके तत्काल बाद रेल पटरी की पूर्वोत्तर दिशा से एक पूजास्थल से उत्तेजक आह्वान शुरू हो गया जहाँ से लगभग एक हजार लोगों की सशस्त्र भीड़ लाठियों, तलवारों से लैस, फंसे यात्रियों और रेलवे कर्मचारियों और वहाँ उपस्थित अन्य लोगों पर पथराव करते हुए रेल पटरी की तरफ बढ़ी। अपने लोगों को उत्पन्न गंभीर खतरे को देखकर और अत्यधिक सूझबूझ के साथ, श्री पांडे केबिन "ए" में दृढ़ता से खड़े रहे और गोलीबारी का आदेश दिया और ट्रेन के शेष यात्रियों को सुरक्षित रूप से चढ़ाने हेतु समुचित सुरक्षा प्रबंध किए। 3 आर.पी.एफ. कर्मियों ने उनके आदेश पर 19 राउंड गोलियां चलाईं, जिसके कारण भीड़ स्थायी रूप से तितर-बितर हो गई और आर.पी.एफ. एवं जी.आर.पी. की भारी सुरक्षा के बीच ट्रेन का चलना सुनिश्चित हो सका। इस प्रकार, श्री पांडे ने उस अभागी साबरमती एक्सप्रेस के यात्रियों पर होने वाले दूसरे नरसंहार को टाल दिया और हजारों यात्रियों, रेलवे कर्मचारी और वहाँ मौजूद अन्य अधिकारियों की जान और माल की सुरक्षा की। इसी प्रकार, श्री पांडे ने समूचे बड़ोदा डिविजन में आर.पी.एफ. सुरक्षा का इंतजाम किया तथा आवश्यक ड्यूटी के लिए तैनात आर.पी.एफ. स्टाफ को आर.पी.एफ. मार्गरक्षण मुहैया कराया। श्री पांडे ने बड़ोदा शहर में सभी कॉलोनियों का निरंतर दौरा किया। 28.2.2003, 1 और 2 मार्च, 2003 को जिस क्षण आगजनी और लूटपाट पूरे चरम सीमा पर थी और जब हुड़दंगबाज आस-पास के क्षेत्रों में लोगों को जख्मी करते और संपत्ति को नष्ट करते हुए घूम रहे थे, तब श्री पांडे ने व्यक्तिगत रूप से कुछ आर.पी.एफ. स्टाफ के साथ पूरी रात प्रतापनगर और सरदारनगर रेलवे कॉलोनियों पर पहरा दे रहे थे और उन्होंने हुड़दंगबाजों को रेलवे कॉलोनियों के भीतर घुसने नहीं दिया। उन्होंने अपनी कमान में उपलब्ध न्यूनतम स्टाफ के साथ कॉलोनियों की गश्त आयोजित की और अपने बल को कारगर रूप से विद्रोही भीड़ का सामना करने के लिए प्रेरित और प्रोत्साहित किया। केवल लूटपाट के प्रयास की एक छोटी सी घटना को छोड़कर, बड़ोदा क्षेत्र की रेलवे कॉलोनियों में कोई अप्रिय घटना नहीं हुई और इन कॉलोनियों में कोई व्यक्ति जख्मी नहीं हुआ। श्री पांडे को जहाँ कहीं भी किसी भी स्टेशन से उपद्रव का संदेश मिला वहाँ उन्होंने प्रहारक बल को स्टेशनों की ओर भेजा। ऐसे ही एक मामले में, जब एक सूचना प्राप्त हुई कि एक उपद्रवी भीड़ ने इटोला रेलवे स्टेशन को घेर लिया है तब श्री पांडे ने 2/3 मार्च की रात में आर.पी.एफ. टीम को इटोला रेलवे स्टेशन की ओर कूच करने का आदेश दिया। आर.पी.एफ. टीम के समय से पहुँच जाने से भीड़ तितर-बितर हो गई, जो अल्पसंख्यक समुदाय के 25 लोगों, जो स्टेशन पर सुरक्षित जगह पर जाने के लिए

इकठ्ठे हुए थे, पर हमला करने का प्रयास कर रही थी। आर.पी.एफ. टीम ने उन्हें बचाया और उन्हें सुरक्षित वड़ोदरा स्टेशन ले आई और आर.पी.एफ. संरक्षण में रखा तथा उन्हें उनके गंतव्य स्थानों के लिए सुरक्षित भेज दिया। डी.आर.एम./वड़ोदरा डिविजन की मदद से, उन्होंने प्रताप नगर, वटवा, इलैक्ट्रिक लोको शेड, करचिया और अहमदाबाद स्टेशन पर आर.पी.एफ. कार्यालयों में 283 अल्पसंख्यक समुदाय के रेलवे कर्मचारियों और उनके परिवारों को शरण उपलब्ध कराने का इंतजाम किया। आस-पास की कॉलोनिओ के हुड़दंगियों, जो हमला करने और लूटने के लिए लगातार प्रयास कर रहे थे, से इन लोगों को गंभीर खतरा होने के बावजूद, वे सांत्वना देते और भय दूर करने में समर्थ हुए। श्री पांडे ने बगैर आराम के लगातार 72 घंटे तक काम किया लेकिन आश्चर्यजनक रूप से वे शांतचित रहे और मददगार आचरण बनाए रखा।

उपर्युक्त घटनाओं में, डा. सत्येन्द्र नारायण पांडे, डी.एस.सी. आर.पी.एफ. (बी.आर.सी.) ने अदम्य वीरता, साहस एवं उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

यह पदक, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4(i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिया जा रहा है तथा फलस्वरूप नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 27 फरवरी, 2002 से दिया जाएगा।

4271) 
(बख्श मित्रा)
निदेशक

सं0 249 - प्रेज/2003-राष्ट्रपति, मध्य प्रदेश पुलिस के निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए पुलिस पदक सहर्ष प्रदान करते हैं:-

अधिकारियों के नाम और रैंक

सर्व/श्री

1. राम निवास, पुलिस अधीक्षक (अब पुलिस महानिरीक्षक, रायपुर, छत्तीसगढ़)
2. संजीव शामी, एस.डी.पी.ओ. (अब सहायक पुलिस महानिरीक्षक, मध्य प्रदेश)

उन सेवाओं का विवरण जिनके लिए पदक प्रदान किया गया:

17/18 मार्च, 1997 की मध्य रात्रि, सूचना प्राप्त हुई कि सशस्त्र डकैत एक अपहृत व्यक्ति के साथ पिछोर तिराहा क्षेत्र में ठहरे हुए हैं। श्री राम निवास, पुलिस अधीक्षक ग्वालियर तत्काल पुलिस स्टेशन डबारा गए। उन्होंने उपलब्ध बल से तीन पार्टियां बनाई। पहली और दूसरी पार्टी को डकैतों को घेरने के लिए तैनात किया गया। श्री राम निवास के नेतृत्व में तीसरी पार्टी कार्रवाई के लिए आगे बढ़ी। कुछ समय बाद उन्होंने गेहूं के खेतों में हलचल देखी। उन्होंने डकैतों को आत्मसमर्पण के लिए ललकारा परन्तु डकैतों ने पुलिस कार्मिकों पर गोलीबारी प्रारम्भ कर दी। एक गोली श्री ए.के. भादोरिया के कान के पास से सनसनाती हुई गुजर गई। यह देख श्री राम निवास ने श्री भादोरिया को कवर दिया, डकैतों पर गोली चलाई और एक डकैत को मार गिराया। श्री भादोरिया ने अपनी जान की परवाह न करते हुए डकैतों की तरफ गोली चलाई और दूसरे डकैत को मार गिराया। साथ-साथ श्री संजीव शामी, एस.डी.ओ.पी. डाबड़ा ने भी अपनी 9 एम.एम. पिस्तौल से गोली चलाई। अनुवर्ती गोलीबारी में डकैत अपहृत व्यक्ति के साथ जंगल की तरफ भाग गए। उसके बाद श्री राम निवास ने भाग रहे डकैतों की तलाशी का नियोजन किया। वे सर्व/श्री शामी और भादोरिया और अन्य पुलिस कर्मियों के साथ जंगल की तरफ गए। रास्ते में उन्हें सूचना मिली कि डकैत अपहृत व्यक्ति के साथ सिद्धकोट जंगल की तरफ जा रहे हैं। जब पुलिस पार्टी नाले के पास पहुंची तो डकैतों जिन्होंने नाले में छिपकर मोर्चा लिया हुआ था ने गोलियां चला दी और चिल्लाए "पुलिस वालों वापस जाओ वरना अपहृत व्यक्ति की हत्या कर दी जाएगी।" पुलिस कार्मिकों ने पोजीशन ली और आगे बढ़े। इस बीच एक व्यक्ति जिसके हाथ पीछे की ओर मोड़कर बंधे हुए थे यह चिल्लाते हुए वही अपहृत व्यक्ति है, भागते हुए पुलिस कार्मिकों की ओर आया। इस पर डकैतों ने अपहृत व्यक्ति पर गोलीबारी प्रारम्भ कर दी। अपहृत व्यक्ति का जीवन खतरे में देख सर्व/श्री राम निवास और संजीव शामी बाहर निकले और डकैतों पर गोलियां चलाई। डकैत भी पुलिस कार्मिकों पर गोलीबारी करते रहे। सर्व/श्री राम निवास और संजीव शामी की लगातार गोलीबारी के परिणामस्वरूप दो डकैत मारे गए। मारे गए डकैतों की पहचान (i) अकलीम ; (ii) सत्यदेव उर्फ सते ; (iii) लतीफ उर्फ लतार ; और (iv) संतोष के रूप में हुई। तलाशी के दौरान मुठभेड़ स्थल से एक .315 राइफल, एक .12 बोर एस.बी.एल.गन, एक .303 बोर हाफ बैरल गन, एक देशी गन के साथ बड़ी मात्रा में गोलाबारूद बरामद किए गए। मारे गए डकैतों ने बड़ी संख्या में जघन्य अपराध किए थे और ग्वालियर और मुरैना जिलों में आतंक फैला रखा था।

इस मुठभेड़ में, सर्व/श्री राम निवास, पुलिस अधीक्षक और संजीव शामी, एस.डी.ओ.पी. ने अदम्य वीरता, साहस एवं उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

ये पदक, पुलिस पदक नियमावली के नियम 4(i) के अंतर्गत वीरता के लिए दिए जा रहे हैं तथा फलस्वरूप नियम 5 के अंतर्गत स्वीकार्य विशेष भत्ता भी दिनांक 18 मार्च, 1997 से दिया जाएगा।

(बलरूप मित्रा)
निदेशक

सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय

नई दिल्ली, दिनांक 12 नवम्बर 2003

संकल्प

सं० 11015/1/2002- हिन्दी: इस मंत्रालय के दिनांक 28 जनवरी, 2002 के समसंख्यक संकल्प तथा 8 अक्टूबर, 2002 की अधिसूचना के अनुक्रम में उपर्युक्त संकल्प में निम्नानुसार संशोधन किए जाते हैं--

1. "गठन" शीर्षक के अंतर्गत क्रम सं० 1 में सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्री - अध्यक्ष तथा
2. सामाजिक न्याय और अधिकारिता राज्य मंत्री - उपाध्यक्ष के बाद
3. सामाजिक न्याय और अधिकारिता राज्य मंत्री - उपाध्यक्ष जोड़ा जाए।

आदेश

आदेश दिया जाता है कि इस संकल्प की प्रति समिति के सभी सदस्यों, सभी राज्य सरकारों एवं संघ राज्य क्षेत्र प्रशासनों, भारत सरकार के सभी मंत्रालयों/विभागों, राष्ट्रपति सचिवालय, प्रधान मंत्री कार्यालय, मंत्रिमंडल सचिवालय, संसदीय कार्य मंत्रालय, लोक सभा सचिवालय, राज्य सभा सचिवालय, योजना आयोग तथा भारत के नियंत्रक एवं महालेखा - परीक्षक को भेजी जाए।

यह भी आदेश दिया जाता है कि इस संकल्प को सर्वसाधारण की जानकारी के लिए भारत के राजपत्र में प्रकाशित किया जाए।

सपना राय।

सपना राय, संयुक्त सचिव

PRESIDENT'S SECRETARIAT

New Delhi, the 12th November 2003

CORRIGENDUM

No. 250-Pres/2003.—The following amendment is made in this Secretariat Notification No. 138-Pres/2002 dated 15.8.2002 published in Part-I, Section 1 of the Gazette of India dated Saturday, the 7th September, 2002 :—

In Paragraph one

For : 11.6.2002

Read : 11.6.2001

In Paragraph three

For : 11.6.2002

Read : 11.6.2001

BARUN MITRA
DirectorThe 17th November, 2003

No. 110-Pres/2003 - The President is pleased to award the President's Police Medal for Gallantry to the undermentioned officer of Andhra Pradesh Police:-

NAME & RANK OF THE OFFICER

Dr. A Ravi Shankar, IPS
Supdt. of Police

Statement of service for which the decoration has been awarded:

On 17th March 2001, evening Dr. A. Ravi Shankar, received information that the newly formed People Guerilla Army (PGA), platoon of Nizamabad District, after the conclusion of training camp were about to disperse from the Pipri Gutta (586 fts) peak in Rahathnagar Reserve Forest. At 1700 hours, Dr. A. Ravi Shankar, led the Police party and proceeded to the Rahathnagar Reserve Forest and laid night ambush at probable retreat routes at the Foothill of the Pipri Gutta (586 fts) along the rivulets. Early in the morning of 18-3-2001 by day-break around 5 AM, the Police party started combing the hillock and advanced towards the hill top. Around 0830 hours, police party came under heavy gun fire. Dr. A. Ravi Shankar instructed the police party to take counter ambush measures and disclosed their identity to the extremists and advised them to surrender. The extremists continued firing at the police party, effectively pinning it down due to punching fire with height advantage as the Naxalites were on the Hilltop. Dr. A. Ravi Shankar assessed the situation and decided to lead an assault group on the extremist camp. He along with five of his men charged on the extremist camp unmindful of their safety with a view to neutralize the danger to the police party. As soon as he led the charge, he and his assault group came under automatic gunfire. Dr. A. Ravi Shankar opened fire and his burst brought down two extremists who were giving cover fire for the other extremists to escape along the rivulet. Dr. A. Ravi Shankar and his team were attacked by grenades, which due to thick forest canopy dropped near the police team. He crawled up the hillock and

reached the enemy's sentry post and lobbed grenades at the fleeing extremists. Due to the brave assault by Dr. A. Ravi Shankar and his team, the extremists retreated after half an hour of exchange of fire. The police party led by Dr. A. Ravi Shankar chased the extremists along the rivulet and after 2 KMs of chase another extremist was shot down. The killed extremists were identified as (1) Nirmalakka @ Vasanthamkka, Section Commander, (2) Kommu Babai @ Sarithakka, Platoon Member & (3) Kothappalli Bharathi @ Vanja, Platoon Commander, carrying a reward of Rs. 1 lakh each on their head.

The following recoveries were also made from the site:-

1. Two .303 Rifles & Two Magazines with live Cartridges
2. Two SBBL Guns with live cartridges
3. One 12 bore Tapancha with live cartridges
4. One Wireless Motorola Hand Set
5. One Exploder Remote and detonators
6. Eleven Kit Bags
7. PWG-Literature
8. Water Cans & Utensils.

In this encounter Dr. A. Ravi Shankar, IPS, Supdt. of Police displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

This award is made for gallantry under Rule 4(i) of the rule governing the award of President's Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 18th March, 2001.



(BARUN MITRA)
DIRECTOR

No. 111-Pres/2003 - The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officer of Andhra Pradesh Police:-

NAME & RANK OF THE OFFICER

Shri P. Thirumalesh,
Sub-Inspector.

Statement of service for which the decoration has been awarded:

On 5.8.2001 at 1030 hours Shri P. Thirumalesh, Reserve Sub-Inspector of Police, District Guards and three others were deputed for an Aerial Survey by Helicopter. While they were flying over Chandurthi hillocks, at about 1315 hours. Shri P. Thirumalesh noticed the movements of few persons on the hillock ranges near Rudrangi village through the window of the chopper. Immediately, he marked the location on the Survey of India map and recorded the ground position in GPS and conveyed the information to the SP/ Addl.SP (Ops), Karimnagar and rushed to the district headquarters in the same Helicopter. Shri P. Thirumalesh, planned the operation with only one party and after the permission of the S.P. rushed to the area in which there was movement of extremists. The police party checked three hillocks before actually going to Kochagutta (on which the extremists were sighted). The police party climbed Kochagutta and noticed one tent and presence of few cadres on the hillock. On seeing the police party, extremists approximately numbering eight started indiscriminate firing at the police party. The police party under the leadership of Shri P. Thirumalesh, SI, retaliated the firing and also inflicted heavy casualties on extremists. The fierce fighting which lasted for 20 minutes resulting in the killings of the five extremists (1) Tharre Srinu @ Karre Srinu, 24 yrs s/o Narsaiah r/o Lingampet, Dy. Commander. (2) Kadasu Ramesh @ Madhu, 18 years r/o Lingampet, Dalam member (3) Tharre Sanjeev @ Puli Raju s/o Gangaram, 18 yrs, r/o Lingampet, Dalam Member (4) Rajeshwari @ Chaitanya w/o Beeraiah, 20 years Kurma r/o Marrimadla, Dalam Member (5) Sailla Komuraiah s/o Lingaiah, 19 yrs, Kurma r/o Rudrangi, all belongings to Rangaraopet Guerilla Squad of CPI ML Jana Shakthi Group. One 30 Carbine assault rifles, one 8 MM Rifles, One .45 Revolver, one DBBL Gun, One country made weapon some live rounds, Kit bags etc were recovered from the site of encounter.

In this encounter, Shri P. Thirumalesh, Sub-Inspector displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of the high order.

This award is made for gallantry under Rule 4(i) of the rule governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 5th August, 2001.



(BARUN MITRA)
DIRECTOR

No. 112-Pres/2003- The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Andhra Pradesh Police:-

NAME & RANK OF THE OFFICER

S/ Shri

1. D. Gautam Sawang, IPS
DIGP Warangal Range, Warangal
2. R. Venkatiah,
Dy. Assault Commander, Grey Hounds, Hyderabad.


Statement of service for which the decoration has been awarded:

On 10-03-2002, Sh. D. Gautam Sawang received information through his source, that top cadres of Peoples War Group (PWG), Naxalites, along with their military formation, i.e. Platoons of the Peoples Guerilla Army, numbering about hundred to hundred fifty, are holding camp at "Dub bathogu-Chatlathogu" Valley, in the deep jungles of Nagaram forest area, of Eturnagaram Police Station, Warangal District, after crossing river Godavari, at the tri-junction of the Andhra Pradesh-Chattisgarh and Maharashtra States, planning and rehearsing for a major action, i.e., attack on Police Stations, Etrunagaram and Thadvai. Sh. Sawang, DIGP acting promptly, in the absence of Supdt. of Police Warangal, organized special teams, including Grey Hound Units from neighbouring districts of Karimnagar and Khammam of his Range, planned a swift operation involving 6 Police teams. Keeping in with the credibility of his source and the nature of information, he decided to personally lead the assault teams comprising mainly of 2 units of Grey Hounds. By early hours of 11-03-2002, before daybreak, all the 6 teams were dropped in the field as per plan. The 2 assault teams, in close formation, led by Sh. Sawang reached the target area by noon and while combing, was suddenly fired upon by one of the observation/sentry post of the PWG camp. The Police parties immediately took cover and fired back. Sh. Sawang deftly crawled and crept up to a vantage location on a higher ground, and quickly assessed the situation by observing the gunfire of the extremists emanating from various locations and directions, and planned an assault to neutralise the sentry posts and attack the main camp site. He further sub-divided the two parties, briefed them on how to close on to the extremist camp in the valley, from different

Thanks. Sh. K. Srinivas, Sr. Commando rushed forward to the extremist sentry post and threw a grenade. The grenade explosion deterred the extremist which enabled the police party to move forward. The police party came under heavy LMG fire. Sh. Srinivas rushed forward and killed the extremist. Sh. Sawang despite grave personal risk, led half a team and advanced into the centre of the camp area, braving incessant firing from well entrenched extremists with automatic weapons. The progress was intermittently halted by the intensity of firing and blasting of the claymore mines planted by the extremists as a defence measure, often unnerving the policemen. Due to courageous shown by Sh. Sawang, his team followed him and advanced towards the direction, where from the maximum fire. Sh. R. Venkataiah, Dy. Assault Commander immediately divided the police party in two and closed on the extremist camp from two sides despite grave personal risk as there was incessant firing from several extremists who were still well entrenched. Sh. Venkataiah in a rare display of courage advanced into the extremist camp with 5 other police personnel and launched a courageous assault on them. The encounter between the extremist and the police party led by Shri Venkataiah lasted for about 45 minutes. The encounter between the Police parties and the PWG extremists which lasted for about an hour, and the subsequent chase into the forests in search of the fleeing extremists, left eight extremists and a Sub Inspector of Police dead. Amongst the killed were Dhandeboina Jawaharlal @ Prabhakar, Commander of Military Platoon, and Member of Sub-Zonal Military Command, two Section Commanders of Military Platoon, Bangari Bhaskar @ Devender and Palloboina Chinakka @ Padmakka @ Swarnakka and 5 other members of PWG Military Platoon. Subsequently, it was also reported that, several extremist received grievous bullet injuries, of whom 2 succumbed to injuries as they crossed over to Chattisgarh forest area for safety. It also led to recovery of huge cache of arms, such as one LMG, three SLRs, two .303 Rifles, one 9 mm SAF Carbine, three DBBL Guns, four magazines of LMG and SLRs three claymore mines, four grenades, four Icom VHF Scanner sets, ammunitions(including tracers) host of important literature, documents and other belongings.

In this encounter S/Shri D. Gautam Sawang, IPS, DIGP & R. Venkataiah, Dy. Assault Commander displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4(i) of the rule governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 11th March, 2002.


(BARUN MITRA)
DIRECTOR

No. 113-Pres/2003 - The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Andhra Pradesh Police:-

NAME & RANK OF THE OFFICER

S/Shri

1. Y. Nagi Reddy IPS,
Addl.S.P.
2. R. Narender,
RSI, Warangal Distt.
3. K. Nireekshan Rao,
PC, Warangal Distt.


Statement of service for which the decoration has been awarded:

On 25/7/2002, a reliable information was received that Jangaon Area Committee of PWG was camping near Gadida guttalu and Enuparaila guttalu, between Velair and Somadevarapalli villages. The area is about 20 square kilometers, mostly hills, on the border of Warangal and Karimnagar districts. An operation code named 'Stone Park' was launched to neutralize the extremists and three units of District Guards and one of Grehhounds were dispatched during the night, to start combing on the early hours of 26 July 2002. Shri Y. Nagi Reddy Addl. S.P(Ops), led Unit II of District Guards as the assault party, which encountered the extremists. On 26/7/2002 morning Shri Reddy and Shri R. Narender, along with police party, combed the area but found a vacant camp. Without losing hope of finding the extremists, the police party continued to persevere. At about 1415 hours, movement of armed extremists was noticed behind two mounds of dug up earth, near a cornfield. The extremists started firing indiscriminately at the approaching police party. Shri Reddy Addl. SP subdivided the unit into two cut off parties, to cover the flanks, and led a small assault group along with Shri R. Narender and Shri K. Nireekshan Rao. They quickly crossed the claymore mines, by crawling, and rushed towards the extremists. Two squad members were killed by the assault group near the camp. However, all senior cadres started retreating all the while firing at the assault group. Shri Reddy, Addl. SP altered the cut off parties while the left and right cut off's were giving

cover fire, the assault group chased a group of three extremists, who were firing from SLR, 7.62 mm rifle and sten carbine. Unmindful of danger to their lives, the assault group fired at the extremists neutralizing them one after another. The gallant action of Shri Reddy, Shri R. Narender and Shri Nireekshan Rao, resulted in elimination of 1) Thangallapalli Suresh @ Sreenu, District Committee Member, 2) Gajerla Ramesh @ Naveen, Jangaon Area Committee Secretary, 3) Md. Ankus Bee @ Jyothakka @ Arunakka, Commander of Dharmasagar Local Guerilla Squad, (LGS), 4) Dande Kalpana @ Madhavi, member of Dharmasagar LGS, 5) Gandhi Pochamma @ Padmakka, Member of Dharmasagar LGS. In this encounter, one SLR, one 7.62 mm rifle, one 9 mm sten carbine, one SBBL, one .38 revolver, five grenades and two claymore mines were recovered from the slain extremists.

In this encounter S/Shri Y. Nagi Reddy, IPS Addl.S.P., R. Narender, RSI & K. Nireekshan Rao, PC displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4(i) of the rule governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 26th July, 2002.


(BARUN MITRA)
DIRECTOR

No. 114—Pres/2003 - The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officer of Andhra Pradesh Police:-

NAME & RANK OF THE OFFICER

Shri P Seeta Ram,
Dy. A.C.

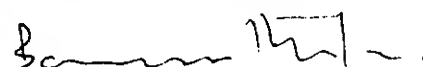
Statement of service for which the decoration has been awarded:

27.04.2000 on specific information regarding left wing people War Group Dalams presence near Chandragiri hillocks in Warnagal District, immediately Sh. P Seeta Ram went alongwith a police party to apprehend them since the PWG is known for shifting places to avoid police parties. While searching the hillocks, the police party noticed movement of a group of about 15-armed PWG squad. Without disclosing its presence, the police party closed on them from three different directions. At the foot of hillock, Shri Ram asked PWG armed cadres to surrender in response to which volley of fire came from behind the boulders of hillocks. The PWG cadres had taken position at elevated places behind boulders. In order to apprehend them, a police party climbed the hillock from the back and took position at an elevated place due to which the armed cadres were forced to come in the open and continued firing on the police party in a close quarter battle. Shri P Seeta Ram unmindful of personal risk led the police amidst fire, thorny bushes and rough uphill terrain. In the ensuing gun battle, which lasted for 6 hours, 12 very important underground-armed cadres of peoples War Group died. The following recoveries were made after the action: -

- | | | | |
|--------|---|---|--------------------------------|
| (i) | SLR | - | one (with one extra magazine) |
| (ii) | 9 mm Carbine | - | one (with one extra magazine) |
| (iii) | .303 Rifle | - | Two |
| (iv) | DBBL/SBBL Guns | - | Seven |
| (v) | 8 mm rifle | - | one |
| (vi) | 410 musket | - | one |
| (vii) | AK 47 magazine(extra) | - | one |
| (viii) | Large qty of amn.
Improved explosive devices | | |
| (ix) | Kit bags | - | Eight |

In this encounter Shri P Seeta Ram, Dy. Assault Commander displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

This award is made for gallantry under Rule 4(i) of the rule governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 27th April, 2000.



(BARUN MITRA)
DIRECTOR

No. 115-Pres/2003- The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Andhra Pradesh Police:-

NAME & RANK OF THE OFFICERS

Shri R. Eswara Reddy,
Supdt. of Police

Statement of service for which the decoration has been awarded:

Sh. R. Eswara Reddy. IPS. SP, Andhra Pradesh was deployed with UN Peacekeeping Mission in Bosnia & Herzegovina from July 1998 to July 1999. On 9 January 1999 while Shri R. Eswara Reddy was on duty from 1600 at Foca town UNIPTF Station, an unruly Serbian Christian mob gathered and surrounded the station, in protest against the killing of Dragon Gagovic, idolized as a local Serbian hero, in an encounter by the French Soldiers of the NATO led Stabilization Force that day at around 12-00 hours at Ustipraca Junction, a short distance away. The deceased was indicated as a War Criminal of the 1992-995 Bosnian War by the UN War Crimes Tribunal, Hague on charges of raping and torturing Muslim women and girls and was, therefore, required to be arrested by the SFOR troops for facing trial before the Tribunal. When SFOR troops attempted to arrest him, he was travelling in a car and he tried to run over them in a bid to escape arrest. Hence, he was shot dead by the French soldiers of SFOR. Five children who were being taught karate by him were also travelling in the car with him were not hurt and were taken to safe custody by the French soldier and were moved to their point, 10 kms away from Foca town. The irate Serbs, who were seething with anger over the killing of their local hero assembled at the Foca UNIPTF Station that day evening, Shri Reddy was the duty officer at that time at the Foca UNIPTF Station. Shri Reddy and his other colleagues (numbering 4) at the station, including the Deputy Station Commander did their best by communicating through the official interpreter with the parents of the children, who were also among the serbs gathered there, in a bid to convince them that their children were safe and not hurt in the encounter and were being brought to Foca by the Foca UNIPTF Station Commander and would be restored to them shortly.

But the die-hard nationalist Serbs, among whom a War Crimes indictee by name Janjik Janko was identified, incited and spurred the mob of Serbs to resort to acts of violence. The unruly mob made wild gesticulations and held out threats to kill the Foca UNIPTF Station Personnel including Sri R. Esswara Reddy, as retaliatory and retributory act against the killing of Dragon Gagovic in particular and to express their mounting resentment over the peace-keeping activities of the NATO troops and UN Mission agencies in general. Despite the palpable and escalating tension and attempt by some members of the mob to forcibly gain entry into the station by breaking its glass walls, Sh Reddy remained unperturbed, maintained his equanimity and informed the Regional Commander and UNI PTF Gorayile Station and SFOR port at Fili Povier. After some time, the unruly mob fired some shots, enfolded grenade and broke the glass walls and doors and criminally trespassed into the Foca UNIPTF station, ransacked and smashed all the equipment, Sh. Reddy who was unarmed put up strong resistance to save the equipment. Janjik Janko, a war criminal threatened to shoot him with a hand gun. Small group from the unruly of mob of Serbs pounced on each member of Foca UNIPTF station including Sh. Reddy and belabored them indiscriminately. After freeing themselves from the onslaught of their attackers, Shri Reddy and his colleagues jumped onto the terrace of the station and were again chased and severely beaten, attempted to be lifted and thrown from the roof top to the ground about 12 feet below. Shri Reddy put up bold resistance, freed himself from their clutches and thus foiled the attempt of the frenzied Serbian attackers. Shri Reddy received grievous injuries, having lost one tooth, other teeth being loosened and permanently impaired. Shri Reddy had contusions bruises, swelling, all over the body, particularly on the face, as certified by the Chief Medical Coordinator, UNMIBH, HQ Sarajevo.

In this encounter Shri R. Eswara Reddy, SP displayed conspicuous gallantry, courage, devotion to duty of a high order.

This awards is made for gallantry under Rule 4(i) of the rule governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 9th January 1999.


(BARUN MITRA)
DIRECTOR

No. 116—Pres/2003 - The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Andhra Pradesh Police:-

NAME & RANK OF THE OFFICER

S/ Shri

1. B. Sreenivasulu, IPS
Supdt. of Police, Hyderabad
2. T. Radhesh Murali
Inspector, Hyderabad

Statement of service for which the decoration has been awarded:

On 21-11-2002, a bomb (IED) placed in a scooter dickey by militants sponsored by Pakistan I.S.I agents exploded at Saibaba Temple, Dilsukhnagar, Hyderabad. The militants planted the bomb on that particular day fully knowing that the temple will be full of activity with huge congregation of devotees being Thursday. The explosion killed a woman devotee and injured as many as 25 persons, of which a minor boy who was injured critically, succumbed to injuries a couple of days later. The police unearthed huge quantity of unexploded explosives material from the site. This sensational bomb blast, first time in a place of worship in the history of Hyderabad, carved a wave of terror among the devotees of Saibaba and the general public. Consequent upon the blast the entire police department swung into action anticipating similar communal disturbances. At this juncture, the Counter Intelligence Cell of Intelligence Department under the supervision of Shri B Sreenivasulu, Supdt of Police swung into action to nab the terrorists. Shri B Sreenivasulu and Shri Radhesh Murali, Inspector personally cultivated and developed sources and worked out the clues in this case. Detailed probing into the incident established that the accused persons namely Mohd. Azam S/O Yousuf and Sayed Azeez @ Imran @ Khaled S/O Rasheed, both resident of Hyderabad, who were LeT operatives supervised by one Abu Hamza (Incharge of LeT operations in India other than J&K) based in Saudi Arabia, are responsible for the explosion. Further investigation conducted by Sri Sreenivasulu and Shri Radhesh Murali revealed that Azeez @ Imran @ Khaled has gone to Pakistan and

was trained by LeT in handling different sophisticated weapons, use of explosives and collection of vital information etc and launched into India through Pakistan Occupied Kashmir. He was in charge of LeT operation in South India. Azees along with his associate Azam planned to create communal disturbances by targeting religious places. They were also tasked to eliminate President, VHP, AP Unit and other top VHP/RSS leaders in Hyderabad. Shri B Sreenivasulu and Shri Radhesh Murali personally supervised in identifying and locating the accused and passed on advance information about their movements. In spite of various hassles involved in physical surveillance and risk of their very life, both the officers effectively kept surveillance day-in and day – out over these suspected persons as a result they gathered information on 23-11-2002 that Azam, associate of Azeez was moving in Uppal area. The information was immediately passed to the local police who swung into action and killed the militant in encounter besides recovery of huge quantities of explosives. Again on 24-11-2002 Shri Sreenivasulu and Shri Radhesh Murali collected information about the movements of Azeez at Karimnagar Distt. Both the officers along with the District Police Force rushed to the spot. Seeing the police party, the militant tried to escape by opening fire. Shri Sreenivasulu and Sri Radhesh Murali reacted spontaneously to the occasion, instructed the police party to take cover and opened fire at the militant in self defence to save themselves as well as other police personnel, resulting in death of the militant in exchange of fire. A Thailand make 9 mm pistol was also recovered from the possession of the killed militants besides maps of temples in Hyderabad and other incriminating material.

In this encounter, S/Shri B. Sreenivasulu, Supdt. of Police & T. Radhesh Murali, Inspector displayed conspicuous gallantry, courage, devotion to duty.

These awards are made for gallantry under Rule 4(i) of the rule governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 24th November 2002.



(BARUN MITRA)
DIRECTOR

No. 117-Pres/2003 - The President is pleased to award the President's Police Medal for Gallantry to the under mentioned officer of Andhra Pradesh Police:-

NAME & RANK OF THE OFFICERS

Shri V. Thirupathi
Circle Inspector

Statement of service for which the decoration has been awarded:

On 29-7-2001 the extremist group of CPI ML PW numbering about 200 under the leadership of Ganesh, DCS Khammam with an intention to attack on PS Eturunagaram and kill the police personnel and to take away the arms and ammunition laid an ambush at Jeedivagu, Chinnaboinapally and Thupakulagudem road. They cut down trees and placed on the road to block the vehicular traffic and to kill police personnel if they visit there. The Police Station Eturunagaram was also surrounded by some of the extremists. The extremists have also brought two tractors loaded with explosives, Iron balls, and Iron plates and parked in front and rear of the Police station. The extremists exploded the explosive of one tractor which was parked in front of the Police Station with remote control due to which Iron balls and Iron plates hit the rear side of the Police station building. The police jeep, wireless sets and some near by residential buildings were also damaged. Immediately on the explosion Circle Inspector V Thirupathi of Police Station Eturunagaram and the staff opened fire on the extremists, who returned the fire and exchange of fire ensued. Shri V. Thirupathi by displaying exemplary courage and un-daunting boldness continued to fight with the extremists and motivated other policemen to fight. Due to firing, the extremists took to heels from the scene. The reaction of Shri Thirupathi was highly exemplary, as he never allowed the extremist to move a little inch forward to the police station and thus saved the lives of his staff and foiled the attempt of extremists to take away the arms and ammunition of the Police Station. After the incident, Sh. Thirupathi recovered 2 Iron containers from the dump and later on arrested the 5 extremists responsible for the above incident.

In this encounter, Shri V. Thirupathi, Circle Inspector displayed conspicuous gallantry, courage, devotion to duty of the high order.

This award is made for gallantry under Rule 4(i) of the rule governing the award of President's Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 29th July 2001.


(BARUN MITRA)
DIRECTOR

No. 118—Pres/2003 - The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Andhra Pradesh Police:-

NAME & RANK OF THE OFFICER

S/Shri

1. A. Shivaram Krishna
Inspector
2. G. Tirupathi
Head Constable
3. N. Narsing Rao
Head Constable

Statement of service for which the decoration has been awarded:

On 21-11-2002, a bomb placed in a scooter dickey exploded at Saibaba Temple, Dilsukhnagar, Hyderabad, killing a devotee woman besides causing injuries to as many as twenty five devotees gathered in the temple. One minor boy, who was injured critically succumbed to injuries a couple of days later. This sensational bomb blast, first time in a place of worship in Hyderabad, sent a wave of terror among the devotees of Saibaba and the general public. From the place of incident the police unearthed huge quantity of unexploded explosives. Anticipating communal disturbances the entire police department swung into action. Inspector A Shiva Ram Krishna, Head Constables G Tirupathi and N Narsing Rao with a intention to nab the terrorists personally worked out the clues in this case, studying the modus operandi of the crooks responsible for the act in detail and came to a conclusion that some Muslim outfit with ill intentions of spreading communal disharmony and disturbing the communal atmosphere is responsible for the act. Detailed investigation into the incident established that Mohd Azam S/O Yousuf, R/O Yakuthpura Hyderabad and Syed Azees @ Azees @ Imran @ Khaled S/O Rasheed, R/O Malakpet Hyderabad, who are LeT operatives supervised by one Abu Hamza (in charge of LeT operations in India other than J&K) based in Saudi Arabia were responsible for the ghastly incident. It

was also revealed during the investigation that Azees @ Imran @ Khaled was trained by L-e-T for about 9 months in Pakistan occupied Kashmir in handling different weapons, use of explosives and collection of vital information etc. He was made in charge of operations for South India, to organise sabotage activities and killing of VIPs and influential people. Inspector A Shiva Rama Krishna, Head Constables G Tirupathi and N Narsing Rao personally supervised in identifying and locating the accused and passed on advance information about their movements. In spite of various hassles involved in physical surveillance and risk of very life, they effectively kept surveillance over these accused persons. On 23-11-2002 Inspector Rama Krishna, Head Constable G Tirupathi and Head Constable N Narsing Rao gathered information that Azam associate of Aziz is moving in area Uppal. Immediately they rushed to the area along with Police force. Seeing the police party, the militant tried to escape by opening fire, which was retaliated effectively. Inspector A Shiva Rama Krishna, Head Constable G Tirupathi and Head Constable N Narsing Rao exhibited excellent leadership and bravery in the face of firing of the militant with determination and courage and with out caring for their own personal safety, killed the militant in the exchange of fire. A 9 mm pistol and huge quantity of explosives were recovered from the possession of the slain militant.

In this encounter, S/Shri A. Shivaram Krishna, Inspector, G. Tirupathi, HC & N. Narsing Rao, HC displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of the high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4(i) of the rule governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 23rd November 2002.



(BARUN MITRA)
DIRECTOR

No. 119–Pres/2003 - The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officer of Andhra Pradesh Police:-

NAME & RANK OF THE OFFICER

Shri J Purnachandra Rao, IPS
S.P. Guntur Distt. (Now DIGP Hyderabad)

Statement of service for which the decoration has been awarded:

On the intervening night of 05/05/2001 at 2300 hrs, Sh. J. Purnachandra Rao, IPS received the input from one source that about 25 peoples War Naxalites including its District Committee Member were holding a meeting in Addakonda Hills near Perikapadu village in Guntur district with a preparation to attack Bellamkonda PS and to kill police personnel besides looting of weapons. Without wasting time, Shri Rao called specially trained Anti-Naxalite Squads stationed at Distt. Headquarters. He planned the operation within half an hour and despatched the parties by lorries in such a way that the hideouts located in the hills is covered with the police personnel. After despatching the squads, Shri Rao started monitoring the movement of all squads. Exactly at 0630 hrs on 06/05/2001, Shri Rao received a message that the firing is going on between the Peoples War Naxalites and the Anti Naxalite Squads. Shri Rao rushed to the spot where firing was going on without any loss of time. As soon as he reached the spot which is located 55 Kms away from Guntur town came under heavy fire from automatic weapons from the Hills. Shri Rao brought all men back to a safe place, divided them into different parties and covered the hills again. When the forces led by Shri Rao, started stalking the hills, the Naxalites hiding behind boulders and the bushes on the hills fired at police indiscriminately. Police also retaliated with firing from the ground taking the covers that were available resulting injuries to four police personnel. In the first phase of firing one naxalite was killed. In the second phase which started under direct leadership of Shri Rao, a group of 4 RI/SI/RSIs started stalking the hill without BP jackets. There was every chance that some extremists who were hiding in the bushes were firing and hurling grenades and explosives at the police. To drive the Naxalites out of their hideouts,

the firing was continued towards the direction of bushes from which the Naxalites were firing. The entire hill was covered with thorny bushes making difficult for the police to advance. The winds and scorching heat on that summer day being in May month made the task difficult for police personnel. Further, the police personnel were feeling thirsty. They were also getting exposed to the blasting of grenades, claymore mines and land mine. As a result, the movement of police was hampered. Since it was very hot and the tract was in-hospitable, the nominee and his team of committed officers took grave risk and entered the area where they had face to face encounter with the desperate and dangerous Naxalites of Peoples War. In this phase as many as three Naxalites were killed. As the jungle was impregnable and the scene of encounter was spread over a vast area, the dead body of Talathoti Nagaraju @ Mahesh, LGS Member could not be traced. In this five hour long armed exchange of fire that took place under the direct leadership of Shri Rao, four notorious extremists were killed. Of whom one was Guravaiah @ Bhasker, Dy Commander carrying cash reward on his head, another was Manda Daveedu @ Sridhar, a LGS Member, Medi Daveedu @ Yadanna, a LGS Member and fourth one was Talathoti Nagaraju @ Mahesh, a LGS Member. These extremists are known for killing police personnel and civilians apart from damaging Government properties in and around Guntur district. In this encounter one SBBL gun, grenades, Kit bags, landmine, camera flash, electric detonators cartridges, batteries and party literature were recovered from the possession of the Naxalites.

In this encounter, Shri J. Purnachandra Rao, IPS, DIGP displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of the high order.

This award is made for gallantry under Rule 4(i) of the rule governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 6th May 2001.



(BARUN MITRA)
DIRECTOR

No. 120-Pres/2003 - The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officer of Andhra Pradesh Police:-

NAME & RANK OF THE OFFICER

Shri Jitender, IPS
Supdt. of Police

Statement of service for which the decoration has been awarded:

Shri Jitender, SP Mahaboobnagar District received information on 15.03.1999 that PWG extremists of Upper Plateau dalam with arms are camping between Tatigundala and Thimmareaddy pally village of Amarabad Mandal of Mahaboobnagar District. Shri Jitender formed a party of Trainee RSIs who had been there for jungle exercises, briefed then and proceeded to the suspected place of shelter in deep jungle. On the way, the police party recovered a kit bag and then followed the footprints and reached very near to the dalam without being noticed. After reaching near to the dalam, Shri Jitender warned the extremist to surrender to police. However, the PWG extremists took the position and retaliated by opening fire at the police party from a very close range. Shri Jitender immediately asked the police party to take position and advanced by crawling. However, the extremist kept on firing at the police party, thereby disclosing their intention not to surrender. Thereafter Shri Jitender gathered a small group of police personnel and charged at the extremist in the face to their fire. In the closed quarter battle, which lasted for 15 minutes, two dalam members were killed while others managed to escape in the deep forest in the hilly terrain. The killed dalams were identified as Chenchu Lakshmi @ Lakshmakka Dy. Commander, Kalawakurthy dalam w/o of DCS. & Lachanna, One .313 rifle & one 12 bore gun was recovered from the extremist.

In this encounter, Shri Jitender, IPS, SP displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of the high order.

This award is made for gallantry under Rule 4(i) of the rule governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 15th March, 1999.


(BARUN MITRA)
DIRECTOR

No. 121—Pres/2003 - The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Andhra Pradesh Police:-

NAME & RANK OF THE OFFICER

S/Shri

1. A. Sivasankar, IPS
IGP
2. S.R. Tewari, IPS
DIGP & Now IGP
3. R. Jagadeash,
SP(Retd) Now OSD
4. M. Venkat Reddy,
Addl. S.P.
5. N. Daniel
Addl. S.P.

Statement of service for which the decoration has been awarded:

With a view to apprehended top leaders of PWG and thereby to inflict a substantial loss to PWG, S/Shri Tiwari, A. Sivasankar, R. Jagadeash, N. Daniel & M. Venkat Reddy established a network in deep forest near the border of AP, MP and Maharashtra in very inhospitable area. This network proved very useful in giving top class intelligence that the top PWG cadres with military dalams of NTSZC were sighted moving towards Koyyur forest in Karimnagar after crossing the river Godavari from east. The above officers alerted Shri Nalin Prabhat, S.P. and monitored the movement of top PWG cadres at great risk. Shri Nalin Prabhat mobilized a police party for combing in dense forest of koyyur area and led from the west direction. At 0630 hrs on 02.12.1999, when the police party led by Shri Nalin Prabhat came under heavy gun fire, S/Shri Tiwari, A.Sivasankar, R.Jagadeash, N. Daniel and Reddy asked Shri Nalin Prabhat to take counter ambush measures, and to disclose the party's identity to the extremists asking them to surrender. The extremists continued firing at police, taking advantage of

terrain and foilage. Therefore Shri Nalin Prabhat chose four police personnel, briefed them, and advanced towards the main firing position by taking a slight detour unmindful of danger. Simultaneously, S/Shri Tewari, A.Sivasankar, R.Jagadeash, N.Daniel and M.Venkat Reddy advanced with great risk towards the cut off. Soon all these police officers came under heavy automatic fire. S/Shri Tewari, Sivasankar, R. Jagadeash, N. Daniel and Reddy opened fire from a close range in the face of bullets of PWG and in the battle at close quarters four extremists died and other military dalam members fled away due to gallant and bravery shown by these officers. The dead were later identified as Nalla Adi Reddy, Central Committee Member(CCM), Erramreddy Santosh Reddy, Central Committee Member, Seelam, Naresh, CCM & Singam Lachi Rajam an UG member. Due to the brave assault by these police officers and other police personnel, the remaining extremists retreated after 35 minutes of firing. These police officers who were with constant communication with Shri Nalin Prabhat and his police party, supervised later combing operation in the forest at grave personal risk. One AK-47 rifles with 2 magazines, one .45 colt pistol, two .45 revolvers, one 12 bore DBBL guns, two country made revolvers, five claymore mines/bombs and two handheld sets Kenwood make and various other items were recovered.

In this encounter S/Shri A. Sivasankar, IGP, S.R. Tewari, DIGP, R. Jagadeash, SP, M. Venkat Reddy Addl. S.P. & N. Daniel, Addl. S.P. displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of the high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4(i) of the rule governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 2nd December 1999.


(BARUN MITRA)
DIRECTOR

No. 122-Pres/2003 - The President is pleased to award the 1st Bar to Police Medal for Gallantry to the under mentioned officer of Andhra Pradesh Police:-

NAME & RANK OF THE OFFICER

Shri C. Ratna Reddy
DIGP

Statement of service for which the decoration has been awarded:

On 7.3.2000, Shri A. Madhava Reddy, Minister of Panchayat Raj and former Home Minister was killed by Peoples War Group (PWG) Naxalites at Ghatkesar on the outskirts of Hyderabad City. A Special Investigation Team (SIT) was formed by the DGP under Shri C. Ratna Reddy, DIG to investigate this case. It was learnt that the PW extremists were planning to kill an ex-naxalite, Kattulla Sammaiah, at his house at Vivekananda Colony, Kukatpally, Hyderabad. On 14.4.2000, Shri Reddy with the assistance of other SIT members and a special Team tried to stop an auto at SR Nagar in Hyderabad city in which the dreaded Special Team Members of PWG were reportedly travelling and asked them to surrender. The extremists, however, opened fire. Undeterred by the firing, the police party under the charge of Shri Ratna Reddy returned the fire. In the ensuing exchange of fire, three extremists died and two revolvers were recovered from the extremists. Based on the information and plan given by Shri Reddy, another exchange of fire took place on the same night, at a short distance from the first scene. In this, the fourth member of Special Action Team of PW was also killed. An auto rickshaw, 9 mm weapon, ammunition, explosives, documents and other incriminating materials were recovered from the site of the encounter. The killed personnel of Special Action Team members of PW were identified as P. Lachalu @ Bhaskar, M. Suresh @ Bheema, Madhu and R. Salva Chary @ Shanker.

In this encounter, Shri C. Ratna Reddy, DIGP displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty.

This award is made for gallantry under Rule 4(i) of the rule governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under rule 5, with effect from 14th April, 2000.



(BARUN MITRA)
DIRECTOR

No. 123-Pres/2003 - The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Assam Police:-

NAME & RANK OF THE OFFICER

- S/Shri
1. Nagen Deuri,
ABSI
 2. Birendra Kumar Deka, (Posthumous.)
LNK, 3rd Bn APTF
 3. Ramani Gogoi,
AB Constable, 3rd Bn. APTF

Statement of service for which the decoration has been awarded:

On 19th October 2001, at about 4.45 a.m. a group of suspected NDFD militants (approximately 125/130) in camouflage uniform armed with grenade launcher, Rocket launcher, grenade and sophisticated weapons attacked the Labdangguri Police Post. They also used tracer bullets during the attack. As a result of tracer ammunition, the barrack of the post caught fire and was completely gutted. S/Shri Nagen Deuri, ABSI, LNK Shri Birendra Kumar and Shri Ramani Gogoi, Constable alongwith other inmates retaliated by LMG/ SLR/Carbine/.303 and 2 Inch Mortar. The exchange of fire continued for about one and half hour. As a result of attack, one SI (UB) namely Reba Kanta Das, In-Charge, Labdangguri P.P. LNK Birendra Deka and C/ Munindra Kalita died, 4 police personnel of BARPETA DEF, 2 police personnel of 3rd APTF and one civilian sustained bullet/ splinter injuries. During investigation, it has been gathered that due to the police retaliation at least 7 numbers of militants were killed who were dragged into the jungle by their colleagues and subsequently carried in handcarts to the Bhutan hills. Later on, two dead bodies of killed extremists in decomposed condition were unearthed. The prime motive of the extremists was kill the Police personnel of the post, snatch away all the arms and ammunition/ VHF sets, to avenge concerted police action in the area and the NDFB cadres brought flag of NDFB organization with the intention to hoist at the Police post to declare their dominance in the area.

In this encounter, S/Shri Nagen Deuri, ABSI, Late Shri Birendra Kumar Deka, 3rd APTF Bn. & Ramani Gogoi AB Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4(i) of the rule governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 19th October 2001.


(BARUN MITRA)
DIRECTOR

No. 124—Pres/2003 - The President is pleased to award the President's Police Medal for Gallantry to the under mentioned officer of Assam Police:-

NAME & RANK OF THE OFFICER

Shri Jitmel Doley .

Addl. S.P.

Statement of service for which the decoration has been awarded:

On 17/03/2002 at about 1745 hours, when a police party led by Sh. Jitmel Doley, Addl. SP was conducting search in village Khata-Guwakuchi, 4/5 ULFA militants sitting near a pond opened indiscriminate firing on him while he was standing on the back side of a house. Two police personnel who were searching the house came out but they immediately ducked behind the wall of the house due to instantaneous firing. As Sh. Doley was standing totally exposed, came under heavy fire and ~~escaped unhurt miraculously~~. He jumped into the western bank of the pond and crawled to the northern corner and fired back killing two of the militants. One Chinese carbine, one AK 56 magazine, nine rounds of 7.62 ammunition (AK), eleven rounds of 9mm ammunition, one ten band world receiver transistor, one walkman tape recorder and four extortion letters with incriminating documents related to ULFA were recovered. The killed militants were identified as Dwipen Barman @ Ajan Barua and Chilarai Koch @ Aditya Bharali (both hardcore ULFA).

In this encounter, Shri Jitmel Doley, Addl.S.P. displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of the high order.

This award is made for gallantry under Rule 4(i) of the rule governing the award of President's Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 17th March, 2002.


(BARUN MITRA)
DIRECTOR

No. 125-Pres/2003 - The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officer of Assam Police:-

NAME & RANK OF THE OFFICER

Shri Abhi Ram Das
Constable.

Statement of service for which the decoration has been awarded:

On 17/3/2002 at 1745 hrs when a police party led by Shri Jitmal Doley, Addl.S.P. was conducting search operation in village Kata-Guwahachi, 4/5 ULFA militants from the back side of a house militant opened discriminate firing on Shri Jitmal Doley, Addl.S.P. On hearing the sound of firing ABSI Bhupendra Singha and Constable Abhi Ram Das who were inside the house come out to help Shri Doley but were pinned down behind a wall by continuous firing. After some time, seeing no other alternate, Shri Abhi Ram Das without caring for his safety come out from behind the wall of the side house and returned the firing killing two militants instantly, thus saving the life of Addl. S.P. one Chinese Carbine, 11 rounds of 9 mm amn., 01 AK Magazine were recovered from the place of incident.

In this encounter, Shri Abhi Ram Das, Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of the high order.

This award is made for gallantry under Rule 4(i) of the rule governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 17th March, 2002.



(BARUN MITRA)
DIRECTOR

No. 126—Pres/2003 - The President is pleased to award the President's Police Medal for Gallantry/Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Bihar Police:-

NAME & RANK OF THE OFFICERS

S/Shri

- | | | |
|----|----------------------------------|---------|
| 1. | Raj Kumar Karan
Inspector, | (PMG) |
| 2. | S.M. Allauddin
Sub-Inspector | (PPMG) |
| 3. | Vijay Kumar
Sub-Inspector | (PPMG) |
| 4. | Amresh Kumar Singh
Constable | (PPMG) |
| 5. | Satyadeo Thakur
Const.(Dvr.) | (PMG) |

Statement of service for which the decoration has been awarded:

On 28.6.2001, notorious criminals Raju Mian and his associate were to take Rupees eight lacs as ransom from a merchant of Betiah at near by Oasis Restaurant, Boring Road, Patna. Betiah Police got this information and accordingly S.P. Betiah formed a task force team under the leadership of SI Sanjay Kumar Malviya. This team reached Patna and met SSP, Patna and he formed a special team under the leadership of Inspector cum officer In-charge, Gandhi Maidan Police Station Shri Raj Kumar Karan. The team under the leadership of Shri Raj Kumar Karan reached near the Oasis Restaurant, Boring Road, Patna. However, the team came to know that Raju Mian had changed the site and would now take that amount on the road between Patliputra Co-operative Golambar to Polytechnic More and started keeping a close watch on road to nab them. Only SI Allauddin and Insp. Raj Kumar Karan could recognize Raju Mian. Near the Sahyog Hospitals, few yards west to Patliputra Golambar, at about 13.30 hours, a

Red Hero Honda Motor cycle crossed near Sahyog Hospital More & SI Allauddin recognized the person sitting behind as Raju Mian. SI Allauddin and SI Vijay Kumar asked them to surrender as they had been encircled by the police party. Criminal Raju Mian in reply jumped back on the running motor cycle itself and took out two pistols from his pocket and started firing on the police party. In self defence, SI Allauddin, SI Vijay Kumar and other Police personnel opened fire in reply to demoralize them and force them to surrender. But Raju Mian continued firings. SI Allauddin and C/316, Amresh Kumar Singh got bullet injury and they fell down. Meanwhile driver Satya Deo Thakur threw towel on the rider's face and he clashed with another public motor cycle coming towards opposite direction. Both Raju Mian and his associate fell down and took position into a small ditch at the margin of the road and Raju Mian gave one of his pistol to his associate and both of them started firing on the police party. Even with the injuries SI S.M. Allauddin continued firing and suddenly Raju Mian got up and started running towards the north firing at the police party. Since Allauddin and Amresh Kumar Singh were seriously injured, some Police personnel and officers could manage to bring them to the nearby Sahyog Hospital. SI Vijay Kumar and two constables continued following Raju Mian who was firing again and again. Raju Mian was running road to roads and climbed on a roof of a house and jumped down in the back of a House and took position and continued firing. SI Vijay Kumar sustained injury at his left foot while jumping and running but he continued following and firing along with two constables. In the exchange of firing the criminal Raju Mian fell down into a garbage pit and died. A 9 mm regular pistol, a mobile phone and six 9 mm empties were recovered near his dead body. SI Vijay Kumar showed exemplary courage. Another unknown criminal was found dead near the margin of the road. He was later identified as Md. Arman alias Wasim s/o Md. Naseem of Village – Katihari Hill, P.S. – Chandaut, Distt. Gaya. A regular 7.62 mm Pistol, 9 live cartridges of 7.62 and 2 empties of 7.62 mm and a red Hero Honda motor cycle No. BR-2 B 4295 were recovered. Raju Mian & Arman were wanted criminals involved in several cases of murder, kidnapping, dacoity and ransom.

In this encounter, S/Shri Raj Kumar Karan, Inspr, S.M. Allauddin, SI, Vijay Kumar SI, Amresh Kumar Singh Constable & Satyadeo Thakur, Const (Dvr) displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of the high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4(i) of the rule governing the award of President's Police Medal / Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 28th June, 2001.


(BARUN MITRA)
DIRECTOR

No. 127-Pres/2003 - The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officer of Bihar Police:-

NAME & RANK OF THE OFFICER

Shri Janardan Singh (Posthumous.)
Havildar.

Statement of service for which the decoration has been awarded:

On the midnight of 17/18th May, 1997 at around 2.00 a.m. a police party of 19 personnel left Hulasgaj Police Station for raiding Village Giderpur under the above Police Station. In the Course of raids on the house of absconder Jadu Thakur, Son of Bali Thakur, SI Saroj Kumar Srivastava, leader of the party learnt that some extremists had assembled in Bhuitoli of village Dadpur. He & police party proceeded to above village. When the police party was some 50 yards north of Bhuitoli of Dadpur village. Sub-Inspector Saroj Kumar Srivastava noticed a mob of 30 to 35 extremists, carrying modern arms, rifles and guns in their hands and cartridges in bags on their back, moving out of Bhuitoli. On noticing the police party, they started indiscriminate firing and turned towards east and south. Some of them wearing Khaki uniform. The warning of the police was not adhered to by the criminals. For a better strategy, the police party was divided into two parts. Shri Srivastava alongwith some police personnel moved along north eastern side and surrounded the extremists from there. Shri Srivastava directed the remaining police personnel to move south of Bhuitoli & surround the extremist from that end. Both the parties after taking position in the above manner, opened fire in self defence. The extremists were scattered in different places. Some had taken position in east of Bhuitoli, some in west side of the dam of river Falgu and some in Bhuitoli, itself. Havildar Janardan Singh was standing at the forefront of police action by the side of his leader Shri Srivastava. In the course of firing. Shri Janardan Singh was hit by a bullet of the extremists and fell down. At this point of time, two extremists also received serious injuries as a

result of police firing. Both the injured were seen being carried away by their associates. Shri Srivastava challenged the extremists who were firing from hidden places. He advanced so as to give a better leadership to his party. After the arrival of another party, he exhorted its members to hold their ground stoutly and exercise all necessary cool while encountering the hardened extremists. He also asked the parties to fire at the side from where the extremists had been firing. Firing from both the sides continued. Shri Janardan Singh breathed his last. Before his death, he fired 15 rounds. After the operation, one injured person was found profusely bleeding, who later on succumbed to his injuries. He was identified as Yadu Manjhi, a extremist belonging to Mazdoor Kisan Sangram Parisad.

In this encounter, Late Shri Janardan Singh, Havildar displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of the high order.

This award is made for gallantry under Rule 4(i) of the rule governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 18th May, 1997.



(BARUN MITRA)
DIRECTOR

No. 128—Pres/2003 - The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officer of Bihar Police:-

NAME & RANK OF THE OFFICER

1. Shri Dharnidhar Pandey (Posthumous)
Sub-Inspector
2. Shri Ram Krishna Gupta
Sub-Inspector

Statement of service for which the decoration has been awarded:

On 22.6.1996 Shri Dharnidhar Pandey, SI was on official duty in Muffasil area enroute to village Shahpur. He alongwith another police officer Shri Ram Krishan Gupta had a chance encounter with the criminals travelling in a Maruti Van. Both the officers challenged the criminals for searching their vehicle. The challenge of the police officers was returned by firing by the criminals. Both the police officers jumped from their motor cycle and returned the fire. They took position and challenged the criminals to surrender. Criminals started firing with sophisticated fire arms. Both the police officials also fired from their service revolvers. Shri Dharnidhar Pandey sacrificed his life in performing this duty at the hands of dreaded criminals. But before laying his life he shot at the criminals from his service revolvers. Shri Ram Krishan Gupta despite being seriously injured challenged the criminals and fired at them by his service revolver. However, Shri Gupta was saved. Two criminals were injured in this encounter and later died in the hospital. The other injured criminal who managed to fled from the spot were later arrested at Khagaria and a huge quantity of arms including sophisticated weapons and ammunition and Maruti Van was recovered from them. These criminals were members of a gang of murders and arms smugglers. Dead criminals were identified as Amresh Singh of Patna and Gopal Mishra of the Khagaria, who were involved in a number of heinous and sensational crime including mass number of four members of the family of a police officer Ram Vriksh Rajak in broad day light in Patna in a most cruel manner.

In this encounter, (Late) Shri Dharnidhar Pandey, Sub-Inspector & Shri Ram Krishna Gupta, Sub-Inspector displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of the high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4(i) of the rule governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 22.06.1996.


(BARUN MITRA)
DIRECTOR

No. 129—Pres/2003 - The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officer of Chhatisgarh Police:-

NAME & RANK OF THE OFFICER

Shri Bhagwat Prasad Rajbhanu,
S.D.O. Police

Statement of service for which the decoration has been awarded:

On receiving information about clandestinely organised movement of Naxalities an operation was organised by S.P. Balrampur on 16.3.2002. The whole responsibility of this operation was entrusted to Shri B.P. Rajabhanu SDOP Ramanujganj. According to the information the police party searched for the Naxalites and was able to locate the movement of the extremist group at village Jalbotha of PS Chando. Under the leadership of Shri Rajbhanu the police party managed to lay siege on the difficult populated area of the village with tactical planning and crossed the inaccessible and treacherous terrain unnoticed by the extremists. Suddenly the police party was seen by two watch guards deputed by the Naxalites. They opened heavy firing on police party. Shri Rajbhanu warned the extremists to surrender. Despite it they continued firing incessantly. At this SDOP Ramanujganj ordered his party to open fire in self defence. For about 30 minutes a heavy exchange of fire took place. With great presence of mind he not only ensured the safety of his men but also the life and property of villagers even at the risk of exposing himself to heavy firing. He risked himself to bear the main brunt of Naxalites firing. Undeterred by the critical situation and large number of extremists, Shri Rajbhanu decided to launch an operation to destabilize the opponent's position. He emerged from his position and rushed forward for encounter without caring for his own safety. Shri Rajbhanu fired at the Naxalites with his AK-47 Rifle killing one Naxalite. This compelled the other extremist to run away from the spot. Shri Rajbhanu gave a chase. The killed extremist was identified as Ranjit @ Suresh @ Jaiprakash. One .315 bore rifle with 13 cartridges, two 12 bore double barrel gun (foreign made), two 12 bore single barrel gun, one .315 bore rifle and some bombs, magazine, clothes were recovered. The activities of this group included 10 heinous offences like murder, dacoity, arson and murderous attack on the police.

In this encounter, Shri Bhagwat Prasad Rajbhanu, SDOP displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of the high order.

This award is made for gallantry under Rule 4(i) of the rule governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 16th March, 2002.


(BARUN MITRA)
DIRECTOR

No. 130—Pres/2003 - The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officer of Chhattisgarh Police:-

NAME & RANK OF THE OFFICER

Shri Sant Kumar Paswan, IPS
Inspector General of Police

Statement of service for which the decoration has been awarded:

On receiving the information that the police party and the Sub- Divisional Magistrate were encircled and being attacked by a frenzied mob of 500 agitators armed with axes, bows and arrows, lathes and spades and that their lives were in great danger, Shri S K Paswan, IG of police, Bastar range rushed to the spot alongwith one Inspector and 20 Constables. The agitators attacked Shri Paswan and damaged his car. Shri Paswan received several Lathi blows at his back, got stone hit at his right temple and received sharp injury from an arrow which narrowly missed his right eye. Undaunted and defying the murderous assaults of the mob, Shri Paswan charged into the crowd with mere 5 constable and rescued the beleaguered and injured Additional Superintendent of Police, Sub Divisional Magistrate and four Constable from there clutches. Thus Shri Paswan risked his life, and in a rare and conspicuous act of exemplary valour and unflinching devotion to duty, saved six invaluable lives. 52 lathies, 4 Axes, 2 Bows, 4 Arrows, 450 stone pieces, 63 cycles, 1 Telephone pole and Glass pieces in one rice bag were recovered from the spot after action.

In this encounter, Shri Sant Kumar Paswan, IPS, IGP displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of the high order.

This award is made for gallantry under Rule 4(i) of the rule governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 10th March 2002.


(BARUN MITRA)
DIRECTOR

No. 131-Pres/2003 - The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officer of Delhi Police:-

NAME & RANK OF THE OFFICER

Shri H P S Cheema
ACP

Statement of service for which the decoration has been awarded:

On 17.6.2001, Amit Gogia s/o Sunil Gogia, Darya Ganj, Delhi was abducted from the area of Vikas Puri, while he was on his way to attend a function and was taken to an undisclosed destination by his abductors. The abductors demanded a ransom of Rs. 5 crores. Shri M.S. Upadhye, DCP/Crime Branch got information of this abduction, although the victim's family had chosen not to report the matter to the Police. DCP/Crime constituted a special team under his supervision and started developing information on this abduction. On 22.6.2001, secret information was received that Brahm Parkash, a notorious criminal and his associates would assemble to collect ransom money from the victim's relatives in NOIDA. A joint team of Anti - extortion and Anti - Robbery Cell, under the leadership of DCP/Crime was divided into six sub-units, duly equipped with wireless sets and placed at strategic locations in the area of NOIDA and Eastern Delhi. At around 3.45 PM, one vehicle was spotted moving in suspicious circumstances around the factory No. B-135, Sector - IV, NOIDA, belonging to victim's father Shri Sunil Gogia. This vehicle was intercepted. Immediately two desperados came out of the car and tried to escape. The Crime Branch officials courageously confronted the criminals and over powered them in swift operations, before they could take out their weapons. These persons were identified as Jitender & Jyoti R/o Krishan Park, West Delhi and Ajit Singh R/o Dadri (UP) both accomplices of Brahm Parkash. The two on interrogation disclosed that the kidnapped victim Amit Gogia had been kept captive on the 1st floor of B-49, Laxmi Puri, a slum area. Immediately, the house was got identified. DCP/Crime briefed the entire staff and formed a crack teams led by Shri Ishwar Singh, ACP and Shri H.P.S. Cheema, ACP Who were directed to strike at the 1st Floor of above house for the rescue of the victim Shri Amit Gogia and rest of the

staff were directed to cordon the house. It was a difficult operation as the 1st Floor could be accessed only through a narrow staircase and danger of getting exposed was immense. As some police men reached the door, it was found to be locked from inside. The Police team first made efforts for opening the door but finding no response from inside the house, made forced entry by pulling and breaking the door, all the time expecting a hail of bullets from inside. The team members including Inspector Ishwar Singh and Inspector Rajender Bakshi without caring their life went in. They were immediately attacked by the criminals and faced a volley of bullets. They ducked the bullets and fired in self-defence. The criminals were firing from two rooms at the police party. The crack teams staff made entry in the first and second room. The firing between the criminals and the police lasted for about five minutes. In this firing, Brahm Prakash was killed and his three associates were injured. The victim Amit Gogia who was confined by the criminals in a small room was rescued unhurt by the courageous act of Police teams. Shri M.S. Upadhye, DCP was present on the spot and personally supervised the entire operation all along. ACP Ishwar Singh fired one bullet from his pistol and ACP HPS Cheema also fired one shot to immobilize the dreaded criminals. Both the ACPs played a leading role in the entire rescue operation. Three Chinese Mauzers of .30 bore and one .9 mm Baretta Pistol with live and fired cartridges were recovered from the accused persons involved in 14 cases of heinous crimes including kidnapping and extortionists.

In this encounter Shri H P S Cheema, ACP displayed conspicuous gallantry, courage, devotion to duty of the high order.

This award is made for gallantry under Rule 4(i) of the rule governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 22nd June 2001.



(BARUN MITRA)
DIRECTOR

No. 132-Pres/2003 - The President is pleased to award the President's Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Delhi Police :-

NAME & RANK OF THE OFFICER

S/Shri

1. Rajbir Singh
ACP, Special Cell
2. Mohan Chand Sharma
Inspector (No. D-I/842)
3. Badrish Dutt
SI, Special Cell (No. D-3148)
4. Sharat Kohli
SI, Special Cell (No. D-1101)

Statement of service for which the decoration has been awarded:

On 14.3.2001, a fax message regarding kidnapping of Shri Thekkatt Siddiqui, an NRI based in Abu Dhabi, UAE was received by CBI Head Quarters, New Delhi through the Indian Embassy in UAE. Shri Siddiqui had come to India on a business trip and the kidnappers had demanded a ransom of one million US Dollars for his release. The case was registered by CBI and a joint team of CBI and Special Cell of Delhi Police was formed. On 18.3.2001 the team came to know that Shri Thakkatt Siddiqui had been kept hostage in Sarvapriya Vihar, Delhi. The police team led by ACP Rajbir Singh was divided into six parties. One team each was deputed to guard the front and back road, Ground Floor and terrace of the house, while one team was to raid the flat on the IIInd Floor. At about 4.30 PM a joint team of CBI and Special Cell of Delhi Police reached at H.No. 12/22, Sarvapriya Vihar and cordoned off the house from all sides. At about 5 PM officials of CBI, knocked at the front door of the IIInd Floor of the house, but the door did not open, even after CBI officials disclosed their identity. CBI officials left the scene and the frontal team led by ACP Rajbir Singh including Inspector Mohan Chand Sharma and SI Badrish Dutt took over. As soon as, Inspector Mohan Chand Sharma and SI Badrish Dutt pushed and broke

open the door, they were greeted with volley of bullets from inside. Both of the them narrowly escaped. ACP Rajbir Singh, Inspector Mohan Chand Sharma and SI Badrish Dutt swiftly exchanged fire, and without caring their lives, entered the house in order to ensure safe rescue of Shri Thekkatt Sidhique. They crossed the corridor leading to the place from where the accused persons were firing and confronted them. One of the gangsters, who was firing indiscriminately at the police party ran inside one of the rooms, while two of them jumped into the shaft, with one one of them firing continuously. Immediately, ACP Rajbir Singh alerted the second team, stationed at the ground floor, led by SI Sharat Kohli. On the IIInd Floor, heavily armed underworld ganster later identified as Virendra Pant @ Chhotu, took his position in the bathroom of one of the rooms and continued firing on the police firing. Underterred, ACP Rajbir Singh, Inspector. Mohan Chand Sharma and SI Badrish Dutt, inspite of being under heavy fire from Virender Pant, returned the fire. Exhibiting exemplary courage and bravery, they were able to neutralize Virender Pant and rescue Mr. Thekkatt Siddiqui from the clutches of kidnappers. Simultaneously, one of the gangsters who who had jumped on to the ground floor, started firing at the police team led by SI Sharat Kohli to pave the way for their escape. SI Sharat Kohli putting his life at risk, returned the fire and blocked the passage killing Sanjay Khanna @ Chunky, dreaded underworld gangster and his associate Sunil Nathani. The following were recovered from the gallant action site:-

- A) One .38 Revolver with 5 spent and 1 live cartridge
- B) One 9 mm Pistol with 2 live cartridges in one magazine & one empty magazine.
- C) 14 used cartridges of AK-47
- D) 43 spent 9 mm cartridges.
- E) 4 spent .38 Special cartridges.
- F) One satellite phone
- G) Mobile phone.
- H) One Maruti Esteem used in kidnapping

In this encounter, S/Shri Rajbir Singh, ACP , Mohan Chand Sharma, Inspector, Badrish Dutt, Sub-Inspector & Sharat Kohli, Sub-Inspector displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of the high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4(i) of the rule governing the award of President's Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 18th March 2001.



(BARUN MITRA)
DIRECTOR

No. 133—Pres/2003 - The President is pleased to award the President's Police Medal/Police Medal for Gallantry to the undermentioned officer of Gujarat Police:-

NAME & RANK OF THE OFFICER

S/Shri

- | | | |
|-----|---------------------------------------|--------|
| 1. | R.B. Brahmbhatt, IPS, SP, CID(Crime) | (PPMG) |
| 2. | S.R. Yadav, API. | (PMG) |
| 3. | Jayantibhai K. Jadav, Armed ASI | (PMG) |
| 4. | S.M. Yadav, AHC | (PMG) |
| 5. | Hariram Chhoturami Ahir, AHC | (PMG) |
| 6. | R.B. Patel, APC | (PMG) |
| 7. | G.B. Rathwa, APC | (PMG) |
| 8. | D.D. Balat, APC | (PMG) |
| 9. | Shri A.L. Gameti, APC (Posthumous.) | (PPMG) |
| 10. | Shri A.H. Unadjam, APC (Posthumous.) | (PPMG) |

Statement of service for which the decoration has been awarded:

On 24 September 2002, terrorists attacked on Akshardham Swaminarayan Temple at Gandhinagar. DGP accompanied by Shri Maniram, ADGP, Shri V.V. Rabari, Spl IGP rushed to the site. DGP immediately took charge of the situation after getting feed back of the incident from the officers present there. Over 400 devotees/visitors were trapped inside the temple complex and terrorists had resorted to indiscriminate firing & grenade attacks killing & injuring a large number of people. Shri V.V. Rabari, Spl. IG & Shri R.B. Brahmbhatt, SP, CID (Crime) with the help of some selected officers & men started the rescue operation and saved about 400 precious lives. Shri Brahmbhatt provided a security cover to the trapped visitors inside the complex and had personally led them out safely without any loss of life or injury to them. This made the terrorists furious and they started indiscriminate firing on the people who were being rescued taking shelter behind the domes situated over the terrace of the Sachidanand Hall in the temple

complex. This helped in locating the hide out of the terrorists. DGP then formed a crack team consisting of 7 Commandos of the State Police to be sent to counter attack on the terrorists. Shri V.V. Rabari again volunteered himself to lead the attack party accompanied by Shri Brahmhatt. He led the crack team towards the place from where the shots were being fired by the terrorists. These police personnel climbed on to the open terrace through ladder and in the process exposed themselves to grave risk. One terrorist came out and started firing at the attack party with his AK-56 but Shri Rabari and his party entered into a fierce battle with the terrorists to retreat. After a few minutes both the terrorists came out and fired at the attack party, which was retaliated by the attack party. After this, one terrorists came out and fired 2 rounds targeting Shri Rabari. However, Shri Rabari and his team continued the attack for quite a long time, which forced the terrorists to remain confined in their place of shelter and also prevented them to escape. S/Shri S.R. Yadav, Armed Police Inspector, Jayantibhai K. Jadav, Armed ASI, S.M. Yadav, Armed Head Constable, H.C. Ahir, Armed Head Constable, R.B. Patel, Armed Constable, G.B. Rathva, Constable and D.D. Balat, Armed Constable were also a member of the crack team led by S/Shri Rabari & Brahmhatt. All the crack team members climbed on to the roof of the temple complex and engaged the terrorists who at that time were on the roof. After a brief exchange of fire, the two terrorists climbed down and hid in the area of Sachidanand Hall. When the terrorists came down, they opened fire on a team of Commandos who had positioned themselves very close to the Sachidanand Hall. It was feared that the terrorists could escape from the rear side of the temple. Shri Pramod Kumar, Spl. IGP, Gandhinagar Range, sent one team of the Jawans of the SRPF headed by Police Inspector L.V. Tolia, Gandhinagar to cover the rear part of the temple complex, which was in complete darkness while this team was moving towards the rear end, the terrorists who had hidden themselves in a lavatory in the one corner of the building, threw grenade at the police party. Shri Allarakha H. Unadjam displayed exemplary courage and tried to advance towards them while risking his life. He was hit by a volley of bullets fired by the terrorists and a result succumbed to his injuries. While one team went on the rooftop, another team of commandos including Shri A.L. Gameti had crawled behind the shrubs in the open lawn adjoining Sachidanand Hall. The terrorists who were forced to come down, saw the Commandos team very close to them. The terrorists immediately opened fire on the Commando team. Shri Gameti returned the fire but he was hit by the firing of the terrorists. Shri Gameti died on the spot. S/Shri D.D. Balat, S.R. Yadav, J. K. Jadav, S.M. Yadav and H.C. Yadav and Shri R.B. Patel with team members also climbed on the open terrace and took position over the adjacent to

the sidewall behind which the terrorists were hiding. Although knowing the risk involved, they continued advancing towards terrorists. The terrorists opened fire but the team without losing courage, continued to fire towards the terrorists without any fear which in turn forced the terrorists to retreat. During exchange of fire, Shri R.B. Patel received bullet injury on his left thigh. In spite of serious injury, he continued to fire towards the terrorists without losing courage. The firing/attack between the terrorists and the police continued and at about 22.30 hrs, Shri Maniram, Addl. DGP, and Shri R.B. Brahmhatt and D.P. Chudasma, PSI & Police and SRP staff had gone for rescuing the injured police personnel towards west side of the Gate No. 2 of the temple. The terrorists had started firing towards the police party whereupon, Shri Brahmhatt received an bullet injury on his left hand and some of the police staff and PSI with him also received injury. The injured were shifted to the hospital for treatment and as with the help of reinforcement, the cordoning from all the sides to the temple was made strong. The terrorists were repeatedly asked to surrender but they continued firing on the police. The Gujarat police personnel continued firing towards the terrorists as a result they could not escape from the premise. At about 23.15 hours, NSG team arrived to assist the Gujarat Police. The DGP and other senior officers briefed the NSG team, which took over and carried out the operation.

In this encounter, S/Shri R.B. Brahmhatt, IPS, SP, S.R. Yadav, API, Jayantibhai K. Jadav, Armed ASI, S.M. Yadav, AHC, Hariram Chhoturam Ahir, AHC, R.B. Patel, APC, G.B. Rathwa, APC, D.D. Balat, APC, Late Shri A.L. Gameti, APC & Late Shri A.H. Unadjam, APC displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of the high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4(i) of the rule governing the award of President's Police Medal / Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 24th September 2002.



(BARUN MITRA)
DIRECTOR

No. 134—Pres/2003 - The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Haryana Police:-

NAME & RANK OF THE OFFICER

S/Shri

1. Badan Singh,
Inspector
2. Ashok Kumar
Constable

Statement of service for which the decoration has been awarded:

On 8/8/2002, Inspector Badan Singh received an information that one hardcore criminal Rajesh, wanted in case FIR No. 38/02 U/S 364/302/201/120-B IPC, PS Sadar Panipat and also wanted in more than 23 other cases registered in different districts, has been seen in the areas of Pehowa, Kurukshetra and Dhand (Distt. Kaithal) along with his associates. On receiving the information, Inspector Badan Singh with his associate police officers proceeded in search of the notorious criminals in the areas of Kurukshetra, Dhand and Pehowa. At about 3.30 PM, the police party headed by Inspector Badan Singh reached Pehowa Chowk, Pehowa and he himself took the position at the Chowk. After sometime, one Maruti Zen coming from Ambala side reached Pehowa Chowk, Pehowa. Inspector Badan Singh identified the driver of the Maruti Zen as Rajesh R/O Babail, Distt. Panipat, a notorious criminal along with two of his associates. Inspector Badan Singh signaled Rajesh to stop the vehicle, but he didn't stop and sped away his vehicle. Inspector Badan Singh followed the criminals in the police Gypsy. When the driver of Govt. Gypsy tried to stop the vehicle of the accused by driving the vehicle by the side of the vehicle of accused, Rajesh fired at Inspector Badan Singh from his weapon which hit him on his left arm. Blood started oozing out profusely, but Inspector Badan Singh, continued to lead his team with outstanding courage. Constable Ashok Kumar fired from his service revolver hitting criminal Rajesh Kumar on his head. After a close encounter, another criminal Lakhwinder was also injured in police firing by Inspector Badan Singh and Constable Ashok Kumar. Inspector Badan Singh apprehended following accused persons with fire arms and took them to Govt. Hospital, Pehowa for medical treatment.

1. Lakhwinder S/O Jogi Ram, R/O Bhagal.
2. Vivek S/O Ranbir, R/O Kaul.

Inspector Badan Singh was also admitted in the Hospital with bullet injury. Three country made pistols along with 4 live cartridges were recovered from them.

In this encounter, S/Shri Badan Singh, Inspector & Ashok Kumar, Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of the high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4(i) of the rule governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 8th August 2002.

(BARUN MITRA)
DIRECTOR

No. 135-Pres/2003 - The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officer of Jammu & Kashmir Police :-

NAME & RANK OF THE OFFICER

- 1) Shri M.A. Shah, IPS, DIG, Baramulla J&K, (Bar to PMG)
- 2) Shri Showkat Ahmed Malik, SSP, Baramulla
- 3) Shri Jangbahadur, SG Ct. (370/IRP II Bn)
- 4) Shri Rajan Kumar Raina, Constable (2082)/B

Statement of service for which the decoration has been awarded:

On 2.5.2002, an information was received that some terrorists were moving in Syed Krim Sahib Mohalla and Jalal Sahib Mohalla of Baramulla town, obviously to target civilians and their property. The area was cordoned for search operation by the Army and SOG/Police Baramulla. The area being congested and susceptible to heavy damage to life and property by the terrorist firing, Shri M.A. Shah, DIG North Kashmir Range, Baramulla accompanied by Shri Showkat Ahmed Malik, SSP, Baramulla along with Ct. Rajan Kumar Raina and SG Ct. Jangbahadur also rushed to the spot and joined the search operation. During search operation terrorists hiding in the house of one Ab. Wahab Gojri R/o Syed Karim Sahib Baramulla resorted to heavy firing on the search party. In order to ensure the safety of the life and property of the civilians, the terrorists were repeatedly warned to surrender. The terrorists continued to hide in the house and fire on the search party. However, in order to save the precious lives and property of the civilians, the operation had to be prolonged for about thirty hours under a planned strategy. The forces did not allow the terrorists to escape from the scene in spite of their heavy firing. On 3.5.2002, while advancing towards the targeted house, the police party headed by Shri Shah, DIG Baramulla assisted by Shri Showkat Ahmed Malik SSP Baramulla, Ct. Rajan Kumar Raina and SG Ct. Jangbahadur, came under heavy volume of fire from the terrorists. The terrorists also robbed some grenades besides attempting to manage their escape. The police party under the charge of Shri Shah, DIG firmly retaliated and forced their way towards the targeted house. The team crawled further to the targeted house and fired heavily on the terrorists resulting into their death. The charred dead bodies of 6 terrorists besides weapons carried by them were recovered from the debris of targeted house during search.

AK rifles (06 fully burnt), Mag. AK (15 Nos. burnt), UBGL Burnt (02 no.), UBGL grenade (02 nos), Fired case UBGL(01 No.), Fired Case AK 47 (41 Nos.), R.S. Burnt (02 Nos.) and Pocket dairy (01 No.) were recovered from the site of the encounter.

In this encounter, S/Shri M.A. Shah, IPS, DIG, Shri Showkat Ahmed Malik, SSP, Shri Jangbahadur, SG Ct. & Shri Rajan Kumar Raina, Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of the high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4(i) of the rule governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 3rd May 2002. 13



(BARUN MITRA)
DIRECTOR

No. 136-Pres/2003 - The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officer of Jammu & Kashmir Police :-

NAME & RANK OF THE OFFICER

Shri Mohd. Rafiq
SG, Constable, 8th Bn JKAP

Statement of service for which the decoration has been awarded:

Information regarding presence of militants in Kotli Kalaban area of Rajouri District was received by Rajouri Police. A Search operation was launched on 3.2.2002 jointly with Security forces. S.G. Constable Mohd. Rafiq along with a party of policemen participated in the operation. The search party on reaching the location was fired upon by the militants, which was retaliated. The militants taking cover of the fire tried to escape from the scene. However, being aware of the topography of the area, the SG Constable and his men took position at an escape route. S.G. Constable Shri Mohd. Rafiq got engaged with one of the two militants in a one to one fight and was able to eliminate him. In the said encounter two foreign militants were killed and following arms/ammunition were recovered:

- | | | | |
|----|--------------------------------------|---|----------|
| 1. | AK-47 Rifle | - | 2 Nos. |
| 2. | AK Magazine | - | 6 Nos. |
| 3. | AK Ammunitions | - | 180 Nos. |
| 4. | Chines Grenade | - | 2 Nos. |
| 5. | Wireless Set (in damage condition)- | | 1 No. |

In this encounter, Shri Mohd. Rafiq, SG Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of the high order.

This award is made for gallantry under Rule 4(i) of the rule governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 3rd February 2002.



(BARUN MITRA)
DIRECTOR

No. 137-Pres/2003 - The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Jammu & Kashmir Police:-

NAME & RANK OF THE OFFICER

S/Shri

1. Deepak Kumar, SSP, Udhampur
2. Benam Tosh, Dy.S.P., Udhampur

Statement of service for which the decoration has been awarded:

On 7th March, 2002 evening, a reliable information regarding presence of five hardcore terrorists of LET outfit in a natural cave, on a hilltop, east of Trikuta hills, of village Gobian under the jurisdiction of Police Station, Katra was developed by Shri Deepak Kumar, SSP Udhampur. These militants were heavily armed with sophisticated weapons, grenades and large quantity of ammunition. SSP Udhampur planned an operation meticulously with the assistance of local CRPF unit and Army authorities against these militants. After trekking difficult terrain in pitch-dark, parties led by SSP Udhampur, cordoned the area and placed stops to prevent escape of terrorists from different possible directions. Parties were in place before first light of next day. In this terrain there was only one approach to the cave i.e. to approach the mouth of the cave and launch an offensive against the terrorists. This route was fully exposed to enemy view and was, therefore, a suicidal mission. The officers and men, who volunteered themselves to act against terrorists, approached the mouth of the cave. Terrorists hiding inside it fired a volley of bullets and hurled grenades targeting approaching policemen. The men jumped to ground and took position on sloping sides. There was very little scope for policemen to act under given conditions. But Shri Deepak Kumar, SSP Udhampur, who had taken position to left side of cave gradually crawled towards the mouth of cave braving a thick volley of firing. He threw a grenade at the mouth of cave where two terrorists had taken position and was firing at policeman resulting in elimination of two terrorists on the spot. Sensing trouble the other three terrorists ran out of the cave in panic firing indiscriminately at policemen. As they were running out of the cave, at about 15 yards from mouth of cave, Shri Benam Tosh, Dy.SP caught hold of one of the armed terrorists. This terrorist was killed in a one-to-one fight by Shri Benam Tosh, Dy.SP. The remaining two terrorists took position behind two separate rocks, and were firing bullets/throwing grenades at policemen. The SSP marshaled his troops and prevented these two terrorists from escaping. An encounter ensued which continued for twenty minutes resulting in the killing of both these militants. The killed militants were identified as Abu Zail, Allah Rakha, Mohd. Shahid, Gulzar Ahmed and Abu Imran. The following were recovered from the site of action:-

AK Series rifles (4), AK Series rifles (magazines) (15), AK Series (Live rounds)(295), Pistol (1), Pistol magazine (2), Drum Magazine (1), Wireless Set(2), Rifle grenades (6), Grenades (9), Grenade lever (1), Cell Charger (1), Pouches (3) and uniform Khaki & shoes etc.

In this encounter, S/Shri Deepak Kumar, SSP & Benam Tosh, Dy.S.P displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of the high order.

These are award is made for gallantry under Rule 4(i) of the rule governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 8th March, 2002.



(BARUN MITRA)
DIRECTOR

No. 138-Pres/2003 - The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the undermentioned officer of Jammu & Kashmir Police:-

NAME & RANK OF THE OFFICER

Shri Trilochan Singh (Posthumous.)
SG Constable

Statement of service for which the decoration has been awarded:

On 2.03. 2001, a Police party of IR V Battalion / District Police was attacked by militants at Gambir Muglon, Poonch and 14 Police Personnel were killed in the first attempt of the ambush. SG constable Trilochan Singh, V Battalion, who was a constituent of the Police Party, fought valiantly with the militants till his ammunition was exhausted and laid down his life after a two hours long fight with the militants showing a great courage, bravery and courageous resistance to the militants.

In this encounter, Late Shri Trilochan Singh, SG Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of the high order and sacrificed his life.

This award is made for gallantry under Rule 4(i) of the rule governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 2nd March 2001.



(BARUN MITRA)
DIRECTOR

No. 139-Pres/2003 - The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officer of Jammu & Kashmir Police:-

NAME & RANK OF THE OFFICER

Shri Wazir Mohd.
Constable

Statement of service for which the decoration has been awarded:

On a specific information regarding the presence of militants in Village Neosi and Hassote, a cordon and search operation in village Neosi was launched on 26/12/2001. A group of militants of HM outfit led by one hard core local militant Johan Mohd. attacked the police party with heavy volume of fire. Police party also retaliated bravely and during gun battle Constable Wazir Mohd exhibiting high sense of commitment and dedication fought valiantly and succeeded in eliminating 02 militants. One SPO namely Ab. Rashed S/o Sh. Ab. Rehman R/o Balmatkot (Chassana) also sacrificed his life during fighting with this group of militants. The killed militants were identified as Rafiq Sayal r/o Duru, Distt. Anantnag and Mohd. Shafi r/o Kansoli, Teh. Mahore both of HM outfit. One hand grenade, 4 AK series magazine, 108 AK series rounds, 20 rounds pistol, 4 rifle grenades were recovered after the action.

In this encounter, Shri Wazir Mohd., Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of the high order.

This award is made for gallantry under Rule 4(i) of the rule governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 26th December, 2001.



(BARUN MITRA)
DIRECTOR

No. 140—Pres/2003- The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officer of Jammu & Kashmir Police:-

NAME & RANK OF THE OFFICER

Shri Joginder Singh,
Constable.

Statement of service for which the decoration has been awarded:

On the basis of specific information , during the intervening night of 7/8 June 2002 regarding the presence of militants at Dorian and Androi Dhok in P/S Loran District Poonch, SHO alongwith a contingent of Police / Army rushed to the spot. Around these two places is a dense forest besides the area is fully covered with bushes and wild grass which not only hinders the free movement but also put the operational team at a high risk Despite these constraints and risk involved in this operation, the police party proceeded ahead and were suddenly caught by a heavy volume of militant's fire. The police party responded immediately by taking the position and Constable Joginder Singh not only continued his advance towards the militants but also saved himself from the grenades which were lobbed on him. He showed courage and indomitable determination and the police succeeded in killing of a militant who was later-on identified as Abu Mussa of POK, affiliated to Alburq outfit. One pistol, one RPG launcher, four hand grenades were recovered from the site of operation.

In this encounter, Shri Joginder Singh, Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of the high order.

This award is made for gallantry under Rule 4(i) of the rule governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 7th June 2002.



(BARUN MITRA)

DIRECTOR

No. 141-Pres/2003 - The President is pleased to award the President's Police Medal for Gallantry to the under mentioned officer of Jammu & Kashmir Police :-

NAME & RANK OF THE OFFICER

Shri Mangal Singh,
SG Const.

Statement of service for which the decoration has been awarded:

On receipt of a specific information regarding presence of militants in village Thub. Tehsil Reasi, Udhampur, a cordon and search operation was launched on 15/5/2002. The police party on noticing the movement of militants challenged them but the militants started firing on police party indiscriminately, which was retaliated by police personnel. While the firing was going on, Constable Mangal Singh displaying high sense of commitment and dedication advanced from the opposite direction towards the hideout and succeeded in killing two foreign militants of LET outfit. The killed militants were identified as Abu Gori & Abu Habib @ Maqbool Ahmed both of LET outfit (Pak National). 2 AK-47 Rifles, 2 Hand Grenades, 1 wireless set and a lot of ammunition were recovered from the site.

In this encounter Shri Mangal Singh, SG Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

This award is made for gallantry under Rule 4(i) of the rule governing the award of President's Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 15th May, 2002.



(BARUN MITRA)
DIRECTOR

No. 142-Pres/2003 - The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Jammu & Kashmir Police :-

NAME & RANK OF THE OFFICER

S/Shri

1. Jaswant Singh Katoch, Dy.S.P.
2. Gurnandan Singh, Constable
3. Romesh Giri, Constable

Statement of service for which the decoration has been awarded:

On the intervening night of 12/13-12-2001 four members of a family of majority community at Chakras Mahore, were massacred by the terrorists. Local police initiated measures to track down the terrorists. On a specific information Shri Jaswant Singh Katoch, Dy.S.P. planned a search operation in the general area of Charkas on 18/12/2001. After cordoning the area, the police party started search operations of Malsal forests from various directions to zero in on the hiding terrorists. The terrorists, hiding there, on noticing the police party started heavy volume of fire. Dy.S.P. Sh. Jaswant Singh Katoch, assisted by SGCT Romesh Giri and Constable Gurnandan Singh returned the fire and fought the terrorists till one of them, a foreign mercenary of JEM, was killed and another escaped in the thick forests in an injured condition.

In this encounter S/Shri Jaswant Singh Katoch, Dy.S.P., Gurnandan Singh, Constable & Romesh Giri, Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4(i) of the rule governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 18th December, 2001.


(BARUN MITRA)
DIRECTOR

No. 143-Pres/2003 - The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officer of Jammu & Kashmir Police:-

NAME & RANK OF THE OFFICER

Shri Nazir Ahmed,
Head Constable

Statement of service for which the decoration has been awarded:

On receipt of an information about the presence of militants, an operation was organised by personnel of Police Post Sawjian in co-ordination with Army, at Anganpathri area on 16/10/2002. The operation which commenced on 16/10/2002 culminated on 20th October 2002. The militants seeing the approaching forces from the high ground sought to retreat to different directions by resorting to cover fire from different directions. Head Constable Nazir Ahmed, who was conversant with the topography of the area, exhibited his professional skills and managed to close in near the hideout of the militants with a small contingent and the ensuing encounter, resulted in the killing of two militants. Shri Ahmed was able to take advantage of the dark hours due to his knowledge of the area. In this encounter, which lasted several hours, four more militants were killed. 6 AK series rifles, 4 pistols, 4 UBGL, 26 AK magazines, 4 pistol magazine, 37 UBGL grenade, 12 hand grenades, 4 radio sets, 412 AK ammn, 30 Pistol ammn, Rs.8000/- in cash, Rs. 1000/- (fake currency notes), Rs.48/- (Pak Currency) were recovered from the site along with one solar equipment, 4 long antenna etc.

In this encounter Shri Nazir Ahmed, Head Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

This award is made for gallantry under Rule 4(i) of the rule governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 16th October, 2002.


(BARUN MITRA)
DIRECTOR

No. 144–Pres/2001 - The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the undermentioned officers of Jammu & Kashmir Police :-

NAME & RANK OF THE OFFICER

S/Shri

1. Mohd. Yousuf, SG, Constable (Posthumous.)
2. Yash Paul, Constable (Posthumous)

Statement of service for which the decoration has been awarded:

On 23.03.2002, on a specific information that some Anti- National Elements were present in Nambal forest area, Police/ SOG nafri launched a search operation in the area. During the search operation, the anti-National elements opened fire on the troops which was retaliated by the Police. Without caring for their lives and showing great courage and bravery, SG Constable Mohd. Yousuf and Const. Yash Paul, advanced towards the forest area from where militants were continuously firing on police/ SOG party. They succeeded in killing one militant. However, the other hiding in dense bushes fired indiscriminately, which resulted in on the spot death of the both police personnel. Later on the other militant was also killed by the police/SOG. One of the slain militants was identified as Ab. Satar @ Abu Imdad S/o Mian Ab. Guffar R/o Shikhupura Pakistan and the identification of the other slain militant could not be established. 2 AK Rifles, 6 AK Magazines, 66 rounds of ammn were recovered from the killed militants.

In this encounter Late S/Shri Mohd. Yousuf, Constable & Yash Paul, Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of a high order.

These award are made for gallantry under Rule 4(i) of the rule governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 23rd March, 2002.


(BARUN MITRA)
DIRECTOR

No. 145–Pres/2003 - The President is pleased to award the Bar to Police Medal for Gallantry / Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Jammu & Kashmir Police :-

NAME & RANK OF THE OFFICERS

S/Shri


1. Syed Ashiq Hussain Bukhari, SP, Budgam (Bar to PMG)
2. Kaka Ji Koul, SI, Budgam
3. Ichpal Singh, HC, Budgam.

Statement of service for which the decoration has been awarded:

On 28.3.2002, after receipt of an information regarding presence of militants in village Rudbug, Magam District Budgam. SP Budgam, Syed Ashiq Hussain Bukhari immediately planned an operation in the area. When the search party headed by Shri Ashiq Hussain was about to reach the spot, a militant managed his entry into a local mosque and started indiscriminate firing and grenade throwing on the troops. While the troops had to neutralize the militants, they had also to keep in mind that the sanctity of the mosque was preserved. Therefore, a well planned operation had to be carried out. Shri Ashiq Hussain, SP assisted by SI Kaka Ji Koul and HC Ichpal Singh made entry into the bathroom of the mosque under heavy showers of the bullets from holed-up militant. In a close encounter the officers were able to eliminate the militant. During this period Shri Kaka Ji Koul provided covering fire to the officers which helped divert the attention of the terrorist. The killed militant was identified as Mudasir Ahmed @ Madna of J-e-M/HUA. One AK-47 Rifles, three AK Magazines, 41 AK -47 rounds & 3 UBGL grenades were recovered from the killed militant.

In this encounter S/Shri Syed Ashiq Hussain Bukhari, SP, Kaka Ji Koul, SI & Ichpal Singh, Head Constable displayed conspicuous gallantry, courage, devotion to duty of a high order

These awards are made for gallantry under Rule 4(i) of the rule governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 28th March, 2002.


(BARUN MITRA)
DIRECTOR

No. 146-Pres/2003 - The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officer of Jammu & Kashmir Police: -

NAME & RANK OF THE OFFICER

Shri Rajesh Bali,
Dy.S.P. Sopore.

Statement of service for which the decoration has been awarded:

On receiving an information by SOG District Baramulla regarding the presence of foreign mercenaries in Hunrah forests in Dangiwacha, Baramulla an operation was planned, led by Dy.SP Sh. Rajesh Bali and troops of 22 RR under the over all supervision of SP Operations, Baramulla on 4th October 2002. A cordon of the area was laid and while zeroing on specific area, SOG party led by DySP Bali spotted three terrorists in groves near jungle. They were signaled to surrender but the terrorists resorted to indiscriminate firing and lobbing of hand grenades on SOG party. Sh. Bali asked the police party to keep the militants engaged by using fire and move tactics. Sh. Bali chased the fleeing terrorists over 400 metres without caring for his personal safety and braving the volley of bullets and exploding grenades around him. He closed in on the terrorist utilizing cover and fire support by his party and shot dead one terrorist. During the process of fierce encounter, Sh. Bali exhibited nerves of steel, kept extensive covering fire from a position enabling his party to close in and eliminated two more terrorists. One of the killed militant was identified as Bashir Ahmad Khan S/o Fazal Ali Khan r/o Naribal while the remaining foreign militants could not be identified. 3 AK rifles, 8 AK magazine, 200 AK rounds, 1 UBGL and 8 UBGL rounds (destroyed on spot) were recovered from the site of action.

In this encounter, Shri Rajesh Bali, Dy.SP displayed conspicuous gallantry, courage & devotion to duty.

This award is made for gallantry under Rule 4(i) of the rule governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 4th October 2002.

(BARUN MITRA)
DIRECTOR

No. 147-Pres/2003 - The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officer of Jammu & Kashmir Police: -

NAME & RANK OF THE OFFICER

Shri Avtar Singh,
SG Constable.

Statement of service for which the decoration has been awarded:

On January 23, 2002 on receipt of an information regarding the presence of militants in Salian area of District Poonch, a joint operation was launched to nab the militants. The militants, on noticing the movement of troops, resorted to heavy firing which was retaliated. In this encounter, which lasted for about three hours, one Sub-Inspector got trapped. SGCT Avtar Singh who was fighting close to the trapped, SI, realizing the risk to the life of the officer volunteered himself to rescue him. Shri Avtar Singh crawled through thick bushes laden with thorns and reached close to the militant and fired on him. The swift action resulted in the on spot killing of the militant. Shri Singh managed to secure safe path for the trapped SI and took him to a safe place. Shri Avtar Singh showed extra-ordinary courage in this encounter which not only saved the life of the Sub-Inspector but also resulted in killing of three militants. 3 AK -47 rifles, 13 AK magazines & 6 Hand Grenade (destroyed) were recovered from the site of action.

In this encounter, Shri Avtar Singh, SG, Constable displayed conspicuous gallantry, courage, devotion to duty of the high order.

This award are made for gallantry under Rule 4(i) of the rule governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 23rd January 2002.



(BARUN MITRA)
DIRECTOR

No. 148-Pres/2003 - The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Jammu & Kashmir Police :-

NAME & RANK OF THE OFFICER

S/Shri

1. Vijay Kumar, IPS, SP, Awantipora,
2. Bhupinder Singh, SG Ct,

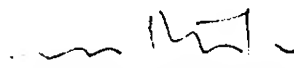
Statement of service for which the decoration has been awarded:

On 10th April, 2002, on the receipt of a specific information regarding the presence of one hardcore militant in a house at Pratabpora Village, Tehsil Shopian, District Pulwama, Shri Vijay Kumar, IPS, SP Awantipora, alongwith a small team of SOG personnel from Awantipour rushed to the spot and with the help of one platoon of Army laid a cordon of the Mohalla in which the house was located. After ensuring that the cordon was complete, he along with his men started house to house search. After completing the search of three house, the team started proceeding towards the fourth house, during which the lone militant hiding inside the house opened indiscriminate fire upon the search party with an intention to kill the SP and the accompanying police personnel. Shri Vijay Kumar, SP and SG Ct. Bhupinder Singh immediately took position on the ground and started crawling towards the house while five others of the search party took position at various strategic positions to prevent the escape of the terrorists. Shri Vijay Kumar, SP and SG CT. Bhupinder Singh without caring for their personal safety managed to reach near the house and lobbed 2 grenades into the house through a window and simultaneously opened fire resulting in killing of the hardcore foreign terrorist. The killed militant was identified as Abu Huzayfa @ Farqan @ Saifullah, Div. Commander of Southern Kashmir and Doda. AK 47 (1); AK 47 Magazine (3), Ammunitions (42 rounds), Radio Set (1 damaged) were recovered from the site of gallant action.

In this encounter, S/Shri Vijay Kumar, IPS, SP & Bhupinder Singh, SG Ct. displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of the high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4(i) of the rule governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 10th April, 2002.

52


(BARUN MITRA)
DIRECTOR

No. 149–Pres/2003 - The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Jammu & Kashmir Police:-

NAME & RANK OF THE OFFICER

S/Shri

1. Mukesh Singh, IPS, SP, South Srinagar
2. Dinesh Gupta, Inspector
3. Jagdev Singh, SG Constable (Posthumous.)
4. Bashir Ahmed, Constable

Statement of service for which the decoration has been awarded:

On 23.9.2002 an information was received to the effect that some terrorists belonging to L-E-T (Lashker – E – Toiba) were hiding in some house in Gogjibagh area with the intention to carry out suicide attack on Camp Hqrs. of Returning Officer of Amirakadal Assembly Segment located at Government Polytechnic Rajbagh where about 400 members of civil polling officers alongwith another 800 security/police officials were receiving ballot material for conduct of election next day on 24.9.2002. CRPF and BSF forces were contacted and the general area was cordoned. After a house to house search operation it was noticed that the militants were hiding in the house of one Sajad Malik S/o Gh. Rasool owner of Medical shop namely Sajad Medicates at Hazoori Bagh. All the inmates of the house had vacated it and nobody was available. The owner did not make available the key to police force stating that police is at liberty to break open the house. A search party led by Shri Mukesh Singh, IPS, SP City south, Srinagar accompanied by Shri Mohd. Yousuf Dy. SP SDPO Saddar. Shri Bhagwant Singh, SHO P/S Rajbagh and other Police men carried out a search of the house by breaking open the main entrance. During the search of the three storeyed house, hiding terrorists fired at the search party from within a locked room in which Constable Jagdev Singh sustained serious injures. However, he retaliated giving cover fire to the other party members but in the process fell down. Shri Mukesh Singh, IPS, SP South Srinagar who was leading the operation, then crawled his way to the place where his PSO fell down without caring for the heavy firing. Amidst the heavy firing, Mukesh Singh lifted his PSO Jagdev Singh and came

down stairs. The militants in the meanwhile seeing the PSO being rescued, came to the verandah and threw grenades down stairs in order to cause injuries but Shri Mukesh Singh, SP managed to retrieve the body outside the house to a safe location. SG Constable Jagdev Singh, however, succumbed to his injuries. The encounter continued for the whole night. In the meantime, SP South started the headcount of his men and found three police personnel missing namely Shri Mohd. Yousuf Bandh, SDO Saddar, Shri Bhagwant Singh, SHO PS Rajbagh and wireless Opr. Mohd. Ashraf. Another operation was planned by SP South to rescue these police personnel who were trapped inside. A police party was sent in civil clothes in the grab of a civilian to engage one militant in false talks of negotiation. While one militant was busy in talking, the police party led by SP South engaged the other militant by heavy firing from the first floor of an adjacent house. The trapped policemen in the meantime, seeing that the militants were kept engaged, got a chance to come out of the room on the terrace from where they managed to sneak out. After the rescue operation, the SP South alongwith Inspector Dinesh Gupta and Const. Bashir Ahmed, assisted by the Central Para Military Forces then reached close to the house where the militants were hiding and lobbed grenades from the window. One of the militants then came out on the roof in order to avoid being hit by grenade and then started firing on the police party. The police party led by SP South immediately retaliated killing the militant on spot. The other militant who was injured in the grenade blast finally was killed in the fire which took place and blown into pieces in the subsequent IED blast which the militants had kept for destruction of the EVM (Electronic Voting Machine) distribution centre. One AK 47, three AK Magazines and 2 Grenade Destroyed on the spot were recovered after the action.

In this encounter, S/Shri Mukesh Singh IPS, SP, Dinesh Gupta, Inspector, Late Jagdev Singh, SG Constable & Bashir Ahmed, Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of the high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4(i) of the rule governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 23rd September 2002.



(BARUN MITRA)
DIRECTOR

No 150-Pres/2003- The President is pleased to award the President's Police Medal for Gallantry to the under mentioned officer of Jammu & Kashmir Police:-

NAME & RANK OF THE OFFICER

S/Shri

1. Tasaduq Hussain, Head Constable
2. Mohd. Ashraf, Head Constable
3. Gopal Dass, Constable

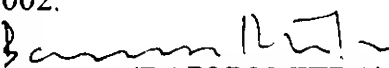
Statement of service for which the decoration has been awarded:

On 2.01.2002, a joint search operation was carried out by police personnel/SOG Kupwara and troops of 18 RR in the forests of Zeb Khurhama. During search of the area, militants hiding in the jungle fired upon search party indiscriminately. The fire was effectively retaliated and an encounter ensued. During the encounter terrorists numbering 12 spread heavy volume of fire upon the troops from the ridges of the forests. On seeing that there was no opportunity to save the lives of jawans, three police personnel of SOG Kupwara namely HC Tasaduq Hussain, HC Mohd Ashraf and Constable Gopal Dass volunteered to storm the location of the militants. Without caring for their lives and with presence of their mind and high degree of tactics, they approached the location of terrorists by crawling and shot dead five of them on spot, while the rest fell down in a deep nallah, wherefrom their whereabouts could not be ascertained. The five slain hardcore terrorists belonging to JUM outfit were later on identified as Rafiq Mughal @ Jahangir s/o Baidullah Mughal r/o Kawari (District Comdr.); Master Gh. Hassan @ Haji Junaid r/o Lalpore (Div. Comdr); Ab. Rashid Malik @ Bilal s/o Baidullah Malik r/o Kawari Lapore; Bashir Ahmed Khatana s/o Sharafdin Khatana r/o Dherian, Lalpore and another unidentified terrorist r/o Pak.

Rifle AK(5 no); Mgazine AK(15 no. including three damaged); Ammunition AK (200 rounds); Radio Sets (4 no. including 3 damaged); UBGL Grenades - 14 Nos(Destroyed in situ); Hand Grenades (4 no. destroyed in situ); Stamp (1 no.); Calculator (1 no.), Diaphone (1 No.), Torch (2 no.) Gassettes (3 no.) and Incriminating documents were recovered from the site of action.

In this encounter, S/Shri Tasaduq Hussain Head Constable, Mohd. Ashraf, Head Constable & Shri Gopal Dass, Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of the high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4(i) of the rule governing the award of President's Police Medal and consequently carries with it the special allowance under Rule 5 with effect from 2nd January, 2002.


(BARUN MITRA)
DIRECTOR

No. 151-Pres/2003 - The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry Bar to Police Medal for Gallantry to the under mentioned officer of Jammu & Kashmir Police:-

NAME & RANK OF THE OFFICER

- 1) Shri Dilbagh Singh , DIG, Jammu
- 2) Shri Amjad Parvez Mirza, SP, Kathua.
- 3) Shri Shiv Kumar Singh, SDPO Border, Kathua.
- 4) Sh S. Jagtar Singh, (Posthumous.)
Dy.SP, Kathua, (Ind Bar to PMG)
- 5) Shri Ravinder Singh, SI
- 6) Shri Hardeep Singh, SGCT, 64/JKAP 6th Bn.
- 7) Shri Ravinder Kumar, Constable, Dt. 760/K
- 8) Shri Qadir Hussain, Constable, Ct. 729/K

Statement of service for which the decoration has been awarded:

On 1.10.2002, two or three Pakistani militants of dreaded Lashkar-e-Toiba outfit, forcibly boarded Matador (No. JK 02H/0065) at village Dugna up to Hiranagar NHW crossing and resorted to indiscriminate grenade throwing and firing on a passenger bus and a Car killing 06 persons on the spot and injuring many other of whom 03 persons later succumbed to their injuries. This being a poll day, Senior Police Officers were on move in different parts of District Kathua. SDPO Border Shri S.K. Singh & Shri Amjad Parvez Mirza, SP Kathua rushed to the spot and organized rescue operation for the injured persons at the same time alerting security deployment around the area. In the meantime Shri Dilbagh Singh, IPS, DIG of the Jammu- Kathua Range also rushed to the spot, made spot assessment and launched an operation to intercept and eliminate the terrorists involved in this incident. The operation continued for the day & night during which certain leads about the movement of terrorists were received. On 02.10.2002, their presence was confirmed in the evening by a ground input and the operation was focused at Arjan Chak area of Hiranagar. In the meantime further enforcement led by SDPO Border Shri Jagtar Singh, Dy.SP DAR DP, Kathua, Inspector Sajad Ahmed Khan, SI Sukhdev Singh, SI Ravinder Singh

along with other policemen reached. The area in which militants were hiding was sealed by a strong cordon led by the police officers on all sides. While the cordon was being tightened during late evening, the militants finding it difficult to escape, started firing on the police party which was retaliated effectively. The militants were forced to hide themselves in bushes and thick under growth. The militants made a number of attempts during night to escape by throwing grenades and firing indiscriminately but failed to break the cordon. Early morning the militants again made a desperate bid to escape from under the bridge connecting Hiranagar town. This area was covered by Shri S.K. Singh, SDPO Border and Shri Jagtar Singh, Dy.SP DAR DPL Kathua who retaliated the firing and injured one of the terrorists. The terrorists threw grenades and injured 02 police personnel namely Const. Ravinder Kumar and Const. Qadir Hussain, who were part of the police party on this front. These policemen were evacuated by Shri S.K. Singh, SDPO Border and Shri Jagtar Singh, Dy.SP DAR DPL Kathua, at a great risk to their own lives. As they were being brought on to the bridge, the terrorists again fired on the party resulting in a bullet injury to Shri Jagtar Singh, Dy. SP DAR, DPL Kathua, subsequently causing his death. However, Dy.SP S.K. Singh and SI Ravinder Singh and SG Ct. Hardeep Singh effectively retaliated the firing and the militant who was injured and still firing was eliminated. In the meantime Shri Dilbagh Singh, IPS, DIG of Police and Shri Amjad Parvez Mirza, SP who were covering another front, launched an attack on the second militant and heavy exchange of firing took place with the terrorist for some time and the terrorist was gunned down with no loss to own side. The following were recovered from the site of action:-

AK-47 rifles (2 nos), AK-47 magazines (10 nos.), AK rounds (150 Nos.), Wireless sets (2 nos one damaged), Grenades (12 nos.), Pistols (1 no.), and Compass (1 no.)

In this encounter, S/Shri Dilbagh Singh, DIG, Amjad Parvez Mirza, SP, Shriv Kumar Singh, SDPO, Late S. Jagtar Singh, Dy.SP, Ravinder Singh, SI, 4413 NGO Hardeep Singh, SGCT, Ravinder Kumar, Constable, & Qadir Hussain, Constable, displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of the high order.

These award are made for gallantry under Rule 4(i) of the rule governing award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance under Rule 5, with effect from 3RD October 2002.


(BARUN MITRA)
DIRECTOR

No. 152—Pres/2003 - The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officer of Jammu & Kashmir Police:-

NAME & RANK OF THE OFFICERS

Shri Lakshmi Kant,
Sub-Inspector, IRP, 3rd

Statement of service for which the decoration has been awarded:

Based on an information about the presence of militants, a joint operation was launched in Solian (Surankote) on 22/01/2002 by the troops of 166 RR and a police party led by SHO P/S Surankote. The police party was divided into two columns one led by SHO and other by SI Lakshmi Kant. The forces approaching the hideouts came under heavy fire of militants, SI Lakshmi Kant could hardly save himself from the first shower of vollies. He took position and crawled through difficult terrain and kept on advancing till he reached close to a shadow and fired a burst. The accurate fire by the officer resulted in killing of one militant later identified as Bader Bhutt, a Distt. Commander. Heavy exchange of fire continued for about 5 hours between troops and the militants. A total of five militants were killed in this encounter. One AK-47 rifle, one AK-56 rifle, 5 AK 47/56 magazines, one pistol with magazine, one 60 mm Mortar tube with base plate, eight Nos. of 60 mm Mortar HE Bombs, one magazine pistol, one global position system and one mobile phone were recovered from the site of the encounter.

In this encounter, Shri Lakshmi Kant. Sub-Inspector displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty.

This award is made for gallantry under Rule 4(i) of the rule governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5. with effect from 22nd January, 2002.



(BARUN MITRA)
DIRECTOR

No. 153-Pres/2003 - The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Jammu & Kashmir Police:-

NAME & RANK OF THE OFFICER

S/Shri

1. Farooq Ahmed, IPS, DIG
2. R.R. Swain, IPS, SSP

Statement of service for which the decoration has been awarded:

On 21.09.2002 at about 1845 hours some heavily armed terrorists masquerading as Policemen (wearing Police Uniform) barged into the Housing colony Bemina after killing the frisking and identity ascertaining policeman namely Ghulam Mohd of JKAP 13th Bn. Their intention was to kill Police personnel and members of their family and deter the policemen from doing election related duties. The militants on suicide mission hid themselves in the thick foilage / vegetation within the premises of the Police Housing Colony. On receiving this information Sh. R.R. Swain, IPS, SSP Srinagar immediately left the meeting being held by IGP Kashmir and proceeded towards Police Housing Colony alongwith SP City North and their escort parties. Meanwhile DIG Central Kashmir Range (CKR) Srinagar, Sh. Farooq Ahmed also reached the spot alongwith IGP Kashmir Zone. The first task which came to the mind of the senior officers was to identify the place where the militant was hiding in order to prevent loss of more lives. Sh. Ahmed, DIG Kashmir assisted by his escort personnel immediately took on the responsibility. By this time, the hiding militant had already fired and injured two PSOs of SP North thereby indicating their intentions clearly. Without caring for his own life Sh. Farooq Ahmed, DIG proceeded to the general area where the militants were hiding. On seeing the DIG and finding himself cornered, the militant took out a grenade and threw it at the police party and simultaneously opened heavy volume of fire. Sh. Farooq Ahmed, DIG received splinter injuries on his body. Despite being injured, he proceeded to seriously injured PSOs and rescued them to safe place without caring for his injuries Sh. Ahmed, DIG, then kept leading the operation till late night. It was also not certain whether all the police families numbering more than 200 were safe or not. SSP Srinagar, Sh. R.R. Swain, IPS immediately took upon the task of

securing each housing block and one by one personally searched all the blocks with his own escort personnel. A police contingent from DPL Srinagar was called and a guard of four personnel was placed at each block after proper clearance by SSP Srinagar himself. One by one all the housing blocks were cleared and secured, thereby ensuring full safety of all police families including women and children. All this was done by Sh. Swain amidst heavy firing by one of the hiding militants in which some police personnel including DIG Srinagar Range were injured. After ensuring the safety of all the police families, SSP Srinagar, then proceeded towards the location where the militant was hiding and took over the command of the operation. The hiding militant this time had stopped firing and concealed himself behind the thick vegetation within the premises of police housing colony. All the exit routes between the housing blocks were plugged by Sh. Swain with the help of mobile bunkers and police constables. After plugging the exist routes, two blocks were identified from where the militant could be spotted from the first floor. SSP Srinagar placed himself at one of these vantage points in one of these blocks and kept a close watch and engaged the militant for the whole night. Early morning, SSP Srinagar with his escort party placed himself at the main escape route for militant. A police party was placed at the vantage point on the first floor of (K) block and asked to fire randomly at the hiding militant. The hiding militant jumped out of the bushes and tried to escape from the place where Sh. Swain, SSP heading his escort party had taken position. Without caring for his own life, Sh. Swain, SSP Srinagar fired at the hiding militant and eliminated him on the spot. One AK-56 Rifle, 3 magazine, 16 live rounds of AK56 Rifles were recovered from the spot.

In this encounter, S/Shri Farooq Ahmed, IPS DIG & R.R. Swain IPS, SSP displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of the high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4(i) of the rule governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 22nd September 2002.


(BARUN MITRA)
DIRECTOR

No. 154-Pres/2003 - The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officer of Jammu & Kashmir Police:-

NAME & RANK OF THE OFFICER

Shri Mohd. Yousuf, (Posthumous)
Sub-Inspector

Statement of service for which the decoration has been awarded:

On 10.08.2002, based on a reliable source, an information was received at Police Station Kalakote, Rajouri that some militants were sighted in Keri Chabber area of Tehsil Kalakote. On this information SI Mohd Yousuf, SHO PS Kalakot having considerable experience in anti militancy operations, alongwith nafri of PS proceeded to Keri Chabber and started leading the combing operation. During the search operation, a couple of militants with some civilians including ladies were noticed in Maize crop fields. The officer challenged the militants and tried to chase them but did not fire as large civilian casualties would have been resulted. The terrorists fired on the officers who too retaliated but did not resist as the number of policemen was very limited. The terrorists took cover of thick maize crop and dense bushes and managed to escape. During the operation, SI Mohd Yousuf SHO, PS Kalakot received serious bullet injuries and later succumbed to the injuries on spot.

In this encounter, Late Shri Mohd. Yousuf, Sub-Inspector displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of the high order.

This award is made for gallantry under Rule 4(i) of the rule governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 10th August 2002.


(BARUN MITRA)
DIRECTOR

No. 155-Pres/2003 - The President is pleased to award the President's Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Jammu & Kashmir Police:-

NAME & RANK OF THE OFFICER

S/Shri

1. Jaswant Singh, Constable (Posthumous)
2. Rajinder Kumar, Constable (Posthumous)

Statement of service for which the decoration has been awarded:

On a specific information on 1st August 2002 that armed terrorists, who were involved in gruesome killing of 28 civilians in Rajeev Nagar colony of District Jammu on 13th July 2002 have been sighted in Raika forests on the eastern side of Jammu City, a cordon and search operation was launched immediately. The police party besides deceased Constable Jaswant Singh and CT Rajinder Kumar included the SHO P/S Trikuta Nagar, SHO P/S Bagh-e-Bahu, I/C P/Ps Narwal and Bathindi alongwith CRPF, IRP and SOG nafri. While, search operation was in progress terrorists hiding in the bushes started indiscriminate firing on the police party which was retaliated. The seek and destroy operation culminated with the elimination of one terrorist and arrest of another. However,

- i) Shri Jaswant Singh, Constable,
- ii) Shri Rajinder Kumar Constable, and
- iii) Shri Raghubir Singh, SI

laid down their lives for while fighting the terrorists, lateron identified as Pak mercenaries.

In this encounter, (Late) S/Shri Jaswant Singh, Constable, & Rajinder Kumar Constable, displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of the high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4(i) of the rule governing the award of President's Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 1st August 2002.



(BARUN MITRA)
DIRECTOR

No. 156—Pres/2003 - The President is pleased to award the President's Police Medal / Police Medal for Gallantry to the under mentioned officer of Jammu & Kashmir Police:-

NAME & RANK OF THE OFFICER

S/Shri

1. P L Gupta, IPS, IGP, Jammu
2. Dilbagh Singh, IPS, DIG, Jammu
3. Farooq Khan, IPS, SSP, Jammu
4. Prabhat Singh, SP, City, North Jammu
5. Mubassir Latifi, Dy.S.P. Hqrs, Jammu
6. R.K. Chalotra, SDPO, City Jammu
7. Sultan Mirza, Sub-Inspector
8. Balvinder Singh, ASI (Posthumous) (PPMG)
9. Balwant Singh, SG, Constable

Statement of service for which the decoration has been awarded:

On November 24, 2002 at 1850 hrs 2 terrorists of LET suicide squad made sudden appearance at Raghunath Temple, Jammu. One of the terrorists while being checked by the security staff on frisking duty lobbed a grenade and forced his entry into the temple complex. The 2nd terrorist opened indiscriminate firing and ran towards Residency Road. An operation was launched immediately to neutralize both the terrorists and senior officers including DG Police, IG Jammu, DIG Jammu alongwith forces reached on spot. Due to timely intervention of the forces deployed and the operation conducted as also the presence of mind of the Pujaris in the Temple, the terrorist who forced his entry in to the temple complex was stopped from entering Sanctum-Sanctorium and remained in the corridor from where he kept policemen at bay till he was eliminated in the operation carried out under the guidance of Shri Prabhat Singh, SP, Dy.SP Mubassir Latifi and ASI Balvinder Singh. The ASI later succumbed to the bullet injuries of the terrorists. The IGP, Jammu/DIG Jammu/SSP Jammu and other senior officers, besides leading the operation from the front were also responsible for the safe evacuation of the large number of devotees from the temple complex. The 2nd terrorist while

fleeing on the Residency Road resorted to indiscriminate firing and throwing of grenade. In this firing a large number of people got killed and equally large number sustained injuries. The eviction of the injured / deceased was supervised by the DG Police himself. This terrorist taking advantage of the darkness in the area hid himself near the temple complex at Panjibhaktar from where he kept the police at bay. Additional troops were immediately requisitioned and an effective cordon was established to ensure that the terrorist did not succeed in escaping. The cordon was laid by Shri RK Chalotra, SDPO city and small contingent of force. The 2nd terrorist was eliminated next day at about 1000 hrs, in a private residence where he had managed to take shelter. 1 AK Rifle and 4 AK Magazine were recovered from the slain militant.

In this encounter, S/Shri P L Gupta, IPS, IGP, Dilbagh Singh, IPS, DIG, Farooq Khan, IPS, SSP, Prabhat Singh, SP, Mubassir Latifi, Dy.S.P., R.K. Chalotra, SDPO, Sultan Mirza, Sub-Inspector, Late Balvinder Singh, ASI, Balwant Singh, SG, Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of the high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4(i) of the rule governing the award of President's Police Medal / Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 24th November 2002.


(BARUN MITRA)
DIRECTOR

No. 157-Pres/2003 - The President is pleased to award the President's Police Medal / Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Jammu & Kashmir Police:-

NAME & RANK OF THE OFFICER

S/Shri

- | | |
|----------------------------|--------|
| 1. S.S Bijral, DIG | (PMG) |
| 2. Rashad Ahmed Malik, PSI | (PPMG) |

Statement of service for which the decoration has been awarded:

On 31st July 2002, an information was received by DIGP, Rajouri-Poonch Range that a Fidayeen Squad was hiding in Bela near D.C. Colony and were planning some spectacular action in the area i.e. Div. Hqrs/D.C. Colony. The information was immediately shared with SOG Rajouri P/S Rajouri and non-civilian authorities for immediate launching of cordon and search operation. Dy. SP Ops. Rajouri assisted by PSI Rashad Ahmad Malik jointly with the troops of 69 Field Regt. launched a swift operation. The DIG Rajouri-Poonch Range maintained the over all command throughout the operation. While the search operation was in progress, the terrorists who were hiding in a house, started indiscriminate firing, resulting in the death of Captain Sh. R.V. Raja. SOG party fired towards the militants from the front side of the house. The terrorists threw grenades and resorted to indiscriminate firing in retaliation to the firing of SOG. PSI Rashad Ahmad Malik without caring for his life advanced towards the hide-out and succeeded in killing of two terrorists. The operation lasted for the whole night and during the wee hours, next day remaining two terrorists were killed by the Police/Army authorities. Sh. S.S. Bijral, DIG, Rajouri-Poonch range provided leadership which resulted in elimination of the terrorists and further loss of life and property. 3 AK-56 & one AK-47 Rifle, 10 AK magazines, 6 Grenade & 444 AK ammunitions were recovered from the killed militants.

In this encounter, S/Shri S.S. Bijral, DIG & Rashad Ahmed Malik, PSI displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of the high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4(i) of the rule governing the award of President's Police Medal / Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 31st July 2002.


(BARUN MITRA)
DIRECTOR

No. 158-Pres/2003 - The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officer of Jammu & Kashmir Police:-

NAME & RANK OF THE OFFICER

Shri Surinder Kumar Choudhary,
Inspector.

Statement of service for which the decoration has been awarded:

On May 04, 2000 Inspector Surinder Kumar Choudhary, SHO PS Majalta, developed a specific information regarding presence of militants in the house of one Gujjar of Village Tazoor, Dhok Manoh. Immediately the Inspector organised a Police Party and proceeded towards the spot even though he had received bullet injuries in another encounter merely 20 days back. After trekking long distance, the police party led by the Inspector reached the spot and cordon off the house. When the militants realized that they have been trapped inside, they started throwing grenades and opened heavy firing from inside the house, which was retaliated by the Police Party. Inspector Surinder Kumar choudhary leading from the front lead the assault party and stormed the house. In the ensuing gun battle, he was able to kill one dreaded militant namely Riaz Ahmed r/o Lohang District Commander of Hizbul Mujahidden. The said militant was the main guide of Pak ISI and was also involved in a number of killings. The following recoveries were made:-

One AK-56, one Magazine AK-56, one Compass in broken condition, 21 Pencil Cell, one Chinese Pouch, 15 Cartridgeges AK-56 & 02 Pocket diary.

In this encounter, Shri Surinder Kumar Choudhary, Inspector displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of the high order.

These awards is made for gallantry under Rule 4(i) of the rule governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 4th May, 2000.


(BARUN MITRA)
DIRECTOR

No. 159-Pres/2003 - The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officer of Jammu & Kashmir Police:-

NAME & RANK OF THE OFFICER

Shri Javid Ahmed Wani,
Head Constable

Statement of service for which the decoration has been awarded:

On a specific information about the presence of some dreaded foreign mercenaries in village Hadipora, Sopore, Distt. Baramulla, a joint operation was launched by SOG, Sopore and 28 RR on 9th October 2002. The terrorists on noticing the movement of troops resorted to indiscriminate firing and lobbed hand grenades, with the result that the people started running hither and thither in panic. Troops however, displaying exemplary patience evacuated the civilians to safer places. It was noticed that two terrorists were hiding in a house and the police party advanced towards that house. Head Constable Javid Ahmed entered in a house next to the target house and took position. One terrorist jumped out from the window and started running under the pressure of intensified firing by the Police party. HC Javid Ahmed noticed him fleeing fired upon him killing foreign mercenary on the spot. The other terrorist was killed by the SOG party. The killed militants were identified as Abu Ali Atiq r/o Gujranwala, Pakistan and Abu Shamil Rashid Jamal r/o Sahiwal, Pakistan. 2 AK-47 rifles, 6 magazines of AK-47, 24 rounds of AK-47, 6 Hand Grenade (Destroyed in situ) and 2 damaged RS Antenna were recovered from the killed militants.

In this encounter, Shri Javid Ahmed Wani, Head Constable, displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of the high order.

This award is made for gallantry under Rule 4(i) of the rule governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 9th October 2002.


(BARUN MITRA)
DIRECTOR

No. 160-Pres/2003- The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Jammu & Kashmir Police:-

NAME & RANK OF THE OFFICER

S/Shri

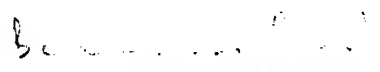
1. Manjit Singh, Dy.SP
2. Anil Kumar, SG Constable

Statement of service for which the decoration has been awarded:

On receipt of an information regarding presence of militants in Sehwa Jungle in Khanater, Poonch, Sh. Manjit Singh, Dy SP Hqrs. Poonch without loss of any time organized his officers and men in the wee hours on 11th January 2003 and proceeded towards the identified location for launching a joint operation. Shri Singh and the police party after negotiating the steep gradient, slippery surface because of dew and frost managed to reach the said location. While the area from left flank was under the process of cordon suddenly the column came under heavy volume of fire of militants. As a result Hav. Mohan Lal of 39 RR was killed and Sep. Raj Singh was injured grievously. Hearing the scream of injured Jawans, Sh. Manjit Singh, Dy SP started crawling towards him without caring for his personal safety and removed him from the site by dragging towards a little safer place. Sh. Manjit Singh, Dy. SP while engaged in directing an Army jawan to remove the injured to rear, suddenly noticed the movement in the nearby bush. Sh. Manjit Singh, Dy SP re-acted immediately and fired a burst towards the bush which resulted in killing of a fleeing militant. Another militant who was also attempting to escape from the cordon was spotted by SG Constable Anil Kumar and was chased although the militant fired blindly toward the SG Constable. The fleeing militant was finally killed by SG Const. Anil Kumar after a brief exchange of fire. One of the killed militant was identified as Jabbar code Bilal R/O PoK. 2 AK Rifles, 5 AK Magazines, 300 AK rounds, 7 Hand Grenades, 2 Wireless sets, 13 Nos of IED and 5 Nos of RPG rounds were recovered from the site of the encounter.

In this encounter, S/Shri Manjit Singh, Dy.S.P. & Anil Kumar SG Constable, displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of the high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4(i) of the rule governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 11th January 2003.


(BARUN MITRA)
DIRECTOR

No.161–Pres/2003- The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officer of Jammu & Kashmir Police:-

NAME & RANK OF THE OFFICER

Shri Altaf Hussain Shah
Dy.S.P.

Statement of service for which the decoration has been awarded:

On 29.01.2002 Shri Altaf Hussain Shah Dy.SP DAR, Poonch, on a specific information about the movement of terrorists in the Dachhi / Sheindara area of Poonch, immediately organised his nafri at DPL Poonch and rushed to the spot. After briefing his men about the siege and combing operation in the area, laden with small bushes and uneven surface, swung into action. At about 0700 hours in the morning suddenly the terrorist appeared behind a small rock and started indiscriminate firing on the search party. Shri Shah who was leading the column advanced ahead, took position and with out caring of his personal security returned the fire which culminated in the killing of three foreign mercenaries. The following arms / ammn were recovered from the site of encounter:-

2 AK Rifles, 9 AK Mag, 314 AK Amn, one (with one mag) Pistol, 3 Hand Grenade, one Radio set, 2 Pouches, Rs.400/- Pak Currency & 1530/- Indian Currency.

In this encounter, Shri Altaf Hussain Shah, Dy.S.P displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of the high order.

This award is made for gallantry under Rule 4(i) of the rule governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 29th January 2002.



(BARUN MITRA)
DIRECTOR

No.162-Pres/2003- The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officer of Jammu & Kashmir Police:-

NAME & RANK OF THE OFFICER

Dr. Kamal Saini, IPS
SSP.

Statement of service for which the decoration has been awarded:

On 26.04.2002 Dr Kamal Saini Sr Supdt of Police, Distt Poonch, was informed through his reliable source about the presence of terrorists in village Sathra Mandi in Poonch. The officer with out wasting any time immediately organised his officers and men and rushed to the spot. The terrorists were hiding on the bank of a Nallah. The officer laid a fool proof siege leaving no room for the terrorists to escape. On seeing that the security forces were approaching near, the terrorists resorted to heavy firing with automatic weapons which was retaliated and the encounter ensued for a long time. Shri Saini with out caring for his personal safety kept on guiding his men despite heavy volume of fire from the terrorists, with the result six foreign mercenaries were killed and huge cache of arms and ammunition recovered.

6 AK Rifles, 20 AK Magazines, one pistol along with 2 magazines, 2 wireless sets, 6 bags, 3 rain coats were recovered from the site of encounter.

In this encounter, Dr. Kamal Saini, IPS, SSP displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of the high order.

This award is made for gallantry under Rule 4(i) of the rule governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 26th April 2002.


(BARUN MITRA)
DIRECTOR

No.163–Pres/2003 - The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officer of Jammu & Kashmir Police:-

NAME & RANK OF THE OFFICER

Shri Karnail Singh,
Supdt. of Police

Statement of service for which the decoration has been awarded:

On 23.9.2002 on receipt of specific information about the presence of militants in Kaskote area of Tehsil Banihal, Army, CRPF and Police was mobilized and a joint operation was launched in the area to flush out/eliminate the militants who had taken shelter in the area. Shri Karnail Singh, SP Ramban led the Police Party and started search operation in the area. While the search operation was in progress the heavily armed militants opened indiscriminate fire from their hideout on the search party with a view to inflict maximum casualties and make their escape good. Shri Karnail Singh, SP, effectively retaliated the fire and this engaged the militants in the gun battle. During the gun battle the officer sighted the hideout wherefrom the fire of militants was coming. The officer crawled amidst the heavy volume of fire towards the targeted location leading his party showing exemplary courage, valiance and presence of mind. The militants taking advantage of being strategically located kept firing on the joint parties of Army/CRPF and Police from all the directions as they were also in good number. In the ensuing gun battle two Army personnel received bullet injuries, one of whom succumbed to injuries. The officer without loosing his composure, kept advancing towards the targeted area and retaliated the firing effectively. After hours of gun battle four militants were killed. The killed militants were identified as (i) Mohd. Sharief Naik Code Barket r/o Chhachihal, Distt. Commander (ii) Arfan (iii) Walid Ahmed r/o Pakistan and (iv) Adil Mohi-ud-din r/o Kulgam, all belonging to Hizbul Islamia militant outfit. 3 AK-56 rifles, 07 magazine AK, 02 radio sets (burnt) and ammn. AK – 90 Nos. were recovered from the killed militants.

In this encounter, Shri Karnail Singh, Supdt. of Police displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of the high order.

This award is made for gallantry under Rule 4(i) of the rule governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 23rd September 2002.



(BARUN MITRA)
DIRECTOR

No.164-Pres/2003 - The President is pleased to award the President's Police Medal for Gallantry to the under mentioned officer of Jammu & Kashmir Police:-

NAME & RANK OF THE OFFICER

Shri Kuldeep Kumar Sharma, (Posthumous)
Dy.S.P.

Statement of service for which the decoration has been awarded:

On 26.04.1999 on a specific information, cordon and search operation was launched by Special Operation Group Kupwara under the supervision of Shri Kuldeep Kumar Sharma, Dy. S.P. Ops. Kupwara in the area of Khudi Lolab. During the search of area the militants opened indiscriminate firing on the police party. The Police party retaliated the fire and reinforcement was called for. While cordon was being laid, one militant suddenly jumped out of the hide out and started firing on the Police party. Shri Sharma who had taken cover initially sensed danger to his Jawans. Without caring for his personal safety he immediately came out and engaged the militant in one to one battle and managed to kill him and in the process saved the lives of his Jawans. The other two militants, who were holed inside the hide out, were also eliminated in the encounter. The militants were operating in the area for last two-three years and were instrumental in a number of killing besides IED attacks on the security forces. Out of 3 killed militants, two were identified as Bashir Ahmad Khatana, Bn. Commander of HM outfit & Bashir Ahmed r/o Gogal, Platoon Comdr. of HM outfit. 2 AK Rifles, one pistol, one wireless set, 5 Hand grenades, one pistol magazine, 72 rounds of AK Rifles & 4 pistol rounds were recovered after the operation.

In this encounter, (Late) Shri Kuldeep Kumar Sharma, Dy.S.P displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of the high order.

This award is made for gallantry under Rule 4(i) of the rule governing the award of President's Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 26th April 1999.


(BARUN MITRA)
-DIRECTOR

No. 165-Pres/2003 - The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officer of Karnataka Police:-

NAME & RANK OF THE OFFICER

Shri G.A. Bawa
Assistant Commissioner of Police

Statement of service for which the decoration has been awarded:

On 06/02/2000 Sh. G.A. Bawa, ACP, Chickpet got the information that one Syed Nasru @ Nasru, a notorious gang leader involved in 34 cases of robbery, dacoity and kidnapping of girls and his associates Illiaz, Musthaff @ Mussantha Jameel were taking shelter in a rented house at Karanjikatte in Kolar town. On 07/02/2000 he located the house and immediately, the house was surrounded by Sh. Bawa and he entered into the house & found a lady. On enquiry, she informed that Illiaz was not at home. Suspecting her version Shri Bawa entered in the house, Illiaz who was hiding on the upstairs, all of a sudden attacked on Sh. Bawa with a knife. However, he was overpowered and in the process he bit the left thumb of Shri Bawa and Sh. Bawa got injury in his thumb. During interrogation of Illiaz, it revealed that Nasru would be coming there between 4-6 PM in that particular house. In spite of the fact that Sh. Bawa was injured in his left thumb, he continued to lead the team and kept an unobtrusive watch near the house for Nasru. At about 5.15 PM, Syed Nasru appeared in the area and entered into the house. Sh. Bawa along with Mariswamy, PI and Veerabhadrappe, PC entered into the house to arrest him. Syed Nasru whipped out a long sword hidden at his back and started wielding the same at Sh. Bawa and other police party, who attempted to arrest him. Undaunted by the grave situation, Sh. Bawa advised him to surrender, but Syed Nasru did not pay any attention & again wielded the sword at him & challenged Shri Bawa & his two officers & advanced at Shri Bawa. Sh. Bawa had no other option but to shoot him. As a result, Syed Nasru got bullet injury on his left leg and fell down. Immediately, he was arrested and the sword was snatched from his hand.

In this encounter, Shri G.A Bawa, ACP displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of the high order.

This award is made for gallantry under Rule 4(i) of the rule governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 7th February 2000.


(BARUN MITRA)
DIRECTOR

No. 166—Pres/2003 - The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officer of Madhya Pradesh Police:-

NAME & RANK OF THE OFFICER

Dr. Vijay Kumar, IPS
Supdt. of Police

Statement of service for which the decoration has been awarded:

On 6th December 2000 at about 1530 hrs informer came and informed Dr. Vijay Kumar, Supdt. of Police Morena that a gang of dacoits including a woman dacoit, all armed, have been seen near Asan River in the area of village Sangoli of P.S. Mata Basaiya. A kidnapped person was also in the captivity of the gang. On receipt of this information a small police party consisting of Shri Vijay Kumar Supdt. of Police, Shri S K Pandey Addl. SP Morena, Shri Shiv Mangal Singh Kushwah SDOP Morena, Shri Santosh Singh Bhadoria TI Joura and Shri Suresh Chandra Dohare TI Ambah and 2 HCs & 8 Constables were formed. At about 18.40 hrs the police party moved on a police vehicles to P.S. Mata Basaiya, where, SHO Mata Basaiya SI Shri K C Sharma was also included in the party. At about 2015 hrs, the police party reached Bamroli Pulia where further information was received that the gang had taken shelter at Bendi Ka khar (Nala with closed end on the one side and opening in to the river) at the bank of river Asan, about 6 K.M. from there and one kidnapped person was also in their captivity. Keeping in view the ravines, thorny bushes, water filled deep rivulets on the way and extremely cold weather, the police party was briefed by the S.P. and it was made clear that the mission was to get the kidnapped person released from the clutches of the gang and firing to be resorted only in case the gang does so. The force was divided into three parties. Party No.1, to act as assault party led by the SP himself. Party No. 2 to act as cut off party led by Addl. S.P, Party No.3 to act as cut off party led by SDOP Morena. At 2030 hrs police parties started for the destination. After about 2 hours alk at about 22.30 hrs police parties reached about 200 metres short of

Bendi ka Khar, where the informer confirmed the exact location of the gang. Keeping in view the terrain and the location of the Khar, the cut-off party No.2 was positioned near the opening of Khar close to the river and cut off party No.1 some what inside the khar and on the mound, SP and his party alongwith one informer moved cautiously, slowly and quietly and the assault party spread out. SP moved a bit ahead and saw two dacoits sitting near the fire in the khar. They were talking to each other and their weapons were kept by their side. SP challenged them and almost instantly both of them picked up their weapons and fired fiercely at SP and the assault party. Immediately SP ordered the police party to take to ground and to return fire. In the absence of any physical cover, the bullets of the dacoits could hit any one any moment, but risking their lives SP, and his party moved forward and effective firing by them silenced both the dacoits. Meanwhile from the left side and from the middle portion of the khar also firing had started by other dacoits but under the effective firing these dacoits were forced to retreat. Where one dacoit got killed by cut off party no.1. another dacoit ran towards the opening of the khar and started climbing the mound, where he came under the fire of cut off party No.2 and was killed. The encounter continued for about 40 minutes and thereafter there was a deep silence. After about half an hour SP instructed on wireless to the two cut off parties to remain vigilant and informed them that assault party was entering the khar for the search. As soon as the party jumped down, they saw one person sitting fearfully close to the wall of the mound. He told his name as Sant Kumar Baghel and that he was kidnapped by this gang about 10-12 days before from Distt. Sheopur alongwith his brother who had run away a few days before. He also disclosed the names of the dacoits. Killed dacoits were identified as Kalla Nai carrying reward of Rs. 7000/-, Saroj Jatav carrying reward of Rs.2000/- Rambeer Singh Tomar carrying reward of Rs.2000/- and Tejpal Singh Sikarwar carrying reward of Rs.2000/-. One 315 bore country made rifle, three 12 bore guns, large quantity of ammunition and empty cartridges and other articles of daily use were also recovered.

In this encounter, Dr. Vijay Kumar, IPS, S.P displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of the high order.

This award is made for gallantry under Rule 4(i) of the rule governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 6th December 2000.


(BARUN MITRA)
DIRECTOR

No.167 –Pres/2003 - The President is pleased to award the 1st Bar to Police Medal for Gallantry to the under mentioned officer of Madhya Pradesh Police:-

NAME & RANK OF THE OFFICER

Shri Tushar Kant Vidyarthi,
SDOP

Statement of service for which the decoration has been awarded:

On 12th May 2002 Shri T.K. Vidyarthi, SDOP Bhitwarwar district Gwalior received an information about a dreaded dacoit Kallu Rawat @ Pinpina carrying a reward of Rs. 30,000/- on his head alongwith his associates camping in the dense forest of Golar Ghati PS. Karhaiya, Distt. Gwalior. Shri Vidyarthi asked the station officer of P.S. Karhaiya over phone to be ready with the available force. Having reached P.S. Karhaiya, Shri Vidyarthi briefed the entire force as to how to encounter the gang. When the Police party led by Shri Vidyarthi, ascended Tapkan Kho hill at 5 a.m . he spotted five armed dacoits and challenged them to surrender, but unmindful of his warning dacoits started incessant firing and a bullet zipped from near Shri Vidyarthi, but luckily he had a narrow escape. However, without caring for his life, Shri Vidyarthi, crawled and reached quite close to the dacoits. When all the warnings of Shri Vidyarthi fell to the deaf ears of the dacoits, he opened firing in self defence. Shri Vidyarthi heard the cries of the dacoits. After 30 minutes of the stopping of fire, vigorous search of the area was made as a result of which gang leader Kallu Rawat alias Pinpina was found lying dead. The other dacoit namely Sughar Singh Jatav (Reward Rs.1000/-) Village Lamkana PS Jingna was found lying dead at some distance. Kallu Rawat @ Pinpina, dacoit was accused of 5 murders, 16 kidnapping, 10 attempts to murder and 47 heinous crimes involving robberies and loot. Moreover, one person namely Shahjad Khan, who had been kidnapped a day before by this gang was saved alive. One .315 bore single shot rifle and one 12 bore (Single barrel) with live and empty rounds were recovered near the dead bodies of these two dacoits.

In this encounter, Shri Tushar Kant Vidyarthi, SDOP displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of the high order.

This awards is made for gallantry under Rule 4(i) of the rule governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 13th May 2002.


(BARUN MITRA)
DIRECTOR

No. 168-Pres/2003 - The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officer of Madhya Pradesh Police:-

NAME & RANK OF THE OFFICER

Shri Gopal Patel (Posthumous.)
Sub-Inspector.

Statement of service for which the decoration has been awarded:

On 2.1.2001, during the search operation of a dense and extremely difficult forest of Bharkuan, SI Shri Gopal Patel alongwith police parties of police Station Dirolipar and Atreta scaled a very high difficult and treacherous hill to search the dacoit hideout on its top. The route to hill top is full of dense thorny bushes and very steep and circuitous and passes through another hide out on the way. Shri Gopal Patel scaled the hill and reached on top alongwith 5 other party men. As the party moved on in extended line formation Shri Gopal Patel spotted sentry of the dacoit gang. Seeing a person with gun, he challenged him to surrender and moved towards him to over power the sentry, but at the same time restrained himself from firing unless his identity was ascertained. The dacoit seeing Shri Gopal Patel approaching him fired two rounds hitting Shri Patel on his head, stomach and legs. Despite being seriously injured, he asked other police men to open fire and himself fell down on the ground but kept encouraging his party men to attack and move ahead as dacoits started firing indiscriminately. He asked Constable Shive Balak to tie a lungi on his bleeding head and displaying ultimate degree of valour and exemplary leadership qualities, he kept on motivating them to fire back and move forward till he breathed his last.

In this encounter, Late Shri Gopal Patel, Sub-Inspector displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of the high order.

This award is made for gallantry under Rule 4(i) of the rule governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 2nd January, 2001.


(BARUN MITRA)
DIRECTOR

No. 169—Pres/2003 - The President is pleased to award the Bar to Police Medal for Gallantry / Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Madhya Pradesh Police:-

NAME & RANK OF THE OFFICER

S/Shri

1. Gajiram Meena, IPS, Supdt. of Police (Bar to PMG)
2. Manoj Kumar Singh, Dy. S.P. (PMG)

Statement of service for which the decoration has been awarded:

On 17-11-2001 Shri G.R. Meena received information that the gang of Rajjan Gurjar was hiding in thick forest/ravines of river Chambal with the intention of committing an offence of kidnapping in the nearby area. Shri Meena immediately collected force from various Police Stations and reached PS Surpura at about 7 PM. The available force was divided into three parties to be led by Shri Meena. Shri Meena briefed the force about the proposed operation and the police force started on foot towards the hideout of the dacoits. After walking for almost 2 hours the police party reached the hideout which was near the bank of the river Chambal, at a raised ground and was surrounded by thick bushes from all the sides. The sentry of the dacoit gang saw the police party and alerted the gang, which opened fire at the police party. Shri Meena challenged the dacoits to surrender but the gang continued firing at the police party. The police party being on the low ground was in decisively disadvantageous position. Shri Meena immediately instructed the police party to encircle the hideout. As a tactical move, Shri Meena instructed the parties led by DSP Manoj Singh and Awadhesh Goswami to reach to a higher geographic position and decided to personally lead the charge and entered the hideout with a small police party.

Meanwhile, the dacoits opened fired at Const. Bhola and HC Ganesh Ram who were providing cover fire to the party led by SDOP Ater, which was advancing towards the hideout from other direction. Seeing the life of the two police personnel in peril, Shri Meena unmindful of the continuous firing by the dacoits and without caring for his personal safety, charged forward and opened fire with his AK-47 rifle killing one dacoit on the spot, who was later identified as Devendra @ Munna Parihar R/O Kola, PS Sahason, District Etawah and one 12 bore gun was recovered from him. This dacoit carried a reward of Rs. 3,000/- from Bhind Police and Rs. 2,500/- from Etawah Police. This gallant action gave a vital blow to the dacoit gang which took to heel and ran away by jumping into the ravine. Shri Meena inspired his force and kept on advancing. In the meantime one dacoit who was firing towards Const. Munna Lal, DSP Manoj Kumar Singh in a swift

act fired at the dacoit and killed him. This dacoit was identified as Dhandhoo Lodhi @ Fauzi r/o Shahdpur PS Raath Distt. Hamirpur (U.P.). One 12 bore gun and large nos. of Cartridges were recovered from him. In the meantime other dacoits by taking advantage of darkness and familiar terrain fled away. Shri Meena and his party chased them about 9 hours and searched them in the hideouts of Murong ravines and from there moved on foot towards a hideout near village Mansa Ram Ka Pura in PS Pachhaya Gaon Distt. Etawah (U.P.). At around 6 AM when the police party was searching the ravines near this village, it was taken by surprise by an LMG burst, fired by the Rajjan Gurjar gang, which was hiding on top of the ravine and had seen the police party. The gang started firing indiscriminately at the police party. Undeterred by the hail of bullets from the dacoits, Shri Meena directed the police party to return the fire and encircle the hideout. Shri Meena personally led the police party in advancing towards the top of the hideout with a few constables. Seeing a determined police party, the dacoit gang split itself into smaller groups and engaged the police party in firing from different places in the ravine. The return of fire by a determined police party resulted in the liquidation of 3 dacoits namely 1. Bhagwant @ Sukhram r/o Bharsain Distt. Auraiya (U.P.), 2. Babloo @ Rajesh r/o Simra, Tikamgarh (M.P.), and 3 Raju @ Dharmendra Lodhi r/o Nagla Bishun PS Balarai distt. Etawah (U.P.). Two 12 bore rifles and one country made gun along with ammunition was recovered from them. But, Rajjan Gurjar and 7-8 members of the gang managed to jump into the river Yamuna along with the kidnapped persons. But, constant chasing and firing by the police party in pursuit, forced the dacoits to release 5 kidnapped persons.

In this encounter, S/Shri Gajiram Meena, IPS, Supdt. of Police & Manoj Kumar, Singh, Dy.SP displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of the high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4(i) of the rule governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 17th November 2001.

(BARUN MITRA)
DIRECTOR

No. 170—Pres/2003 - The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officer of Madhya Pradesh Police:-

NAME & RANK OF THE OFFICER

Shri Gajiram Meena,
Supdt. of Police

Statement of service for which the decoration has been awarded:

The gang of dreaded dacoit Nirbhaya Singh Gurjar was carrying out depredations in the bordering areas on Bhind, Etawah, Orayya, Jalon and Kanpur districts for almost 20 years now. The gang committed more than 150 offences in the area, including 8 murders, 43 dacoities and 44 kidnapping. The gang leader carried a reward of Rs. 50,000/- from UP Police and Rs. 25,000/- from MP Police. The gang was continuously committing offences of kidnapping for ransom in the area. The thick ravines/forest provided an ideal hideout for the gang. Shri G.R. Meena, SP, Bhind took it as a challenge to check and control the activities of this gang and created a well knit network of informers in Bhind and adjoining areas of UP and undertook intensive search/patrolling operations, so as to get familiarized with the terrain. On 25-03-2001, the gang, through its agents, kidnapped 8 persons from district Bhind through deceit by luring them for recruitment in the army. This sensational offence acted as a great stimulant for the Bhind Police to further intensify its operations against the gang. On 18-04-2001, Shri G.R. Meena received an information that the gang of Nirbhaya Singh Gurjar was present in the ravines and thick forest of Rampura in Distt. Jalon (U.P). Shri Meena along with force rushed to Rampura, which is about 100 km from Bhind. It was revealed that the gang, which has about 25 strong and had 18 kidnapped persons with it, was armed with modern and automatic weapons including AK 56 rifles. Shri Meena divided the police force into four parties and started intensive search operations in the forest/ravines. After about 3 hours of search in the treacherous ravines the police party located the gang in the Dang(ravines and thick forest) of village Mai. On sighting the police party, the gang started heavy firing on the police party, which in turn challenged the dacoits and launched a planned offensive, as a result of which the gang was scattered. Shri Meena and his party kept on chasing the fleeing dacoit gang, in spite of the fact that it had become dark by that time. Continuous chasing/search operations resulted in further contact of police party with the dacoits at around 0300 hrs on 19-04-2001 near village Ninawali (PS Madhogarh distt.

Jalon). Intensive firing by dacoits did not deter the police party led by Shri Meena from chasing the fleeing gang. At about 0500 hrs, a part gang of the dacoits was located on the banks of river Pahuj, near the bordering village of Thanpura, PS Raun. Shri Meena along with his small party challenged the dacoits to surrender, but the gang retaliated by opening heavy fire on the police party. The hail of bullets from the dacoits could not deterred Shri Meena and the police party from advancing towards the dacoit. One dacoit fired at Const. Bal Gopal Tiwari, who had a providential escape as the bullet grazed past him. The dacoit again aimed at Const. Tiwari. Seeing this, Shri Meena who was along side the constable, without caring for his safety advanced forward, pushed him down and fired at the dacoit with his AK-47 rifle. The shot hit the dacoit who collapsed then and there. But for the gallant act of Shri Meena, the life of constable Bal Gopal Tiwari would have been in peril. Taking advantage of the exchange of fire between police and dacoits, one of the kidnapped person, managed to escape from the clutches of the dacoits. The strong attack by the police caused the dacoits to flee and in doing so they pushed three kidnapped persons in the river water. Prompt rescue operations by the small police party resulted in saving the life of these three person. The killed dacoit was later identified as Raju @ Shiv Narayan Parihar S/O Shankar Singh Parihar R/O Village Salokhara, PS Bitholi, District Etawah Uttar Pradesh, carrying a reward of Rs. 2500/-. One 12 bore gun was also recovered from his possession..

In this encounter, Shri Gajiram Meena, Supdt. of Police, displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of the high order.

This awards is made for gallantry under Rule 4(i) of the rule governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 19th April 2001.



(BARUN MITRA)
DIRECTOR

No. 171—Pres/2003 - The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Madhya Pradesh Police:-

NAME & RANK OF THE OFFICER

S/Shri

1. Sanjay Rana, Supdt. of Police
2. Y.K. Tiwari, CSP

Statement of service for which the decoration has been awarded:

On receipt of an information about the movement of notorious dacoit gang of Hari Singh Kachhi towards village Rampura PS Nayagaon district Bhind, three ambush parties of police force were laid on the expected path of dacoit gang's arrival as shown by the informer on the intervening night of 24/25th Feb 1996. Shri Sanjay Rana was Incharge of party No.1. When the dacoits were sighted at 1.20 AM in the night Shri Rana challenged them to surrender themselves. In reply the dacoits opened fire on party No.1, to kill the police personnel. In self-defence, the police personnel of the party No.1 retaliated the fire. Shri Sanjay Rana exhibiting extraordinary courage and with utter disregard to his own personal safety came out from his covered position and advanced towards the dacoits' position. When the dacoits observed Shri Rana in open, they opened heavy firing in order to kill him. Undeterred and still with out caring for his life Shri Rana kept on crawling towards the dacoit amid heavy firing. When closed to the dacoits, Shri Rana challenged them to put down their weapons and surrender but the dacoits fired indiscriminately at Shri Rana. In self-defence Shri Rana returned the fire, which resulted in killing of one dacoit. Remaining dacoits were also killed by the Police force in the exchange of fire. The dacoit killed by Shri Rana was later on identified as Hari Singh Kachhi, the gang leader who was carrying a reward of Rs 15,000/- announced by MP Govt. The other dacoits killed in this encounter were Ramsiya Kachhi and Munna Kachhi both were carrying a reward of Rs 5000/ each also announced by MP Govt. The entire gang of Hari Singh Kachhi was liquidated in this encounter. When party No.1 under Shri Sanjay Rana, SP opened fire in self-defence, the dacoits flouncely moved towards party No.2 under Shri Y K Tiwari. Shri Y K Tiwari challenged them to surrender. The dacoits on hearing the voice of Shri Tiwari fired on his party indiscriminately. Shri Tiwari along with his

party fired on the dacoits and Shri Tiwari advanced crawling on his knees. Shri Tiwari wanted to catch the dacoit in scuffle. One dacoit opened fire on Shri Tiwari from very close range and the bullet passed from just near to Shri Tiwari but he saved himself luckily. Shri Tiwari killed the dacoit before he could target another bullet. This dacoit was identified as Ramsiya @ Bherant Kachhi a rewarder of Rs 5,000/-.

The following arms and ammunition and other items were also recovered from site of encounter:-

a)	.315 Bore rifle	:	01
b)	.12 Bore DBBL Gun	:	01
c)	.12 Bore SBBL Gun	:	01
d)	Live cartridges of .315 Bore	:	06
e)	Live Cartridges of .12 Bore	:	10
f)	Empty cartridges of 315 bore	:	17
g)	Empty cartridges of 12 bore	:	22
h)	Utensils of daily use		

In this encounter, S/Shri Sanjay Rana, Supdt. of Police & Y.K. Tiwari, CSP displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of the high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4(i) of the rule governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 25th February 1996.


(BARUN MITRA)
DIRECTOR

No. 172—Pres/2003 - The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Madhya Pradesh Police:-

NAME & RANK OF THE OFFICER

S/Shri

1. Dinesh Chand Sagar, Supdt. of Police
2. Dilip Bhandari, SDOP

Statement of service for which the decoration has been awarded:

On 30.09.02, Shri D.C. Sagar, S.P. Dewas and Shri Dilip Bhandari, SDOP, Sonkatch led their teams in search of Narender Kanjar and Inder Balai who had unleashed a reign of terror in Dewas and neighbouring districts having committed 43 and 38 heinous offences respectively along with their gang. There were many court warrants against them and reward of Rs. 20,000/- and Rs. 50,000/- respectively were declared on their heads. On 29.09.2002, they kidnapped one young harijan boy, the only son of his parents for a ransom of Rs. One lac and fifty thousand and threatened to kill him if the ransom was not paid in twenty four hours. On 30.09.02 both the above officers cruising and crawling chased the criminals and surrounded them in a field at Madli Pahari in the forest and challenged them with the warnings to the criminals to surrender so that the hostage could be got released. But ignoring warnings they opened relentless fire with their lethal weapons keeping the hostage in front. Shri Sagar got injured with one gun shot injury on his thigh and six pellets were also taken out from his body, during treatment. Shri Bhandari got injured with five gun shot injuries on his thigh and body out of which two were grievous and eighteen pellets were also taken out from his body during treatment. Amidst spray of relentless shots of the gang, both the officers succeeded in strategically rescuing the hostage unscathed and liquidated the two die hard criminals Narendra Kanjar and Inder Balai and also arrested two dangerous criminals Jaipal and Hansraj along with the arms and the robbed property worth Rs. One lac. Five Kattas (12 bore), One katta (32 bore), one M1 gun, 36 live cartridges (12 bore), 6 live bullets (32 bore) & Rs. 1 lac was recovered from the criminals.

In this encounter, S/Shri Dinesh Chand Sagar Supdt. of Police & Dilip Bhandari, SDOP displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of the high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4(i) of the rule governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 30th September 2002.


(BARUN MITRA)
DIRECTOR

No. 173-Pres/2003 - The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officer of Maharashtra Police:-

NAME & RANK OF THE OFFICER

Shri Narayan Ishwara Bhoi
Asst. Sub-Inspector

Statement of service for which the decoration has been awarded:

The assailant Mahendra Ganapati Pedanekar, age 32 years from Paschim Appt. Prabhadevi, Mumbai, whose name was struck off from Florida University, USA, as research fellow, is the husband of one Mrs. Mayuri from Sangli. They have a child named Ganesh 1 ½ years old. There was a dispute between the assailant and his wife Mayuri. On 13th May 2002 the assailant was going to Mumbai with his child which he had forcibly brought with him, by the S.T. bus i.e., Ajara-Mumbai bus at 20-15 PM. The assailant's wife was requesting him to give her son, but he refused and threatened her. She urged Police Constable on S.T. Stand duty to rescue her son. However, he asked S.T. driver to take the bus to Shahupuri Police Station. The assailant was very violent and furious. He had a knife in his right hand pointing to his own son Ganesh in his left hand. He had posed serious threat to the life of the child as well as the 40 passengers of the bus who were frightened and only watching this incident. At the door of Police Station, the assailant was threatening police not to venture to come forward otherwise he will kill the child. In spite of this, ASI Narayan Ishwara Bhoi with utmost courage and serious threat to his life stepped into the bus and immediately grabbed the assailant and rescued the child from his arm, but while doing so, the assailant assaulted him with knife, and Shri Bhoi sustained grievous and incised stab injury in left border of scapula and only because of his good luck and immediate operative treatment he could survive.

In this encounter, Shri Narayan Ishwara Bhoi, ASI, displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of the high order.

This award is made for gallantry under Rule 4(i) of the rule governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 13th May 2002.


(BARUN MITRA)
DIRECTOR

No.174-Pres/200 3- The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officer of Maharashtra Police:-

NAME & RANK OF THE OFFICER

Shri Sanjay Deshmukh,
Sub-Inspector.

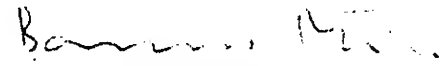
Statement of service for which the decoration has been awarded:

On 17/5/2000 a gang of 8-9 dacoits committed dacoity and looted sum of Rs.58018/- from Gunjal petrol pump at Lasalgaon and Mahalaxmi Petrol Pump at Niphad. They used a stolen Tata Sumo. PSI Deshmukh was instructed to chase the dacoits and arrange Nakabandi on Pimpalgaon Ranwad Road by SDPO BG Shekhar, Niphad Sub-Divion. He started nakabandi at Ranwad nearby Agra Highway with available insufficient staff. Dacoits who were travelling in Tata Sumo with the speed of 120 km/hr after commission of dacoity while going along Lasalgaon-Ranwad Road, saw PSI Deshmukh and 2 Police man standing on the road. They drove the speedy vehicle towards them with the intention to crush down PSI Deshmukh and staff. Shri Deshmukh immediately jumped down the road and saved himself from the dangerous attack. He controlled himself immediately and started chasing the dacoits by Govt. Jeep. The dacoits drove away along Mumbai-Agra highway towards Sogras Phata. The dacoits lost the control of Tata Sumo due to tyre burst and 8/9 dacoits came out of it and started running in the nearby field and uneven barren land with their deadly weapons and looted property. PSI Deshmukh saw them running in the field area and immediately got down from the jeep and started chasing the dacoits with insufficient police staff. While continuous running police staff lagged behind and he remained alone. PSI Deshmukh being alone the dacoits suddenly turned back and assaulted him with chopper due to which he sustained serious injuries on his chest and vital parts. Although being seriously injured, he fired 4 rounds from his service pistol towards dacoits to save his own life and to catch them. In the encounter attack one dacoit was inured and others ran away. PSI Deshmukh sustained chest bone fracture and serious injuries and was taken to Govt. hospital at Chandwad. The injured dacoit died in hospital. Dangerous weapons like chopper, bunch of duplicate keys, cash looted from Lasalgaon and Niphad Petrol

pumps were recovered in the personal search of the same dacoit. Choppers hammers, screw drivers, swords, knife were also found in stolen Tata Sumo used by dacoits. Explosives like five detonaters, fuse wires were also found in the possession of other dacoits of same gang, investigation also revealed that the same gang of dacoits committed several serious offences like robberies, dacoities, attempt to murder, assault on police etc. in Sangli, Kolhapur, Pune district and Pune city area. The gang was led by a gang star Dada Ajinath Toradmal R/o Patoda, Dist. Beed who was the histry sheeter of Vanawadi Police Station (Pune City).

In this encounter, Shri Sanjay Deshmukh, Sub-Inspector displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of the high order.

This awards is made for gallantry under Rule 4(i) of the rule governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 17th May 2000.



(BARUN MITRA)
DIRECTOR

No. 175—Pres/2003 - The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Maharashtra Police:-

NAME & RANK OF THE OFFICER

Shri Dipak Ratnakar Shinde,
Constable.

Statement of service for which the decoration has been awarded:

On 01/11/2001 at Village Tarele, Taluka Kankavli adjoining Sindhudurg District, a sum of Rs. 10 lakhs of the Bank of Maharashtra, Terele Branch was being carried in a Rickshaw by the bank staff for deposit in Kankavali Treasury. Five dacoits moving in a car intercepted the rickshaw and looted Rs.10 Lakhs on gun point. On receipt of said information, U.M Bhosale, Inspector and P.D. Salunkhe, SI of Rajapur Police Station along with their staff proceeded towards the Mumbai Goa National Highway No.17 at 1050 hrs and started Nakabandi at Jakatnaka and surrounding area. At about 1145 hrs, the culprits now in auto rickshaw sensed the police nakabandi at Rajapur jakatnaka. They immediately got off the rickshaw and boarded a bus plying in the opposite direction. The policemen have noticed their suspicious activities and started chasing the bus. The three suspects hurriedly got down from the bus and started running. Shri Salunkhe, SI chased them and raised an alarm. The culprits were armed with pistol and revolver. They opened fire on the police and shot dead at point blank range the conductor (in Khaki Uniform) who had got down presuming him as a policeman. In the malee one culprit was held by the public and the other two escaped from the spot. The police party continued chasing the remaining accused. One of them hid himself in the jungle nearby, police Inspector Bhosale succeeded in apprehending him. The other one jumped in the river Arjuna & started moving away. Noticing the police & public gathered the dacoit threatened with his firearm. The culprit fired 2 rounds on Shri Salunkhe which missed. Shri Salunkhe, SI was chasing him. In the meantime, Shri Dipak Ratnakar Shinde jumped into

the river unarmed and blocked the movement of the dacoit along the water. To force culprit to surrender Shri Salunkhe fired two rounds in the air from his service revolver asking him to surrender. However, the dacoit replied by firing two rounds at the officer. When the accused again took position to fire on the officer, Shri Shalunkhe have no other option but to fire on him. The accused got injured and again tried to fire on the officer. But, Shri Dipak Ratnakar Shinde who had come near caught hold of the dacoit with bare hands in the water and disarmed him. The criminal who was killed by the bullet of Shri Salunkhe was Nitin @ Switi Raghuvir Sanil of Mira Road, Thane wanted in 13 heinous offences committed by him in Thane and Mumabi. Other two culprits viz. Vijay Vasant Kedari of Ghatkopar, Mumbai and Shabir Mohamad Sayyed of Mumbai were wanted in 5 and 7 offences committed by them in Mumbai belonging to notorious gangs in Mumbai. The whole looted cash of Rs. 10 lakhs has been recovered from them. Two vehicles used in this crime including a Honda City, a Pistol, a Revolver and Choppers were also recovered.

In this encounter, Shri Dipak Ratnakar Sinde, Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of the high order.

This award is made for gallantry under Rule 4(i) of the rule governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 1st November, 2001.

(BARUN MITRA)
DIRECTOR

No. 176-Pres/2003 - The President is pleased to award the 1st Bar to Police Medal for Gallantry to the under mentioned officer of Manipur Police:-

NAME & RANK OF THE OFFICER

Shri N. Rajen Singh,
Sub-Inspector.

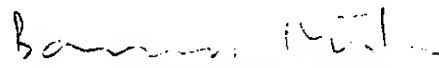
Statement of service for which the decoration has been awarded:

On 29.11.2001 at about 3 PM , while SI N. Rajen Singh alongwith 5 Constables including driver were on patrolling in Imphal Bazar areas received a reliable information that some well armed Keileipak Communist Party (KCP) members were taking shelter in the house of one Khaidem Leishang Singh of Sekta Makha Leikai about 7 KM from Impahl also member of KCP organisation with intention to strike security forces in that area. SI N. Rajen Singh alongwith his skeleton force rushed to the spot at about 3.30 PM informing Control Room Imphal East to send reinforcement. They approached the said house, while the party was positioning themselves to establish cordon, the extremist who were fully armed with sophisticated weapons like, AK, Carbine etc. started firing heavily upon the police party. The police party led by SI N. Rajen Singh also retaliated by opening fire towards the extremists. From the heavy firing it could be made out that there might be 5/6 KCP members. SI N. Rajen Singh and his party had approached from the northern side of the house. SI N. Rajen Singh asked Constable L. Gogo Singh and Constable Md. Muhashin to cover from the left front side of the house by taking position behind a Nullah and other 2 Constable i.e. A.K. Iobotomba Singh and Kh. Ingobi Singh were asked to cover from the right side of the house. Then SI N. Rajen Singh and Constable Md. Aktar firing upon the door of the house entered into the small ground in front of the house and took cover behind the thick cluster of tall banana plants. While firing at the window of the house from where firing was coming, SI N. Rajen Singh proceeded to the north eastern corner of house and took cover behind the northern wall of the house. He

started inching towards the door of the house along the wall. However, in between there was a window. Therefore, he had to crawl down and passed the window in a very precarious positions. When he reached near the door there was little silent in firing from opposite party. Immediately SI N. Rajen Singh barged into the house from the front door of the house, and fired upon the extremists inside the room with his AK-47 Rifle. In the close exchange of fire, one unknown armed youth later on identified as Khangembam Netrajit Singh, (30) S/o (1) Kh. Kandhar Singh of Samaram Baibung Manak, a listed and hardcore member of Kangleipak Communist party (in short KCP, an outlawed organisation) was shot dead. From the search of the dead body, 1 (one) AK 56 Assault Rifle loaded with 1 (one) mis-fired round in the chamber and 10(ten) live rounds in the magazine were recovered.

In this encounter, Shri N. Rajen Singh, Sub-Inspector displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of the high order.

This award is made for gallantry under Rule 4(i) of the rule governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 29th November , 2001.


(BARUN MITRA)
DIRECTOR

No. 177-Pres/2003 - The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officer of Manipur Police:-

NAME & RANK OF THE OFFICER

Shri K. Jayanta Singh
Addl.SP.

Statement of service for which the decoration has been awarded:

On 5.11.2001 at about 1230 hrs. based on a reliable information the UG extremist elements who had kidnapped Shri A. Shamugou Singh, Director of School on 27.10.2001 were taking shelter in and around Nongpok Keithelmanbi village area along with the victim, a combined team of Commandos of Imphal East District and Imphal West District was organised to proceed to the said area under the Command of Shri K. Jayanta Singh, Addl.S.P Imphal West District. The combined team was divided into three parties as the advance party, middle party and rear party. While the rear party, which included Shri K. Jayanta Singh, Addl.S.P. was approaching Laikoiching on the Imphal Maphou Dam Road, at about 1.30 pm some unknown youth were seen coming on a TATA truck from the opposite side i.e. Maphou Dam side. As the movement of the youths in the truck in such a remote area, aroused suspicion, Shri Jayanta stopped them for verification. Suddenly the youths jumped down from the vehicle and scattered in different directions. One of the youths who happened to be in close proximity to Shri Jayanta brandished a pistol. Within a split of second Shri Jayanta pounced upon the youth and dragged him down to the ground and resorted to hand fight with the youth. During the course of the fight, the youth had the chance to fire two rounds on Shri Jayanta, which hit on the lower part of his face. It caused injury on his left chin and neck. Shri Jayanta inspite of his injury overpowered the youth, retaliated with his AK-47 Rifle and ultimately eliminated the youth, who was later on identified as Thounaojam Kabichandra @ Premananda Meitei s/o Th. Manimohan Meitei of Wangoo Tera Lupa Marup Bazar, a hard core activist of the proscribed organization Kanglei Yal Kanna Lup (Oken Faction). One 9 mm Pistol bearing No. 087 " NORINCO" made in China loaded with 7 live ammunition in magazine was recovered from the youth. In the meantime, another youth on seeing the armed youth falling down tried to hurl one hand grenade towards the police. At this critical juncture, Constable A.S. Lovejoy Tangkhul hit the youth from his AK-47 rifle and eliminated him on the spot. The youth was later on identified as Ninthoujam Bela @ Sanaton s/o N. Birachandra of Thanga Salam Leikai, S/S 2nd Lieutenant of the proscribed organization KYKL (O). One hand grenade was recovered from the youth.

In this encounter, Shri K. Jayanta Singh, Addl. S.P. displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of the high order.

This award is made for gallantry under Rule 4(i) of the rule governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 5th November,2001.


(BARUN MITRA)
DIRECTOR

No. 178—Pres/2003 - The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Manipur Police:-

NAME & RANK OF THE OFFICER

S/Shri

1. L. Gogo Singh, Constable
2. Ng. Binoy Singh, Constable

Statement of service for which the decoration has been awarded:

On 5 May, 2002 at about 3.30 a.m, based on a reliable information that some armed youths, suspected to be valley based extremists are taking shelter and loitering in the general areas of Naharup Village with a view to lay ambush on security forces, a team of Imphal East District Police Commandos led by Sub Inspector P John Singh and SI M Binodkumar Singh rushed to the said area to conduct counter insurgency operation. When the party reached at Naharup Awang Leikai on the bank of Iril river at about 4.30 hrs, some youths who were already taking shelter in the village came out with sophisticated weapons and opened fire upon the commandos. The party took position and retaliated the fire compelling the armed youths to retreat and fled away towards the southern side of the village. SI M Binodkumar Singh, Constable L Gogo and Constable M Binod Kumar Singh chased the youths firing intermittently. Another commando team led by SI P John Singh drove towards the southern direction to plug the possible escape routes. Before SI P John Singh and his party could make effective stop, the fleeing youths all of a sudden appeared before the commando team of SI John Singh being closely followed by Constable Ng Binoy Singh and opened heavy volume of fire. The fire was retaliated but proved not effective as the youths were in advantageous position and were under cover whereas SI John Singh and Constable Ng Binoy were in very odd and difficult position. At this juncture Constable Ng Binoy Singh advanced to the youths tactically, under covering fire from SI John Singh. Meanwhile, SI Binod Kumar Singh and Constable L Gogo joined SI P John. Sensing that the armed youths could escape, SI P John Singh also moved towards the youths while SI Binod Kumar and Constable L Gogo provided covering fire. One of the youth observed the movement and immediately opened fire on SI Johan and Const Ng Binoy Singh, who had a narrow escape.

Undeterred and with utter disregard to their personal safety SI P John Singh and Constable Ng Binoy sharply retaliated killing the armed youth on the spot. The youth was later on identified as Nguljamang @ Amang Guite of Asian Village PS Saikul, a listed hard core activist of the banned out law organisation UNLF(United National Liberation Front). Meanwhile, SI Bindokumar and Constable L Gogo advanced towards the bamboo cluster behind where the remaining armed youths had taken cover. Seeing the movement one youth tried to throw a grenade on the commandos. But SI Bindo Kumar and Constable L Gogo in a quick reflex fired on the youth and shot him dead on the spot. The killed youth was later on identified as Thangjam Bungbung @ Ibungo Singh of Tarothkhul Awang Leikai. The following were recovered from the possession of the two dead militants :-

(a) One AK 56 rifle with 11 live rounds, (b) One AK 56 Magazine, (c) One Chinese hand grenade, (d) 5 empty cases of AK ammunition.

In this encounter, S/Shri L. Gogo Singh, Constable, & Ng Binoy Singh, Constable, displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of the high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4(i) of the rule governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 5th May 2002.


(BARUN MITRA)
DIRECTOR

No. 179–Pres/2003- The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Manipur Police:-

NAME & RANK OF THE OFFICER

S/Shri

1. Md. Akhtar Huissen, Constable
2. Th. Samuel Prou, Constable

Statement of service for which the decoration has been awarded:

In the morning of the 12th June, 2002, on receipt of a reliable information that some armed UG elements suspected to be members of the outlawed organisation namely Peoples Liberation Army (PLA) were loitering in and around Khurai Lamlong area with intent to commit prejudicial activities to the security and integrity of the State and other nefarious activities like extortion and ambush on security forces etc., a team of Police Commando led by Inspector N. Rajen Singh, OC of Commando Unit, Imphal East District rushed to the aforesaid area for carrying out manhunt operation. While Inspector N. Rajen Singh and his team consisting of (i) Md Akhtar Huissen (ii) L. Gogo Singh (iii) Muharsin (iv) Th. Samuel Prou (v) H. Ishworchand were conducting patrolling from one place to another in the village lane in such a way that they could conduct frisking and checking on suspicious passerby and vehicles and at the same time ready themselves for any eventuality like chance encounter or chasing of any fleeing vehicle. A mobile team consisting of Constables (i) Papao Zou (ii) Kh. Ranjit Singh (iii) Mustaque (iv) Abdul Sattar (v) A Rajen Singh (vi) A Nimai was detailed to cut off any fleeing vehicle. To facilitate this, they were positioned at Lamlong Bazar crossing. Having worked out the plan minutely, the plan was put into action. Two youths were spotted coming on a motorcycle and on seeing the youths in a very suspicious manner, Inspector N. Rajen Singh asked them to stop for checking. The youths did not pay heed, rather sped away their bike and tried to escape the police dragnet. The police party made a hot chase. In spite of repeated warning the youths pulled out one Pistol and fired towards the Commando and Inspector N. Rajen Singh also retaliated from his AK-47 rifle. One of the youth jumped from the motor cycle and run into a saw mill campus near Khurai Lai Awangbi. Inspector N. Rajen Singh alongwith Constable L. Gogo Singh also jumped from the Gypsy and 2 constables viz (i) Md. Akhtar Huissen and (ii) Samuel also jumped from the gypsy about 100 meters distance from Inspector N. Rajen Singh. Another mobile team was directed by Inspector

N. Rajen Singh through W/T set to pursue the fleeing youth. In the campus of the saw mill the armed youth continued to fire upon the police personnel taking coverage behind the timbers. The police party also retaliated and advanced forward. When Constable Md. Akhtar Huissen was approaching towards direction where the youth appeared to have taken shelter, the youth happened to see Constable Akhtar Huissen from his back side and tried to attack him. In a split of sound, Constable Th. Samuel Prou pounced upon the youth and fought hand to hand. Constable Md. Akhtar Huissen joined in the fight with firing. After a brief encounter, the youth who was later on identified as Elangbam Bimol @ Kadamba @ Jiten @ Loyamba of Keirao Lairembi Laikei, a listed and hard core member of PLA was over powered and arrested. One 9mm pistol having one misfired round in the chamber and three live rounds of 9mm ammunition were recovered from his possession. The other youth who was driving the motorcycle was also chased by the other Gypsy team. After a brief chase, the motorcycle fell in a ditch of Khurai Puthiba Leikai about 500 meters from Khurai Lal Awangbi. The youth ran into the local inhabitant area. The area was immediately cordoned by the police team and conducted search operation. The Gypsy team of Inspector N. Rajen Singh also joined the operation. The youth tried to hurl hand grenade behind an out house on the police team. Constable Md. Akhtar Huissen and Constable Samuel immediately noticed his evil design and simultaneously opened fire, killing him on the spot. He was identified as Nongmaithem Biseshwor @ Manimatum of Kumbi Mayai Leikei, a listed and hard core member of PLA and recovered the Chinese hand grenade.

In this encounter, S/Shri Md. Akhtar Huissen, Constable, & Th. Samuel Prou, Constable, displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of the high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4(i) of the rule governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 12th June 2002.


(BARUN MITRA)
DIRECTOR

No. 180—Pres/2003 - The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Manipur Police:-

NAME & RANK OF THE OFFICER

S/Shri

1. M Sudhir Kumar Meitei, SI
2. K. Rakesh Singh, Constable
3. M Athouba Singh, Rifleman

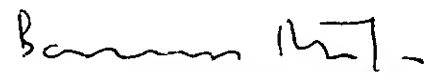
Statement of service for which the decoration has been awarded:

On 24/12/2001 at about 1030 hrs a reliable information was received from a special source that some underground elements suspected to be members of Kanglei Yowol Kanna Lup (KYKL) armed with sophisticated weapons were loitering in a very remote hilly areas in and around the villages Mayai Keithel, Ningel and Irong Thangkhul with intent to lay ambush on security convey at any opportune moment etc. A combined force of Commando team of Imphal west district and Thoubal district was organised under the overall command of Sh. K. Jayanta Singh, Addl.SP Impahl west and rushed to this area. At about 1230 hrs when the Commandos were conducting search operation in the hilly region of Iron Tangkhul village, a group of armed extremists fired upon the Commandos from different directions. Since the UG elements who were having sophisticated weapons were firing from different directions, by taking safe position in the higher formation of the hilly region, the Commandos having a very difficult situation divided themselves in two groups and charged against the extremists in two different directions. One group comprising of S/Shri K Jayanta Singh Addl.SP , M Sudhir Kumar, SI , SI Krishsanatombi, SI Kishore Chand and some other police personnel had a fierce encounter with a group of armed militants near a rivulet of Irong Tangkhul village known as Mailkhal Turel whereas the other group comprising of S/Sh. Devendra, SI Oken, SI Santosh, S ISanjoy, SI Rantakumar, SI Rajukhan, ASI Md. Ziauddin and their parties faced another group of extremists in

a small hillock known as Nungjentabi hill. In the encounter near Maikhal turel the armed extremists had advantageous position, taking position in the higher formation behind thick pile up rocks, as such the Commandos which were lesser number in strength had a tough position to retaliate. However, the Commandos SI M Sudhirkumar Meitei, Constable Koijan Rakesh Singh and Rfn M Athouba Singh who were well experienced in C.I. Ops swiftly moved towards the extremists, without caring for their lives and managed to close in the area where the extremists were taking position amidst heavy exchange of firing. These commandos moved forward by firing and busted out the pile up rocks behind which the extremists were taking position and in the ensuing encounter one armed extremist was killed and other managed to escape under the cover of the thick jungle towards Maikhal Rivulet. The dead extremist was later on identified as Moirangthem Priyokumar Singh s/o M Ibouchouba Singh of Heirok Thokelion Leikaj, a hard core activist of the proscribed organization Kanglei Yawol Kanna Lup (KYKL). i) one AK 56 Rifle with one magazine loaded with 15 live rounds, ii) one badge marked as KYKL, iii) one receipt book of the organization, iv) two booklets & v) three demand letters etc were recovered from the killed extremist.

In this encounter, S/Shri M. Sudhir Kumar Meitei, SI, K. Rakesh Singh, Constable & M. Athouba Singh, Rfn displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of the high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4(j) of the rule governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 24th December , 2001.


(BARUN MITRA)
DIRECTOR

No. 181–Pres/2003 - The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officer of Meghalaya Police:-

NAME & RANK OF THE OFFICER

Shri M. Kharkrang, MPS
Dy.S.P., Shillong


Statement of service for which the decoration has been awarded:

A source handled by Shri M.Kharkrang, MPS, Dy.SP (Re-Orgn.) informed him on 16.02.02 evening that a group of senior leaders of HNLC, a banned militant outfit, were leaving for Bangladesh that night for bringing a consignment of arms. According to the source, the leaders were to make the trip via Dawki (Meghalaya on Indo-Bangladesh border). During this visit, these militants were also scheduled to meet other top-ranking leaders based in that country and formulate plans for further subversive activities in Meghalaya. Shri M.Kharkrang, Dy. SP at a very short notice, organized a police party consisting of himself, one SI, one ASI and nine constables and immediately left for Dawki. The party reached Dawki at 1900 hrs and laid a "NAKA" there. The officer, along with his party, waited throughout the night for the ultras to arrive. When no one turned up till 0600 hrs of 17.02.02, Sh.M.Kharkrang decided to take a proactive approach of intercepting them on the way in case militants were really going to Bangladesh as per intelligence report. He took the route via Laitlyngkot-Smit for his return to Shillong which was occasionally used by the ultras though it was a longer route and avoided the Highway. Significantly, the party was totally exhausted after a grueling 11 hrs of night vigil and continuous driving since previous evening. Near Smit village, at 0730 hrs the officer who was himself driving the lead vehicle of the party's two Maruti Gypsy's noticed a local taxi coming from opposite side whose occupants looked suspicious. He signaled it to stop, but the taxi disregarded the signal and sped away. The officer, and his party immediately reversed their vehicles, chased the taxi and overtook it. On being overtaken, the ultras, who were total six, abandoned the taxi and started running away on foot while firing at the police party at the same time. Shri M.Kharkrang ordered his party to split up and chase the ultras, who were trying to elude the small police party by running in different directions. The officer himself chased one of the ultras, who ran into

a cluster of houses nearby. As Sh.M.Kharkrang closed in on the ultra, the latter took cover behind one of the houses and fired four shots at Sh.Kharkrang from a very close range. Sh.Kharkrang, in total disregard to his own safety continued to fire back at the ultra with his service pistol and managed to injure him. The exchange of fire between the militant and the officer continued till one shot hit the ultra, which incapacitated him. The ultra, who later succumbed to his injuries, was identified as Donbok Jyrwa alias Bush, a senior hardcore leader of the HNLC. A 9 mm pistol with live ammunition as well as a hand grenade was recovered from his possession. The whole operation resulted in the killing of three senior HNLC armed cadres which include the militant who had a close encounter with the officer. Three 9 mm pistols with live ammunition and a hand grenade were recovered. One HNLC cadre was apprehended alive.

In this encounter, Shri M. Kharkrang, Dy.S.P, displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of the high order.

This award is made for gallantry under Rule 4(i) of the rule governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 17th February 2002.


(BARUN MITRA)
DIRECTOR

No. 182–Pres/2003 - The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officer of Meghalaya Police:-

NAME & RANK OF THE OFFICER

Smt. C.A. Lyngwa,
Dy.S.P., (City), Shillong

Statement of service for which the decoration has been awarded:

An information was received on 03.01.02 evening that some top leaders of banned militant outfit Hynniewtrep National Liberation Council (HNLC) would be holding a meeting at a house in Umsning village under Ri-Bhoi district (Meghalaya) on the morning of 04.01.02 for planning an ambush against security forces. On receipt of this information, Smt C.A.Lyngwa, MPS, Dy.Suptd of Police (City), Shillong along with 5 (five) of her personal gunmen went to Umsning and marked the suspected house on the same evening with a view to launch an operation to apprehend the militants. Next day, the same team left Shillong at 5 o'clock in the morning in two civilian vehicles. Since approach to the house was possible from two different routes, the team was divided into two parties of three personnel in each vehicle. While one team comprising Smt. C.A.Lyngwa and two gunmen proceeded from one route, the other team with 3 (three) gunmen moved from other direction. At 8.30 a.m., an auto-rickshaw came towards the house from the side where Smt C.A.Lyngwa and her party had taken position. As the auto-rickshaw was approaching, Smt C.A. Lyngwa recognized one of his occupants, namely Miktor Lapang, a top hard core HNLC Cadre who was also Area Commander of the outfit in Ri-Bhoi District. It was well known that Miktor Lapang was always heavily armed whenever he moved. He was sitting in the back seat of the autorickshaw with another person, while there were two persons in the front seat. When the auto-rickshaw stopped in front of the house where militants were supposed to meet, Smt C.A.Lyngwa along with her gunmen immediately approached the auto rickshaw. While Smt Lyngwa tried to block the

right side swiftly where Miktor Lapang was sitting, one gunman rushed towards left side of the auto. One gunman was kept behind as back up. Realising that they were being blocked, Miktor Lapang and the other occupants jumped out of the auto rickshaw. Smt Lyngwa ran after Miktor Lapang to apprehend him. Sensing that he may be caught, Lapang fired three rounds from his Revolver at her from a very close range and tried to escape into the compound of the house. Smt Lyngwa, in complete disregard to her own safety, fired back and shot him in the thigh. He stumbled but continued running towards the back of the house while firing upon her with his weapon. In spite of this, Smt. Lyngwa did not hesitate and continued to pursue the militant while at the same time firing on him. She hit him with a couple more shots and this time he fell on the ground. Meanwhile, the other two cadres namely (1) Donlang Khongpdah and (2) Pyrkhatlandg Lymba who were also trying to escape were nabbed by C/1760 A.B.Nair and C/111 S.Chetri. In the exchange of fire, Donlang Khongpdah was shot in the hand. One AK-47 Assault rifle with two loaded Magazines were recovered from the possession of Miktor Lapang along with the Revolver which he used for shooting at Smt.C.A.Lyngwa. Smti C.A.Lyngwa, MPS, Deputy Superintendent of Police (City), Shillong displayed exemplary courage, strong determination and valour in apprehending the hard core HNLC Commander, Miktor Lapang along with two of his associates in the face of extreme risk to her own life. Exhibiting remarkable presence of mind, as well as foresight and meticulous planning, she succeeded in apprehending the armed extremists alive.

In this encounter, Smt.C.A. Lyngwa, Dy.S.P. displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of the high order.

This award is made for gallantry under Rule 4(i) of the rule governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 4th January 2002.



(BARUN MITRA)
DIRECTOR

No. 183—Pres/2003 - The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Punjab Police:-

NAME & RANK OF THE OFFICER

S/Shri

1. Snehdeep Sharma, Dy.S.P
2. Pupinder Kumar, Constable.

Statement of service for which the decoration has been awarded:

On receipt of actionable inputs from the Intelligence Bureau a case was registered and Shri Snehdeep, Dy SP was directed to apprehend ISI linked trans-border operators alongwith a consignment of narcotics, fake currency etc. Shri Snehdeep reacted immediately and on reaching the spot with his gunmen, challenged the criminals exchanging the consignment. One desperate anti-national element, Sukhbir opened fire with a pistol and began running towards a car parked at some distance. Shri Snehdeep and his PSO Const. Pupinder Kumar pursued the criminal on the open road under lethal fire and without any cover. Shri Snehdeep returned fire cautiously preventing injury to passersby. Meanwhile, Kashmir Singh, the criminal seated in the car also started firing and attempted to whisk away Sukhbir. Snehdeep and his PSO grappled with Sukhbir and managed to physically overpower him. In doing so, Const. Pupinder Kumar suffered a grazed bullet wound. Leaving Const. Pupinder to guard Sukhbir, Shri Snehdeep now attempted to arrest Kashmir Singh, who was incessantly firing at him. However, inspite of 02 bullets hitting his car Kashmir Singh managed to flee. During this encounter Sukhbir fired 9 rounds, while Kashmir Singh, fired 15 rounds at Shri Snehdeep and Const. Pupinder Kumar. Shri Snehdeep in turn fired 5 rounds from his service pistol. One pistol .32 bore with 9 empty cases, 15 empty cases of .22 pistol, 2 kg of heroin while crystalline, Rs. 20,000/- counterfeit Indian currency notes, one car grey Indica and Rs. 40,000/- Indian currency notes were recovered.

In this encounter, S/Shri Snehdeep Sharma, Dy.S.P., & Pupinder Kumar Constable, displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of the high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4(i) of the rule governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 18th March, 2003.


(BARUN MITRA)
DIRECTOR

No. 184—Pres/2003 - The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Punjab Police:-

NAME & RANK OF THE OFFICER

S/Shri

1. H.S. Sidhu, IPS, SSP,
2. Kuldip Singh, ASI, No. 100/KHN
3. Amarjit Singh, C-II, No.263/KHN
4. Shamsher Singh, C-II, No. 1615/Jull

Statement of service for which the decoration has been awarded:

Shri H.S. Sidhu alongwith Military Intelligence had undertaken an extensive operation against suspected terrorists elements linked with Pak ISI. After registration of the case, he prepared the operational plan and personally deployed his men at the operation site. Having positioned his men, Shri Harpreet challenged two suspected ISI operators thought to be holding the expected arms consignment and he alongwith his PSOs ASI Kuldip Singh and C-II Amarjit Singh attempted to arrest them. One of them fled and managed to sit in a car. Shri Harpreet alongwith his PSOs, charged and surrounded the car. In order to overpower the suspected terrorist, Harpreet and C-II Amarjit Singh entered the car from one side while ASI Kuldip Singh covered from the driver's side. ASI Kuldip Singh's hand was crushed in the car door while he attempted a neck-hold on the suspected terrorist. Meanwhile Ct. Shamsher Singh of Jalandhar Police in civil clothers also attempted to overpower the accused. Shri Shamsher Singh got injured by the bullets fired by the accused. In spite of injury and grave risk C-II Shamsher Singh alongwith police party again pounced upon the armed criminal. Meanwhile, the accused fired at Shri Harpreet and C-II Amarjit Singh from close range resulting in injury to C-II Amarjit Singh. Shri Harpreet pulled his injured PSO out of a grave situation and again pounced upon the armed anti-national element. In whole process, Shri Harpreet though armed with service pistol refrained from firing, in order to prevent endangering ASI Kuldip Singh, on other side. Being surrounded and unnerved by the actions of Harpreet and his PSOs the accused, in sheer desperation, shot himself. He was later identified as Sandeep Johar @ Deepak @ Deepak Singh @ Bhuri r/o Vikar Puri New

Delhi, a dreaded gangster and a anti-national element with having clear links with ISI operators and an extensive record of killings, kidnapping for ransom and other heinous crime in Delhi, UP and Haryana. The entire operation was conducted jointly with Military intelligence officers who witnessed the encounter. Twenty .30 bore Chinese made automatic pistols, hundred .30 bore live catridges, one American made colt .32 bore automatic pistol with 2 spent catridges, 30 rounds live of 32 bore pistol, one .32 base revolver with 4 live rounds and one yencer was recovered after the action.

In this encounter, S/Shri H.S Sidhu, IPS, SSP, Kuldip Singh, ASI, Amarjit Singh, C-II, & Shamsheer Singh, C-II displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of the high order.

These awards is made for gallantry under Rule 4(i) of the rule governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 8th March, 2003.



(BARUN MITRA)
DIRECTOR

No. 185–Pres/2003 - The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Tamilnadu Police:-

NAME & RANK OF THE OFFICER

S/Shri

1. Ashutosh Shukla, IPS, DIG, Coimbatore
2. Md. Shakeel Akthar, IPS, DCP, Madurai City
3. M. Ashok Kumar, SP, STF, Erode
4. R. Kalimuthu, ACP, Madurai City
5. S. Sekar, Dy.S.P.

Statement of service for which the decoration has been awarded:

Shri Ashutosh Shukla, IPS, DIG, Coimbatore Range, assisted by Shri Shakeel Akthar, DCP, Madurai City, Shri M Ashok Kumar, SP, Shri Kalimuthu, ACP and Shri S. Sekar, Dy.S.P were specifically deputed by the Director General of Police, TamilNadu to trace the absconding dreaded Terrorist Imam Ali who had escaped from Police Custody on 07/03/2002. Imam Ali s/o Halith belonging to Melu, Madurai District a Muslim Fundamentalist was accused in a number of bomb attack cases including the bomb blast in the RSS office building at Chennai on 08.08.1993, that killed 11 persons and injured 7. Imam Ali had acquired expertise in Manufacturing bombs including country made revolvers and pistols. He was arrested on 29.08.1995. While the trial of blast in RSS office at Cheetput was going on, Imam Ali and his associate escaped from Police custody at Thirumangalam. The associate of Imam Ali hurled country bombs and fired country made weapons at the escort party. Imam Ali snatched away an AK-47 from the escort Constable and opened fire creating a scare and causing grievous injuries to few Constables. After the escape, Imam Ali had rechristened his group as "AL Mujahideen" whose task was to rally to poor Muslim youth around him. Imam Ali and his associate were conspired to get more arms, ammunition and explosive to execute their plans of murdering VVIPs, Police officers and blast

Hindu Temples and vital installations and thereby promoting enmity between various religious groups. The location of Imam Ali and his associates, who were also accused in case of dacoity and robbery in which explosives were used, was fixed on 28.9.2002 at MSR Nagar, Bangalore. Preliminary discussions were held with Karnataka Police. Shri Shukla, DIG & Shri Akhtar, DCP briefed the STF party headed by Shri Ashok Kumar and Karnataka Police headed by DCP Shri Gopal B Hosur. The team reached the spot on 29.09.2002 at 2.30 hrs. The DCP Shri Gopal B Hosur of Karnataka Police cordoned off the periphery so that public do not panic and come near the area of operation. The door of the absconding accused was knocked by the DIG Shri Ashutosh Shukla and DCP Shri Shakeel Akhtar and militants were asked to surrender. Despite repeated appeals the inmates never opened the door and they could be heard prowling from one room to another. Meantime, some body had opened fire from the window facing the road from the front room of the hideout. SP Shri M. Ashok Kumar, DIG Shri Ashutosh Shukla, DCP Shri Md. Shakeel Akhtar, took cover beside the walls in the corridor of the house and Dy.S.P Shri Sekar and ACP Shri Kalimuthu took cover near the window abutting the main road. Then a shot came from the window pane in the corridor near the entrance door. Since the DIG & party was in lying position, the glass splinters of the windowpane injured two SIs Vincent and Saravana Davendran and PC Aruldas. Two tear gas shells were fired through the window near the door and the window was covered with a wooden plank. Shri R. Kalimuthu, ACP & Shri S. Sekhar and party fired tear gas shells through the window facing the street and they were asked to return the fire cautiously in self defence. Since the inmates were not coming out, the door was broke open, DIG Shri Ashutosh Shukla, DCP Shri Md. Shakeel Akhtar, SP Ashok Kumar dived in and three SIs took cover near the door in a lying position. Constable Chelladurai switched on the search light simultaneously as planned. However, due to tear gas the visibility inside the room was very poor. Due to firing from inside room the right hand finger of SI Selvakkan David was blown off. Left with no other alternative, DIG Shri Shukla and party returned the volley of fire by way of self defence. Later after the cease fire the seriously injured Imam Ali, his associates Seeniappa, Mohd. Ibrahim, Manga Basheer & Yasmin, wife of Seeniapa were shifted to the hospital where they were declared dead. 11 policemen sustained injuries, two of them grievously in this gallant action. 1 AK-47, which had been snatched away by Imam Ali during his escape, three country-made fire arms and other explosive devices were recovered.

In this encounter, S/Shri Ashutosh Shukla, IPS, DIG, Md. Shakeel Akhtar, IPS, DCP, M. Ashok Kumar, SP, STF, R. Kalimuthu, ACP, S. Sekar, Dy.S.P. displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of the high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4(i) of the rule governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 29th September, 2002.


(BARUN MITRA)
DIRECTOR

No. 186—Pres/2003- The President is pleased to award the President's Police Medal for Gallantry to the under mentioned officer of Tripura Police:-

NAME & RANK OF THE OFFICER

Shri Subal Debbarma, (Posthumous)
Constable.

Statement of service for which the decoration has been awarded:

Constable Subal Debbarma was posted to Maitholong SPO camp on 19.12.02 along with other DAR South personnel. On 04.04.03 at 0400 hrs Constable Subal Debbarma took over the charge of sentry duty along with other three SPOs at Maitholong SPO Camp as a part of rotational change of sentry duty. He relieved C/2870 Suka Pada Jamatia from sentry duty of the said camp. As soon as he took over the sentry duty charge around 0400 hours a group of armed extremists numbering about 30/40 attacked the SPO Camp all of a sudden from all sides of the camp. The extremists group opened fire from their sophisticated weapons like AK-47, 7.62 SLR, R.P.G. etc. Hearing the sound of fire Constable subal Debbarma opened counter fire from his 7.62 SLR. Constable Subal Debbarma was so confident about his courage in fighting extremists that he came crawling out from his sentry post and reached at a suitable location near by to reply the fire of extremists. He did this only to save the lives as well as arms and ammunitions of police personnel and SPOs posted at the camp. While firing constable Subal Debbarma unfortunately sustained grievous injuries on the backside of his head and body and succumbed to his injuries. . He was successful in saving the lives of other police personnel and SPO's by sacrificing his life.

In this encounter, (Late) Shri Subal Debbarma, Constable, displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of the high order.

This award is made for gallantry under Rule 4(i) of the rule governing the award of President's Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 4th April 2003.


(BARUN MITRA)
DIRECTOR

No. 187—Pres/2003 - The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officer of Uttar Pradesh Police:-

NAME & RANK OF THE OFFICER

Shri Mukul Goel, IPS
SSP, Meerut.

Statement of service for which the decoration has been awarded:

Shri Rajiv Singh, ACP, Special Cell, Lodhi Colony, New Delhi of Delhi Police came to Meerut and met I.G., Meerut Zone at about 1830 hrs 02/08/2002 and told him that he had come to him in connection with the telephonic conversation that Shri K.K. Paul, Special C.P., Intelligence, Delhi had had with him. He said that they had authentic information received from reliable sources that Pushpendra @Pushpi Jat S/o Diwan Singh R/o Nagla Kumha P.S. Kumher District Bhartpur, Rajasthan, a notorious wanted criminal carrying a reward on him, whose name spells terror in several States including Delhi and Uttar Pradesh, has been moving around in the Vedvyaspuri Industrial area, Partapur and Prabhat Nagar in Meerut and is using a blue Accent Car No. UP 15 K 7045 at present. On receiving this information, Dr. Vikram Singh, IG, Meerut Zone, Meerut called, Mukul Goel, SSP, Meerut and after explaining the situation directed him to lead this operation. After a discussion with Sh. Rajvir Singh, ACP Special Cell, Delhi Sh. Goel constituted the teams. All the teams were instructed that they should move around in the area allotted to them looking around for the above-mentioned Accent Car. If this car was spotted by anyone, he was to inform Sh. Goel and the rest of the teams immediately and follow the car taking care not to get noticed. Under any circumstances, the car was not to be stopped without orders. The teams were also cautioned that no one was to open fire without orders unless there was a threat to one's own life. The Accent car No. UP 15 K 7045 was spotted and accordingly all the team members were alerted. A person who was later identified

as Pushpendra @ Pushpi Jat S/o Diwan Singh R/o Kumha came down from the car after parking the car in Chat Bazar. On this, Shri Goel alerted all the teams which has reached chat Bazar and directed them to take their respective positions and act accordingly to the instructions given earlier. The Reserve party covered the said Accent Car while the stopper party divided into two and stationed itself on both the sides of the Chaat Bazar. Sh. Goel along with Rajiv Singh, ACP Spl. Cell, Delhi and rest of the team moved ahead and challenged Pushpendra @Pushpi in a loud voice asking him to surrender before the police which had surrounded him. On this, Pushpendra took out a revolver from his pant and fired at Sh. Goel with the intention of killing him. Shri Goel had a narrow escape. At that time, several people including children, women and old people were present in the Chaat Bazar. Keeping in mind the safety of the people present there and in order to prevent any sort of confusion among the police personnel, Sh. Goel led the team from the front and tried to arrest Pushpendra at grave personal risk. But Pushpendra continued firing on the police party with the intention of killing the police personnel. Upon this Sh. Goel moved ahead and fired in self defence on the firing Pushpendra. Sh. Rajiv Singh, ACP and the other police personnel also displayed extreme courage & gave a support through controlled fire. At about 2015 hrs the criminal fell to bullets. A .455 Bore English Revolver Factory made No. 180475 of Webley Co. was found lying on the ground near his right hand containing 5 empty cartridges and 01 live cartridge inside.

In this encounter, Shri Mukul Goel, IPS, SSP displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of the high order.

This award is made for gallantry under Rule 4(i) of the rule governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 2nd August 2002.



(BARUN MITRA)
DIRECTOR

No. 188 –Pres/2003- The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Uttar Pradesh Police:-

NAME & RANK OF THE OFFICER

S/Shri

1. Shailendra Singh, Constable (Posthumous)
2. Tara Dutt Weila, Inspector, SHO

Statement of service for which the decoration has been awarded:

On 26.09.2001 after receipt of an information from PS Khurja Dehat regarding kidnapping of Shri Pannalal Sharma from his brick klin by some unknown criminals. Shri Rajeev Krishna, SSP along with concern officers started checking of all connected roads. Meanwhile SO, Khurja Dehat informed on wireless that a suspected white Maruti car was seen going from Chola to Walipura road by some passerby. At around 1445 SHO, Sikandrabad spotted and tried to stop an oncoming White Maruti car but the suspects did not stop the car and started firing on the police party. SHO and Additional SP, DC Mishra and others coming from Baral side started persuing the fleeing car. The suspects turned their car towards the kachi patri and under pressure from the police party left the person they kidnapped in the car and ran towards the cane field which was on the left side of the patri. After ascertaining from the kidnapped person, it was confirmed that they were same criminals who had kidnapped the klin owner. Shri Mishra, Addl. SP with available force cordoned the place and warned them to surrender. The criminals fired on the police party and tried to escape, but the police party did not allow them to escape. The criminal had taken shelter in a field which was about 120-125 bighas in area and the height of crop was around 10-12 ft and it was dense. The SSP arranged four tractors. The police party led by SSP, SO Khurja Dehat Sh. Indrapal Singh, SI D.P. Singh and SHO Sikandrabad Sh. T.D. Weila entered the field for combing. During the combing there was exchange of fire and

SHO Sikandrabad informed SSP that one of the criminals was killed. One constable was also injured. SHO, Sikandrabad also informed SSP that three desperadoes were sighted on the right side of the tractor who started firing on the police. One of the bullets hit Shri Shailendra Singh, Constable on his throat which injured him and he succumbed to his injuries and other members of the police had miraculous escape as the bullets were flying all over. SHO Sikandrabad Sh. T.D. Weila organised the police party and retaliated the firing. The firing of the Police Party killed one of the criminals. The rest escaped through the dense foliage. One country made .315 bore weapon was lying besides the killed. The Police party started the search for rest of the criminals. SSP Shri Rajeev Krishna, rushed towards the direction in which the third criminal was supposedly running. By that time visibility was very low and the criminal could see the police personnel on tractors with lights on. After 15 minutes, the criminals entered in a dense mangrove of cane. The police personnel including SSP alighted from the tractor and chased the criminal on foot to arrest him. However, the criminal fired on the Reader of SSP. SSP & his gunner fired on the criminal killing him on the spot. The killed kidnappers were identified as Dharam Pal @ Dharma Gurjar r/o Silarpur, Noida, Anil Kumar Gurjar r/o Girdharpur, PS Dadri, Ramvir Chauhan r/o Shival Khas, PS Jani, Meerut. 1 CMP 12 bore along with cartridges, 1 DBBL gun 315 bore with cartridges, 1 revolver 38 bore CM along with cartridges and 1 CMP 315 bore with cartridges were recovered from the killed persons.

In this encounter, (Late) S/Shri Shailendra Singh, Constable, & ~~Tase Dutt~~ ~~Wala Inspector~~ displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of the high order.

These awards is made for gallantry under Rule 4(i) of the rule governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 26th September 2001.


(BARUN MITRA)
DIRECTOR

No. 189-Pres/2003- The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Uttar Pradesh Police:-

NAME & RANK OF THE OFFICER

S/Shri

1. Gurdarshan Singh, IPS, DIG
2. Alok Singh, IPS, SP
3. Sheshmani Tripathi, Dy SP
4. Jai Shankar Prasad, SI

Statement of service for which the decoration has been awarded:

On 21.4.2002 Shri Gurdarshan Singh, DIG Vindhyachal Range received an information that 8 to 10 dreaded Naxalites of banned Maoist Communist Centre (MCC) are likely to assemble in a house in village Karahiya PS. Dhudhi in order to plan and commit some heinous offence. Shri Gurdarshan Singh immediately directed Shri Alok Singh SP Sonebhadra to rush to the village along with available Police force. Shri Alok Singh further instructed SO's and SHOs of nearby Police Stations to reach at Out Post Miyorpur with police force. On reaching the Out Post Miyorpur, the Police parties were divided into two, one led by the SP himself. The parties after having been properly briefed left for the village in vehicles. When they reached near to the village the parties left their vehicle and spread out as per planning and advanced swiftly through the forest towards the targeted house from two different directions. The Naxalites were well camouflaged and strategically positioned. Observing the Police party, a Naxalites tried to escape by firing on the police party. A bullet fired by the Naxalites hit the bulletproof jacket of Shri Alok Singh. Undeterred, Shri Alok Singh directed the party to chase the Naxalites. In the mean time the remaining Naxalites took position in the house and opened indiscriminate firing on the police party. Immediately Shri Alok Singh cordoned off the house. Mean while Shri Gurdarshan Singh, DIG reached the spot

with additional police force and took stock of the situation. Shri Gurdarshan Singh chalked out a plan to flush out the Naxalites and divided the available force in three assault parties. The first party on the northern exist door side of the house was led by Shri Gurdarshan Singh, DIG himself, the second party by Shri Alok Singh, SP from the western side and the third party from eastern side was led by Shri Shesh Mani Tripathi, Dy SP. The parties advanced towards the targeted house. Once reached close to the house, Shri Gurdarshan Singh challenged the Naxalites to lay down their arms and surrender but the Naxalites were determined to fight to their last breath and opened indiscriminate firing. Undeterred by the hail of bullets, Shri Gurdarshan Singh directed SI Jai Shanker Prasad to climb upon the tiled roof from behind and fire smoke shells in the room where the Naxalites advantageously positioned. Observing this movement, the Naxalites fired towards the roof as a result Shri Jaishanker Prasad received injuries by the splinters of the tiles. Without caring for his injuries and safety of his own life, he fired smoke shells in the house. Consequently, the Naxalites intensified the firing on the police party led by the DIG. The fire was retaliated. In the exchange of fire Shri Gurdarshan Singh DIG was hit by bullets on his bulletproof jacket. Undeterred and without caring for his life Shri Gurdarshan Singh continued firing and kept the moral of his team high. During the encounter, three Naxalites were killed and one badly injured. The injured Naxalites succumbed to his injuries later on. The killed Naxalites were identified as (1) Rajkumar Gond @ Rajesh @ Shatrughan, R/O Chapki, PS Bhab hini, Distt Sonebhadra (2) Raju @ Raja R/O Bihar State (3) Basant Lal @ Shatrunash R/O Chapki, PS Bhabhni, Distt. Sonebhadra (4) Suresh Gond @ Pawan R/O Bhulai Pateri Tola, PS Dudhi, Distt Sonebhadra. The following arms and ammunition were also recovered from the site of encounter :-

.303 Police Rifle : 01

DBBL Gun(Factory made) 01

SBBL Gun (Factory made) 02

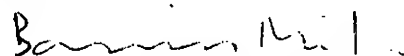
Country made sten guns : 02

Live & spent cartridges 303" Bore and 12 bore.

Provocative/Offensive literature of banned Naxalites out fit MCC

In this encounter, S/Shri Gurdarshan Singh, IPS, DIG, Alok Singh, IPS, SP, Sheshmani Tripathi, Dy.S.P & Jaishankar Prasad, SI, displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of the high order.

These awards is made for gallantry under Rule 4(i) of the rule governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 21st April 2002.


(BARUN MITRA)
DIRECTOR

No. 190—Pres/2003 - The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Uttar Pradesh Police:-

NAME & RANK OF THE OFFICER

S/Shri

1. Rajeev Kumar, Constable
2. Kashmir Singh, Constable

Statement of service for which the decoration has been awarded:

Information was received about the gang of Mamchand who kidnapped Satpal Gandhi a cloth merchant for ransom in the Jungle of Vill. Miragpur, Vill. Doodhali, Vill. Sadharanpur Dugchhari. The said information was passed on to the higher officers. Addl S.P was camping at Deoband to arrest the gang and have Shri Satpal Gandhi released safely. On 17.09.1998 SHO Hari Kishan Bashist along with Constable Rajeev Kumar, Constable Kashmir Singh, Constable Devendra Kumar with driver Rajbir Singh was busy to search out the kidnapped person and the gang. The informer gave the information at O.P Manglour Road to the effect that the kidnapped and the gang are present in the jungle of Miragpur and are trying for ransom and the gang is expected to stay there for the entire day. SHO along with informer came to the Sugar Mill Guest house to inform Addl S.P and discussed. Under the direction of Addl S.P along with the police force and one Platoon of PAC was called from P.S Deoband and was briefed at guest house about the members of the gang and its Fire Power and was directed to save the life of kidnapped person. The force was divided into three parties. Incharge of the first party was Addl S.P, of second party was Raghvendra Singh S.O Nagal and of third party was SI Sri Prati Pal Singh Rautela. The first party along with informer proceeded towards gang where the kidnapped Satpal Gandhi was being kept via Vill. Dugchandi, second party with guide Devendra towards the place where from the kidnapped person was likely to be taken. The third party from Vill. Saharanpur

side covered the sugar Cane field as indicated by Constable Bijendra Singh where the gang was expected to take shelter and could escape from there. S.O Mangalaur and Jhanbreda were informed through the R.T set about the gang and to detail the force as stopper. First and third party left their vehicles in village Dugchandi and second party left vehicle in village Miragpur and fixed all the three parties at about 13.00 hrs in the sugar canes indicated by informer and the guide. The gang of Mamchand came with the kidnapped person to take water at the hand pump installed in the field of Saproora at about 13.30. The informer pointed out the culprits and said that the person wearing under wear and banyan is kidnapped Satpal Gandhi. On being challenged by Addl S.P, the culprits started firing on the police personnel. Addl S.P ordered to proceed ahead and get the kidnapped person free and he would gave covering fire. As soon as Addl S.P, Mahendra Singh Negi, S.O, and S.I Sunil Pachuri started firing, Constable Rajeev Kumar and Constable Kashmir Singh attacked the culprits and took the kidnapped person from their clutches, got him lie down and covered him from the firing of culprits. Culprits fired several rounds on the police party as well as on the Addl S.P but it was in effective due to bulletproof jackets. All the culprits firing on police party ran away in the opposite direction but they were surrounded by police. Second and third police parties and S.O Manglaur Sri Vinod Kumar, SI Sri Sanjay Chauhan, Constable Neeraj Kumar, Constable Bijendra Kumar and Constable Udai Vir Tomar arrested 5 accused. Three culprits were found dead as a result of police firing. A CMP of 315 bore was recovered near the dead body of one culprit identified as Dinesh of Vill. Mankee lying south side of the hand pump. One CMP of 316 bore was recovered near the dead body of culprit lying on the north side of hand pump and the name Mamchand was inscribed on his left hand. One 12 bore CMP near the third culprit lying on Chak Road was found. The culprit was identified as Babloo, Vill Meghrajpur.

In this encounter, S/Shri Rajeev Kumar, Constable & Kashmir Singh, Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of the high order.

These awards is made for gallantry under Rule 4(i) of the rule governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 17th September 1998.


(BARUN MITRA)
DIRECTOR

No. 191-Pres/2003 - The President is pleased to award the President's Police Medal for Gallantry to the under mentioned officer of Uttar Pradesh Police:-

NAME & RANK OF THE OFFICER

Shri Vinod Kumar Mishra, (Posthumous)
Sub-Inspector.

Statement of service for which the decoration has been awarded:

On 13.3.1997 Late Shri Vinod Kumar Mishra was on patrolling duty along with his party. During patrolling they spotted three persons coming on a without numbered Yamaha Motor Cycle. SI Vinod Kumar Mishra gave a signal to stop them for checking purpose. The motorcyclist did not stop. SI Sh Mishra and other police personnel chased them on Motor Cycles/ Cycles. The criminals were asked to stop. Instead of paying heed to the warning, they fired on the Police Party. The Police party retaliated the fire in self-defence. During the exchange of firing, one of the bullet fired by the criminals hit Shri Mishra. In spite of the injury caused to Shri Mishra, he fired on the criminal from this pistol and killed one of the criminals. During the encounter one more criminal was also killed by the police firing. The remaining third criminal, however managed to escape. Shri Mishra subsequently succumbed to his injury. The killed criminals were identified as Hilal, S/O Hafiz, R/o Masarabad, Rampur and Nanha Sadhu @ Yasin S/o Ali Hussain R/O Bageecha Emna, Rampur, notorious criminals, carrying a reward of Rs 10,000/ and Rs 2,500/- on their arrests. Two country made pistols and large number of cartridges were recovered from them.

In this encounter,(Late) Shri Vinod Kumar Mishra, SI displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of the high order.

These awards is made for gallantry under Rule 4(i) of the rule governing the award of President's Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 13th March, 1997.


(BARUN MITRA)
DIRECTOR

No. 192-Pres/2003 - The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Uttar Pradesh Police:-

NAME & RANK OF THE OFFICER

S/Shri


1. Rajesh Kumar Gupta, Constable (Posthumous:)
2. Santosh Kumar, Constable

Statement of service for which the decoration has been awarded:

On 20.12.1999, Shri Shiv Kumar Tyagi, SI/CP received information about the presence of notorious criminal Chhatrapal alongwith his associates during combing operation in Sidhbaba, Jagatpur and Hempur Jungle. Reacting quickly on this information, the combing party was divided in to two groups, one was headed by Shri Shiv Kumar Tyagi, SI and other by Shri Sheodan Singh, PC of 47 BN PAC. Having sighted the police party, criminals started firing on the police party. The police party challenged the culprits and opened fire in self defence. During exchange of fire, Shri Rajesh Kumar Gupta, Constable and Santosh Kumar, Constable exhibited exemplary courage and by putting their own lives to great danger, succeeded in liquidating two of the criminals. One of them was identified as dreaded Chhatrapal and the other was unidentified criminal. Both constables sustained serious gun shot injuries. Later Rajesh Kumar Gupta, Constable died during treatment. One Factory made looted SBBL Gun with live cartridge in large scale, One Country made Rifle .315 Bore, Live and empty cartridges in large scale and Rs. 31, 800/- cash were recovered from the spot.

In this encounter, (Late) Shri Rajesh Kumar Gupta, Constable & Shri Santosh Kumar, Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of the high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4(i) of the rule governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 20th December, 1999.


(BARUN MITRA)
DIRECTOR

No. 193-Pres/2003 - The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officer of West Bengal Police:-

NAME & RANK OF THE OFFICER

Shri Bapi Sen, (Posthumous)
Sergeant, Kolkata Police.

Statement of service for which the decoration has been awarded:

On the night of 31.12.2002/01.01.2003 Sergeant Bapi Sen of Kolkata Police alongwith his friends had gone around in the city to observe New Year's eve like hundreds of other Kolkatans. At about 1.30 hours while Sergeant Bapi Sen and his friends were moving along Rafi Ahmed Kidwai Road in a Maruti Car, the Sergeant noticed a group of boisterous young men in a taxi chasing a lady and her male companion who were frantically speeding away on a motor bike. As an experienced Police Officer, Sergeant Sen became suspicious and he decided to chase the miscreants in the taxi. These miscreants were gesticulating in obscene manner and hurling abuses to the lady on the motor cycle. The motor cycle abruptly stopped on N.C. Chhatterjee street near Hind Cinema as the drunk miscreants had pulled the lady on the motor cycle by her hair. The miscreants, five in number, rushed out of the taxi, encircled the two passengers on the motor cycle and further attempted to molest the lady. This act of blatant outrage infuriated Sergeant Bapi Sen who was so along quietly following the taxi. He immediately got down from the Maruti and in complete disregard of his life and personal safety pounced upon the miscreants bare handed to protect the honour of the helpless lady. While the Sergeant was bravely facing boisterous miscreants, the lady and her companion managed to flee safely. These miscreants were five in number and they easily overpowered the sergeant. They mercilessly assaulted Sergeant Bapi Sen with fist and blows and left his injured unconscious body on the road. None came forward to help Bapi Sen and the body of the half dead police officer lay on the road in a pool of blood. Subsequently, on the basis of a complaint of one Shri Ashok Sen Gupta, Bowbazar PS a case was recorded. Sergeant Bapi Sen struggled hard between life and death but he succumbed to the injuries on 6.1.2003. During investigation the taxi was traced and the five miscreants of the said taxi were identified as Constable of Reserve Force, Kolkata Police and they were arrested. Shri Bapi Sen made sacrifice of his life on call of duty to protect the honour and prestige of a young lady.

(Late) Shri Bapi Sen, Sergeant displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of the high order.

This award is made for gallantry under Rule 4(i) of the rule governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 1st January, 2003.


(BARUN MITRA)
DIRECTOR

No. 194—Pres/2003 - The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officer of West Bengal Police:-

NAME & RANK OF THE OFFICER

Shri Umesh Chandra Das,
ASI

Statement of service for which the decoration has been awarded:

On 28.02.2002 morning in order to work out secret information a joint team of Police officers and force of Banarhat and Dhupguri P.Ss reached at river Diana under P.S. Banarhat, Dist., Jalpaiguri, West Bengal. There the entire Police officers and forces were divided into three groups. One of the group comprised of ASI Umesh Chandra Das, Constable Mahendra Chamling, Constable Anup Chhettri and Constable Shyam Thapa. Shri Das led this group and took position under the cover of big boulders at the middle point of the river bed of river Diana. At about 11.00 hrs. a group of 8/9 militants of Maoist group were seen coming down from Bhutan side along the river bed. Two of the militants were seen carrying sophisticated fire arms. When the militants came near the position taken by Shri Das and his team, they started firing from their fire arms aiming at the police party. Shri Das sustained bullet injury on his left fore arm. Shri Das and the police team retaliated the firing. In the firing of the Shri Das one of the attacking militant died on the spot who was later identified as Kumar Thapa @ Chhettri @ Bhotay @ Nakkata. The remaining militants started fleeing away. Shri Das after a hot chase, arrested one of the escaping militant namely Kumar Chhettri with one Chinese made rifle loaded with eight rounds of live 7.62 cartridges, one charger clip with eleven rounds of 7.62 ammunitions. One carbine machine gun loaded with three rounds of 9mm live cartridges, one magazine loaded with 28 rounds of 9m.m. live cartridges were also recovered from the dead militant.

In this encounter, Shri Umesh Chandra Das, ASI displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of the high order.

This award is made for gallantry under Rule 4(i) of the rule governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 28th February, 2002.


(BARUN MITRA)
DIRECTOR

No. 195-Pres/2003 - The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officer of West Bengal Police:-

NAME & RANK OF THE OFFICER

Shri Kailash Chandra Meena
Supdt. of Police.

Statement of service for which the decoration has been awarded:

On 6.6.2002 at 8.35 hrs, Shri Kailash Chandra Meena, IPS Supdt. of Police, Paschim Medinipur received a secret information that a group of armed CPI- ML (PW) activists had assembled in a dense forest near Metala village under Goaltore PS with a view to commit some nefarious action by killing some political leaders or Government officials working in the area and thus create panic among the local people. On receipt of this information, Shri Meena immediately chalked out a plan and with a large contingent of police force alongwith other senior officers of the district immediately proceeded towards Metala jungle. Around 11.45 hrs. on the same day the police party under the leadership of Shri Meena reached Metala jungle and then proceeded on foot to enter the dense forest to locate the place where the CPI-ML (PW) activist were assembled. One contingent of force under the leadership of Shri Meena encircled the place and started searching. On seeing the police party, the extremists all of a sudden started firing at random aiming at the police party. Shri Meena disclosed his identity and asked them to surrender but to no effect. Instantly, finding no other alternative to save their lives and Govt. properties and for nabbing the activists, the police party under the command of SP opened fire after administering due warning and caution. The other two contingents of force were alerted and they were also asked to encircle the forest from the other ends to prevent the escape of P.W. activists. Police firing had the desired effect and the extremists firing ceased after some time. After thorough search of the forest two activists were apprehended alongwith their baggages and one of the activists was found dead while other activists managed to escape through the jungle. The police party searched the jungle thoroughly. Later, the dead body was identified by the arrested two accused person as of one Subash Karmakar (25) s/o Panchanan of Bara Garrah, PS Sarenga, Dist. Bankura. A.315 rifle was also found by the side of the dead body. The arrested accused persons disclosed their names as (1) Debi Prosad Mahato s/o Kirti Mahato of Minaramdih and (2) Amal Ghorai s/o Sunil Ghorai of Tuplardi, PS Goaltore.

In this encounter, Shri Kailash Chandra Meena, Supdt. of Police displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of the high order.

This award is made for gallantry under Rule 4(i) of the rule governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 6th June, 2002.


(BARUN MITRA)
DIRECTOR

No. 196—Pres/2003 - The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Border Security Force:-

NAME & RANK OF THE OFFICER

S/Shri

1. Javed Ahmed Mir, Constable
2. Man Singh, Head Constable

Statement of service for which the decoration has been awarded:

On 1st May 2002, on a specific information of Special Operation Group (SOG) Pulwama regarding presence of some militants in village Sambur, District Pulwama (J&K). Shri S A Alvi, Commandant, 104 Bn BSF planned a special cordon and search operation. As per plan, cordon parties under command of four officers accompanied by SOG Pulwama by 0530 hrs, cordoned off the village from all the four directions. When the cordon was about to be completed, the militants in order to breach the cordon and escape fired on one of the cordon parties. Constable Ram Avtar, who had a narrow escape, retaliated the fire with his LMG and forced the militants to retreat. One of the search parties led by Sh. Surendra Singh, Assistant Commandant while searching the village recovered a Rocket Launcher from one of the houses. Another search party led by SI Gurmeet Chand while searching the old portion of an another house came under heavy fire from automatic weapons followed by grenade firing by the militants holed up in the house. The house was instantly placed under effective cordon. Shri S A Alvi Commandant and Shri JC Singla, 2IC positioned their parties in two adjacent houses and engaged the militants effectively by fire. The exchange of fire continued. After appreciating the situation two HE Rockets were fired on the target house which compelled militants to jump out of the house and take position behind the compound wall. Shri JC Singla, 2IC immediately re-grouped the troops even though the militants were continuing heavy firing. Some grenades were lobbed on this party which narrowly missed Constable Javed Ahmed Mir,

Constable Javed Ahmed Mir remained unnerved and without caring for his safety crawled towards the militants position. He fired on the militant and killed him on the spot. Another militant continued firing on the inner cordon party from behind the compound wall. Head Constable Man Singh of this party had a narrow escape. He then decided even at the risk of his life to silence the gun that was firing at him and his colleagues. After a short tactical move, Head Constable Man Singh leapt towards the militant through an opening in the compound wall and fired accurately and effectively killing the militant in a close quarter battle. Both the killed militants were later on identified as Showkar Ahmed Dar s/o Abdul Aziz Dar R/o Sambur (Pulwama) and Shahnawj Ahmed Khandeys/o Jalauddin Khandey R/o Ladu Pulwama both Pakistan Trained militants of Hizbul Mujhiddin outfit. One Rocket Launcher, two AK Rifles, One UBGL, One Chinese Pistol one wireless set and ammunition were recovered from the area after search.

In this encounter, S/Shri Javed Ahmed Mir, Constable & Man Singh, Head Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of the high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4(i) of the rule governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 1st May 2002.


(BARUN MITRA)
DIRECTOR

No. 197—Pres/2003 - The President is pleased to award the President's Police Medal for Gallantry to the under mentioned officer of Border Security Force:-

NAME & RANK OF THE OFFICER

Shri V. Srinivas Murty,
Assistant Commandant

Statement of service for which the decoration has been awarded:

On 28.1.2002, based on specific information about presence of militants in village Pandiya Mohalla (Srinagar), troops of 18 Bn assisted by QRTs of other Bns & AC (G) Zakura and SOG cordoned one of the houses in the village. On directions, civilians present in the house came out but militants hiding inside, opened indiscriminate fire and lobbed/fired grenades, which was retaliated. A party led by AC (T) V.S. Murthy was tasked to storm the house and flush out entrenched militants. This party managed to reach garage of target house, but were spotted by militants, who resumed heavy firing and lobbing grenades, inflicting bullet injury to Ct Ram Kumar and splinter injury to three others. A Bunker vehicle was summoned for immediate evacuation of injured personnel causing a temporary lull. Militants then fired to prevent evacuation of injured, by heavy fire on the bunker vehicle. Undeterred, AC (T) V.S. Murty re-organized his party and provided covering fire to pin down the militants and facilitated evacuation. In the mean time, HC T.B. Chhetry alongwith Ct. Bala Krishnan, who were in the inner cordon relocated themselves tactically to engage the militants and attracted heavy fire in process. They held on to their position throughout the night denying militants any opportunity to escape. On 29.1.2002 morning, militants made another bid to escape in an adjacent building and came face to face to HC T.B. Chhetry who injured the militants. This forced militants to retreat and prevented them from escaping. However, HC T.B. Chhetry, while displaying exemplary courage, unmindful of his personal safety, was shot in chest by the

militants and died on the spot. Having re-entered the building, militants resumed firing and the stand off continued. At about 0930 hrs, party led by AC (T) V.S. Murty was assigned the task of storming target house. AC (T) Murty took the bunker vehicle close to the target house and lobbed grenades inside the house from an open window, and attracted more fire. At about 1600 hrs, party stormed the building in which militants were hiding and fired/lobbed grenades into the rooms. One militant hiding inside the kitchen was killed and charred when fire broke out due to the Gas Cylinder explosion. The remaining two militants continued firing at the raiding party and Cordon. AC (T) V.S. Murty zeroed in on one militant and shot him dead on the spot. The other militant moved to take secure shelter and was subsequently killed by other members of the party. The house was then searched and the bodies of three militants who were identified as a) Saifulla r/o Pakistan, Acting Chief of AI-Badar b) Hizbi r/o Pakistan, Dy. Distt Comdr of AI-Badar c) Usman r/o Pakistan, Coy Comdr of AI Badar were recovered. 03 AK 56 rifles, 01 UBGL for AK, 01 Chinese Grenade, 01 W/set with antenna, Rs. 66,259/-in Cash, 960.20 gms Gold items, 150 gms Silver items and amn were recovered, after search of the area..

In this encounter, Shri V. Srinivas Murty, Assitant Commandant displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of the high order.

This award is made for gallantry under Rule 4(i) of the rule governing the award of President's Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 28th January 2002.



(BARUN MITRA)
DIRECTOR

No. 198-Pres/2003 - The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Border Security Force:-

NAME & RANK OF THE OFFICER

S/Shri

1. K.S. Sood, Commandant
2. Ram Phal, Head Constable

Statement of service for which the decoration has been awarded:

On 29.7.2001, at about 2015 hrs, Shri K.S. Sood, Commandant got a specific information about the presence of Mustafa Khan, category 'A' militant and Battalion Commander of Hizbul Mujahideen outfit with two militants in vill Goigam PS Kanzar, Baramulla (J&K). Shri K.S. Sood, Commandant, immediately planned an operation with four officers, three Subordinate officers and ninety-five other ranks of his Battalion and about 70 men of Rastriya Rifle. By 0030 hrs Vill Goigam was cordoned off. At first light, a house-to-house search was started after plugging all escape routes. At about 0830 hrs, Shri K.S. Sood, Commandant got another information that militants have taken position in a Ziarat which is close to a Mosque with the intention to desecrate Mosque and Ziarat and blame Security Forces. Immediately an inner cordon was placed on all Mosques of the village. Militants hiding in a Ziarat, close to a Mosque, were asked to surrender but they opened fire and an encounter ensued which continued throughout the day. At about 1700 hrs, a message was intercepted directing militants to hold on till it was dark and escape under the cover of darkness. As the darkness approached, militants came out of the main building of the Ziarat and took position near two corners of boundary wall of Ziarat in order to escape. They started heavy firing, which was retaliated by the security forces. However, the firing of the security forces was not so effective as militants were firing from behind the 5 feet high boundary wall of Ziarat which gave them a good cover.

There was a stalemate which had to be broken. After a quick appreciation, Shri Sood and his guard, HC Ramphal, with utter disregard to their personal safety stormed the militants position behind the boundary wall of Ziarat, braving the bullets fired by militants and lobbed a series of hand grenades at them resulting in death of all the three hard core militants including Mustafa Khan. Other two killed militants were later on identified as Farooq Ahmed Bhat r/o Hardaboora and Zahoor Ahmed r/o Vill Hakarmula, Soibuk. On search of the area, three AK Rifles along with ammunition were recovered.

In this encounter, S/Shri K.S. Sood, Comdt. & Ram Phal, Head Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of the high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4(i) of the rule governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 30th July, 2001.


(BARUN MITRA)
DIRECTOR

No. 199-Pres/2003 - The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Border Security Force:-

NAME & RANK OF THE OFFICER

S/Shri

1. Vivek Saxena, Assistant Commandant
2. Emamuddin, Constable

Statement of service for which the decoration has been awarded:

On 23.7.2001, Shri Vivek Saxena, AC, 2nd Bn of BSF received information about militants movement in his area. Immediately, Shri Saxena with 18 other ranks of Commando Platoon rushed to lay an ambush in the area of Village Lungil hills, District Sugnu, Manipur. After analyzing the terrain and weather conditions, he divided the ambush party into three groups to cover the escape routes/likely approaches of militants and after detailed briefing positioned the ambush parties at about 2030 hrs. At about 2130 hrs, while lying in ambush, the party led by Shri Vivek Saxena, observed suspicious movement of some unknown persons. On being challenged to surrender, the suspected militants fired heavily with their automatic weapons towards the BSF party. The BSF party retaliated the fire but the militants kept firing and shifting their position in a bid to escape. Shri Saxena, followed by Ct Emamuddin and others, in utter disregard of their own safety, charged upon the militants and continued to chase and fire at the fleeing militants. While chasing the militants, Ct Emamuddin who was firing from his LMG, closed in with the militants but was hit by militants fire on his left shoulder. Despite sustaining serious bullet injury and heavy firing from the militants, Ct Emamuddin, stuck to the ground, fired a long burst of bullets on the militants and killed two of them on the spot. Shri Vivek Saxena, AC, seeing his comrade seriously injured and writhing in pain, lifted the injured Constable to a safer place but came under heavy firing of the militants. Shri Saxena, jumped to a safer place, took cover and simultaneously fired on the militants, which resulted in killing of yet another militant. On search, three dead bodies of militants along with two AK series Rifles, four AK Rifle Magazine and 30 Rounds of AK series ammunition were covered.

In this encounter, S/Shri Vivek Saxena, Assistant Commandant & Emamuddin, Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of the high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4(i) of the rule governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 23th July, 2001.


(BARUN MITRA)
DIRECTOR

No. 200–Pres/2003 . The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Border Security Force :-

NAME & RANK OF THE OFFICER

S/Shri

1. J.B. Sangwan, Comdt, 2nd Bn, BSF
2. R.K. Thapa, Dy.Comdt., 2nd Bn, BSF
3. T. Parameswaran, Constable, 2nd Bn BSF

Statement of service for which the decoration has been awarded:

Based on information about presence of PLA militants in general area Dampi reserve forest near village Langza, Distt. Churachandpur (Manipur), a special operation code name “LALKAR” was planned and launched on 11.8.2001 at 1900 hrs. This operation was launched under overall supervision of DIG, BSF and BSF troops of various Bns. participated. BSF parties took their respective positions by 0300 hrs on 12.8.2001 and effectively cordoned Dampi forest. Two well armed parties of 2nd Bn, one each led by Shri J.B. Sangwan, Comdt and another by Shri R.K. Thapa, Dy.Comdt, launched a series of raids at seven different locations in Dampi Forest area simultaneously. Information about movement of militant towards village Langza was obtained. Shri J.B. Sangwan, Comdt. reviewed the situation and re-adjusted the stop parties. One of the stop parties led by Shri C.S. Singh, AC, spotted militants who were escorting blind folded civilians kidnapped by them. An encounter ensued, during which Ct Parmeshwaran displayed extra ordinary initiative and chased the militants who were trying to escape. Due to exchange of fire, Ct T. Parmeshwaran sustained serious bullet injuries but succeeded in killing one of the militant. This party also managed to rescue the kidnapped civilians. Ct. T. Parmeshwaran, was immediately evacuated to a Hospital in Imphal. Parties led by Shri J.B. Sangwan, Comdt and Shri R.K. Thapa, Dy.Comdt immediately reached the place of occurrence and gave further impetus to the on-going operations. At about 1000

hrs Shri Sangwan observed one of the militants in injured condition, still firing. Shri Sangwan, Comdt showing bravery crawled near the militant and killed him. Suddenly, another militant hiding nearby, charged towards him, but was also killed by swift action of Shri Sangwan. Similary, party led by Shri R.K. Thapa, Dy.Comdt also had a close encounter with militant. Shri Thapa in a bold action and displaying rare courage killed another militant in a close quarter battle. The militants started escaping in different directions and stop parties also killed two militants. In the above operations, five dreaded militants namely a) Md Akhan, R/o Borayangbi, Distt. Bishnupur b) Ningthoujam Ibungo, R/o Karang, Thanga, Distt. Bishnupur c) Sonkhuthang Hmar, R/o Langza, Distt. Bishnupur d) Prem Bata, R/o Karang, Thanga Distt. Bishnupur e) Khongsai, R/o Saikul, Distt. Senapati were killed and one Ashim Kom R/o Janglingpai, Distt CC Pur was apprehended. Following arms/amns and equipment were recovered from the site of incident:-

a) AK Series Rifle- 3 Nos., b) AK Magazines- 5 Nos., c) A.K. Ammunition- 86 live rounds, d) Radio Set (Kenwood) - 01 (Japanese)

In this encounter, S/Shri J.B. Sangwan, Comdt, R.K. Thapa, Dy.Comdt., & T. Parameswarar, Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of the high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4(i) of the rule governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 12th August, 2001.


(BARUN MITRA)
DIRECTOR

No. 201–Pres/2003 - The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Border Security Force:-

NAME & RANK OF THE OFFICER

S/Shri

1. J.R. Gautam, Assistant Commandant
2. M. Kumar, Constable

Statement of service for which the decoration has been awarded:

On 5.8.2001, based on specific information regarding movement of militants from Wangood towards Kakching area District. Thoubal, Manipur, Shri Jangli Ram Gautam, AC, 2nd Bn BSF briefed his troops for laying an ambush at Wangjing Khunou Tri Junction. At about 2100 hrs, the ambush was deployed sealing all the possible escape routes. The ambush observed one Hero Honda Motor Cycle approaching from Village Wangoo, followed by a medium Tata 709. The motor cycle rider was stopped by the ambush party and overpowered on the direction of AC Jangli Ram Gautam. Thereafter, when Tata – 709 vehicle was signaled to stop, the occupants of the vehicle who were militants, immediately opened fire with their automatic weapons on the ambush party and attempted to flee by jumping out of the vehicle. AC Jangli Ram Gautam, and Ct M. Kumar chased the militants and kept on firing. Due to quick retaliation by the ambush party, militants had to take position on an adjoining boulder. Having positioned themselves, the militants once again fired heavily on the ambush. AC Jangli Ram Gautam and Ct M. Kumar advanced towards the militants by crawling through a paddy field. After reaching very close to the militants, Ct M. Kumar killed one militant on the spot, whereas, AC Jangli Ram Gautam injured two militants who managed to escape under cover of darkness. However, they succumbed to their injuries after covering some distance. On search of the area, one AK- 56 Rifle, two Magazines, Twenty-eight AK ammunition, one Tata 709 and one Motor Cycle were recovered

In this encounter, S/Shri J.R. Gautam, Assistant Commandant & M Kumar, Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of the high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4(i) of the rule governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 5th August, 2001.


(BARUN MITRA)
DIRECTOR

No. 202–Pres/2003 - The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officer of Border Security Force:-

NAME & RANK OF THE OFFICER

Shri Hrushikesh Baral
Sub-Inspector, 194 Bn

Statement of service for which the decoration has been awarded:

On specific information regarding presence of four militants at Village Goigam, Distt Budgam (J&K), an operation was planned and launched by Shri Pratul Gautam Offg Commandant 194 Bn BSF on 10.5.2002. The operation party was divided in four groups and the village was cordoned off from all directions. The party led by SI Hrushikesh Baral took position on the east of village Goigam on the outer periphery. Two militants were noticed by the party of SI Baral trying to sneak out taking the cover of standing crops and undulating ground. When the party was tactically advancing to prevent escape of militants, the party was fired upon heavily by militants in a bid to break the cordon and escape. SI H. Baral immediately took position and retaliated. Suddenly one militant appeared in front of SI Baral and fired a burst of his automatic weapon but SI Baral had a miraculous escape. Sensing danger to his own life and his party SI Baral with utter disregard to his own personal safety came out in the open and engaged the militant in face to face combat and killed him on the spot. The remaining militants were also killed by the troops in the follow up operation. On search of area, dead bodies of all four killed militants were recovered along with four A.K. Series rifles, five Hand Grenades, one under-barrel grenade launcher, two under-barrel grenade launcher and ammunition. The killed militants were later identified as a) Mohd Abdul Rehman @ Saif Akhter R/o Bahwalpur, Punjab (Pakistan) b) Mohd Ali @ Abu Mageer R/o Pakistan c) Parvez Lone R/o Badran Budgam (J&K) d) Abdul Rehman Beigh @ Sher Khan S/o Sanullah Beigh.

In this encounter, Shri Hrushikesh Baral, SI displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of the high order.

This awards is made for gallantry under Rule 4(i) of the rule governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 10th May 2002.

Be
(BARUN MITRA)
DIRECTOR

No. 203–Pres/2003 - The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Border Security Force:-

NAME & RANK OF THE OFFICER

1. Shri Sandeep Kumar, Constable, 58th Bn. (Posthumous.)
2. Shri K Kutturappa, Constable, 58th Bn.

Statement of service for which the decoration has been awarded:

On 9th May 2002 on receipt of an information about movement of militants in area around village Walrama, District Anantnag (J&K), a special operation was planned and executed by the troops of 58 Bn BSF assisted by a party of 6th Bn BSF. At about 0500 hours, the area was cordoned by Constable Sandeep Kumar and Constable K Kutturappa of 58 Bn BSF. They noticed two persons moving suspiciously towards them. Both the Constable alerted each other and challenged the suspects. The suspects, who were actually militants changed course in a bid to escape prompting Constable Sandeep Kumar to leave his position and intercept them. One of the militants immediately threw away the Shawl he was wrapping around him to conceal his weapon and fired a burst from his automatic rifle. Constable Sandeep Kumar received bullet injury above his chest, but he did not lose his balance and charged at the militant and incapacitated him with effective fire. In the mean time, taking advantage of thick vegetation and terrain, other militant managed to escape. He was soon joined by some more militants, who had either left the village earlier or were hiding in neighbouring villages. Militants then brought heavy fire at the site of encounter to rescue their trapped companion injured by the daring attack of Constable Sandeep Kumar. Constable Kutturappa who was till now covering the move of Sandeep Kumar from his position also came into the open to assess the situation. He found a barrage of fire coming around the position of Constable Sandeep Kumar who was still retaliating. A burst of fire suddenly hit constable Sandeep Kumar in his head and he died. Finding the resistance from Constable Sandeep Kumar extinguished, the injured militant tried to escape. Constable K Kutturappa then jumped into the fray to accomplished the task left unfinished by his colleague. Braving the bullets, he charged towards the injured militant attempting to escape and killed him. The killed militant who did not belong to the area was later identified as 'TASHKARI' (CODE NAME) a Pakistani National. One AK-56 rifle alongwith ammunition was recovered from the militant.

In this encounter, (Late) Shri Sandeep Kumar, Constable & Shri K. Kutturappa, Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of the high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4(i) of the rule governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 9th May 2002.


(BARUN MITRA)
DIRECTOR

No. 204-Pres/2003 - The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officer of Border Security Force:-

NAME & RANK OF THE OFFICER

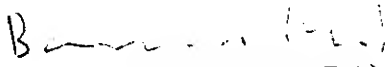
Shri Malkiat Singh, (Posthumous)
Sub-Inspector, 9th Bn. BSF

Statement of service for which the decoration has been awarded:

On 11th January 2002, a special Ops party of 9th Bn of BSF led by SI Amit Kumar Verma proceeded to Pulwama area on a tip off about militant hiding inside an isolated house. as the party was croding the house, it was fired upon by militant's hold-up inside, which was retaliated by BSF party. While SI Amit Kumar Verma was repositioning Jawans around the house to plug likely escape routes, a bullet fired by the militants his him on the left thigh. SI Amit Kumar Verma was evacuated to civil Hospital Pulwama, Re-enforcement was rushed to the site from 9th Bn, 104 Bn, DC (G) and SOG Pulwama. The re-enforcement party of 9 Bn led by SI Malkiat Singh positioned it self on the eastern side covering undulating ground while other parties covered remaining area. During exchange of fire, explosives held by militants exploded and the house caught fire. As a result, one of the militant jumped out of the window towards eastern side, firing indiscriminately. When this militant was about to breach the cordon, SI Malkiat Singh displaying rare courage engaged him in a fierce one to one gun battle killing him on the spot. While SI Malkiat Singh was engaged with this militant, another militant hiding in the house fired at Malkiat Singh and shot him on the head. SI Malkiat Singh was immediately evacuated to Civil Hospital Pulwama, who later succumbed to his injury. The militant held-up in the house was fired upon till he stopped firing. After the fire stopped, troops of 9 bn carried out through search of the area. Dead body of two militants including the one killed by SI Malkiat Singh were recovered. On searching of the area, 2 AK Series rifles, 1 Chinese Pistol, 1 Hand Grenade, 1 wireless set and amn were recovered from the spot. The killed militants were identified as Hilal Ahmed Shah S/o Gulam Mohd Shah R/o Paschar, PS Rajpora, distt. Pulwama and Intyat Ulla S/O Gulam Mohd. r/o Vill. Mashwara, PS Keller, Distt. Pulwama, both of HM (PTM)

In this encounter, (Late) Shri Malkiat Singh, Sub-Inspector displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of the high order.

This award is made for gallantry under Rule 4(i) of the rule governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 11th January 2002.


(BARUN MITRA)
DIRECTOR

No. 205—Pres/2003 - The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Border Security Force:-

NAME & RANK OF THE OFFICER

S/Shri

1. J.C. Singla, 2IC, 104 Bn BSF
2. Karam Singh, Lance Naik, 104 Bn BSF

Statement of service for which the decoration has been awarded:

On 28 February 2002, at about 2350 hrs, on receipt of a specific information regarding presence of three militants in Vill. Kariabad District Pulwama (J&K), Shri J C Singla, 2 I/ C of 104 Bn BSF planned and launched a special cordon and search operation. By 0315 hrs the village was cordoned. At about 0640 hrs, an announcement from the mosque was made for the villagers to assemble in school building. Lance Naik Karam Singh, who formed part of cordon party, observed one militant trying to sneak out through a nullah. He maintained his balance and allowed the militant to come closer and then challenged him. The militant immediately tried to break the cordon by heavy volume of fire. Lance Naik Karam Singh retaliated the fire which pinned the militant in nullah. Simultaneously, Sh J C Singla, Second-In-Command along with party also arrived at the spot and took control. Lance Naik Karam Singh crawled towards the militant and fired on the militant effectively and killed him on the spot. According to the information collected by 2IC, two more militants were hiding in a cow shed in Ladi Mohalla of the same village. Shri Singla immediately constituted four different parties and surrounded the targeted house even though the militants were continued heavy firing. Shri JC Singla directed grenade firing which forced the militants to jump out of the cowshed. However, the militants managed to sneak back into cowshed where they were well concealed and resumed heavy firing on the cordon party. Undeterred Shri JC Singla lobbed one grenade inside the cow shed though the window inflicting severe injures to the

militants. He then decided to storm the cow shed. The storming party was fired upon heavily by injured militants. During the operation, Shri Singla came face to face with one militant and fired on him accurately and effectively resulting in death of the militant on the spot. Shri Singla then moved his party to an adjacent house located behind the cowshed. There were no window/hole in this house and taking yet another risk by exposing himself in the open, he threw hand grenades on the militants from a side opening. The injured militants retaliated by firing on Shri Singla, who had a narrow escape. Shri Singla remained unnerved and lobbed another grenade. Displaying great determination and bravery he fired and killed another militant on the spot. The slain militants were identified as :-

- (a) Imtiaz Ahmed Wani @ Hilal S/o Noor Mohd Wani R/o Pulwama of Hizbul Mujahideen outfit.
- (b) Firdous Ahmed Wani @ Tasleem S/O Mohd. Ramzan Wani R/O Vikll Drubgam, Distt Pulwama (J&K) a Pakistan trained militant of Hizbul Mujahideen outfit.
- (c) Irshad Ahmad Dar @ Shadam S/O Abdul Gaffar R/O Koyil, Distt. Pulwama (J&K) – a Pakistan trained militant and District Commander of Hizbul Mujahideen outfit.

Three AK series rifles, one Chinese pistol, one UBGL, 3 wireless sets, 2 Rifle Grenades, two hand grenades and six electric detonators were recovered.

In this encounter, S/Shri J.C Singla, 2IC & Karam Singh, Lance Naik displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of the high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4(i) of the rule governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 1st March, 2002.


(BARUN MITRA)
DIRECTOR

No. 206-Pres/2003 - The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Border Security Force:-

NAME & RANK OF THE OFFICER

S/Shri

1. P.R. Sharma, Assistant Commandant, 104th Bn. BSF
2. Rakesh Kumar, Constable, 104 Bn, BSF

Statement of service for which the decoration has been awarded:

On 13th March 2002 at about 2300 hrs, on specific information regarding presence of some militants in village Nehama, PS & District Pulwama (J&K), a special operation was planned by Shri S.A. Alvi, Commandant. On 14th March 2002 at 0500 hours, village Nehama was cordoned off effectively. After first light, systematic and thorough search of village started which continued for about five hours. At about 1150 hours when one of the search parties led by Shri PR Sharma, Assistant Commandant was searching the house of Abdul Gani Dar s/o Gh Mohd Dar, the party was fired upon heavily by militants well entrenched inside the house. Undeterred, Shri Sharma at a high risk to himself tactically positioned himself alongwith his search party near the targeted house and foiled attempts of the militants to escape. At this stage Shri A S Alvi, Commandant took over the command of the operations and immediately laid an effective inner cordon around the targeted house. The heavy exchange of fire between militants and BSF troops continued for more than one hour. Shri P R Sharma alongwith Constable Rakesh Kumar tactically crawled towards the targeted house and lobbed hand grenades through the window. However, the militants shifted their positions to adjoining rooms and continued firing and lobbing grenades. Fire from Automatic Grenade Launcher was brought on the targeted house which forced militants to jump out and make a desperate attempt to escape by firing on the inner cordon party. One of the militants engaged Shri P R Sharma while the other militant engaged Constable Rakesh Kumar. Shri Sharma and Constable Rakesh

Kumar left their positions and came face to face with the militants and fired effectively on the militants. The militants were totally surprised and taken aback, but continued firing desperately in an attempt to escape. However, Shri Sharma and Constable Rakesh Kumar remained very alert and gave them no chance. Displaying firm determination and a high standard of marksmanship they killed the militants in a fierce close quarter battle. Both the dreaded militants were later on identified as Abu Mujahid @ Abdulla Javed R/o Sialkot (Pakistan), a Div Comdr & 'B' category Pakistan Trained Militant of Laskhar-e- Toiba outfit and Abu Hafiz r/o Pakistan also a Pakistan Trained militant of L-E-T. On Search of the area, two AK Series rifles, one Pistol, two wireless sets and ammunition were recovered.

In this encounter, S/Shri P.R Sharma, Asst. Comdt. & Rakesh Kumar, Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of the high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4(i) of the rule governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 14th March 2002.


(BARUN MITRA)
DIRECTOR

No. 207—Pres/2003 - The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Border Security Force:-

NAME & RANK OF THE OFFICER

S/Shri

1. Ram Narain, Constable, 9th Bn, BSF
2. K.G. Ramanathan, Constable, 9th Bn, BSF

Statement of service for which the decoration has been awarded:

On 25th March, 2002, based on a specific information regarding presence of two militants in the house of one Abdul Rashid Baghey S/o Fat Baghey of Village Naugam Distt Pulwama (J&K), Shri B.S. Kasana, Commandant 9th Bn of BSF after taking into account, the ground realities, planned an operation immediately. At about 0330 hrs, party under command of Shri B.S. Kasana, cordoned village Naugam from three different directions and the targeted house was surrounded by a separate inner cordon. While the inner cordon was being laid, militants hiding in the targeted house lobbed grenades on troops and opened heavy fire. Party retaliated and did not allow militants to escape. Militants then opened rear window, lobbed grenades, and tried to escape by opening heavy volume of fire and taking advantage of the blast, dust and darkness. Ct Ram Narain and Ct K.G. Ramanathan were positioned in buddy pair. Due to heavy fire from escaping militants, both the constables sustained bullet injuries, but remained undeterred. These daring Constables, then took on the militants one to one. Ct Ram Narain showing excellent presence of mind, in a gallant and bold action gunned down one militant. Ct K.G. Ramanathan also without caring for his bullet injury and disregard to personal safety, fired on the second militant and shot him in chest injuring him critically. This militant was subsequently killed in a follow up action. On search of the targeted and adjacent houses, dead bodies of two militants were recovered alongwith two AK 56 Rifles, six pistol grenades, one pistol grenade launcher, nineteen Grenade UBGL, three Hand grenades, two Anti tank Rifle Grenades, one Anti tank mine, one compass, four wireless sets and ammunition. The killed militants were identified as Mohd Altaf Ganai @ Saifullah S/o Mohd Abdhullah Ganai R/o Wachi Distt Pulwama (J&K) – a Pakistan Trained Militant of Hizbul Mujahideen outfit and Gul Khan @ Museib, S/o Rezab Khan R/o Naugam, Distt Pulwama (J&K) – Battalion Commander of Hizbul Mujahideen outfit

In this encounter, S/Shri Ram Narain, Constable & K.G. Ramanathan, Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of the high order.

These awards is made for gallantry under Rule 4(i) of the rule governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 25th March, 2002.


(BARUN MITRA)
DIRECTOR

No. 208—Pres/2003 - The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Border Security Force:-

NAME & RANK OF THE OFFICER

S/Shri

1. N.S. Dhaka, Assistant Commandant
2. Shri Shyam Lal Rai, Constable (Posthumous)
3. Showkat Ali, Constable

Statement of service for which the decoration has been awarded:

On 9th April 2002, on a specific information regarding presence of militants in the house of one Gulzar Ahmed Pal s/o Abdul Majid Pal in Village Khurampora, District, Pulwama (J&K), a cordon and search operation was planned and executed by troops of 9th Bn BSF. The village was cordoned from all directions. There was no movement of civilians, which confirmed the presence of militants in the house. While Shri Dhaka, Assistant Commandant alongwith his troops was approaching the targeted house tactically, one of the militants made an abortive effort to escape while firing heavily. Constable Shyam Lal Rai immediately reacted to the situation and pumped a volley of bullets at the militant. The militant was wounded but fired back at Constable Shyam Lal who succumbed on the spot and so the militant. Party led by Shri Dhaka was further fired upon heavily from the neighbouring building, which was immediately neutralized. Militants then suddenly lobbed grenades due to which Shri Dhaka sustained injuries on his left shoulder and chest. In spite of injuries, he continued to fire back and supervised the operation. In a surprise move, second militant made an effort to escape firing heavily. Shri Dhaka ignoring his serious injuries and not caring for his personal safety, reacted in an exemplary manner and killed the militant. The troops were then directed to search the adjacent buildings. Third militant, hiding in one of these, started firing, which was retaliated by troops. Constable Showkat Ali, took initiative, crawled to the wall of house and lobbed one grenade which was thrown back by the militants promptly, causing injuries to two BSF personnel. The militant also fired at Constable Showkat Ali and injured him on the hand. Despite bullet injury he lobbed two grenades, liquidating the holed up militant. On search of the area, all the three dead bodies of militants were recovered alongwith two AK rifles, one pistol, two hand grenades, one wireless set and ammunition. The killed militants were identified as i) Riyaz Ahmed Bhat s/o Mohd Abdulla, r/o Hardo Handew, Distt. Pulwama (J&K) ii) Zahidul Aslam @ Abhu Kasim r/o Karachi (Pakistan) and iii) Javed Ahmed @ Abu Ali r/o Kotli Badar (Pakistan) all of LET.

In this encounter, S/Shri N.S. Dhaka, Assistant Commandant, Late Shyam Lal Rai, Constable & Showkat Ali, Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of the high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4(i) of the rule governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 9th April, 2002.


(BARUN MITRA)
DIRECTOR

No. 209–Pres/2003 - The President is pleased to award the President's Police Medal/ Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Border Security Force:-

NAME & RANK OF THE OFFICER

S/Shri

1. Krishan Kumar Hooda, Head Constable, 171 Bn, BSF (PPMG)
(Posthumously)
2. Ramesh Kumar, Constable, 171 Bn. BSF (PMG)

Statement of service for which the decoration has been awarded:

On 2.8.2002, based on a reliable information regarding presence of a group of foreign militants in a house at Village Malpura, District Budgam (J&K) Shri V.P. Purohit, Commandant 171 Bn BSF planned an operation. As per plan, outer cordon of Village Malpura was established. Shri V.P. Purohit, Commandant then headed to the target house along with his party and laid an inner cordon. Being broad day light, militants noticed movement of troops and sensing danger, opened heavy volume of fire on the troops. Shri Purohit, Commandant, was hit by a bullet in his thigh, but he continued retaliating the fire. All of a sudden, two militants charged towards Shri Purohit firing heavily. Shri Purohit, despite his injury fired and killed one militant on the spot. There was a hand to hand fight between Shri Purohit and the other militant during which the militant succeeded in firing one burst which pierced through Shri Purohit's chest, who succumbed to his injuries. Meanwhile, heavy exchange of fire was going on between Ct Ramesh Kumar and the third holed up militant. When Ct Ramesh noticed the plight of his Commandant, Ct. Ramesh immediately diverted his fire towards the militant who was grappling with his Commandant, as a result of which the militant was compelled to leave his weapon and run for his life. Meanwhile Ct Ramesh Kumar was hit by a bullet causing serious injury to his fore arm. Ct Ramesh Kumar, in spite of his injury, displayed rare courage and with utter disregard to his own safety kept on firing and succeeded in inflicting injuries to the militant. However, in the process, a bullet fired by a militant from the top of the targeted house hit Ct

Ramesh Kumar as a result he was immobilized. Taking advantage of this situation the militant who was firing from the top floor of the house jumped out and started running towards the injured militant to save himself and his accomplice. HC Krishan Kumar Hooda, who was in the inner Cordon, observed the two fleeing militants. He, without caring for his own life and exhibiting rare courage, exposed himself and chased the militants amidst heavy firing from the militant. HC Krishna Kumar Hooda, by showing great professional acumen and gallantry, succeeded in killing one of the fleeing militants. However, in the process he sustained a bullet injury on his right hand. Although bleeding profusely, HC Krishan Kumar Hooda kept on chasing the last militant who, all of a sudden, took position in a broken ground inside a nallah and fired a long burst which hit the chest and lower abdominal part of HC Krishan Kumar, who died on the spot. The militant managed to escape leaving behind his weapon taking cover of thick maize and undulated ground. On the search of area, dead bodies of the two killed militants were recovered along with three AK rifle, five grenades and ammunition. The slain militants were later identified as Salaudeen Afghani and Javed Ali Bhai both R/o Pakistan.

In this encounter, S/Shri (Late) Krishan Kumar Hooda, Head Constable & Ramesh Kumar, Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of the high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4(i) of the rule governing the award of Presidents Police Medal / Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 2nd August 2002.


(BARUN MITRA)
DIRECTOR

No. 210—Pres/2003 - The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officer of Border Security Force:-

NAME & RANK OF THE OFFICER

Shri Nehum Ngullie,
Assistant Commandant, 138 Bn. BSF

Statement of service for which the decoration has been awarded:

On specific information of militants using the Kuchha track joining village Ratson to Amirabad, Tral, District Pulwama (J&K) an ambush was laid by Shri Nehum Ngullie, AC and selected troops of 138 Bn BSF on 16.9.2002. Shri Ngullie along with Ct Sanjeev Kumar, while shifting to an alternative position, was fired upon heavily by the militants from a very close distance from the lanes of Maqдум Mohalla followed by grenades by Grenade Launcher. Shri Ngullie, kept his cool, retaliated promptly in order to gain an upper hand on the militants and along with Ct Sanjeev Kumar moved to a safe and dominating position during the exchange of heavy volume of fire. However, Ct Sanjeev Kumar suddenly fell down in a drain as the weather was inclement and the area had been rendered slushy and slippery. Shri Ngullie, AC, sensing danger to the life of the Constable, without caring for his own life, extricated the Constable under a hail of live fire. After illuminating the area by para illuminating bombs, Shri Ngullie, in a magnificent display of raw courage rushed towards the militants and shot dead one of them. Thereafter, Shri Ngullie and Ct Sanjeev Kumar chased the remaining fleeing militants and succeeded inflicting injury to one of them. However, the militants managed to escape taking advantage of darkness and inclement weather. On search of the area, dead body of the killed militant along with one AK series Rifle, one Under Barrel Grenade Launcher, six Rifle grenades, one Hand grenade and one wireless set were recovered. The killed militant was later identified as Sarfaraz Meer @ Abu Talha resident of Tral pine, Distt. Pulwama (J&K)

In this encounter, Shri Nehum Ngullie, AC displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of the high order.

This award is made for gallantry under Rule 4(i) of the rule governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 16th September 2002.


(BARUN MITRA)
DIRECTOR

No. 211—Pres/2003 - The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Border Security Force:-

NAME & RANK OF THE OFFICER

S/Shri

1. R.S. Rawat, AC, 9th Bn. BSF
2. Satyender Singh, Constable, 9th Bn. BSF

Statement of service for which the decoration has been awarded:

On a specific information regarding presence of two foreign militants at Village Chilipora, Distt Pulwama (J&K) an operation was conducted by 9th Bn BSF on 1.9.2002. Effective cordon around the target village was established by the parties led by Shri BS Kasana, Comdt, Shri Vinod Adhikari, AC and Shri R.S. Rawat, AC, all of BSF. Sensing the movement of troops, both the militants made a desperate attempt to escape but were firmly intercepted by the inner cordon, compelling them to take shelter in a nearby house. Search of the neighbouring houses was in progress when Shri R.S. Rawat, AC came under fire and grenade lobbing by the holed up militants. Shri Rawat in spite of this attack retaliated instantly and lobbed grenades towards the hiding militants. The officer exhibited exemplary courage and with utter disregard to his own life crawled towards the entrenched militants and brought heavy volume of fire on them compelling them to abandon their position. One of the militants attempted to escape when Shri Rawat confronted him in a face to face combat and without caring for his own safety fired accurately killing the militant on the spot. Heavy exchange of firing was going on between the second holed up militant and the troops. The militant, too, in a bid to escape shifted to another safe position and fired intermittently on the inner cordon party. Ct Satyender Singh, in order to dislodge the well entrenched militant, left his covered position, approached and fired on the hiding militant. Finding himself thus cornered, the militant ran straight towards the position of the Ct Satyender Singh firing heavily on him. Ct Satyender Singh kept his cool and with unflinching courage shot the militant dead. On search of the area, dead bodies of two militants were recovered along with two AK Series rifles, two hand grenades, one wireless set and ammunition. The killed militants were later identified as Badshah Khan R/o Multan and Mohd Ali both resident of Pakistan.

In this encounter, S/Shri R.S. Rawat, AC & Satyender Singh, Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of the high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4(i) of the rule governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 1st September, 2002.


(BARUN MITRA)
DIRECTOR

No. 212-Pres/2003 - The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officer of Border Security Force:-

NAME & RANK OF THE OFFICER

Shri Sambhu Nath Yadav
Constable, 194 Bn. BSF

Statement of service for which the decoration has been awarded:

On specific information regarding presence of a militant in the area Muthal, Distt Kupwara (J&K), an operation was conducted by troops of 69 Bn BSF on 29th July, 2002. The operational party consisted of 19 personnel including 3 Army personnel. When the troops approached the targeted area, the militant immediately opened heavy fire and jumped into a near by nullah to occupy a covered firing position. In the mean time, Shri Anand Singh, Dy. Commandant also arrived with re-enforcements. Shri Anand Singh, DC took stock of the situation and re-deployed the troops. The militant, already under cover, fired intermittently to prevent approach of troops. The firing between troops and the militant continued for quite some time. In the ensuing firefight one bullet hit on the head of L. Sepoy Momin, who fell down and in an unconscious state started rolling down towards the militant's position. At this juncture, Constable Sambhu Nath Yadav in a display of conspicuous gallantry rushed towards the militant's position to neutralize him and save his injured colleague. In the process, Ct Yadav also sustained bullet injuries and despite bleeding profusely and having suffered multiple fractures, courageously continued to engage the militant and finally succeeded in neutralizing him. On search of the area, dead body of the killed militant along with one AK Series Rifle and ammunition were recovered.

In this encounter, Shri Sambhu Nath Yadav, Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of the high order.

This award is made for gallantry under Rule 4(i) of the rule governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 29th July, 2002.


(BARUN MITRA)
DIRECTOR

No. 213—Pres/2003 - The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Border Security Force:-

NAME & RANK OF THE OFFICER

S/Shri

1. Buland Hussain, Constable

2. Rakesh Kumar, Constable

Statement of service for which the decoration has been awarded:

On 12 March 2002, based on a specific information about presence of militants in General area Bourgali, Village Khadun, District Rajouri (J&K), a special operation was planned and conducted by troops of 200 Bn BSF. When the BSF party reached Village Khadun, militants opened heavy volume of fire with automatic weapons on the search party from different directions followed by firing of grenades through grenade launcher. Displaying an excellent fire and move tactics, the troops under direction of party commander, succeeded in killing two militants in the very initial stage of operation. While the above encounter was continuing, Constable Rakesh Kumar and Constable Buland Hussain, deployed in cut off party, observed two militants escaping from the cordon. Both the Constables without caring for their personal safety and without waiting their other comrades to join, started chasing the escaping militants amid heavy firing. Pursuit and exchange of fire continued for more than one hour over a stretch of 8 Kms from the encounter site. While chasing the militants in the difficult terrain, the militants took position in the undulating ground and brought heavy fire upon both the constables. In the meanwhile, Constable Rakesh Kumar directed Constable Buland Hussain to provide covering fire during which, Constable Rakesh Kumar closed in and threw a hand grenade, injuring one of the militants. Const Rakesh Kumar in a dare devil act, further crawled closer to the site of hiding militant under the covering fire and in the face to face encounter that ensued, killed one of the militant on the spot. In the mean while however, other militants managed to escape taking advantage of thick growth and undulated terrain. On search of the area, dead bodies of three militants were recovered along with two AK rifles and three hand grenades. Two of the killed militant were identified as Bashir @ Kamran S/O Kalamudin R/O Village Hasuat, Tehsil Moha, District Udhampur (J&K), an area Commander of Hizbul Mujahideen out fit and the second was identified from the documents recovered from his possession as Mukhtiar. Identity of the third militant, however, could not be established.

In this encounter, S/Shri Buland Hussain, Constable & Rakesh Kumar, Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of the high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4(i) of the rule governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 12th March, 2002.


(BARUN MITRA)
DIRECTOR

No. 214–Pres/2003 - The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Border Security Force: -

NAME & RANK OF THE OFFICER

S/Shri

1. B.S. Kasana, Commandant
2. Jai Pal, Constable

Statement of service for which the decoration has been awarded:

On receipt of specific information from Jammu and Kashmir Police Pulwama, regarding presence of a group of militants having taken shelter in the house of one Mohd Yusuf S/O Abdul Gani in Village Newa extension Gudur, Distt, Pulwama (J&K), a special operation was planned and executed by Shri B S Kasana, Commandant 9 Bn BSF on 9 July 2002. Troops of 9 Bn BSF under leadership of Shri Kasana cordoned off the village from three different sides. When Shri Kasana and party approached the targeted house, militants fired heavily upon the party followed by lobbing grenades. As the BSF party was alert, they had a narrow escape. Shri Kasana then readjusted the cordon, took position in a dominating house and directed Shri Rajiv Kapoor 2 I/C to similarly dominate the house from the opposite side. The exchange of fire continued. In order to force the well-entrenched militants to come out, Rocket launcher, Automatic Grenade Launcher and grenades were fired, due to which explosives in the possession of militants and one gas cylinder exploded and the house caught fire. One of the militants jumped out of the house firing indiscriminately in a desperate attempt to escape. A bullet hit Constable Jaipal, who was in the inner cordon and he sustained fracture of the femur. Undeterred by the grievous bullet injury and without caring for his personal safety, he intercepted the militant, opened fire and killed him on the spot. Shri Kasana Commandant again readjusted the inner cordon under heavy exchange of fire. When he along with his party was advancing tactically to lob more grenades, the militant threw a grenade on the party. Sensing danger to the lives of his party, Shri Kasana displayed quick reflexes and cool and calculated

courage. Without caring for the safety of his own life, he picked up the grenade and lobbed it back in the house and thereby saved his party members from serious injuries/casualties. Under relentless pressure on him, the second militant also jumped out and started firing heavily towards Shri Kasana and his party. Shri Kasana, who was leading the operation immediately, engaged the militant in a close quarter battle and exhibiting conspicuous courage fired and killed the militant on the spot. On search of the area dead bodies of the two slain militants along with two AK series Rifles ammunition and one wireless set were recovered. The killed militants were identified as: -

- a) Akade Bill @ Abu Hurar R/o Sialkot (Pakistan). Battalion Commander of Hizbul Mujahideen out fit.
- b) Mustaq Ahmed Bhat S/o Md Ramzan Bhat R/o Village Gudur, PS & Distt. Pulwama (J&K)

In this encounter, S/Shri B.S. Kasana, Commandant & Jai Pal, Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of the high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4(i) of the rule governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 9th July, 2002.


(BARUN MITRA)
DIRECTOR

No. 215-Pres/2003 - The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Border Security Force:-

NAME & RANK OF THE OFFICER

S/Shri

1. Shyam Singh, Constable
2. Udaypal Singh, Constable
3. Ansuyalal, Constable

Statement of service for which the decoration has been awarded:

On information that militants were camping in area Yari Pathri on the down slop of the ridge along Mawar Nala, District Anantnag (J&K), an operation was planned and conducted under the leadership of Shri Y S Bisht, Second-in-Command and Shri K S Pathania, Asstt Comdt of 77 Bn BSF on 27.06.2002. The operational party was divided into two groups. The first group under the command of Shri K S Pathania, Asstt Commandant laid ambush in Mawar forest area and the second group under command of Shri Y S Bisht, Second-in-Command was placed tactically in Yari pathri area. Since there was no movement of militants, both the parties decided to withdraw. When the first group started withdrawing, it was fired upon by militants hiding in the area. The party retaliated the fire and Shri Pathania moved his group tactically to cordon the militants. While moving, the party came under volley of heavy fire by the militants, but the party was not in a position to fire effectively on the militants as they were hiding behind the rocks. Constable Shyam Singh, who was the leading scout of column noticed one militant at least 70 yards ahead and above him. Making full use of the boulders and trees for cover and without caring for his personal safety, he approached the militant tactically and killed him in a face-to-face gun battle. Meanwhile the second group also joined and the cordon was readjusted. Since the position of the remaining militants could not be located, the group stepped up efforts to trace the militants. During the search operation, Constable Udaypal Singh and Constable Shyam Singh without caring for their personal life inched closer to a suspected

militant's position and lobbed grenades. At this juncture, one militant tried to escape and the exchange of fire started again. Constable Udaypal Singh and Constable Ansuya Lal exhibited exceptional courage and gallantry by exposing themselves in shifting their position to enable them fire effectively upon the militants and killed two more militants. On search of the area dead bodies of all the three militants were recovered along with two AK series rifles, four hand grenades and ammunition. The killed militants were identified as: -

- (i) Azaz Ahmad Khan S/O Ghulam Rasool Khan R/O Panzgam, PS Kokernag, Distt Anantanag (J&K)
- (ii) Nishar Ahmad Khan, S/O Abdul Rajaq, R/O Kumar (Dushwagam), Tehsil Doru, Dist. Anantanag (J&K)
- (iii) Manzoor Ahmad Malik, S/O Ghulam Ahmad Malik, R/O Buchoo, PS Kokernag, Distt Anantanag (J&K)

In this encounter, S/Shri. Shyam Singh, Constable, Udayapal Singh, Constable & Ansuyalal, Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of the high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4(i) of the rule governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 27th June, 2002.


(BARUN MITRA)
DIRECTOR

No. 216-Pres/2003- The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officer of Border Security Force:-

NAME & RANK OF THE OFFICER

Shri Mukhtiyar Ahmed Khan,
Constable, 142 Bn. BSF

Statement of service for which the decoration has been awarded:

Based on specific information regarding presence of militants in area Jor, Kalakote, Distt. Rajouri (J&K), an operation was launched in the target area by the troops of 142 Bn BSF. On 21 March 2002, at 1900 hrs, three suspected houses were cordoned off and searched but nothing could be found during the search. In the mean time, party picked up a militant sympathizer, who revealed details about the area, where he had delivered food and blankets to the militants. Immediately, the party commander chalked out a concrete plan and divided the troops into three groups and began searching area again. Contact with militants was established at 1000 hrs, the next morning. Constable Mukhtiyar Ahmed Khan, who was part of the quick reaction team, while moving in the thick jungles as a leading scout, spotted one militant from a very close distance and alerted the party. In the mean while, Militants opened heavy fire on the BSF party, as a result of which Constable Om Parkash sustained bullet injuries and started bleeding profusely. Seeing condition of his injured colleague and in spite of heavy firing by the militants aimed at the injured Constable, Constable Mukhtiyar Ahmed Khan with utter disregard to his personal safety, abandoned his covered position and assaulted the militant shooting him dead in the close quarter battle. On search of the area, dead body of one militant was recovered along with one AK series rifle, two hand grenades and ammunition. The killed militant was later identified as Alamgir Khan, a foreign militant.

In this encounter, Shri Mukhtiyar Ahmed Khan, Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of the high order.

This award is made for gallantry under Rule 4(i) of the rule governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 22nd March, 2002.


(BARUN MITRA)
DIRECTOR

No. 217-Pres/2003 - The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officer of Border Security Force:-

NAME & RANK OF THE OFFICER

Shri Harjeet singh, (Posthumous:)
Sub-Inspector

Statement of service for which the decoration has been awarded:

On 29.03.2002 militants carried out a stand off attack at Tac HQ 142 Bn BSF, Kalakote (J&K). They opened indiscriminate fire and lobbed hand grenades on the tin shed adjacent to the cookhouse, which resulted in the killing of two enrolled followers of the unit and caused grievous injuries to another. After this attack the militants ran out to escape taking advantage of the darkness. Shri Mirdul Sonowal, 2 I/C Offg Comdt, immediately mobilized the troops and moved three columns to plug the possible escape routes of the militants. In the meantime, Subedar Dharampal, who was leading one of the columns, learnt from the locals that the militants had escaped towards the forest in Bazimal area. Hence the columns entered in dense forest with thick undergrowth and boulders, which provided ample cover to the fleeing militants. When the troops reached near Bazimal area, Subedar K C Khanduri divided his column into two parties- one of which was led by Sub Inspector Harjeet Singh and the other by himself. Sub Inspector Harjeet Singh and party started searching the militants from the western side while Subedar Khanduri and party tactically moved towards Bazimal. Sub Inspector Harjeet Singh, after carefully assessing the situation and appreciating the area, cordoned the suspected hiding area of the militants. Sensing that they have been cordoned, the militants started firing on the BSF party and in the process gave out their positions. Thereafter, a fierce exchange of fire took place between BSF party and the militants. Meanwhile party led by Subedar Komal Singh also joined the party led by Sub Inspector Harjeet Singh and the troops succeeded in killing one militant. However during this heavy exchange of fire, Subedar Komal Singh, Constable A Ravindran and Constable S Balasunder were severely injured. The remaining militants continued firing and throwing grenades on the

troops. One grenade exploded near Subedar Khanduri and Sub Inspector Harjeet Singh, due to which they sustained splinter injuries. Unperturbed by his injuries and in utter disregard to his personal safety, Sub Inspector Harjeet Singh lobbed a hand grenade towards the hiding militants and fired on them and succeeded in killing one of the militants and causing injuries to the other. In the meantime, the injured militant who had hid himself in the bushy undergrowth opened burst fire with his AK Rifle on Sub Inspector Harjeet Singh causing him fatal injuries. SI Harjeet Singh succumbed to his injuries at the spot. On search of the area, dead bodies of the two killed militants along with two AK series rifles, two hand grenades and large quantity of ammunition were recovered. The slain militants were later on identified as Abulasa and Abuwalid of Lakshar-e-Toyyba outfit.

In this encounter, (Late)Shri Harjeet Singh, SI displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of the high order.

This award is made for gallantry under Rule 4(i) of the rule governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 29th March, 2002.


(BARUN MITRA)
DIRECTOR

No. 218-Pres/2003 - The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officer of Border Security Force:-

NAME & RANK OF THE OFFICER


Shri Mukesh Kumar Verma,
Assistant Commandant.

Statement of service for which the decoration has been awarded:

On 6 July 2002, a patrol party ex operational Base Tarala of 200 Bn BSF, while patrolling in area Tramba of Nari forest, learnt about the presence of militants in a 'Dhok' in area Sokarnaka, Tehsil Darhal, District Rajouri (J&K). The party Commander Shri Mukesh Kumar Verma, Assistant Commandant, immediately passed on the information to Shri Hemant Kumar, Deputy Commandant, who was conducting search operation in near by areas and asked him to plug the likely escape routes of militants. Shri Mukesh Kumar Verma, Assistant Commandant divided his party into two groups and cordoned the suspected 'Dhok' from two sides. Sensing encirclement, the militants opened heavy fire upon the troops, which was retaliated. The militants however managed to escape from the 'Dhok', taking advantage of thick jungle. Assessing the changed situation in correct perspective, Shri Verma decided to chase and search the fleeing militants. Shri Verma immediately re-organized the available troops and started combing the suspected area of escape. While the search was going on, the party again came under heavy fire. The fire was retaliated but it could not be effective as the militants were well entrenched in a cave. The approach to the cave was also very difficult and effectively guarded by the militants. Realizing the situation, Shri Verma, undeterred in the face of heavy volume of fire, with utter disregard to his personal safety, crawled towards the cave and lobbed a hand grenade. Finding themselves cornered, the militants in a bid to escape, rushed out of the cave firing from their weapons. Shri Verma very quickly positioned himself close to the cave and fired on the fleeing militants, killing one of them on the spot and inflicting injuries to the other two. The injured militants however jumped into the nearby nullah, leaving behind their weapons and escaped taking advantage of the dense forest. It was later confirmed that one of the injured militant died on 8 July 2002. On search of the area, dead body of one the militants was recovered along with three AK series rifles, one hand grenade, one wireless set and a large quantity of ammunition. The killed militants were identified as Aajam @ Daud and Sarajit, both resident of Pakistan.

In this encounter, Shri Mukesh Kumar Verma, Assistant Commandant displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of the high order.

This award is made for gallantry under Rule 4(i) of the rule governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 6th July, 2002.


(BARUN MITRA)
DIRECTOR

No. 219-Pres/2003 - The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Border Security Force:-

NAME & RANK OF THE OFFICER

S/Shri

1. Nanak Chand, DC
2. Ram Prasad Jat, Constable

Statement of service for which the decoration has been awarded:

Based on specific information regarding presence of militants in general area Galdoon, District Udhampur (J&K) an operation was planned and launched by the troops of 102 Bn. BSF on 3rd February, 2002. The operational party, on reaching the target area, placed stops on all escape routes of the militants. The party was then divided in two groups and a search operation was launched under the leadership of Shri Nanak Chand, DC and Shri Dinesh Kumar, AC. While the search operation was in progress, the party led by Shri Nanak Chand DC came under heavy volume of fire by militants from Galdoon side. The fire was retaliated and the party advanced towards the militants tactically. Meanwhile, two militants made an attempt to escape by firing heavily on Shri Nanak Chand and his party. At this juncture, Shri Nanak Chand with utter disregard to his personal safety, exposed himself in front of the militants fire and showing professional acumen and raw courage fired accurately on the escaping militants killing one of them on the spot. Seeing the fate of his companion, the other militant ran towards the jungle in an attempt to flee. On observing the fleeing militant, Constable Ram Prasad Jat, without caring for his personnel safety, chased the militant for about half an hour over extremely difficult terrain. The militant then took position on a steep gradient behind a big tree and opened fire on Constable Ram Prasad Jat. Assessing the difficult situation and the likelihood of the militant's escape. Constable Ram Prasad with utter disregard to his personnel safety and showing great courage, approached the militant's position from the rear, jumped down on to the spot and shot the militant dead in close quarter battle. On search of the area, dead bodies of two militants were recovered along with one AK series rifle, one hand grenade and ammunition. The slain militants were identified as Mohd. Irfan Hussain S/o Abdul Rashid, Distt. Doda (J&K) and Mohd. Farooq S/O Abdul Rashid R/O Udhampur (J&K).

In this encounter, S/Shri Nanak Chand, DC & Ram Prasad Jat, Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of the high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4(i) of the rule governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 3rd February 2002.


(BARUN MITRA)
DIRECTOR

No. 220—Pres/2003 - The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officer of Border Security Force:-

NAME & RANK OF THE OFFICER

Shri Karan Singh,
Head Constable

Statement of service for which the decoration has been awarded:

Based on specific information regarding presence of two militants in the house of one Mohd. Abdulla Sheikh, an operation was launched by the troops of 09 Bn BSF on 5th August, 2002 at Village Drubgam, Distt : Pulwama (J&K). Suspects, apprehended during the cordon and search operation revealed that two militants were hiding in the house of one Ghulam Hussain Lone. Inner and outer cordons were laid around the targeted houses accordingly and a systematic search for the militants was then carried out. The targeted house was searched by Shri A.K. Rai, Asstt. Commandant and HC Karan Singh. When door of a paddy store in the targeted house was opened by HC Karan Singh, one of the militants hiding therein jumped out firing heavily. Head Constable Karan Singh was taken by surprise by sudden turn of events but displaying courage of the highest order, without getting nervous and without caring for his own safety, he grappled with the militant and in a hand to hand combat shot the militant dead. Another militant was killed by the troops in the follow up operation. The killed militants were identified as :-

- (i) Shabir Ahmed Malla @ Abu Baqir S/O Akbar R/O Chakbadrinath
Distt : Pulwama (J&K)
- (ii) Aftab Bhatt @ Sajjad R/O Pakistan occupied Kashmir

In addition two AK series rifles, one wireless set and ammunition were recovered from the spot.

In this encounter, Shri Karan Singh, Head Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of the high order.

This award is made for gallantry under Rule 4(i) of the rule governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 5th August 2002.


(BARUN MITRA)
DIRECTOR

No.221-Pres/2003 - The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officer of Central Reserve Police Force:-

NAME & RANK OF THE OFFICER

Shri Ramvir Gupta,
Inspector/GD 112 Bn, CRPF

Statement of service for which the decoration has been awarded:

On 25.01.2001 at 1550 hrs the Coy personnel of E/112 located at Awang Bazar, Loktak (Manipur) were playing volley Ball. Stores of all the Coys and Bn are housed in the E/112 location. CQMH and storemen Ct. P Subba also lived there. At 1550 hours Ct. P. Subba came out of his store and suddenly opened fire with his SLR initially at guard room located in front of his stores, then on the personnel who were playing volley ball and then on the sentry in Morcha No. 1 on main gate. Due to indiscriminate firing by Ct. P. Subba, S/Shri Virendra Kumar, A.S. Mahalingam, Chaman Lal, Shambhu Nath, all constables and HC Shri Shakti Chand were seriously injured and remaining personnel had to run away here and there to save their lives. Ct. P. Subba approached towards Morcha No. 1 to capture the loaded LMG and full box of LMG magazines available in Morcha No. 1, most probably with the intention to escape from camp alongwith LMG or he could have committed some more heinous offences. But as soon as Ct. P. Subba attempted to enter in the morcha No. 1 Inspector Ramvir Gupta, who was inside the Morcha No. 1 caught hold rifle of Ct P. Subba in one hand and with the other hand, he caught hold the neck of Ct. P. Subba and then after a brief scuffle, Inspector Ramvir Gupta managed to over-power and disarm the disgruntled Ct. P. Subba. In the mean time other Coy. Personnel also reached there for rescue of Inspector Ramvir Gupta and recovered SLR with 2 nos. of SLR magazine, each loaded with 20 rounds of 7.62 mm from the possession of Ct. P. Subba. Inspector Ramvir Gupta displayed a very high level of courage and responsibility and highest bravery in over -powering, Ct. P. Subba & saved not only his own life but also lives of many other personnel by disarming a violent jawan.

In this encounter, Shri Ramvir Gupta, Inspector/GD displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of the high order.

This award is made for gallantry under Rule 4(i) of the rule governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 25th January 2001.


(BARUN MITRA)
DIRECTOR

No. 222—Pres/2003- The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officer of Central Reserve Police Force:-

NAME & RANK OF THE OFFICER

Shri Sanjay Kumar,
Inspector, "F" Coy, 32 Bn CRPF

Statement of service for which the decoration has been awarded:

In the wee hours of 25.02.2002 'F' Coy, 32 Bn, CRPF Raktia Cherra, West Tripura, Inspector Sanjay Kumar got an information that one hardcore terrorist of ATTF group along with others was spotted at Village Udai Kobra Para under PS Jirania, West Tripura. Inspector Sanjay Kumar along with two Platoons of his Coy carried out cordon and special search operation from 0130 hrs. While the platoons were carrying out search operation at about 0730 hrs, a group of three extremists suddenly opened fire with automatic weapons on platoon of Inspector Sanjay Kumar from nearby jungle. While the fire was being retaliated by the men, Inspector Sanjay Kumar with one HC and one Ct advanced through one flank to carry out surprise attack on militants. But, the militants saw Inspector Sanjay Kumar advancing towards them and threw hand grenade and fired on the party of Inspector Sanjay Kumar. Showing exemplary bravery Inspector Sanjay Kumar with one HC started to crawl stealthily near the extremists position. The extremists started throwing more hand grenades desperately on Inspector Sanjay Kumar. Inspector Sanjay Kumar took cover of the thick jungle and successfully reached near the position occupied by the extremists in the midst of exchange of fire and fired at the extremist effectively, resulting into killing of one extremist on the spot. Other two militants managed to escape taking advantage of thick jungle. The slain militant was subsequently identified as Samprai Debbarma alias Ibrahim Debbarama s/o Govind Debbarma r/o Binon Kobra para under PS Jirania, West Tripura carrying reward of rupees One lakh on his head declared by the Govt. of Tripura. One Chinese hand grenade (live), Cash Rs. 230/-, 6 No. of 7.62 AK-47 empty cases, two photos, one personal diary containing incriminating information of extremists/Arms/Ammunition under the command of the killed extremists was also recovered from the scene of encounter.

In this encounter, Shri Sanjay Kumar, Inspector displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of the high order.

This award is made for gallantry under Rule 4(i) of the rule governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 25th February 2002.


(BARUN MITRA)
DIRECTOR

No. 223--Pres/2003 - The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry / Bar to Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Central Reserve Police Force:-

NAME & RANK OF THE OFFICER

S/Shri

1. Rajeev Yadav, Assistant Commandant, (Bar to PMG)
2. Rewat Singh, Head Constable, GD
3. Sanjay Kumar, Constable

Statement of service for which the decoration has been awarded:

On 15.3.2001, on the basis of an intelligence information regarding camping/hiding of 7 ULFA militants at village Jira Tirang Nayapara, PS Dudhnoi, Distt Goalpara (Assam), two section of 128 Bn, CRPF under command of Shri Rajeev Yadav, A/C alongwith Civil Police went to above village for conducting special operation. The militant were hiding in house owned by Shri Harish Chander Rabha of village Jira Tirang. The party on reaching outskirts of the village at about 1100 hrs, left their vehicles and moved about 4-5 kms on foot. Shri Rajeev Yadav, AC after assessing the situations divided his party. He kept one party to cordon the house and the other ready to carry out surgical strike. Suddenly, the party was heavily fired upon by the militants hiding inside the house from two directions. Having assessed the situation, AC Rajeev Yadav and SIs of Civil Police decided to launch an attack from other side and they moved tactically near the house alongwith HC Rewat Singh and Ct Sanjay Kumar to prevent the militants from escaping through the thick jungle adjacent to the hideout. At this time, AC Rajeev Yadav, saw two militants coming out of the house firing from their automatic weapons at the CRPF party in a bid to escape from the house. Shri Yadav instantly reacted without bothering about the heavy firing coming on him. He surged ahead near the militants and shot dead both of them on the spot. While this action was going on, heavy firing continued from the

other militants hiding inside a room of the house. As the Bamboo grooves were preventing the bullets from hitting the target, Ct Sanjay Kumar who was manning the LMG moved forward showing exemplary courage in the midst of the heavy firing by the militants and took up a better firing position closer to the house. He fired effectively towards the direction from where the militants were firing heavily and continued it until the fire from the militants stopped. After waiting for a few minutes, Ct Sanjay Kumar entered into the room where he found 3 militants lying dead alongwith sophisticated weapons. Meanwhile HC Rewat Singh spotted one militant in another room of the house, who was firing random shots at the approaching troops. He immediately crawled forward tactically, jumped into the room through the window and instantly neutralized the militant before the militant could react. Apart from killing of 6 militants during this operation, 5 nos. AK-56 Rifles, 2 UMG's large quantity of amn and incriminating documents were recovered from the possession of the slain militants. The militants killed in the operation were later identified as 1) Pranab Kakati 2) Rajat Rabha 3) Khagen Kalita 4) Bhagban Medhi 5) Chittaranjan Das and 6) Biplab Gohain who were hard-core ULFA cadre of ENIGMA Group

In this encounter, S/Shri Rajeev Yadav, AC, Rewat Singh, HC/GD & Sanjay Kumar, Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of the high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4(i) of the rule governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 15th March, 2001.



(BARUN MITRA)
DIRECTOR

No.224-Pres/2003 - The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Central Reserve Police Force:-

NAME & RANK OF THE OFFICER

S/Shri

1. V.P. Singh, Dy.Comdt. 51 Bn, CRPF
2. Richpal Singh, Constable, 51 Bn., CRPF

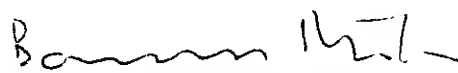
Statement of service for which the decoration has been awarded:

On 9.2.2002, a special operation was planned by Comdt 51 Bn, CRPF in the area of PS Bishalgarh of West Tripura District. One platoon of 51 Bn CRPF under the Command of Shri V.P. Singh, Dy. Comdt started cordon and search operation in the area of Villages Rangamala, Herma and Dhariyathal from 0900 hrs on 9.2.2002. At about 1330 hrs the platoon reached near village Herma and started cordoning off few suspected cluster of houses. On seeing the Security Force, one person started running towards jungle from a house. Shri V.P. Singh, Dy. Comdt on noticing the fleeing person challenged and chased him. The fleeing person when found that he was being followed, threw a hand grenade on Shri V.P. Singh. Shri V.P. Singh, took position and fired at this fleeing extremist. He also directed Ct. Richpal Singh who was accompanying him while chasing the extremist to go to other side from where he can fire effectively at the extremist. Ct. Richpal Singh immediately went to the other side of the field to stop the fleeing militant. The extremist on seeing Ct. Richpal Singh approaching, threw a second had grenade at him. Ct. Richpal Singh without caring about risk to his life crawled to suitable position and opened fire at the extremist pinning him down. Ct. Richpal Singh during exchange of fire and explosion of grenade blocked the escape route as a result the militant could not flee. Shri V.P. Singh, Dy.Comdt, without caring for the risk to his life also starting crawling to take a position to fire at the extremist effectively who had by now taken position behind a bundh. The

extremist again fired at Shri V.P. Singh, Dy. Comdt who in the midst of firing and at the grave risk of his life rolled over to take a suitable cover and fired with AK-47 rifle at the extremist and succeeded in killing him. In the meantime another person had started running towards the village. Shri V.S. Krishna, AC who was cordoning the village located him and chased the fleeing person and apprehended him alive without firing at him. It was the tactics of militants to deceive the CRPF by running in different directions to enable the area commander of NLFT to escape in jungle. However, Shri V.P. Singh, Dy. Comdt. and Ct Richpal Singh foiled the plan of extremists and succeeded in killing a hardcore militant & capturing the other one. The apprehended person was identified as Ranjit Debbarma alias Lotanis, s/o Dhirendra Debbarma of , village Herma, PS Bishalgarh, Distt West Tripura, a listed extremist of NLFT. The killed militant was identified as self styled 'Major' Benjamin Hrankhwal, area Commander of NLFT(National Liberation Front of Tripura. One .32 Revolver (Indian Ordinance Factory made) three live .32 rounds, one 'tax' collection receipt book of Tripura Kingdom of NLFT, personal diary and other incriminating documents were recovered from the body of killed militant. 1000 Taka of Bangladesh currency and Rs.19,000/- Indian currency were also recovered from the apprehended extremist

In this encounter, S/Shri V.P. Singh, Dy. Comdt. & Richpal Singh, Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of the high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4(i) of the rule governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 9th February 2002.



(BARUN MITRA)
DIRECTOR

No. 225-Pres/2003 - The President is pleased to award the President's Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Central Reserve Police Force:-

NAME & RANK OF THE OFFICER

S/Shri

1. Satnam Singh, HC, 36 Bn., CRPF (Posthumous)
2. V.M. Tripathi, HC, 36 Bn CRPF (Posthumous)

Statement of service for which the decoration has been awarded:

On 19.2.99 at about 1700 hrs, Shri Ajit Kulshreshtha, the then Commandant of 36 Bn, CRPF alongwith 3 escort personnel, viz., HC Satnam Singh, HC V.M. Tripathi and LNK Madhav Chand Diamary moved out from GO's mess at Jiribam, Manipur (Unit Hqr) on foot to check the area patrol party. Shri Ajit Kulshreshtha was in civil dress and was not carrying weapon with him. After moving about 300 yards from GO's mess, the Commandant decided to move back towards GREF camp located nearby so as to make a surprise check of his unit patrolling party. When the Commandant's party took 'U' turn at about 1730 hours, one red yellow TATA truck with half body crossed them and stopped. All of a sudden 4/5 militants in Army uniform who were hiding in the truck, started firing indiscriminately on the CRPF party. HC V.M. Tripathy and L/NK M.C. Diamary were ahead of the Commandant on right and left side respectively and HC Satnam Singh was behind the Commandant slightly to his right and very near to the truck. HC V.M. Tripathi and HC Satnam Singh retaliated the fire of the militants effectively without caring for their lives. L/NK M.C. Diamary who was ahead and left side of the Commandant took safe position nearby and helped in the encounter against the militants. As a result two militants were killed and the remaining militants were forced to retreat and leave the place of incident, leaving behind the bodies of the killed militants. In the encounter HC Satnam Singh and HC Tripathi, who provided body shield to the Commandant, got multiple bullet injuries under heavy and indiscriminate firing of the militants and laid down their lives, thereby saving the life of the Commandant Shri Ajit Kulshreshtha.

In this encounter, Late S/Shri Satnam Singh, Head Constable & V M Tripathi, Head Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of the high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4(i) of the rule governing the award of President's Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 19th February 1999.


(BARUN MITRA)
DIRECTOR

No. 226—Pres/2003 - The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Central Reserve Police Force:-

NAME & RANK OF THE OFFICER

S/Shri

1. B.S. Negi, Sub-Inspector (Now Inspector), 122 Bn. CRPF
2. Harishchandra Ramchandra Jadhav, Constable 122 Bn. CRPF.

Statement of service for which the decoration has been awarded:

On a information received from SOG Budgam regarding presence of two hardcore militants in the village Ichkute (Budgam), a joint operation was launched on 8.9.2001 by the troops of SOG Budgam, 47 Bn., 122 Bn CRPF and 35 RR under overall supervision of SP (Ops) Budgam. The task of putting inner cordon was assigned to the troops of SOG and CRPF and outer cordon was assigned to 35 RR. While the cordon parties were advancing to take position, militants opened indiscriminate fire on inner cordon and started hurling grenade before the force could complete the cordon and take defensive position. Taking the advantage of incomplete inner and outer cordon, one militant tried to flee through adjacent nullah and ground. Another militant provided him coverage firing. CRPF troops also fired upon the fleeing militant but fire became ineffective due to rugged terrain. At this juncture, SI/GD B.S. Negi and CT/CD Harishchandra Ramchandra Jadhav showed exemplary courage and chased the militant about 100 metres amidst heavy firing and grenade hurling from both the militants. Eventually, they killed one militant namely Abu Khalid. In a subsequent action the another militant namely Abu Hanees was also killed by the troops. Both militants belong to Fidayeen squad of LET outfit and were foreign militants.

In this encounter, S/Shri B.S. Negi, SI & Harishchandra Ramchandra Jadhav, Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of the high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4(i) of the rule governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 8th September, 2001.


(BARUN MITRA)
DIRECTOR

No. 227-Pres/2003 - The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officer of Central Reserve Police Force:-

NAME & RANK OF THE OFFICER

Shri Baldev Singh,
Constable/ Bugler, 22nd Bn

Statement of service for which the decoration has been awarded:

Constable Mustaq Ahmed of A/ 22 BN CRPF, a surrendered militant of J&K was recruited in CRPF under a special scheme of Home Ministry for the rehabilitation. Constable Mustaq Ahmed and an Assamese girl of Sarthebari village fell in love and decided to marry in Court. On 28/07/2001, Constable Mustaq Ahmed appeared before his Coy. Commander Shri S N Tiwari, Assistant Commandant to inform him about his intention regarding marriage. As the marriage was likely to create controversy and tension, Shri Tiwari suggested that the Constable should not take a hurried decision and consult his parents for which he asked him to proceed on leave. Upset on the advise of his Company Commander, Constable Mustaq Ahmed went to the Kote to deposit his Rifle and ammunition and asked the Kote NCO to give him a written receipt of having received the arms/ammunition. The Kote NCO refused to give a receipt as entry regarding deposit of arms etc is made only in the kote in-out register. On this Constable Mustaq Ahmed left the Coy for Police Station, Sarthebari with the intention to deposit his arms and ammunition there. On seeing Constable Mustaq going outside the camp with arms and ammunition alone, Head Constable Shiv Lal and Constable Bugler Baldev Singh followed him to the Police Station and tried to pacify and disarm him. HC Shiv Lal agreed to give a written receipt if Mustaq Ahmed handed over to his arms and amn. At that movement Shri S N Tiwari, Assistant Commandant too entered the Police Station which infuriated CT Mustaq Ahmed and he instantly removed the safety pin of the grenade and lobbed the same on the table. Sensing the danger, Constable Bugler Baldev Singh who was standing nearby, reacted quickly exhibiting exemplary courage and devotion to duty to save the lives of CRPF/Assam Police personnel present in the room. Ignoring grave danger to his own life, Constable Baldev Singh picked up the grenade and tried to throw it out of the room. Unfortunately the grenade exploded in his hand. As a result, his hand above the right wrist was blown off and he also sustained splinter injuries in his thigh and stomach. Thus, his presence of mind, exemplary courage and devotion to duty without caring for own life saved many lives present in the room.

In this action, Shri Baldev Singh, Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of the high order.

This award is made for gallantry under Rule 4(i) of the rule governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 28th July 2001.


(BARUN MITRA)
DIRECTOR

No. 228—Pres/2003 - The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Central Reserve Police Force:-

NAME & RANK OF THE OFFICER

S/Shri

1. Kabuli Charan Mehri, Lance Naik (Now HC)
2. Ravinder Singh Chouhan, Constable, 41 Bn CRPF

Statement of service for which the decoration has been awarded:

On 30.11.2000, while escorting civilians from Sounder towards Pattimahai, CRPF party was fired upon by militants, Ct. Ravinder Singh Chouhan having spotted three militants firing from behind thick vegetation across the river immediately fired LMG burst at the suspected hideout. The militants tried to escape by firing indiscriminately. While one of them escaped, two entrenched themselves in an adjoining Nullah. In a gallant attempt, Ct Ravinder Singh Chouhan and L/NK Kabuli Charan Mehri rolled down with their weapons approximately 300 feet and crawling across a small hanging bridge closed down on to the militants hideout. Ct. Ravinder Singh Chouhan placed himself at one end of Nullah opening with LMG while L/NK Kabuli Charan Mehri, amidst heavy firing, climbed up and blocked other end of the Nullah. On being challenged, militants ran down towards river Chenab firing indiscriminately where Ct. Ravinder Singh Chouhan who was already in position, fired a burst from his LMG killing one of the militants on the spot and injuring other. The killed militant was later on identified as Abu-Walid a Pakistan national and District Commander of Lashkar-e-Toiba. The following arms/amns. were recovered from the site of gallant action:-

AK-47 (1), Magazine (4), Utility Pouch (1), 7.62 x 39 MM Rds (75), Combination Tool (1), Grenade (1), Wireless Set (Yassu) (1),

In this encounter, S/Shri Kabuli Charan Mehri, Lance Naik & Ravinder Singh Chouhan, Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of the high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4(i) of the rule governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 30th November 2000.


(BARUN MITRA)
DIRECTOR

No. 229–Pres/2003 - The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officer of Central Reserve Police Force:-

NAME & RANK OF THE OFFICER

Shri Sunil Hazara,
Constable, 79 Bn

Statement of service for which the decoration has been awarded:

On 19/5/2002 in a pre-down swoop at about 0330 hrs, 2-3 Fidayeen militants suddenly attacked on a combined Army-CRPF (B/79) Camp at village Chassana under Police Station Mahore, District Udhampur (J&K). They took the rear sentry Constable Suraj Bali Rai by surprise shooting him dead in a burst of fire. One Fidayeen militant lobbed hand grenade into the living barrack through window injuring 6 personnel of B/79 Bn CRPF. The Army also came under heavy firing from militants in which 3 Army personnel died instantaneously in explosion of grenade. In the glow of a couple of para Bombs fired by the Army, the CRPF Sentry Constable Pritam Singh who was at LMG post noticed a fleeing militant on the CRPF side of the camp. He fired from his LMG. However the militant managed to jump down the ridge on the roadside. The firing stopped around 0400 hrs. Meanwhile after confirming from the Army that one fidayeen had fled away by the side of the Army encampment, a strong section of B/79, CRPF started combing operation in the first light, in the surround area of the camp. One fleeing militant, who had taken the cover at a short distance from the camp, opened fire on the search party of B/79 Bn, CRPF. The troops immediately took position to locate the Fidayeen. In the mean time Constable Sunil Hazara of 79 Bn; who was in the search party, noticed the movement of the Fidayeen and in a bold display of exemplary courage and without caring for his own life, stalked up to the hiding militant and fired from a very close range which resulted in killing of the Fidayeen on the spot. During this action, Constable Sunil Hazara barely escaped the burst of fire from the fidayeen as he was in the forefront of the search party. One AK 47 Rifle, round-99, and grenade-2, wireless set-1, wrist watch -1 and cash Rs 1100/- etc were recovered from the possession of the slain militant.

In this encounter, Shri Sunil Hazara, Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of the high order.

This award is made for gallantry under Rule 4(i) of the rule governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 19th May 2002.


(BARUN MITRA)
DIRECTOR

No. 230—Pres/2003- The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officer of Central Reserve Police Force:-

NAME & RANK OF THE OFFICER

Shri R.K Gupta,
Assistant Commandant

Statement of service for which the decoration has been awarded:

On the basis of input developed through civil sources regarding movements of militants in upper reaches of Sarthal / Roulka area under P.S. Bani, an operation was planned to nab the militants on 18-05-2002. Shri R.K. Gupta, AC, OC D/39Bn, CRPF at Khadwa and STF personnel at out post Lowang/Roulka along with 2 platoons of D/39 Bn CRPF, one Section of B/39 Bn CRPF out Lowang, STF personnel and one section PS Bani launched an operation to nab the militants. When the parties were approaching towards the destination, STF party Roulka noticed some movements near Gaugala. On being challenged, militants opened fire and an encounter ensued. Shri R.K. Gupta, AC, OC D/39 Bn, CRPF took charge of the situation and directed the troops to cordon the area from all sides. As the area was covered with thick grass/shrubs no one was visible, however firing continued from both sides. Using presence of mind Shri R.K. Gupta ordered to lob hand grenades towards the direction of militants and simultaneously to keep firing. On stopping of firing from militant side after one hour, a search party led by Shri R. K Gupta, AC carried out search of the area where blood stain marks were observed at distance leading towards a nearby nallah. Shri Gupta alongwith his party crawled towards the nallah silently and traced out one militant hiding behind a big boulder. On seeing the approaching troops, the hiding militant opened fire on the party being led by Shri Gupta, who had a narrow escape. Shri Gupta immediately took position and fired from AK-47 Rifle killing the militant instantly. The killed militant was later on identified as Mohd. Aiaz Bhatt @ Khush Nasseb @ Pardesi S/o Din Mohd. Of Distt. Kathua (J&K), Bn Commander of Hizab-Ul- Mujaheeding out fit. AK 47 Rifle-one, AK 47 Magazine-four, AK 47 rounds- sixteen & cash Rs.360/- were recovered from the slain militnat.

In this encounter, Shri R.K. Gupta, Assistant Commandant displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of the high order.

This award is made for gallantry under Rule 4(i) of the rule governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 18th May, 2002.

(BARUN MITRA)
DIRECTOR

No. 231-Pres/2003 - The President is pleased to award the President's Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Central Reserve Police Force:-

NAME & RANK OF THE OFFICER

S/Shri

1. Joginder Singh, Sub-Inspector/GD (Posthumous)
2. Net Ram, Head Constable/GD (Posthumous.)

Statement of service for which the decoration has been awarded:

3 platoons of B/98, CRPF were detailed for deployment for Parliamentary election duties on 16.02.1998. One platoon of B/98 under SI/GD Joginder Singh left coy. Hqrs. Lamphelpat at 0730 hrs. and reported to SP Imphal at Porampat. The convoy with MR Bn moved for Irillberg. SI/GD Joginder Singh was the party commander of CRPF Platoon and HC/GD Net Ram was the platoon Havildar. SI/GD Joginder Singh after properly briefing his men about the movement, took position in the cabin of one of the civil trucks. HC/GD Net Ram carrying 2" Mortar alongwith 21 HE Bombs and six para bombs occupied his position alongwith troops in CRPF truck at rear of the Convoy. As the Convoy approached Irilbung Bridge, all the vehicles of 7 MR crossed the bridge and sped away leaving the CRPF Convoy behind. When CRPF convoy / vehicles were about to cross the bridge, all the three vehicles were trapped in an ambush led by about 30 PLA activists who resorted to heavy firing upon CRPF convoy. CRPF personnel quickly retaliated and the exchange of fire continued for about 30-40 minutes. The other personnel of the Convoy i.e. Platoon of 7 MR Bn which was about 1 KM ahead of the ambush site did not respond immediately to the attack though they reached the spot later. As soon as the firing started SI/GD Joginder Singh ordered his men to jump out of the vehicles, take position and retaliate & he himself jumped out of the vehicle, took position and took on the UGs with his AK-47 Rifle. During the exchange of fire, he sustained multiple bullet injuries but inspite of his injuries he continued firing on the UGs and simultaneously motivated and encouraged his men to continue firing by saying that Himmat Nahin

Harna, fire jari Rakho, Koi na Koi madad karne ayega. He despite serious injuries kept on exhorting and encouraging his men during counter attack. During the ambush/counter ambush, 8 CRPF personnel were killed, 16 injured and only 3 could manage to come out unscathed. In the retaliatory fire by SI/GD Joginder Singh, one militant was also killed and the others escaped from the site thereby thwarting the attempt of UGs to snatch the weapons of CRPF personnel. Later SI/GD Joginder Singh also succumbed to his injuries. When the UGs started firing, HC/GD Net Ram who was sitting in the rear of the truck also jumped out of the vehicle displaying utmost presence of mind, took position and opened fire at UGs with HE bomb with his 2" mortar. Unfortunately few of the bombs did not explode. HC/GD Net Ram realizing the futility of using 2" mortar, crawled to a nearby injured person, picket up his weapon and retaliated UGs fire and managed to slow down the advance of the UGs who were trying to come down from the hill slopes with the intention to kill the injured CRPF personnel and snatch their weapons. In this exchange of fire, he too sustained multiple bullet injuries and later succumbed to the injuries.

In this encounter, (Late) S/Shri Joginder Singh, SI & Net Ram, Head Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of the high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4(i) of the rule governing the award of President's Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 15th February 1998.


(BARUN MITRA)
DIRECTOR

No. 232—Pres/2003 - The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Central Reserve Police Force:-

NAME & RANK OF THE OFFICER

S/Shri

1. P.A. Dubey, Assistant Commandant
2. Nisar Ahmed, Constable/GD
3. Vinay Kumar, Constable/GD

Statement of service for which the decoration has been awarded:

On 20.01.02 at about 0330 hrs. information was received through civil police that a group of ULFA activists have taken shelter in a house of one Md. Akbar Ali Ahmed in village Tolti Part-II under PS Golakganj (Assam). One platoon of C/24 and one section of Hq/24 Bn CRPF under the command of Shri P.A. Dubey, AC alongwith a section of Assam Police immediately left for Vill-Tolti for conducting special operation. When the group reached near the house, Ct Vinay Kumar sighted a man standing inside the house. On being challenged the man who happened to be a militant immediately opened fire on the CRPF party. Ct Vinay Kumar and Nisar Ahmed responded with electric speed and risking their own lives both CRPF Constables shot down the militant. The Militant who was hiding inside the house got alerted and opened heavy, indiscriminate and incessant fire on the CRPF party. He also hurled grenades at them. CRPF personnel without caring for their life retaliated gallantly. The firing continued for about half an hour. In this encounter, a militant shooting at CRPF members from the house was shot dead before he could inflict any damage. After a fierce exchange of fire, when firing ceased, a search was carried out by CRPF party on orders of Shri P.A. Dubey, AC. During this a militant suddenly rushed out firing his weapon on the CRPF party in a bid to kill the CRPF commander and escape. He could not succeed because Shri P.A. Dubey, AC showing great courage and alert reaction killed the militant in a close quarter battle, thereby liquidating the entire militant group in their hide out. In this encounter, total four hardcore ULFA militants were killed without any casualty to the troops. During subsequent search One AK-56 Rifle, one Chinese pistol with empty magazine, one wireless set (made in Singapore) with antenna and a sizeable quantity of live rounds were recovered. The militants killed in the operation were later identified as 1) Dipen Deka 2) Jagat Nath 3) Rajani Dass 4) Prasm Nath.

In this encounter, S/Shri P.A. Dubey, AC, Nisar Ahmed, Constable & Vinay Kumar Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of the high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4(i) of the rule governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 20th January, 2002.


(BARUN MITRA)
DIRECTOR

No. 233—Pres/2003 - The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Central Reserve Police Force:-

NAME & RANK OF THE OFFICER

S/Shri

1. Mohd. Kalamuddin, LNK (Now HC), 119 Bn.
2. Mahesh Singh, Constable, 119 Bn.

Statement of service for which the decoration has been awarded:

On 12.02.2001 at about 1940 hrs L/NK Mohd. Kalamuddin was on patrolling duty inside the camp. At that time some Fidayeen militants attacked B/119 Bn. CRPF Camp who lobbed grenades, fired rockets followed by heavy firing. L/NK Mohd. Kalamuddin immediately rushed towards parapet wall and retaliated against the attack. Though during encounter he sustained bullet injury he did not loose his calm and killed the fidayeen militant who was trying to sneak inside the camp. Constable Mahesh Singh who was on sentry duty at Morcha No.8 returned the fire of militant immediately. When he found it was a bit difficult to lay more effective fire on militants he came out with his LMG from the Morcha and effectively retaliated the fire. Inspite of being injured he did not loose his calm and killed the fidayeen militant who was trying to sneak inside the camp with sinister design to cause grave damage to lives of B/119 personnel in the campus. He fired 79 rounds from his LMG.

In this encounter, S/Shri Mohd. Kalamuddin, LNK (Now HC) & Mahesh Singh, Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of the high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4(i) of the rule governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 12th February 2001.


(BARUN MITRA)
DIRECTOR

No. 234--Pres/2003 - The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officer of Central Reserve Police Force:-

NAME & RANK OF THE OFFICER

S/Shri

1. A.K. Bajpai, Deputy Commandant.
2. Narayan Singh, Sub-Inspector

Statement of service for which the decoration has been awarded:

On 16th January, 2001 six Fidayeen militants of L-e-T in Army uniform followed the motorcade of Shri Ali Mohd Sagar, Minister PWD J&K in a Mahindra Jeep of State Forest Department which was hijacked on the same day, to Airport pretending themselves as escort party of the Minister. They also dodged the Civil Police Naka by impersonating as Minister's escort. After crossing the Civil Police Naka, these militants rushed in a speed to Gate No. 1 where they were stopped by SI Naryan Singh, the post Commander as carrying weapon beyond this point was strictly prohibited. These militants immediately jumped out from their jeep and started lobbing grenades towards the sentries on duty and opened indiscriminate firing to get an entry to Airport. CRPF sentries immediately took position and retaliated the attack. IG (Ops) CRPF Srinagar who was on his way to Sonawar, on getting information of Fidayeen attack at Gate no.1, rushed and reached the spot within minutes and took command of the operation in his hand. Constable S.K. Kushwaha performing duty at Gate No. 1 at Airport retaliated the fire and killed one of the militant near his Morcha and injured another one. In the process, he was hit by bullet from the militant and Shri Kushwaha continued firing till he fell down and became unconscious. Later he was rushed to hospital and succumbed to his injured enroute. Shri Jagpati Ram, HC was performing checking/frisking of vehicles/passengers in front of X-Ray room. On noticing the militant attack, he picked up his rifle from the Morcha and took position near Morcha No. 2. He retaliated the fire and killed one out of two militant who were trying to cross the barrier of Gate no. 1. He also engaged the other militant and injured him. The injured militant fired back hitting Shri Ram. Though HC Ram tried to crawl towards Morcha No.1 to change his position, he collapsed and died there. Shri Narayan Singh, SI performing duty of checking/frisking, saw a jeep rushing with great speed towards Gate No. 1. He tried to stop the jeep, the militant stopped their vehicle and lobbed grenades and opened fire on the sentries. Shri Narayan Singh immediately took position and retaliated the firing and neutralized one of the militant who was earlier injured in cross firing but was trying to rush towards the Airport. One of the militants who managed to enter the X-Ray Room, started spreading bullets resulting in injury to two Mahilia CRPF personnel. Ms. Bindu Kumre, Constable picked up her Rifle and fired towards the

militant. One militant from other side fired back on Ct (M) Bindu Kumare injuring her seriously. Shri Ram Prakash Yadav Head Constable who was performing duty at X-Ray machine, immediately rushed toward the Mahila Cabin and picked up weapons of one of the Mahila Constables. Seeing the militant advancing towards him, he jumped on the militant to disarm and killed him. However, he was injured by the militant and later on succumbed to his injuries. Shri P.C. Joshi, IGP (Ops) had already reached the spot. Shri Joshi crawled and reached LMG Morcha No. 1 amidst heavy firing. He took the control of the whole operation. Shri Joshi also started giving cover fire towards X-Ray room where two militants tried to escape and enter X-Ray room. One militant who was hiding in the shops in the left side, threw a grenade and started indiscriminate firing. Shri Joshi ordered his men to engage the sixth surviving militant. Shri Joshi narrowly escaped from the militant fire. Shri Joshi ordered his men to fire and lob grenades in the shop where militant took shelter. Due to grenade blast the shops were gutted and damaged badly. From the search of debris the body of the militant and weapon were recovered. Shri A.K. Bajpai, Dy. Comdt also took position in the Nalla opposite to X-Ray room and gave covering fire towards the Gate No. 1. After pinning down the militants he crawled towards Morcha No. 3 to encourage his men. He also tried to fire towards the shop adjacent to Airport where the sixth militant had escaped. Shri A.K. Sahu, AC took his Rifle with his driver drove straight towards Gate No. 1 and took the position. He covered the door of the X-Ray room opening towards Airport side and blocked the escape route of the militant. Shri Sahu engaged the militant from the Airport side till the militant was eliminated. 5 AK-47, 9 AK-47 Magz and 102 AK-47 grenade were recovered from the site of encounter.

In this encounter, S/Shri A.K. Bajpai, Dy. Comdt. & Narayan Singh, Sub-Inspector displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of the high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4(i) of the rule governing the award of Police medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 16th January, 2001.


(BARUN MITRA)
DIRECTOR

No. 235–Pres/2003 - The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officer of Indo-Tibetan Border Police:-

NAME & RANK OF THE OFFICER

Shri Harjeet Singh,
Inspector/GD 10 Bn.

Statement of service for which the decoration has been awarded:

On 22.10.2002 at about 0955 hrs., an information regarding presence of terrorists in house of one Latif Bakarwal, R/O Hingpur, Distt : Anantnag (J&K) was received at Kamar Post. To maintain surprise a party comprising of 3 SOs and 26 Ors, including one surrendered militant, moved in a Civil bus upto Khadar. The party was divided in three teams each led by one Subordinate Officer who then moved on foot upto the site. Insp/GD Harjeet Singh was Incharge of one of these teams. He alongwith 08 ORs and one surrendered militant as his buddy cordoned the Northern side of the suspected house by 1045 hrs. as per planning. Shri R.S. Chauhan, DC who reached the operation site at 1115 hrs. after necessary co-ordination with all the parties, asked Insp. Harjeet Singh to search the suspected house. Insp/GD Harjeet Singh placed HC/GD Nand Lal and Ct/GD Sanjeev Sharma with LMG on the South – Western side of the house and he alongwith his buddy and a local as guide went inside the house. Having searched the ground floor when they were approaching the first floor through wooden ladder, they observed a girl, 16-17 years old with 02 children sitting inside the room and the girl indicated presence of our troops to the terrorists present in the room. In the meantime Insp/GD Harjeet Singh observed 02 militants. On seeing the terrorists Insp/GD Harjeet Singh along with his buddy swiftly withdrew from the house, as then it was not possible to react against the militants as they were at an advantageous position and alerted troops deployed in near vicinity of the house. He positioned himself in the thick undergrowth on the Northern side of the house. Terrorists rushed to the main gate and started indiscriminate firing using two

children as human shield. HC/GD Nand Lal and Ct/GD Sanjeev Sharma who had taken cover behind a boulder at 25 mts. from the house came under heavy fire of militants. By providing covering fire, lives of these ORs were saved and they were shifted to a safe distance. The party also saved lives of two innocent children who were retained as hostages by the terrorists and they were evacuated without any harm. Insp/GD Harjeet Singh played a key role in saving their lives. Intense firing continued intermittently for about 30 minutes. Finding themselves trapped terrorists set the house on fire with a view to create confusion and as a deception measure. Two shells of R.L. were fired by the party at the house as a result of which the terrorists jumped outside the window towards South-West side and crawled towards northern direction in a bid to escape from the site using thick smoke, which has enveloped the house and thick undergrowth on Northern ridge. Insp/GD Harjeet Singh noticed some disturbance in adjacent bushes but could not observe the terrorist. He anticipated the location of terrorist and was about to fire in the bushes. The hiding terrorist started indiscriminate fire of AK-47. Insp/GD Harjeet Singh facing the volley of bullets charged the terrorist from a distance of about 20 yards with his AK-47 rifle, which resulted in on the spot killing of terrorist. The killed terrorist was later identified as Mohd. Irfan @ Abu Usamuddin, Bn Comdr. L-e-T Tanzim, resident of Pakistan. The following recoveries were made from the slain terrorist :-

(a)	AK-56 Rifle	:	One
(b)	AK-56 Magazine	:	Four
(c)	AK live amn.	:	29 Rds.
(d)	Hand Grenade	:	Four(destroyed in situ)
(e)	Electronic detonator	:	Twelve(destroyed in situ)
(f)	Multipurpose pouch	:	One

In this encounter, Shri Harjeet Singh, Inspector displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of the high order.

This award is made for gallantry under Rule 4(i) of the rule governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 22nd October 2002.


(BARUN MITRA)
DIRECTOR

No. 236—Pres/2003 - The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officer of Indo-Tibetan Border Police:-

NAME & RANK OF THE OFFICER

Shri Hosiyar Singh,
AC/GD, 16 Bn.

Statement of service for which the decoration has been awarded:

On 17th June, 2002 at 0400 hours, Shri Hosiyar Singh, AC/GD got a reliable information that a terrorist of HUM outfit, resident of Bisran village wants to surrender to ITBP. Immediately, Shri Hosiyar Singh informed Tac Hqrs and moved along with his source and adequate strength to Bisran village. After properly sanitizing and cordoning the area, Shri Hosiyar Singh along with four others approached concerned house and asked the terrorist to surrender. The terrorist, Liyaqat Ali, came out of the house and surrendered. Spot interrogation of surrendered terrorist Liyaqat Ali revealed that two dreaded terrorists of HUM outfit might be hiding in a hideout in general area Tuti. Shri Hosiyar Singh along with party rushed to the hideout. The moment party reached around 100 yards from the hideout, militants from their hideout started firing. Shri Hosiyar Singh, AC immediately asked his party to cordon the hideout and wait till re-enforcement from Tac. Hq. arrives. The terrorists continued to fire intermittently which was retaliated by Shri Hosiyar Singh, AC and his team. Additional troops reached the cordon site and were positioned at the sensitive places. Shri Hosiyar Singh finding the terrorists well entrenched in the hideout, ordered fire of few shots of Rocket Launcher. The moment 3rd shot was fired, one of the militants ran out of the hideout firing indiscriminately to escape towards Bisran nala. Shri Hosiyar Singh, AC positioned on a dominating place fired at the escaping terrorist hitting him in the leg. The injured terrorist fell in the bushy area but continued to fire at security forces. Shri Hosiyar Singh, AC realizing that any delay will permit the terrorist to escape through the nala, crawled almost 50 metres taking cover of boulders and

trees. The terrorist expecting a chase by security force was firing backwards continuously making attempt to escape. This made pursuit very difficult. A volley of bullets narrowly missed AC Hosiya Singh, hitting the rocks in front but undeterred by this and knowing that it could be a deadly pursuit, the officer exhibiting tremendous courage and quickly changed his position, retaliating with accurate and continuous bursts which hit the terrorist hiding in the front behind boulders killing him instantaneously. Meanwhile the second terrorist continued to fire from the hideout. Thick vegetation and boulders in the front corner of the house where he was hiding provided him a good cover. Fire from all three directions by own troops was proving ineffective. Shri Hosiya Singh, AC realized that further delay would facilitate escape of the terrorist in cover of darkness. He asked the party to position at the front to keep the terrorist engaged. In spite of knowing the risk involved to his life in the move, Shri Hosiya Singh, AC along with four commandos took a detour and entered the house from the rear, reached very near to the room, wherefrom the terrorist was firing and lobbed two grenades through the window, which were enough to neutralise the terrorist. The two terrorists killed in the action were identified as :-

- (i) Shahnawaz Ahmed S/o Mirbaz Khan r/o Bisran, Teh : Gandoh, Distt : Gandoh, Doda (J&K) – HUM Outfit.
- (ii) Shabir Ahmed S/o Abdul Latin, r/o Vill : Changa, Teh : Gandoh, Dt : Doda (J&K) : HUM Outfit.
02 AK-47/56 Rifles, 4 AK Magazines, 250 live rounds, 8 grenades, one VHF set, Rs. 910/- in cash, 5 blankets etc. were recovered from the site of the action.

In this encounter, Shri Hosiya Singh, AC/GD displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of the high order.

This award is made for gallantry under Rule 4(i) of the rule governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 17th June, 2002.



(BARUN MITRA)
DIRECTOR

No. 237-Pres/2003- The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officer of Indo-Tibetan Border Police:-

NAME & RANK OF THE OFFICER

Shri Khurshid Ahmed,
Constable/GD 10 Bn.

Statement of service for which the decoration has been awarded:

On a specific information on 03.09.02 regarding presence of a militant of HM outfit namely Mukhtiar Ahmed Rather code name 'Harish' in general area Hal Sidar forest, a cordon and search ops code named 'OP PRITPAL' was planned and conducted under the overall direction of Shri P.P. Singh, IPS, DIG(J&K-I) alongwith Gos-3, Sos-3 and 60 ORs. Three parties were formed to encircle the militant from three different directions and after cordoning off the area, search was started at 1400 hrs. One of the parties came under fire from the militant hiding in a groove covered with thick vegetation. The fire was retaliated by the troops, though exact location of the militant could not be spotted. To avoid any casualty, it was essential to know the location of the militant, hence one Inspector and Ct/GD Khurshid Ahmed opened deceptive fire. The militant reacted by firing volleys of bullets and the fire indicated that the hiding militant was changing his locations and not permitting security force teams to plan their move. Entering in thick vegetation without neutralizing the militant would have been a suicidal move. The exchange of fire intermittently continued for more than 2 hours. Ct/GD Khurshid Ahmed realized the present strategy will help the militant to escape during the dark hours. Ct/GD Khurshid Ahmed exhibiting an unparalleled concern for his comrades, asked his Insp/GD Ashok Kumar Yadav to permit him to move in the bushy area while providing him covering fire. Without losing much time, Ct/GD Khurshid Ahmed sensing the location of the militant moved deep inside vegetation very stealthily while his other team members ensured diversionary fire. He made very swift and quite moves while trying to make out

the location of the militant through his fire knowing fully well that there could be grave danger to his life any moment since the militant was changing positions frequently. Suddenly behind a boulder he found himself face to face with the hiding militant at a distance of barely 10 metres. The militant who was taken by complete surprise fired a burst at Ct/ Khurshid Ahmed which nearly missed him and in swift retaliation, he opened burst fire from his AK-47 which hit the militant killing him on the spot. The killed militant was later identified as Mukhtiyar Ahmed Rather s/o Shri Gulam Nabi Rather r/o Village : Larikpura, PS & Teh : Doru, Distt : Anantnag (J&K) belonging to HM tanzeem.

One AK-47 Rifle with 4 magazines & 30 ammn. and one multi-purpose pouch were recovered from the slain militant.

In this encounter, Shri Khurshid Ahmed, Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of the high order.

This award is made for gallantry under Rule 4(i) of the rule governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 3rd September 2002.


(BARUN MITRA)
DIRECTOR

No. 238-Pres/2003- The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officer of Indo-Tibetan Border Police:-

NAME & RANK OF THE OFFICER

Shri Rattan Lal,
Constable/ GD, 16th Bn.

Statement of service for which the decoration has been awarded:

ITBP Post situated at Gawari received information on the midnight of 20/21.5.02 that one Afghani militant is taking shelter in an isolated house situated near village Ichher in General area Gawari. The information was promptly disseminated to ITBP Post, Kalothran, Sote and to Tac HQrs of the unit, the troops were mobilized immediately and the suspicious house was cordoned in pitch darkness. The militant sensing presence of security forces outside fired bursts from his automatic weapon which was retaliated by the troops. The cordon was further tightened and squeezed. The militant hiding inside was warned, but to no avail. Around 0450 hours, one militant was spotted jumping out of the window, by Constable Rattan Lal who was positioned on the rooftop of an adjoining house. Taking advantage of darkness and low lying bushy nala area, the militant tried to escape into near by village houses. Indiscriminate firing and grenade lobbing by fleeing militant did not permit troops to move closer and firing by our troops could have resulted in own casualties in cross firing. At that moment Constable Rattan Lal realizing that any further delay will permit the militant to make an escape to nearby village houses, he immediately jumped in the bushy nala after the escaping militant while firing from his LMG knowing fully well that there was no covering fire for him from own troops and that there was grave risk to his life as the escaping militant was firing volley of bullets indiscriminately and throwing grenades. CT/GD Rattan Lal undeterred by all this fired two bursts from his LMG accurately which hit the dangerous Afghan militant and killed him instantaneously, thereby also saving his colleague from getting into cross fire. The killed militant was identified as Mushafiq Alid of L-e-T Tanzeem. One AK-56 Rifle and 3 magazines, 35 live rounds, one pouch, one diary etc. were recovered from the slain militant..

In this encounter Shri Rattan Lal, Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of the high order.

This award is made for gallantry under Rule 4(i) of the rule governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 20th May, 2002.


(BARUN MITRA)
DIRECTOR

No. 239-Pres/2003 - The President is pleased to award the President's Police Medal for Gallantry to the under mentioned officer of Indo-Tibetan Border Police:-

NAME & RANK OF THE OFFICER

Shri Ashok Kumar Yadav,
Inspector/ GD 10th Bn

Statement of service for which the decoration has been awarded:

Coy. Commander 'Alfa' Coy. located at Kamar Post received an input from reliable source that militants would travel in a civil bus between Kamar and Kapran on 13.12.02. Consequently, an operation was planned and a group of trained commandos as Quick Reaction Team under command of the Coy. Commander was kept in readiness at Kamar post awaiting final confirmation from the source. The initial information was confirmed at about 1615 hrs. that a group of three militants had boarded a civil bus bearing No. JK-01-C-3422 plying between Kamar and Kapran. The Coy. Commander promptly came into action. A party consisting of officer-1, SOs-2 and Ors-22 moved in two bullet proof vehicles towards Kapran to apprehend the militants travelling in the civil bus. On way to Kapran the bus was identified and when the Gypsy was just behind the bus No. JK-01-C-3422 the militants got alerted and the moment ITBP commandoes stopped the bus at Kapran at about 1630 hrs., three militants jumped out of the bus from the front door and opened indiscriminate fire on the vehicles / troops. Insp/GD Ashok Kumar Yadav sitting in the rear seat of the vehicle reacting with tremendous agility and swiftness showed unparallel courage and remarkable presence of mind. He, in face of volley of bullets being fired by militants, asked his comrades to provide him fire cover which was immediately given and himself with utter disregard to his personal safety knowing fully well that he was heading for certain death, charged the militants from a distance of merely 15-20 yards in a heroic manner spraying bullets from his AK-47 assault rifle, single handedly in one attempt downed all the three militants. The three militants were not at all expecting any such kind of action and were completely taken by surprise as they

had just jumped out of the bus firing indiscriminately. Later during the search of the bus, one more AK-56 rifle was recovered, which was perhaps left behind by the fourth terrorist who managed to escape alongwith the civilians. Shri Yadav not only killed the militants but also ensured the safety of 32 bus passengers. The three killed militants of L-e-T Tanzim were identified as :-

- (i) Abu Bakar – Foreign militant from Pak
- (ii) Zaid – Local militant
- (iii) Abdul Rehman – Local militant

04 AK-47/56 Rifles, 14 AK Magazines, 368 AK amn., 10 Hand grenades, one radio set, 3 mutipurpose puches and one camo jacket was recovered from the killed militants / site of action.

In this encounter, Shri Ashok Kumar Yadav, Inspector displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of the high order.

This award is made for gallantry under Rule 4(i) of the rule governing the award of President's Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 13th December 2002.



(BARUN MITRA)
DIRECTOR

No. 240—Pres/2003 - The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officer of Indo-Tibetan Border Police:-

NAME & RANK OF THE OFFICER

Shri K H Rajendra Singha
Constable/GD 11th Bn.

Statement of service for which the decoration has been awarded:

Operation Sambora was conducted in the morning hours of 01.05.02 in Sangripura Mohalla of Sambora Village, approximately 1 Km from 11th Bn ITB Police Tac HQ, Lethpora situated in the west of Hatiwara – Kakapora Road. Reacting to a firing sound, heard by the area domination patrol of 11th Bn ITBP, party consisting of the Commandant, 03 officers and 18 Ors from Tac HQ rushed towards Sangripura Mohalla of Sambora Village from two different directions. Second party consisting of two SOs and 19 Ors from E Coy located at Kakapora also left CHQ to marry up with THQ party. The operation was carried out jointly by ITBP & SOG. The two ITBP parties working as striking and Covering Parties were led by officers. Similarly, two teams were also composed by SOG. Search of the houses started without delay and four of the houses were cleared by the joint teams. While carrying out the search of the fifth house, a heavy volume of fire came on the party in which one Insp/GD of ITBP got injured. On disclosure of the location of the militants, the suspicious house was immediately cordoned. CT/GD K.H. Rajendra Singha with LMG took a strategic position in front of the house facing the militants barely 12 feet away. To avoid the casualty of the security forces, Ct/GD K.H. Rajendra Singha fired accurately on the militants in the house to keep their heads down. The militants realizing that they are being surrounded, one of them tried to escape by jumping out of the window. Ct/GD K.H. Rajendra Singha anticipating such move from the militants immediately without caring for his own safety, picked up his LMG and rushing towards the direction, came face

to face with the militant, knowing fully well that there was great risk to his life and brought effective fire on him firing from his LMG killing him on the spot. Similarly another militant was also killed by SOG personnel during the search of the houses. The killed militants of HM were identified as :-

- (i) Shaukat Ahmed Dar s/o Sh. Abdul Aziz Dar r/o Sambora
- (ii) Sheh Nawaz Ahmed Khandey, Alias Sakir, s/o Shri Jallaludin Khandey r/o Village Laddu (Distt : Pulwama)

One Rocket Launcher, 2 AK-47 Rifles, 7 AK-47 Magazines, 104 AK series ammunition, one UBGL & one Chinese Pistol with magazine were recovered from the site of action.

In this encounter, Shri K.H. Rajendra Singha, Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of the high order.

This award is made for gallantry under Rule 4(i) of the rule governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 1st May 2002.


(BARUN MITRA)
DIRECTOR

No. 241—Pres/2003- The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Indo-Tibetan Border Police:-

NAME & RANK OF THE OFFICER

S/Shri

1. Ashok Kumar Negi, Dy. Comdt./ GD 16th Bn.
2. Santosh Kumar, Constable/GD, 16 Bn

Statement of service for which the decoration has been awarded:

In the wee hours of 3rd May, 2002, a cordon and search operation was planned by Shri Ashok Kumar Negi, Dy. Comdt. 16th Bn ITBP with the help of STF parties from Gawari and Bharti area with a view to mount pressure on militants in the area. The intention was to pressurise the militants to shift to the other side of the ridge in Swara forest area where they could be trapped by launching operation. As planned, as a result of the cordon and search operation conducted in Gawari and Bharti areas, the militants shifted to the other side of the ridge i.e. Talogra, Chilli, Malath and Hadal area, on expected lines. On a reliable information Shri Ashok Kumar Negi, DC planned an operation in co-ordination with local STF to lay an ambush in jungle area on the track leading to Nali Dolu. The troops were placed in ambush on the intervening night of 2/3 May and all possible escape routes were fully covered. Shri Negi was monitoring the informations on wireless set at a central place Gandoh, when at about 0845 hours on 3rd May while sitting in ambush the troops observed movement of 7-8 civilians on a nearby track who on being challenged opened fire (two of them) on the security force personnel. The fire was immediately retaliated. The militants tried

to escape while one militant succeeded in entering the nala the other was surrounded in the forest. Shri Negi along with the troops immediately reached the ops site. The militant surrounded in the forest was asked to surrender but he continued to fire intermittently. Shri Ashok Kumar Negi, Dy. Commandant decided to advance towards the militant to eliminate him before he succeeds in escaping in nala. Meanwhile, some of the troops rushed towards the nala to chase the other militant. Shri A.K. Negi, DC alongwith Constable Santosh Kumar being fully aware of the grave risk to their life since the position of the militant hiding in the forest was not at all known, crawled almost 100 mtrs down the nala upto the militant. On seeing slightest movement close by, the militant fired a volley of bullets which nearly missed Shri Negi who was now face to face with the militant being in the front. Shri Negi in a very swift reflex action retaliated killing the militant on the spot. This Pak trained militant was later identified as Mohd. Ayub code name Mosom of HM Outfit, a tehsil commander. Shri A.K. Negi, DC, thereafter immediately moved towards nala alongwith his team. The cordon team placed in advance confirmed presence of the other militant in bushy part of the nalas & his further escape was prevented. Locating him was a risky task as he was not disclosing his position inspite of deceptive fire by the troops. Shri A.K. Negi, DC deputed a small team including STF personnel to move into the nala stealthily. Ct. Santosh Kumar once again volunteered for this job. It was risky and time consuming but there was no other option. Ct. Santosh Kumar showing an unparalleled courage crawled from bush to bush leading the team with utter disregard to his personal safety as he could have been targeted any moment. Suddenly he realized that the militant had seen him approaching and before he could react, the militant lobbed a grenade which landed in front of Ct. Santosh, between the boulders missing him narrowly. In immediate retaliation, realizing that the militant was well entrenched behind the rocks, he lobbed a grenade and made a simultaneous assault on the militant taking cover of the rocks and firing from his AK-47 rifle, caring the least for his life. The militant who was taken by surprise by the grenade attack did not expect any such move and was killed on the spot by this lightening action of Ct. Santosh Kumar. The slain militant was identified as Bashir Ahmed Gujjar son of Mir Mohd. Gujjar of Haddal, Teh : Gandoh, working under the direct supervision of Tehsil Cdr. of HM Outfit. One AK-56 Rifle, 2 Magazines, one wireless set and one grenade was recovered.

In this encounter, S/Shri Ashok Kumar, Negi, Dy.Comdt. & Santosh Kumar, Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of the high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4(i) of the rule governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 3rd May 2002.


(BARUN MITRA)
DIRECTOR

No. 242—Pres/2003- The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officer of Indo-Tibetan Border Police:-

NAME & RANK OF THE OFFICER

Shri Chhunnu Lal,
Constable/ GD, 20 Bn.

Statement of service for which the decoration has been awarded:

On dated 29th August, 2002, Ct/GD Chhunnu Lal of 20th Bn, ITBP and other members were performing regular road clearance duty in Quazigund (J&K). The place was busy with civilian movement. Suddenly the party noticed two terrorists running away from the Central Co-operative Bank Quazigund apparently after looting the bank at gunpoint. Being a busy place, the terrorists were taking full advantage of the civilians as body shield to ensure their safe escape. The patrol party had a very little time to react to the situation. In the meantime, the escaping terrorists noticed the ITBP patrol and fired on it while fleeing. It was a difficult situation for the patrol party who had no other option but as they could not have opened fire being a crowded area. Const/GD Chhunnu Lal somehow was not ready to accept this daring escape of terrorists and immediately took a bold decision of running after the militants not caring of their indiscriminate firing. Being a sharp shooter, Const/GD Chhunnu Lal aimed and shot one of the militants known as Abu Mansoor alias Mansoor Bhai of L-e-T outfit in his head killing him on the spot. Ct/GD Chhunnu Lal continued his chase after the second terrorist and shot him in the leg. However, the injured terrorist managed to escape in nearby jungle taking advantage of the darkness.

The following recoveries were made after the action :-

- | | | | |
|----|-------------------|---|--------------|
| 1. | Rifle AK-56 | : | 01 |
| 2. | Magazine AK Rifle | : | 02 |
| 3. | Ammn. AK-47 | : | 55 rounds |
| 4. | Hand Grenade | : | 01 |
| 5. | Indian Currency | : | Rs. 31,830/- |
| 6. | Wireless Set | : | 01 |

In this encounter, Shri Chhunnu Lal, Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of the high order.

This award is made for gallantry under Rule 4(i) of the rule governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 29th August 2002.


(BARUN MITRA)
DIRECTOR

No. 243—Pres/2003 - The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Central Industrial Security Force:-

NAME & RANK OF THE OFFICER

S/Shri

1. Madan Mohan Fadikar, Constable
2. Manik Lal Ghosh, Constable

Statement of service for which the decoration has been awarded:

On 24.6.2002 S/Shri Madan Mohan Fadikar and Manik Lal Ghosh of CISF Unit ONGC Jorhat were deployed for escorting of convey of Seismic Survey party (GP-33) along with 2 other personnel in the rear escort jeep. The ONGC Seismic Survey Party (GP-33) was returning alongwith explosive jeep and instrumental van in a convoy after exploration work to the Base Camp situated at Sanjai Saw Mill, Birla Diphu. While the Seismic Survey party reached at Daldali Reserve Forest near Dhansiri Railway Station crossing at about 1630 hrs. the convoy was ambushed by the Dima Halim Danga (DHD) militant group numbering approximately 20. No sooner the first two vehicles had passed, the militant group of DHD started indiscriminate firing at the convey from both sides of the hillock of Daldali Reserve Forest Distt. Karbi-Ang-Long. Due to heavy fire, the rear Escort vehicle, in which Constable MM Fadikar and Ct M.L. Ghosh alongwith two other personnel were traveling immediately took left turn and they jumped out, took position on the ground and retaliated the fire on the direction of militants. After about 10 minutes of exchange of fire, the militant group stopped firing for a while and again started firing which was also retaliated by the Escort party. This retaliation compelled the militants to leave the place of ambush. The militants fired numerous rounds from AK-47, SMG etc. During encounter Ct MM Fadikar received a bullet injury below the left collar bone. Ct M.L. Ghosh sustained bullet injury on left neck. The attack lasted for about half an hour and after that the militant fled away from the scene of ambush possibly sustaining some injuries of their side. In spite of the injuries, the prompt and timely action on the part of Ct MM Fadikar Ct M.L. Ghosh resulted in saving the lives of 9 persons of ONGC/Contractor laboureres and 11 CISF personnel beside weapons, instruments van, and explosives in the jeep.

In this encounter, S/Shri Madan Mohan Fadikar, Constable, & Manik Lal Ghosh, Constable displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of the high order.

These awards are made for gallantry under Rule 4(i) of the rule governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 24th June 2002.


(BARUN MITRA)
DIRECTOR

No. 244—Pres/2003 - The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officer of Assam Rifles:-

NAME & RANK OF THE OFFICER

Shri Laxman Gautam,
Rifleman

Statement of service for which the decoration has been awarded:

On 18 October 2002, on receipt of information regarding location of NDFB militant hideout in general area Ringkangpur in Sonitpur District of Assam, a search and destroy operation was launched by the troops of 5 Assam Rifles in which Rifleman Laxman Gautam was given the task of leading scout. At about 0415 hours during the search to locate the hideout, Sh. Laxman Gautam observed some movement in the foilage. He instantly alerted the party commander but was fired upon. Undaunted by the accurate fire coming on him and regardless of his personal safety, he without losing any time, returned the fire and killed one militant on the spot. He further helped his Company Commander by drawing his attention towards fleeing militants and provided fire support, which resulted in killing of two more militants in the operation. The following were recovered from the killed militants:

(i)	9mm stengun MK II	01
(ii)	9mm pistol	01
(iii)	12 bore SBBL	01
(iv)	9mm live rounds	10
(v)	12 bore SBBL live rounds/FCC rounds	04
(vi)	Medical satchel	01
(vii)	Toiletries satchel	01

In this encounter, Shri Laxman Gautam, Rifleman displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of the high order.

This award is made for gallantry under Rule 4(i) of the rule governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 18th October 2002.


(BARUN MITRA)
DIRECTOR

No. 245–Pres/2003- The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officer of Assam Rifles:-

NAME & RANK OF THE OFFICER

Shri Shiv Lal
Rifleman

Statement of service for which the decoration has been awarded:

On 31st July, 2002, a column of 6 Assam Rifles led by Capt. R.M. Negi was tasked to search and annihilate militants of NSCN (IM) who had ambushed the Unit convoy earlier in Tirap District. The column reached at the periphery of Old Bunting village at approximately 0300 hours. Rifleman Shiv Lal was the leading scout of the column. After keeping the village under surveillance till 0500 hours, the column closed in on the village. As soon as the troops advanced, the leading scouts came under heavy automatic fire from the militants hiding in one of the houses, on the outskirts. Rifleman Shiv Lal displaying exemplary courage and skilled field craft, took cover, crawled and closed in on to the militants to have better observation and to retaliate the firing. He spotted two militants in the house. Thereafter with utter disregard to own safety Rifleman Shiv Lal moved forward under intense militant firing, took cover behind a boulder and shot at one militant, wounding the militant. The wounded militant continued to fire indiscriminately posing danger to other civilians in neighbouring houses as well as to own troops. Rifleman Shiv Lal in a rare display of courage beyond the call of duty, crawled upto the wounded militant who was still firing and thereafter at point blank range killed him with a burst from his rifle. The single handed action of Rifleman Shiv Lal prevented casualties to own troops. The killed militant was identified as S S Corporal K. Sema of NSCN (IM). The following weapons, ammunition and warlike material were recovered :-

(i)	AK-47 Rifle	:	01 No.
(ii)	AK-56 Rifle	:	01 No.
(iii)	Hand grenade	:	02 Nos.
(iv)	AK-47 rounds	:	60 Nos.
(v)	Detonator No. 33	:	02 Nos.
(vi)	AK-47 Magazine	:	04 Nos.

In this encounter, Shri Shiv Lal, Rifleman displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of the high order.

This award is made for gallantry under Rule 4(i) of the rule governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 31st July 2002.


(BARUN MITRA)
DIRECTOR

No. 246—Pres/2003 - The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officer of Assam Rifles:-

NAME & RANK OF THE OFFICER

Shri Laxman Singh,
Rifleman

Statement of service for which the decoration has been awarded:

On 24th September, 2002, as part of the ambush party deployed near Point 942 in RM 5105, Rifleman Laxman Singh gave a sterling account of his raw courage. As buddy of Havildar Sher Singh, he challenged a group of four to five suspects who were moving in suspicious circumstances on the track from village WAIKHONG RG 4905 towards the North. The suspects, instead of stopping retaliated with automatic weapons and Pistols on this group. With utter disregard to his personnel safety and without wasting time, he alongwith Havildar Sher Singh immediately returned the fire and chased them before the insurgents could escape away in darkness along the Eastern bank of Iril River. He closed on with them after a vigorous chase of approximately one and a half kilometre and reached SAGOLMANG market where another encounter ensued. In a reflex action Rifleman Laxman Singh fired at the insurgents who were trying to escape towards the hills to the South and killed them. The killed extremists were later on identified as KONSAM BOY and IRENGBAM SUNDAR alias NANAO of banned Peoples Liberation Army (PLA) of Manipur. Following Arms and ammunitions were recovered from them: -

- | | | | |
|-----|--|---|---------|
| (a) | 9mm Pistol | : | 01(One) |
| (b) | Live rounds of 9 mm | : | 06(Six) |
| (c) | Incriminating documents of Peoples Liberation Army | | |

In this encounter, Shri Laxman Singh, Rifleman displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of the high order.

This award is made for gallantry under Rule 4(i) of the rule governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 24th September 2002.


(BARUN MITRA)
DIRECTOR

No. 247—Pres/2003 - The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officer of Assam Rifles:-

NAME & RANK OF THE OFFICER

Shri Mohd. Riyakat,
Rifleman

Statement of service for which the decoration has been awarded:

One operation was conducted by a party of one Officer, two Junior Commissioned Officers and 30 Other Ranks on 17th December, 2002 at approximately 1400 hours against six armed undergrounds in plain clothes belonging to Kuki Revolutionary Army in the main Church of the adjoining village of Keithelmambi RG 4020 Senapati district Manipur. The Company Commander after carrying out a quick appreciation divided the party in 3 sub groups so as to approach the church area from the Eastern, South Western and North Western directions. Rifleman Cook Md. Riyakat was the leading scout of the party approaching the Church from North western direction under Naib Subedar Naseeb Singh. As the party was approaching the main church they were informed by the Company Commander that later's group had killed three of the six undergrounds and were pursuing the fleeing undergrounds. In the meantime the fourth underground was killed by another group approaching the church from South Western direction. While the company commander's group was closing in behind the fleeing undergrounds, Rifleman Cook Md. Riyakat noticed that there were approximately 10 to 15 armed undergrounds in uniform of Kuki Revolutionary Army deployed across the nallah who were firing on the company commander's sub group. The entire party had no prior information of the presence of these uniformed armed cadres. Realising the danger to his company commander's group, he asked Rifleman Laishram Ingoushab Singh to cover him and without waiting for instructions from his sub group commander he quickly dived behind a half constructed wall and brought down a heavy volume of fire on

the 15 undergrounds. This action was done with complete disregard to his personnel safety so as to draw their fire away from the company commander's sub group. The undergrounds were taken by surprise and immediately stopped firing at the company commander's group. They then began firing at Rifleman Cook Md. Riyakat alongwith his buddy who had by then moved to another position and started firing on the undergrounds. As a result, the undergrounds thinking that they have been surrounded abandoned their location and fled into the jungle. This timely action of Shri Riyakat not only saved casualty to the company commander's party but also resulted in the overall success of the operation resulting in killing of four hardcore undergrounds of Kuku Revolutionary Army without any casualty to own troops and civilians.

Undergrounds killed were identified as :


- (a) Hemsat Chongloi alias Hopson (Self Styled Captain), age 23 years
- (b) Mangsat Chongloi alias Commando, age 29 years
- (c) Paocha Chongloi alias Elvis, age 20 years
- (d) Paolen Dimngel, age 18 years

The following arms/ammn were recovered from the site of action:-

- | | | | |
|-----|--------------------------------|---|----|
| (a) | 9 mm Pistol | : | 02 |
| (b) | Magazine 9 mm Pistol | : | 02 |
| (c) | 9 mm Ball | : | 09 |
| (d) | Point 22 Rifle | : | 01 |
| (e) | Ammunition Point 22 | : | 07 |
| (f) | Pistol Pouch with Belt Leather | : | 01 |
| (g) | Pistol Pouch with Web Cloth | : | 01 |

In this encounter, Shri Mohd. Riyakat, Rifleman displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of the high order.

This award is made for gallantry under Rule 4(i) of the rule governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 18.12.2002.



(BARUN MITRA)
DIRECTOR

No. 248-Pres/2003 - The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officer of Ministry of Railways:-

NAME & RANK OF THE OFFICER

Dr. Satyendra Narayan Pandey,
Divisional Security Commissioner (RPF, BRC)

Statement of service for which the decoration has been awarded:

On the receipt of an information about attack by a mob on Sabarmati Express on 27.2.2002 at Godhra (Gujarat), Dr. S.N. Pandey, Divisional Security Commissioner (DSC) ordered mobilization of RPF Personnel from local RPF units with Arms/Ammunition and contacted ADRM for providing light engine and a coach for moving to Godhra. On reaching the site of carnage, Dr. S.N. Pandey meticulously organized protection of the stranded passengers with the limited staff available at his command. While he was persuading the stranded passengers of Sabarmati Express to board the train, a few shops started burning towards west side of track and immediately afterwards provocative calls were given from a place of worship on the East side of the track from where a mob of about one thousand armed men with sticks, swords etc. rushed towards the track pelting stones on the stranded passengers and Railway employees and others present there. At grave danger to his person and with utmost presence of mind, Shri Pandey stood firmly at 'A' Cabin and ordered firing and made adequate security arrangements for safe boarding of the remaining passengers of the train. 3 RPF personnel fired 19 rounds on his order, leading to permanent dispersal of the mob and ensured movement of the train under heavy security of RPF and GRP. Thus, Dr. Pandey avoided a second bout of carnage on the passengers of the ill-fated Sabarmati Express and saved the life and property of thousands of passengers, Railway employee and officers present there. Similarly, Shri Pandey organized RPF security all over Baroda Division and provided RPF escort to essential duty RPF Staff. Dr. Pandey continuously toured all the Railway colonies of Baroda

city. Even at the peak madness of arson and looting on 28.2.2003, 1st & 2nd March 2003 when hooligans were roaming in the surrounding areas causing injuries to persons and damages to properties, Dr. Pandey personally stood guard of the Pratapnagar and Sardarnagar Railway Colonies through out the night with a few RPF staff and did not allow hooligans to enter into Railway colonies. He organized the patrolling of the colonies with the bare minimum staff available at his command and motivated and encouraged his Force to face the hostile crowd effectively. Except for minor incident of attempt to loot, no untoward incident happened in the Railway colonies of Baroda area and no persons was injured in the colonies. Shri Pandey rushed striking force to stations from where any message of disturbances was received. In one such incident, Shri Pandey ordered movement of RPF team to Itola Railway Station in the night of 2nd /3rd March when an information was received that a mob had gheraoed the station. Timely arrival of RPF team led to the dispersal of the crowd, which was trying to attack 25 minority community persons who had gathered at the station for moving to safe place. RPF team rescued them, brought them safely to Vadodara station, kept them in RPF protection and sent them to their destinations safely. With the help of DRM/Vadodara Division, he organized shelter for 283 minority community Railway employees and their families in RPF offices at Pratap Nagar, Vatva, Eleelectric Loco Shed, Karchiya and at Ahmedabad Station. Inspite of severe risk to these people from hooligans of surrounding localities who kept on attempting to attack and loot and was able to assuage and allay the fears. Shri Pandey worked continuously for over 72 hours without rest, but amazingly without loss of calm and maintained helping demeanour.

In the above incidents, Dr. Satyendra Narayan Pandey, DSC, RPF(BRC) displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of the high order.

This award is made for gallantry under Rule 4(i) of the rule governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 27th February 2002.



(BARUN MITRA)
DIRECTOR

No. 249–Pres/2003 - The President is pleased to award the Police Medal for Gallantry to the under mentioned officers of Madhya Pradesh Police:-

NAME & RANK OF THE OFFICER

S/Shri

1. Ram Niwas, Supdt. of Police, (Now IGP, Raipur, Chhattisgarh)
2. Sanjeev Shami, SDPO (Now AIGP, Madhya Pradesh)

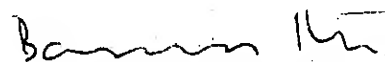
Statement of service for which the decoration has been awarded:

On the intervening night of 17/18th March, 1997, information was received that armed dacoits were camping in Pichhor Tiraha area with a kidnapped person. Shri Ram Niwas, SP Gwalior immediately rushed to P.S. Dabra. He formed three parties of the available force. First and second party was deployed to encircle the dacoits. The third party headed by Shri Ram Niwas moved ahead for action. After sometime, he noticed movements in the wheat fields. He challenged the dacoits to surrender but the dacoits opened fire on the police personnel. One bullet shizzed past closed to the ear of Shri A.K. Bhadoria. On seeing this, Shri Ram Niwas gave cover to Shri Bhadoria, fired on the dacoits and killed one of them. Shri Bhadoria without caring for his life also fired towards the dacoits and killed another dacoit. Simultaneously, Shri Sanjeev Shami, SDOP Dabra also fired with his 9 mm pistol. In the ensuing firing, the dacoits escaped towards the jungle with the kidnapped person. Shri Ram Niwas then organised the search of the fleeing dacoits. He alongwith S/Shri Shami and Bhadoria and other police personnel moved towards the jungle. On the way they received information that the dacoits with the kidnapped person are moving towards the Sidh Khoh jungle. As the police party approached a nallah, the dacoits who were entrenched in the nallah opened fire and shouted " PoliceWalo go away otherwise the kidnapped person will be killed". Police personnel took position and moved ahead. In the meanwhile one man whose hands were tied on the back, came running towards the police personnel shouting that he was the kidnapped person. On this, the dacoits

started firing at the kidnapped person. Seeing the life of kidnapped person in danger, S/Shri Ram Niwas and Sanjeev Shami, came out and fired at the dacoits. The dacoits also continued firing on the police personnel. As a result of continuous firing by S/Shri Ram Niwas and Sanjeev Shami two dacoits were killed. The killed dacoits were identified as (i) Akleem; (ii) Satyadev alias Satte; (iii) Lateef alias Lattar; and (iv) Santosh. During search one .315 rifle, one .12 bore SBL gun, one .303 bore half barrel gun, one countrymade gun alongwith large quantity of ammunition were recovered from the place of encounter. The killed dacoits had committed large number of heinous offences and struck terror in Gwalior and Morena Districts.

In this encounter, S/Shri Ram Niwas, S.P., & Sanjeev Shami, SDOP displayed conspicuous gallantry, courage and devotion to duty of the high order.

These awards is made for gallantry under Rule 4(i) of the rule governing the award of Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under Rule 5, with effect from 18th March, 1997.



(BARUN MITRA)
DIRECTOR

Ministry of Social Justice & Empowerment

New Delhi-1, the 12th November 2003

RESOLUTION

N0. 11015/1/2002-Hindi: In continuation of the Ministry's resolution of even number dated 28th January, 2002 and notification dated 8th October, 2002 the following amendments are made in the above mentioned resolution:-

1. Under the title "Composition" at Sl. N0. 1 i.e. Minister of Social Justice & Empowerment - Chairman,
2. Minister of State for Social Justice & Empowerment - Vice Chairman, and
3. Minister of State for Social Justice & Empowerment - Vice Chairman"- may be added.

ORDER

Ordered that a copy of the above Resolution be communicated to all the Members of the Committee, all State Government and Union Territory Administrations, all Ministries/Departments of the Government of India; President's Sectt., Prime Minister's Office, Cabinet Sectt. Ministry of Parliamentary Affairs, Lok Sabha, Rajya Sabha Sectt., Planning Commission and Controller and Auditor General of India.

Ordered also that the Resolution be published in the Gazette of India for General Information.


(Swapna Rai)

Joint Secretary